CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# अस्सी करोड़ 80,00,00,000

## भारतीय तथा विदेशी ग्राहक बन्धुओं के लिए शुभ - सूचना

# श्री बापू मशहूर राष्ट्रीय जन्त्री

## पृष्ठ 300 के ग्राहक व्यर्थ भ्रम में न पड़ें

हमारी इस जगत् विख्यात जन्त्री की बिक्री की लोकप्रिता से कुछ लोगों को बहुत ईर्ष्या और जलन हो रही है। जन्त्री छपते ही हजारों की संख्या में विदेश (Foreign Countries) चली जाती है और कई हजार प्रतियां भारतवासी मंगाकर लगन व उत्साह से पढ़ते हैं। पेपर और Lavour Problem के कारण हम ग्राहकों की डिमाण्ड पूरी नहीं कर पाते। जब जन्त्री समाप्त हो जाती है तो कुछ पुस्तक विक्रेता भाई हमारे उन ग्राहकों को भांति-भांति की बातें कहकर भ्रम में डाल देते हैं कि जन्त्री का नाम बदल गया है, जन्त्री छपनी बन्द हो गई है तथा दूसरी जन्त्री दिखाकर ग्राहक से कहते हैं कि यही जन्त्री श्री बापू मशहूर राष्ट्रीय जन्त्री है, इत्यादि। असली जन्त्री खरीदते समय उस पर **देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली** छपा अवश्य देखलें। कुछ दुकानदार जन्त्री के ऊपर छपे मूल्य से भी अधिक मनमाना मूल्य बढ़ाकर मांगते हैं। उन सबको हम सूचित करते हैं कि आपकी यह प्रिय जन्त्री प्रति वर्ष 15 अगस्त के पर्व पर प्रकाशित हो जाती है। आप स्थानीय पुस्तक विक्रेता से अपनी जन्त्री पहले ही रिजर्व करा लें। यदि कोई दुकानदार छपे मूल्य से अधिक मांगे तो हमें सूचित करें। चूंकि डाक-खर्च आजकल काफी अधिक है, इसलिए आप अपने नगर के पुस्तक विक्रेता, बुक स्टाल, न्यूज पेपर एजेण्ट से ही जन्त्री खरीदें तो आपको किफायत रहेगी।

यदि आपको जन्त्री हमारे यहां से ही मंगवानी हो तो नीचे लिखे अनुसार डाक-खर्च सहित जन्त्री का मूल्य अग्रिम भेजकर मंगवा सकते हैं। वी० पी० पी० से जन्त्री भेजने का नियम हमारे यहां नहीं है।

### केवल स्वदेश (भारतवासियों) के लिए

| | जन्त्री का मूल्य | डाक खर्च | कुल रुपया जो आपको भेजना है |
|---|---|---|---|
| 1 जन्त्री का मूल्य | 10-00 | 8-00 | 18-00 |
| 2 जन्त्री का मूल्य | 20-00 | 10-00 | 30-00 |
| 3 जन्त्री का मूल्य | 30-00 | 15-00 | 45-00 |
| 4 जन्त्री का मूल्य | 40-00 | 20-00 | 60-00 |
| 5 जन्त्री का मूल्य | 50-00 | 25-00 | 75-00 |

इस प्रकार पांच जन्त्री से अधिक मंगाने पर प्रति जन्त्री पर आगे भी 10/- रु० मूल्य, 5/- रुपया डाक-व्यय जोड़ कर कुल 15/- रु० प्रति कापी बढ़ाकर इसी अनुपात से मनीआर्डर से भेज कर नीचे लिखे पते से जन्त्रियां A.D. रजिस्ट्री द्वारा मंगवा लें।

### विदेश के लिए (For Foreign Countries)

विदेशी ग्राहक बन्धुगण अपने नगर के पुस्तक विक्रेता से जन्त्री खरीदें। अगर वहां न मिल सके और हमसे ही मंगवानी हो तो निम्नलिखित रकम पेशगी M. O., बैंक ड्राफ्ट या कोरे पोस्टल आर्डर द्वारा भेजें। आगे भी इसी अनुपात से भेजें।

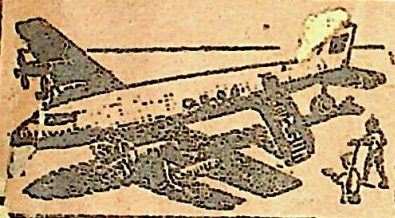

| | | |
|---|---|---|
| 1. जन्त्री वास्ते | 4.00 डालर या | £ 3.00 P. |
| 2. जन्त्री वास्ते | 6.00 ,, ,, | £ 3.00 P. |
| 3. जन्त्री वास्ते | 8.00 ,, ,, | £ 4.00 P. |
| 4. जन्त्री वास्ते | 10.00 ,, ,, | £ 5.00 P. |
| 5. जन्त्री वास्ते | 12.00 ,, ,, | £ 6.00 P. |

इससे अधिक पर इसी अनुपात से यानी 2 डालर अथवा 1£ प्रति कापी बढ़ाकर भेजते रहें।

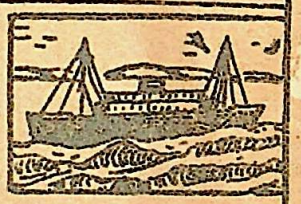

बड़ा ग्रन्थ हिन्दी में सर्वाधिक प्रामाणिक प्रकाशन, जिसकी कोई तुलना नहीं है। हजारों चित्र, हजारों पृष्ठ, कपड़े की मजबूत पक्की जिल्द सहित — **असली प्राचीन सिद्धिदाता मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र-महाशास्त्र**—प्राचीन प्रामाणिक प्राप्त, अप्राप्य और दुष्प्राप्य संस्कृत के सैकड़ों प्राचीन तान्त्रिक ग्रन्थों से उपयोगी सामग्री संकलित करके इस पुस्तक को सरल हिन्दी भाषा में वर्षों की मेहनत और हजारों रुपयों के खर्च से तैयार किया गया है। दो जिल्दों में संपूर्ण। भेंट 201/-

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने तथा वी० पी० पी० द्वारा मंगाने की एकमात्र विश्वसनीय 1936 की स्थापित फर्म —

**देहाती पुस्तक भण्डार, (Regd.) चावड़ी बाजार, दिल्ली**

दिल्ली-110006, भारत (India) फोन : 261030

## अथ स्वरों द्वारा मनोवांछित फल ज्ञात करना

स्वरशास्त्र के प्रथम तत्वों का जानना आवश्यक है। कारण कि बिना तत्वों के जाने कार्य का होना या न होना निश्चित नहीं होता है। इसलिये इन पांच तत्वों को अवश्य जानना। तत्व—पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश—ये पांच तत्व हैं। पृथ्वी तत्व ५० पल २० मिनट तक रहता है। जल तत्व ४० पल १६ मिनट। अग्नि तत्व ३० पल १२ मिनट। वायु तत्व २० पल ८ मिनट। आकाश तत्व १० पल ४ मिनट तक रहता है। तत्वों का रंग व आकृति—पृथ्वी तत्व का रंग पीला और चतुष्कोण है। जल तत्व का रंग सफेद और अर्द्ध चन्द्र है। अग्नि तत्व का रंग रक्त और त्रिकोण है। वायु तत्व का रंग नीला और गोल है। आकाश तत्व का रंग अनेक प्रकार का और आकृति शून्य है।

**श्वास द्वारा तत्वों की पहचान**—नाक के मध्य में श्वास आवे तो पृथ्वी तत्व, नीचे के भाग में होकर आवे तो जल तत्व, ऊपर के भाग में होकर आवे तो अग्नि तत्व और दोनों ओर होकर चले तो वायु तत्व और घूमकर चले तो आकाश तत्व का उदय जानो।

**मुख द्वारा तत्व का ज्ञान**—जब मुख मीठा-मीठा हो तो पृथ्वी तत्व जानना। अगर मुख का स्वाद कसैला हो तो जल तत्व। अगर चरपरा हो तो अग्नि तत्व। खट्टा हो तो वायु तत्व। कड़वा हो तो आकाश तत्व जानना।

**गति से तत्व ज्ञान**—नासिका से श्वास निकलते समय वायु ८ अंगुल लम्बी हो तो वायु तत्व, ४ अंगुल हो तो अग्नि तत्व, १२ अंगुल हो तो पृथ्वी तत्व और १६ अंगुल हो तो जल तत्व जानना।

**किस-किस तत्व में क्या करे**—पृथ्वी तत्व में स्थिर कार्य, जल तत्व में चर कार्य, अग्नि तत्व में क्रूर कार्य, आकाश-तत्व में मारण उच्चाटनादि करना। सारी बात यह है कि जिस वक्त पृथ्वी या जल तत्व चल रहा हो उस समय जो कार्य करोगे अवश्य सिद्ध होगा और अग्नि तत्व में करने से मरण या मृत्यु समान कष्ट, वायु तत्व में हानि, आकाश तत्व में कार्य निष्फल जानना।

**दाहिने स्वर से इतने कार्य करे**—गति अभ्यास, स्त्री संग और मंत्रों की सिद्धि, राज-दर्शन, औषधि-सेवन, जहाज में बैठना, लिपि लिखना, यन्त्र बनाना, क्रय-विक्रय, नदी पार स्नान, भोजन-व्यायाम, तलवार हाथ में लेना, दुर्ग-प्रवेश, हाथी, घोड़ा, गधे, भैंसे पर चढ़ना, जुआ खेलना, मारण मोहन, उच्चाटन, स्तम्भन, यक्षिणी यज्ञ और क्रूर कर्म करने से कार्य सिद्ध हो।

**बाये स्वर से इतने कार्य करें**—स्थिर कर्म, वस्त्र-गहने पहनना, दूर देश को जाना, घर बनाना, राजमहल में प्रवेश करना, कुआं बावड़ी तालाब खुदवाना, आवश्यक वस्तुओं को संग्रह करना, देव-प्रतिष्ठा, यात्रा हानि, विवाह, गृह-प्रवेश, व्यापार, धन-संग्रह, खेती करना, बीज बोना, धर्म कार्य, गुरु से दीक्षा लेना, मंत्र-सिद्धि, पशु घर में लाना, विद्या आरम्भ करना शुभ है परंतु वायु, आकाश तत्व के चलने पर कदापि न करे। मुकद्दमा में जीत हो, जिस समय दाहिना स्वर चलता हो उस वक्त घर से चले और चलते समय पहले बायां पैर रखे। ऐसा करने से अवश्य जीत होगी। जब हाकिम के सामने जाओ तब अपना जो स्वर चलता हो उस स्वर की तरफ हाकिम को रखो जो बन्द हो उसकी तरफ स्वयं को रखो तो जीत होगी।

## अथ प्रश्न देखना

**चोरी का प्रश्न**—जिस वक्त कोई आकर प्रश्न करे उस वक्त की लग्न निकालो और जो लग्न के अंश हों उनसे नवांश निकालो। जो राशि नवांश की हो और उस राशि का जो स्वामी हो उसके मुताबिक फल कहो। अगर नवांश की राशि सूर्य हो तो पीतल की वस्तु सोना, लाल धातु की वस्तु और पदार्थ कहना। अगर चंद्र का हो तो चांदी-मोती कहना। अगर मंगल हो तो शस्त्र या लाल वस्तु। अगर शुक्र हो तो सफेद रंग की वस्तु, अगर शनि हो तो काले रंग की भैंस, लोहा आदि कहो।

**माल मिलेगा या नहीं**—प्रथम पंचांग में देखना कि चीज कौन से नक्षत्र में गई है। अगर वह वस्तु कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु, आश्लेषा में गई है तो वह नहीं मिलेगी। मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी में गई है तो मिल जायगी। अगर हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा में गई है तो नहीं मिलेगी; परंतु पता लग जायगा। शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती, अश्विनी, भरणी में गई है तो वस्तु का घर में ढूंढने से पता लग जायेगा, चिंता मत करो।

**संतान होगी या नहीं**—पंचम भाव के स्वामी के साथ चंद्रमा हो तो संतान होगी। परंतु पंचम भाव स्वामी उच्च का या मित्र-क्षेत्री या स्वक्षेत्री होना चाहिए और अपने भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता हो और शुभ स्थान में बैठा हो जैसे १,२,३,४, ५,९,१०,११ स्थान में हो तो अवश्य संतान होगी। अगर वही पंचम भाव का स्वामी अस्त हो या नीच का हो या शत्रु क्षेत्री हो या अशुभ स्थान में बैठा हो तो संतान नहीं होगी।

**विवाह होगा या नहीं**—अगर सप्तम घर को शुभ ग्रह देखते हों और सप्तम भाव का स्वामी उच्च या मित्र-क्षेत्री या स्वक्षेत्री या शुभ स्थान में हो या सप्तम भाव में शुभ ग्रह में बैठा हो तो विवाह हो जायेगा, अन्यथा नहीं होगा।

**मुकद्दमे का प्रश्न**—सप्तम भाव के स्वामी से लग्न का स्वामी बलवान् हो तो मुकद्दमा अवश्य जीतेगा। अगर लग्न में सूर्य, मंगल, शनि बलवान् हो तो हार होगी। ● पवन पुत्र प्रश्न भास्कर 10.00 ● गुप्त प्रश्नावली मूल्य 15/-

देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाजार, चौक बड़ाहपुला, दिल्ली

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# ★ अथ भाग्य परीक्षा चक्रम् ★

| चक्र नं०१ ध्रुव नं०१ | | | | चक्र नं०२ ध्रुव नं०२ | | | | चक्र नं०३ ध्रुव नं०४ | | | | चक्र नं०४ ध्रुव नं०८ | | | | चक्र नं०५ ध्रुव नं०१६ | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | ५ | ७ | २ | १८ | १४ | १५ | ४ | ७ | १४ | २३ | ८ | ११ | ३१ | २७ | १६ | २४ | २८ | २७ |
| ९ | १७ | १६ | ११ | १ | २७ | ३० | २२ | १२ | २० | ६ | ३० | ५ | १० | १३ | २५ | २० | २२ | २३ | १८ |
| १३ | १५ | २५ | २२ | ३१ | १६ | २३ | १० | २८ | २२ | ५ | ३१ | २६ | २६ | १२ | १४ | ९ | १७ | २५ | २६ |
| २६ | २७ | ३१ | २१ | ६ | ७ | २६ | ३ | १३ | २१ | १५ | २० | २८ | २४ | ६ | ३० | २१ | ३० | २६ | ३१ |

(१) लाभ होगा। (२) अभी देर है (३) परिश्रम से सफलता मिल सकेगी। (४) विना इष्टदेव की पूजा के लाभ प्राप्त नहीं होगा। (५) भाग्य का सितारा चमकने वाला है। (६) सावधान रहना, धोखा खा जाओगे। (७) सभी कठिनाइयां शीघ्र दूर होवेंगी (८) प्रत्येक कार्य से मुसीबत उठानी पड़ेगी। (९) रुपये की चिन्ता न करो, शीघ्र मिलेगा। (१०) मित्र की सहायता से कार्य बनेगा। (११) तुम्हारे दिल की मुराद पूरी होगी। (१२) भाग्य पर भरोसा करो, भगवान् अवश्य मदद करेंगे। (१३) तुम्हारे कार्य में जो दिक्कतें हैं वे दूसरों की सलाह से और भी जटिल बन जायेंगी। (१४) व्यापार से लाभ होगा, शीघ्र ही सब आपत्तियां दूर होवेंगी। (१७) चिन्ता करना व्यर्थ है, भाग्य तुम्हारा टेढ़ा है। (१८) तुम काफी दिन से परेशान हो और परेशानी अभी बढ़ेगी, इसलिए आप शिव का पूजन करो सफलता मिलेगी। (१९) भाग्योदय अभी देर से होगा। (२०) भाग्य का सितारा शीघ्र ही चमकेगा, चिन्ता मत करो। (२१) धैर्य से काम करो, दिन खोटे हैं, हनुमानजी का पूजन करो। (२२) तुम्हारी मनोकामना शीघ्र ही पूर्ण होगी। (२३) तुमने जो कार्य सोचा है उसके होने में सन्देह है। (२४) सम्पूर्ण इच्छाएं पूरी होंगी, साधु सेवा करो। (२५) किसी दूसरे की राय लेकर काम करने से हानि होगी। (२६) भाग्य तुम्हारे साथ है, सफलता अवश्य मिलेगी। (२७) खोटे दिनों में अपने भी पराये हो जाते हैं। (२८) मनोकामना पूरी होगी, उमा की पूजा करो। (२९) कार्य की पूर्ति होने में सन्देह है। (३०) लाभ का समय निकट भविष्य में आ रहा है। (३१) किसी की सहायता से सभी कठिनाइयों पर काबू पाओगे, गाय को लोआ खिलाओ।

## मन्त्रों का चमत्कार

देहाती पुस्तक भाण्डार
चावड़ी बाजार दिल्ली।

| व्यापार में लाभदाता यंत्र | | | संतानदाता यंत्र | | | | लाटरी एवं सट्टा में विजय प्राप्ति का यंत्र | | | | परदेशी को वापस बुलाने का यन्त्र | | | | जेल से छुटकारा पाने का यन्त्र | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ९ | १० | ८०५ | ८१८ | ८१५ | ८१२ | ९० | ९७ | २ | ७ | २४९ | २५४ | २५७ | २४२ | या हाफिज | ३३० | ३३८ | ३३१ |
| १४ | ७ ऐं २ श्री ॐ ह्रीं ३ क्लीं ८ | ६ | ८१६ | ८११ | ८०६ | ८१७ | ७ | ३ | ६४ | ६३ | २५६ | २५३ | २४८ | २५३ | या हाफिज | ३२२ | ३३४ | ३३७ |
| ५ | ११ | ४ | ८१० | ८१३ | ८२० | ८०७ | ६६ | ६१ | ८ | १ | २४४ | २५९ | २५० | २४७ | ९० | ३३७ | ३३० | ३३५ |
| | | | ८११ | ८०८ | ८०९ | ८१४ | ४ | ५ | ६२ | ६५ | २५१ | २४६ | २४५ | २५५ | जेली का नाम मां का नाम | ९९ | या हाफिज | या हाफिज |

देहाती पुस्तक भाण्डार
चावड़ी बाजार दिल्ली।

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इस मन्त्र का १२५००० सवालाख जप करें। इस मंत्र को लिखकर जप के समय पूजा करके सामने रखें। जब जाप पूर्ण हो जाय तब इसको भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर काम में लावें, कार्य सिद्ध होगा।

यह यंत्र पूर्णमासी के दिन अष्टगंध से अनार की कलम से भोज पत्र पर लिखे, अष्टधातु यंत्र में रख गूगल की धूनी दे ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे मंत्र को ११ दिन जपे, इसे सामने रखे रोजाना गूगल की धूनी देने के बाद दाहिनी भुजा या गले में बांधे।

जब कोई सगासंबंधी चला गया हो और बहुत दिन बीतने पर भी पता न लगे या न आवे तो इस मंत्र को लिखकर चर्खे से बांधे और चर्खा को उलटा चलावे। यह ध्यान रहे चर्खा का सूत क्वारी कन्या के हाथ से कता हो।

इस नक्शे को दीवार पर लिखकर जंगली कबूतर के गले में बांधकर उसे उड़ा दे। जेल से शीघ्र ही छुटकारा मिलेगा।

विशेष नोट—सिद्धि सिद्धिकर्ता पर निर्भर है, श्रद्धाभाववसत्यतापूर्वकविश्वास केसाथ सिद्धि की जायेगी। तभी संभव है अन्यथा नहीं

आयु-निर्णय मू० 24/-
आपका भविष्य 24/-

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## अथ वार, ग्रह तथा राशियों से तेजी-मन्दी जानना

○ ग्रहों की वस्तुएं—सूर्य—सुवर्ण, गुड़, चौपाए, लकड़ी, सरसों तथा रस पदार्थ। चन्द्र—चांदी, कपास, चावल, सफेद वस्त्र तथा सफेद रंग की सर्व वस्तु। मंगल—सोना, तांबा, लोहा तथा सर्व धातु, चौपाये, मशीनरी, चना, गुड़, हल्दी, धनिया, गेहूं। बुध—चांदी, मूंगा, रेशम, शक्कर, रुई, तांबा, सर्व रस गुड़। गुरु—चांदी, सोना, जवाहरात, हरड़, जस्त, टीन, कुष्टा, पाट, तमाखू शेयर, गुड़, खांड। शुक्र—चांदी, रुई, बारदाना, सोना, वस्त्र, कपास। शनि—अलसी, सरसों, तिल, तेल, कोयला, ऊन, यव, गेहूं, सीसा। राहु—वायरलैस, तार, फोन तथा बिजली का सामान।

○ अथ मेषादि राशियों की वस्तुएं—मेष—गेहूं, यव, सोना, कम्बल, पशमीना, राल, मलूरा। वृष—सरसों, गेहूं, वस्त्र, यव, फूल, महिष, तेल। मिथुन—रुई, कपास, ग्वार, बाजरा, कमल कन्द। कर्क—दालचीनी, जायफल, केला, दूध, तमालपत्र, कोधा। सिंह—मृगछाला, चावल, गुड़, खांड, पटरस। कन्या—अलसी, गेहूं, कुलथी, जवासा, मूंग, बटला, सफेद गेहूं। तुला—सरसों, उड़द, नारियल, लाल गेहूं, मटर, अरण्ड। वृश्चिक—गुड़, खांड, शक्कर, लोहा, मेंढ़ा, नागर मोथा। धन—घोड़ा, हाथी, रस, लवण, शस्त्र, वस्त्र, चित्रपट। मकर—जिमीकन्द, मजीठ, कूठ, कनेर। कुम्भ—टिन, विचित्र वस्तु, पोस्त, रत्न, रस। मीन—सीप, मोती, हीरा, सीसा, समुद्रफेन, मोचरस।

## अथ वार, ग्रह व राशियों से तेजी-मन्दी का ज्ञान

वस्तुओं की राशि तथा सूर्यादि ग्रहों का वस्तुओं पर प्रभाव लिखा चुका है। उसी के आधार पर यह तेजी-मन्दी देखना लिखा जाता है। वस्तु की राशि से वृहस्पति २, ४, ५, ७, ९, १०, ११ वें स्थान पर हो तो उस वस्तु का मन्दा जानना और वृहस्पति १, ३, ६, ८, १२ वें स्थान पर हो तो उस वस्तु की तेजी जानना। वस्तु की राशि से बुध २, ५, ७, १०, ११ वें स्थान पर हो तो उस वस्तु का मन्दा और १, ३, ४, ६, ७, ९, १३ वें स्थान पर बुध हो तो उस वस्तु की तेजी करता है। वस्तु की राशि से शुक्र ६, ७वें स्थान पर हो तो तेजी जानना और १ से ५ तक और ९ से १३ तक के स्थान पर शुक्र हो तो मन्दा जानना। शनि, राहु, मंगल, सूर्य, केतु वस्तु की राशि से ३, ६, १०, ११वें स्थान पर हो तो मन्दा जानना और १, २, ४, ७, ८, ९वें स्थान पर वस्तु की राशि से ये पांचों में से कोई-सा ग्रह हो तो तेजी जानना और पूर्ण चन्द्रमा का फल वृहस्पति के समान जानना।

○ क्रूर तथा सौम्य ग्रहों से तेजी-मन्दी का ज्ञान—क्रूर ग्रह जब सम राशि पर आता है तब १२ अंश से लेकर १९ व २० अंश तक मंदा करता है। इसके बाद तेजी। क्रूर ग्रह जब विषम राशि पर चलता है तब १२ अंश से १९-२० तक तेजी, बाद में मन्दा करता है। क्रूर ग्रह जब सौम्य ग्रह की राशि पर आता है तब १२ अंश से २० अंश तक मन्दा करता है। क्रूर ग्रह जब मित्र सौम्य ग्रह की राशि पर हो तब मन्दा जानना।

○ वार से तेजी-मन्दी का ज्ञान—सोमवार को यदि कोई वस्तु मन्दी हो जाय तो मंगलवार को तेज। यदि सोमवार को तेज हो तो मंगल को मन्दा जानना। यदि वस्तु मंगलवार को तेज हो तो बुधवार को मन्दा जानना। वृहस्पति के दिन बाजार में भी तेजी-मन्दी चलेगी, वह शनिवार तक रहेगी। शुक्रवार को तेजी चलेगी, बाद में मन्दी और यदि मन्दी चले तो बाद में तेजी जानना। शनिवार को तेजी या मन्दी चले तो वह बाजार में एक सप्ताह तेज असर दिखाएगी। यदि तेजी-मन्दी दोनों चलें तो मन्दी जानना। रविवार को जो वस्तु मंदी होगी वह सोमवार को तेज होगी और जो रविवार को तेज होगी वह सोमवार को मंदी होगी। यदि किसी प्रकार सोमवार को मन्दी न आवे तो मंगलवार का बाजार देखकर व्यापार करना चाहिए। बुधवार के दिन जो वस्तु मन्दी होगी उस वस्तु की तेजी वृहस्पति को अवश्य आ जायेगी।

देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार दिल्ली

**श्री विष्णु उपासना (विष्णु पूजा)** मूल्य 12/-

सम्पूर्ण चराचर के स्वामी चतुर्भुज शेषशायी भगवान् श्री विष्णु की पौराणिक कथा, पूजा, आराधना, उपासना, ध्यान एवं स्तुति विषयक यन्त्र, मन्त्र, स्तोत्र, कवच, भजन आरती, चालीसा आदि का वृहद् संकलन। ले० राजेश

**श्री वैष्णोदेवी उपासना (वैष्णोदेवी पूजा)** मू० 10/-

हिमगिरि वासिनी भगवती वैष्णवी देवी की पौराणिक कथा तथा पूजा, आराधना, उपासना, ध्यान, स्तुति, विषयक यन्त्र, मन्त्र, स्तोत्र, कवच, भजन, आरती, चालीसा आदि का वृहद् संकलन। सचित्र एवं सजिल्द पुस्तक।

**श्री हनुमत् उपासना (हनुमान पूजा)** मू० 10/-

**श्री गायत्री उपासना (गायत्री पूजा)** मू० 10/-

**बारह महीनों के व्रत और त्यौहार** मू० 10/-

**दुर्गा उपासना (दुर्गा पूजा)** मू० 10/-

सर्वपूज्य मां भगवती को प्रसन्न करने के लिए नवार्ण-मंत्र, जप-विधि, पूजाविधान और अनुष्ठान, देवी के सभी रूपों से सम्बन्धित स्तोत्र, आरती, पद, भजन आदि का विराट संकलन।

**शिव उपासना (शिव पूजा)** मू० 10/-

कैलाशवासी भगवान् सदाशिव की प्रशंसा में गाये गए भक्ति-भावपूर्ण चुने हुए रसीले पदों, भजनों, आरतियों और स्तोत्रों का अपूर्व संग्रह।

**देवी-देवताओं की आरतियां** 15.00

इस पुस्तक में सब देवी-देवताओं की तमाम आरतियां स्तोत्र, कार्यकाज और पूजा-पाठ की शास्त्रीय विधि, ज्ञान, वैराग्य, देश प्रेम, समाज-सुधार, ईश्वर भक्ति के सैकड़ों भावपूर्ण भजनों आदि का संग्रह है।

व्यापार अर्थमार्तण्ड मू. 24-00

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-6

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# अथ सूर्यादि नवग्रहों के जप के लिए मन्त्र जपसंख्या व दान की वस्तु

| दान-वस्तु | जप-संख्या | सूर्यदेव |
|---|---|---|
| १ माणिक्य<br>२ गेहूं<br>३ धेनु<br>४ रक्तवस्त्र<br>५ गुड़<br>६ हेम<br>७ ताम्र<br>८ रक्तचंदन<br>९ रक्तकमल | मध्य<br>वर्तुलमण्डल<br>अंगुल १२<br>कलिंग देश<br>काश्यपगोत्र<br>रक्तवर्ण<br>सिंहका स्वामी<br>जपसंख्या<br>७००० | रवि |

जप-मन्त्र—ओ३म् घृणि सूर्याय नमः
दान-समय—अरुणोदय (सूर्योदय के समय)
शान्त्यर्थ धारण मणि—माणिक्य या विद्रुम

| दान-वस्तु | जप-संख्या आदि | चन्द्रदेव |
|---|---|---|
| १ वंशपात्र<br>२ तंदुल<br>३ कर्पूर<br>४ मौक्तिक<br>५ श्वेतवस्त्र<br>६ वृषभ<br>७ रौप्य<br>८ घृतकुंभ<br>९ शंख | आग्नेय्यांचतु-<br>रस्रमंडल अं-<br>गुल ४ वसु<br>-नातीर देश<br>आत्रेयसगोत्र<br>श्वेतवर्ण<br>कर्कका स्वामी<br>जप<br>११००० | चन्द्र |

जप-मन्त्र—ओ३म् सों सोमाय नमः
दान-समय—संध्या समय
शान्त्यर्थ धारण मणि—मोती, चांदी

| दान-वस्तु | जप-संख्या आदि | मंगलदेव |
|---|---|---|
| १ प्रवाल<br>२ गेहूं<br>३ मसूर<br>४ लालवृष<br>५ गुड़<br>६ सुवर्ण<br>७ रक्तवस्त्र<br>८ कण्हेरपु<br>९ ताम्र | दक्षिणे<br>त्रिकोणमंडल<br>अंगुल ३ अ-<br>वंतिदेशोद्भव<br>भारद्वाजगोत्र<br>रक्तवर्ण<br>वृश्चिकमेषका<br>स्वामी जप<br>१०००० | मंगल |

जप मन्त्र—ओ३म् अगारकाय नमः
दान-समय—सूर्योदय से दो घड़ी।
शान्त्यर्थ धारणमणि-मूंगा

## सर्व ग्रहों की शांति के लिए स्नानार्थ औषधियां

| | | |
|---|---|---|
| सरसों | जौ | देवदारु |
| हल्दी | कोथ | कूट |
| धान | | |
| लावा | कांगनी | लाज- |
| खील | | वंती |
| तीर्थ | नागर | |
| का | मोथा | सर्वो- |
| जल | | षधि |

इन औषधियों से स्नान करने से साधारणतया ग्रहों की शांति होती है।

| दान-वस्तु | जप-संख्या आदि | बुधदेव |
|---|---|---|
| १ मूंग<br>२ नीलवस्त्र<br>३ सुवर्ण<br>४ कांस्य<br>५ कस्तूरी<br>६ आज्य<br>७ पटरस<br>८ दासी<br>९ हस्ती | ईशान्यां वा-<br>नाकारमंडल<br>अंगुल ४<br>मगधदेश<br>आत्रेय गोत्र<br>पीतवर्ण मि-<br>थुन कन्याका<br>स्वामी<br>जप ४००० | बुध |

जप-मन्त्र—ओ३म् बुं बुधाय: नमः
दान-समय—सूर्योदय से ५ घड़ी पर्यंत
शांत्यर्थ धारण मणि—पन्ना या सोना

| दान-वस्तु | जप-संख्या आदि | गुरु-देव |
|---|---|---|
| १ शर्करा<br>२ हलद<br>३ अश्व<br>४ पीतवस्त्र<br>५ पीतवाह<br>६ पुष्कराज<br>७ लवण<br>८ कांचन<br>९ पीतपु. | उत्तरेशीर्षच-<br>तुरस्रमंडल<br>अंगुल ६ सि-<br>न्धुदेशोद्भव<br>आंगिरसगोत्र<br>पीतवर्ण<br>धन मीनका<br>स्वामी जप<br>१९००० | गुरु |

जप-मन्त्र—ओ३म् बृं बृहस्पतये नमः
दान-समय—सन्ध्या समय
शांत्यर्थ धारण मणि—पुष्पराग या मोती

| दान-वस्तु | जप-संख्या आदि | शुक्रदेव |
|---|---|---|
| १ चित्रांबर<br>२ श्वेताश्व<br>३ धेनु<br>४ हीरा<br>५ रौप्य<br>६ सुवर्ण<br>७ तंदुल<br>८ सुगंध<br>९ घृत | पूर्वेपंचकोण<br>मंडल अंगुल<br>९ वृष तुला-<br>का स्वामी<br>भोजकटदेश<br>भार्गवसगोत्र<br>श्वेतवर्ण<br>जप<br>१६००० | शुक्र |

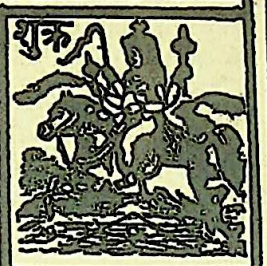

जप-मन्त्र—ओ३म् शुं शुक्राय नमः
दान-समय—अरुणोदय (सूर्योदय समय)
शान्त्यर्थ धारण मणि—मणि व चांदी

वृहत्स्तोत्र रत्नाकर
मू० 12/-

## होम में ग्रहों की समिधा

| | |
|---|---|
| सूर्य | आक |
| चन्द्र | ढाक |
| मंगल | कत्था |
| बुध | अपामार्ग |
| वृह. | पीपल |
| शुक्र | गूलर |
| शनि | शमी छोकर |
| राहु | दूब |
| केतु | कुशा |

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

| दान-वस्तु | जप संख्या आदि | शनिदेव |
|---|---|---|
| १ माष<br>२ तिल<br>३ तेल<br>४ कुलित्थ<br>५ महिषी<br>६ लोह<br>७ श्यामधेनु<br>८ इन्द्रनील<br>९ श्यामवस्त्र | पश्चिमे धनुषाकार मंडल अंगुल २<br>सौराष्ट्र देश<br>काश्यपगोत्र<br>मकर कुम्भ-का स्वामी कृष्णवर्ण जप<br>२३००० | शनि |

जप-मन्त्र—ओ३म् श शनैश्चराय नमः
दान-समय—दिन के १२ बजे
शांत्यर्थधारण मणि नीलम या लोहा

| दान-वस्तु | जप-संख्या आदि | राहुदेव |
|---|---|---|
| १ गेहूं<br>२ रत्न<br>३ अश्व<br>४ नीलवस्त्र<br>५ कंबल<br>६ तिल<br>७ तेल<br>८ लोह<br>९ [illegible] | नैर्ऋत्यांशूर्णाकारमंडल अंगुल १२<br>राठिनादेश<br>पैठीनस गोत्र<br>कृष्णवर्ण<br>जप<br>१८००० | राहु |

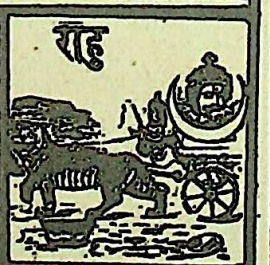

जप-मन्त्र—ओ३म् रं राहव नमः
दान-समय—रात्रि के १२ बजे
शांत्यर्थधारण मणि—गोमेद या लाजवंती

| दान-वस्तु | जप-संख्या आदि | केतुदेव |
|---|---|---|
| १ वैडूर्य<br>२ तिल<br>३ कंबल<br>४ कस्तूरी<br>५ शस्त्र<br>६ कृष्णद०<br>७ तेल<br>८ [illegible]<br>९ [illegible] | वायव्ये ध्वजाकारमंडल केतु अंगुल ६<br>अवन्ति देश<br>जैमिनि गोत्र<br>धूम्रवर्ण<br>जप<br>१७००० | केतु |

जप-मन्त्र—ओ३म् कं केतुवे नमः
दान-समय—रात्रि १२ बजे।
शांत्यर्थधारण मणि—गोमेद या लाजवंती

वर्ष पात्र में अनिष्ट स्थान गत मुन्था शांत्यर्थ दान वस्तु

| | | | |
|---|---|---|---|
| चावल | सोना | कांसा | बरतन |
| [illegible] | सफेद वस्त्र | वर्ण | |

मुन्था वर्ष में जिस स्थान में हो, उसका स्वामी जो ग्रह हो उसी समय के अनुसार करना चाहिए।

● स्थिर कारक ग्रह—सूर्य आत्मा पिता का कारक है। चन्द्रमा मन माता का, मगल सत्व-भ्राता का, बुध वाणी मातुल का, गुरु ज्ञान सुख और पुत्र का, शुक्र मद दारा का, शनि दुःख और मृत्यु कारक होता है।

## अथ लग्न आदि बारह भावों के स्थिरकारक ग्रह

● लग्न कारक रवि—धन भाव का गुरु। मातृ भाव का मंगल। माता भाव चन्द्र-बुध है। पंचम भाव का गुरु। छठे भाव का शनि, मंगल। सप्तम भाव का शुक्र। अष्टम भाव का शनि। नवम भाव का सूर्य, गुरु। दशध भाव का बुध, सूर्य, गुरु। एकादश भाव का गुरु। बारहवें भाव का शनि स्थिर ग्रह रहता है।

## अथ नैसर्गिक स्थिरकारक ग्रह

● सूर्य—राज्य, विद्रुम, रक्त वस्त्र, माणिक्य, वन, पर्वत, क्षेत्र, पिता का सुख:दुख, पवित्रता, पराक्रम, आरोग्य, शक्ति, सम्पत्ति, मनोरुचि, ज्ञानोदय, आत्म-कारक रवि है। अतः इन बातों का विचार रवि से करना, इसी प्रकार सभी ग्रहों को समझना चाहिए।

● चन्द्र—श्वेत चामर, यशोवृद्धि, आमोद, कांति, मुखलावण्यता पुष्टि, सुगन्ध-द्रव्य और माता का सुख-दुख, मन की प्रसन्नता, रस, ईख, गेहूं, क्षार, कुल द्विज शक्ति, कार्य शस्य, चांदी, बुद्धि, राजकृपा धनादि सम्पत्ति का कारक चन्द्रमा है।

● मंगल—पराक्रम, शुद्ध का शील, शौर्य, व्रण, अग्नि, राज विजय, प्रशंसा, युद्ध, साहस सेनापतित्व, दण्ड देने के अधिक तलवार आदि सभी अस्त्र-शस्त्र गम्भीरता, काम, क्रोध, वैरी, बुद्धि, आग्रह, अवग्रह, दूसरे की निंदा, स्वतन्त्रता, जमीन, जायदाद, भाई व बहिन, रोग, विद्या, धाय, साला, छोटा भाई, जमाता (जमाई) इन सबका कारक मंगल जानना चाहिए।

● बुध—विद्या, बुद्धि, विवेक, मातुल, मित्र, वक्तव्य, वार्ता, संतति, शांति, विनय, भक्ति, ज्ञाति, गोत्र समृद्धि भातृ, भगिनी, बांधव, मातृ, सजाति, सम्पन्न व ज्योति विद्या, इतिहास, भय, लक्ष्मी, शिल्प, वेदान्त विद्या का कारक बुध है।

● गुरु—ज्ञान, सम्पत्ति, शरीर, सौख्य, संतति, बुद्धि, वाणी, धारणा, मंत्र, राजतन्त्र, नैतिकता, गज, तुरंगादि, वाहन, निगमबोध, स्वकर्म, योग, सिंहासन, यज्ञ, देव, ब्राह्मण, तीर्थ, धन, ग्रह, कांचन वस्त्र, पुत्र, मित्र, आंदोलन, पिता, हार्दिक का कारक गुरु है।

● शुक्र—स्त्री वाहन, अलंकार, रति, सुख, व्यापार, विचित्र जड़ाऊ वस्त्र, कारचोबी के कपड़े, सुख, गायन, शास्त्र, काव्य, सुकुमारता, आमरण यौवन, चांदी, एवं लोकमत, मौक्तिक, विभव, कविता, संगीत, साहित्य, रस-क्रीड़ा, विलास, चित्र, कान्ति, सौंदर्य, राजा, राज-पुरुष, वशीकरण, वारुणी, विद्या, काव्य, रचना बीड़ा या छोटा होना आदि अणिमादि, ज्योतिष, विद्या, मातृ-पितृ, श्वसुर, मातामहादिक का विचार शुक्र से करना चाहिए।

● शनि—महिष, अश्व, गज, तेल, वस्त्र, श्रृंगार, प्रयाण, आयुष्य, जीवन का उपाय, दारिद्रय, मृत्यु, सर्व-राज, मद्य, आयुध ग्रह, युद्ध, संचार, शूद्र, नीलमणि, विप्र, केश, शल्य, शूल, रोग, दासी, जन, लोभ, मोह, विष-मता, पर पीड़ा, निर्धारित, शब्दादि निष्ठुरता, दुर्मति, दुर्दशा, रोग, वान, जौ, गेहूं, अफीम, काला धान्य, लोहादि का विचार शनि से करना चाहिए।

● राहु—प्रयाण के समय सर्प रात्रि, शकल सुमार्ग कर्ता, यश, प्रतिष्ठा, छत्र दाता का विचार राहु से करना चाहिए।

● केतु—वर्ण रोग, धर्म रोग, अतिशूल रोग, फोड़ा, स्वाति आदि का विचार केतु से करना चाहिए।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## कैलेण्डर देखने का उदाहरण

मान लीजिए आपको सन् १९५६ के जनवरी माह की तारीखों का ज्ञान करना है। चूँकि यह लीप वर्ष है इसलिए जहाँ जनवरी के आगे लीप लिखा हुआ है उसीके अनुसार देखा जायगा। सर्व प्रथम (क) चक्र में १९५६ की बाईं ओर 'न' अक्षर है। जनवरी लीप के सामने पाँचवें खाने में यह अक्षर है। उसके ठीक नीचे (ग) चक्र में पहला दिन रविवार है। इसलिये पहली (१) तारीख उसी दिन को पड़ेगी। इसी क्रम से अन्य तारीखों का भी बोध हो जायगा।

नोट—१९७६ के (क) चक्र में 'म' है (ख) चक्र में जनवरीके (लीप) सामने वाले 'म' के ठीक नीचे 'ग' चक्र में 'गुरु' है, अतः १९७६ की पहली जनवरी को गुरुवार होगा।

# सौ वर्षों का श्री गणेश कैलेण्डर

## (सन् १९५६ से २०५५)

देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाजार दिल्ली 6

### (ख)

देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाजार दिल्ली 6

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जनवरी, अक्टूबर | श्री | गं | णे | शा | य | न | म |
| फरवरी, मार्च, नवम्बर | शा | य | न | ग | णे | मः | श्री |
| अप्रैल, जुलाई, जनवरी (लीप) | ग | णे | म | य | न | श्री | शा |
| मई | न | श्री | ग | मः | शा | य | णे |
| जून | मः | शा | य | श्री | ग | णे | न |
| अगस्त, फरवरी (लीप) | य | न | श्री | णे | मः | शा | ग |
| सितम्बर, दिसम्बर | णे | मः | शा | न | श्री | ग | य |

### (ग)

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ८ | १५ | २२ | २९ | मंगल | बुध | गुरु | शनि | रवि | सोम | शुक्र |
| २ | ९ | १६ | २३ | ३० | बुध | गुरु | शुक्र | रवि | सोम | मंगल | शनि |
| ३ | १० | १७ | २४ | ३१ | गुरु | शुक्र | शनि | सोम | मंगल | बुध | रवि |
| ४ | ११ | १८ | २५ | * | शुक्र | शनि | रवि | मंगल | बुध | गुरु | सोम |
| ५ | १२ | १९ | २६ | * | शनि | रवि | सोम | बुध | गुरु | शुक्र | मंगल |
| ६ | १३ | २० | २७ | * | रवि | सोम | मंगल | गुरु | शुक्र | शनि | बुध |
| ७ | १४ | २१ | २८ | * | सोम | मंगल | बुध | शुक्र | शनि | रवि | गुरु |

हस्तचिह्न विचार मू० 15/-

### (क)

| न | १९५६ | १९८४ | २०१२ | २०४० |
|---|---|---|---|---|
| श्री | ५७ | ८५ | १३ | ४१ |
| ग | ५८ | ८६ | १४ | ४२ |
| णे | ५९ | ८७ | १५ | ४३ |
| शा | १९६० | ८८ | १६ | ४४ |
| य | ६१ | ८९ | १७ | ४५ |
| न | ६२ | १९९० | १८ | ४६ |
| श्री | ६३ | ९१ | १९ | ४७ |
| णे | ६४ | ९२ | २०२० | ४८ |
| मः | ६५ | ९३ | २१ | ४९ |
| शा | ६६ | ९४ | २२ | २०५० |
| य | ६७ | ९५ | २३ | ५१ |
| श्री | ६८ | ९६ | २४ | ५२ |
| ग | ६९ | ९७ | २५ | ५३ |
| णे | १९७० | ९८ | २६ | ५४ |
| मः | ७१ | ९९ | २७ | २०५५ |
| य | ७२ | २००० | २८ | श्री |
| न | ७३ | १ | २९ | |
| श्री | ७४ | २ | २०३० | |
| ग | ७५ | ३ | ३१ | |
| म | ७६ | ४ | ३२ | |
| शा | ७७ | ५ | ३३ | |
| य | ७८ | ६ | ३४ | |
| न | ७९ | ७ | ३५ | |
| ग | १९८० | ८ | ३६ | |
| णे | ८१ | ९ | ३७ | |
| मः | ८२ | २०१० | ३८ | |
| णे | ८३ | ११ | ३९ | |

## कैलेण्डर देखने की विधिः—

ईसवी सन् जिस की तारीख देखनी हो उस सन् को (क) के नीचे वाले चक्र में ढूँढ़िये इसके उपरान्त उसी चक्रमें बाईं ओर जो अक्षर हो उसी अक्षर को जिस महीने की तारीख देखना हो उसकी दाहिनी ओर (ख) चक्र में ढूँढ़िये। उसी अक्षर के ठीक नीचे जो पहला दिन (ग) चक्र में मिले उसी दिन को आपके अभीष्ट महीने की पहली तारीख होगी। लीप वर्ष (Leap-year) [अर्थात् जिस सन् में ४ से भाग देने पर शेष शून्य हो] की जनवरी और फरवरी की तारीखें निर्दिष्ट स्थान के अनुसार ही देखिये।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

**मेष**—मेष लग्न में जन्म लेने वाला चुस्त-चालाक तथा चंचल नेत्रों वाला, सर्वदा रोगी, धर्म के कुछ नियम करने वाला, कृतघ्न, राज से सम्मानप्राप्त, स्वस्त्री-निरत तथा दान देने वाला होता है। नदी-तालाब आदि से डरने वाला और कठिन काम कर्ता होता है। इस पुरुष को जन्म से पहले मास में कष्ट, वर्ष १३ में अल्प, १८ में जल से कष्ट, ५० में अंग-रोग, वर्ष ६ में कठिन बीमारी, इसके पश्चात् ७५ वर्ष तक जीवित रहता है। अपनी जिन्दगी में उन्नति के साधनों की तरफ झगड़ा करके ही तरक्की करता है। भ्रात्र-सुख और पित्र-सुख पूर्ण नहीं होता है। प्रत्येक कार्य को हिम्मत के साथ कर लेने वाला होता है।

**वृष**—वृष लग्न में जन्म लेने वाला रणवीर, बली, धनिक, तेजस्वी, दान-दाता तथा विलास के सुखों को भोगने वाला होता है। अपनी जिंदगी में अच्छे-अच्छे मित्र इसे मिलते हैं। पुत्र और विद्या दोनों उत्तम प्राप्त करता है। विलासिता के कारण पर-दारा-चोरी में मस्त रहता है। वर्ष ३, ६, ८, ३३, ५२, ६२ व ६३ में अल्प भय होता है। यदि इन वर्षों में अपने जीवन को पार करे तो वर्ष ८५ की आयु होती है। अपने हठ पर दृढ़ रहता है। लड़ाई-झगड़े तथा मुकद्दमों में दिक्कतें उठाना, आराम से रहना इसके स्वभाविक कर्म हैं।

**मिथुन**—मिथुन लग्न में जन्म लेने वाला चंचल नेत्र वाला, गायक, यशवान, गुणी और चतुर, श्रेष्ठ बुद्धि वाला, न्यायप्रिय और मीठा शब्द कहने वाला होता है। कष्ट महीना ६, १०, ११, १८, २४, ५३, ६३ में अल्प भय होता है। इसके पश्चात् ७५ वर्ष की आयु होती है। यह स्वभाव का नरम परन्तु दिल का मजबूत होता है। जहां यह प्रत्येक कार्य ईमानदारी से करता है वहां अपने प्रत्येक भाव को दूसरे पर जाहिर भी नहीं करता। विद्या द्वारा इसे सम्मान प्राप्त होता है और यह प्रायः सुख-दुःख में समान भाव से रहता है। सन्तान-सुख मध्यम और आपसी विवाद इसको हर समय घेरे रहते हैं।

**कर्क**—कर्क लग्न में जन्म लेने वाला शूरवीर, धनी, गुरु-सेवक, परम चतुर, पतले शरीर वाला, विदेश में रहने वाला, क्रोधी, दुःखी, श्रेष्ठ मित्रों वाला, अपने घर के मनुष्यों की बजाय श्रेष्ठ बुद्धि वाला तथा मस्तक का रोगी होता है। कष्ट दिन ११ मास, ९ वर्ष १, ७, ९, १३, १६, २०, २७, ३५, ४५, ५५, ६१ में अल्प भय। इसके पश्चात् वर्ष ७० की आयु होती है। यह अपनी जिन्दगी में कभी चंचलता और कभी शांत स्वभाव के कारण पहेलियों में उलझा हुआ रहता है।

**सिंह**—सिंह लग्न में जन्म लेने वाला क्षमा-शील, मांस-भक्षी, देश-देशान्तर घूमने वाला, श्रेष्ठ मित्रों वाला, शीघ्र क्रोधित होने वाला, पिता का प्रिय, व्यसनी, प्रत्येक कार्य में चतुर और संसार में प्रसिद्ध होता है। कष्ट वर्ष १, १०, १५, २५, ४५, ५१, ६१ में अल्प भय, इसके बाद यह ६५ वर्ष तक जीता है। यह मनुष्य अपने बल-भरोसे तथा गर्व से छोटे कार्यों की तरफ ध्यान न देकर बड़े-बड़े कामों के करने में सफल होता है। यह खाद्य सामग्री तथा वस्त्रादि के व्यापार से अपने जीवन में उन्नति करने वाला होता है।

देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार दिल्ली

**कन्या**—कन्या लग्न में जन्म लेने वाला विलासी, धनी, सुन्दर, चतुर, दानी, कवि, सज्जन-प्रिय, विदेश में रहने वाला तथा धर्मनिष्ठ होता है। कष्ट मास ३ वर्ष ३, १३, २६, ३३, ४३ में अल्प भय, इसके अनन्तर वर्ष ८४ तक जीता है। यह पुरुष अपनी जिन्दगी में जहां अच्छा सम्मान प्राप्त करता है वहां अनेक कोशिशें करने पर भी धन एकत्र नहीं करने पाता। उसका व्यापार आम बैंक आदि से सम्बन्धित रहता है। इसकी पवित्र आत्मा होते हुए भी यह किसी से विशेष प्रेम नहीं करता।

**तुला**—तुला लग्न में जन्म लेने वाला मनुष्य दयाशील, चंचल नेत्र वाला, देव-पूजक, प्रवासी, मित्रों का प्रिय और बिना किसी कारण क्रोध करने वाला होता है। कष्ट मास ४, वर्ष १, ४, २१, ३३, ४१, ५१, ६१ में अल्प भय। इसके पश्चात् वर्ष ८५ तक जीवित रहता है। यह पुरुष अपनी जिन्दगी में कभी सुखी नहीं रहता है। प्रतिदिन इसे नवीन घटनाएं पार करनी होती हैं, परन्तु मानसिक शक्ति प्रबल होने के कारण प्रत्येक समस्या को शान्तिपूर्वक एवं न्याय के द्वारा सुलझा लेता है।

**वृश्चिक**—वृश्चिक लग्न में जन्म लेने वाला पापी, पीले नेत्र वाला, दूसरे की स्त्री से प्रेम करने वाला, अभिमानी, अपने कुटुम्ब के लिए कठोर, माता-पिता को दुःख देने वाला, ठगी और चोरी की विद्या में निपुण और बाल्यावस्था से ही परदेश में रहने वाला होता है। कष्ट मास २, वर्ष ३, ७, ८, १३, ३२, ३५, ४५ में अल्प भय। पूर्ण आयु ७५ वर्ष दो माह की होती है। यह मनुष्य अपनी जिंदगी में बहादुरी से धन एकत्र करता है। ससुराल पक्ष से तथा नातेदारों और कानूनी कामों से भी यह धन प्राप्त करता है।

**धन**—धन लग्न में जन्म लेने वाला मनुष्य सत्वगुण वाला, सत्यवक्ता, शूरवीर, धनी, सुन्दर स्त्री वाला, मीठा बोलने वाला, साइन्स और चित्रकला में प्रवीण और स्थूल शरीर वाला होता है कष्ट मास ५, वर्ष ३, ९, ११, १६, २४, ३६, ४७, ५७, ६९ में अल्प भय। इसके बाद वर्ष ८५ जीता है। यह मनुष्य गुप्त रहस्यों को जानने वाला, भविष्यवेत्ता, विश्वासपात्र और शांत स्वभाव का होता है।

यह मनुष्य २२ साल से पहले भी विशेष सुखी नहीं रहता। इसके बाद अपने परिश्रम से धन इकट्ठा करके सुख भोगने वाला होता है।

देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुल्ला, दिल्ली

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

**मकर**—मकर लग्न में जन्म लेने वाला मनुष्य पंडित, संगीत-प्रिय, मातृ-भक्त, दयाशील, दानी, अधिक कुटुम्ब वाला, अपने कुल में हीन और स्त्रियों के वश में रहने वाला होता है। कष्ट मास ३ वर्ष, १,३,१०,३२,४३,५१,५७ में अल्प भय होता है। इसके अनन्तर वर्ष ७३ तक जीवित रहता है। यह आदमी अपनी शूरवीरता, दृढ़ता और परिश्रम से बड़े से बड़े काम को करने में समर्थ होता है। जीवन के प्रत्येक रास्ते में शंका करता है,जिसके कारण दिल प्रसन्न नहीं रहता है। शत्रु भी सदा इसको दबाने की ताक में रहते हैं।

**कुम्भ**—कुम्भ लग्न में जन्म लेने वाला मनुष्य आलसी, दानी, हाथी घोड़ा आदि का स्वामी, सरल स्वभाव, पुण्यवान, निडर, प्रेम से यश प्राप्त करने वाला, धन और विद्या में परिश्रम करने वाला और दूसरों के उपकार को मानने वाला होता है। कष्ट दिन ७, कष्ट वर्ष १, ६, १८, ३२ में अल्प भय। पूर्ण आयु ६१ वर्ष की होती है। यह आदमी चंचल स्वभाव के कारण अनेक फरेबबाजियों से धन एकत्र करने तथा अपना हौंसला बढ़ाने के लिए अनेक तरकीबें सोचता है, परन्तु शत्रुओं की गुप्त चालों के कारण यह किसी कार्य में सफलता प्राप्त नहीं कर पाता।

**मीन**—मीन लग्न में जन्म लेने वाला आदमी गम्भीर, शूरवीर, लोभी, अपने वंश की वृद्धि करने वाला, देव-पूजक, संगीत में चतुर एवं अपने कुटुम्बियों से प्रेम करने वाला होता है। कष्ट वर्ष १, ९, १८, ३३, ४० में होता है। पूर्ण वर्ष ६१ तक जीता है। यह आदमी जिन्दगी में विशेष सम्मान प्राप्त करने वाला तथा बहुत ही सरल स्वभाव का होता है। संगीत, साहित्य, कला-कौशल की विद्वता के साथ उच्च लेखक भी होता है। यह प्रत्येक कारोबार में धन कमाने में लगा रहता है।

नोट—विशेष भाग्य का समस्त जिन्दगी का हाल जानने के लिए 'आपका भविष्य' पुस्तक मंगावें। मूल्य 24/-

## जन्म के वार से फल जानना

● १. रविवार—रविवार के दिन जन्म लेने वाले बालक की प्रकृति तेज होती है। यह चतुर, दान करने वाला तथा प्रेमी होता है। पित्त की बीमारी के रोग इसे लगते हैं। इसे १, ६ महीने में तथा १३, २३वें वर्ष में कष्ट होता है तथा पूर्णायु ५० वर्ष की होती है।

● २. सोमवार—सोमवार के दिन जन्म लेने वाले बालक की प्रकृति शान्त होती है। यह सुख-दुःख दोनों में समान रहने वाला, चतुर, बुद्धिमान् तथा धैर्यवान् होता है। राजकीय नौकरी करने वाला होता है अर्थात् राज्य कर्मचारी होता है। इसे ८, ११ वें महीना तथा १६, २७ वर्ष में कष्ट होता है तथा पूर्णायु ८४ वर्ष की होती है।

● ३. मंगलवार—मंगलवार के दिन जन्म लेने वाले बालक की प्रकृति गरम होती है। यह पराक्रमी, वीर, साहसी एवं संग्राम में विजय प्राप्त करने वाला होता है। इसकी बुद्धि विशेष अच्छी नहीं होती, इसी से यह बौद्धिक कार्यों से अलग रहना पसन्द करता है, परन्तु वीरता के कार्यों में आगे बढ़ने वाला होता है। इसे २, ३२ वें वर्ष में कष्ट होता है तथा पूर्णायु ७४ वर्ष की होती है।

● ४. बुधवार—बुधवार के दिन जन्म लेने वाले बालक की प्रकृति शांत होती है। यह मीठा बोलने वाला, पंडित, धनी, बौद्धिक कार्य करने वाला, लेखक, कवि या मुहर्रिरी करने वाला होता है। इसे ८ वें महीना या ८ वर्ष में कष्ट होता है तथा पूर्णायु ६४ वर्ष की होती है।

● ५. बृहस्पतिवार—बृहस्पतिवार के दिन जन्म लेने वाले बालक की प्रकृति शांत होती है। यह चतुर, विद्वान, राजा का मन्त्री, प्रतिष्ठित नेता, वकील, जज एवं ग्रन्थ-लेखक होता है। इसे ७ वें महीना में तथा १३ व १६ वें वर्ष में कष्ट होता है तथा पूर्णायु ८४ वर्ष की होती है।

● ६. शुक्रवार—शुक्रवार के दिन जन्म लेने वाले बालक की प्रकृति कुछ गर्म होती है। देवताओं की पूजा न करने वाला, क्रोधी, चंचल चित्त वाला, बुद्धिमान्, रूपवान् तथा खेल में मस्त रहने वाला होता है। इसकी बोलने की शक्ति अच्छी होती जिससे समाज में आदर प्राप्त करता है। इसकी पूर्णायु ६० वर्ष की होती है।

● ७. शनिवार—शनिवार के दिन जन्म लेने वाले बालक की प्रकृति तेज होती है। यह दृढ़-प्रतिज्ञ, कामी एवं साहसी होता है। शरीर की स्थिति विशेष अच्छी नहीं होती फिर भी इसका पराक्रम सराहनीय होता है। इसके बाल लम्बे होते हैं। इसे १ महीने में तथा १३ वें वर्ष में कष्ट होता है तथा पूर्णायु १०० वर्ष की होती है।

## अथ सन्तानदाता मंत्र और उसकी जप-विधि

सन्तान का इच्छुक यजमान पत्नी सहित स्नान करके और नवीन वस्त्र पहनकर सन्ध्योपासनादि नित्य-कर्म से निवृत्त होकर जप-स्थान में पूर्व दिशा की तरफ मुंह करके बैठे और यथाविधि श्री गणेशादि देवताओं की पूजा करे। तत्पश्चात् जपार्थ देशकाल के अनन्तर "अमुकगोत्रोत्पन्नो अमुकशर्माहं स्वधर्मपत्न्या चिरंचिव शुभ श्री सन्तान प्राप्त्यर्थं सपादलक्षं सन्तानगोपाल मन्त्रस्य जपं करिष्ये"—यह संकल्प करके विनियोग करे—"ॐअस्य श्रीसन्तानगोपालमन्त्रस्य श्रीनारदऋषि अनुष्टुप् छन्दः श्रीकृष्णो देवता ग्लों बीजम् नमः शक्ति पुत्रा जपेर्थे विनियोगः।" फिर न्यास करे—"देवकी सुत गोविन्दे हृदयाय नमः वासुदेव जगत्पते शिरसे स्वाहा। देहि मे तनयो कृष्ण शिखायै वषट्। त्वामहं शरणं गतः कवचाय हुम्। ॐनमः अस्त्राय फट्।" इसके पश्चात् ध्यान करे—"विजयेन युतो रथस्थितः सममानीय समुद्रनष्यतः। प्रददत तनयाने द्विजन्मसे स्मरणीवो वसुदेव-वन्दनः।" अथ मन्त्र—"देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनय कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।" सवा लक्ष जाप करने के पश्चात् दशांश हवन, दशांश तर्पण, ब्रह्म-भोज यथाविधि करना चाहिए।

देहाती पुस्तक भण्डार

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# कुछ रोगों पर महात्माओं की अनुभूत औषधें

● (१) खांसी—काकड़सिंगी, अतीस, मुलहठी ये तीनों चीजें बराबर लेकर चूर्ण कर लें। शहद से मिलाकर चाटें तो खांसी बन्द हो जाय।

● (२) घाव मरहम—तिल का तेल दो तोला, मोम देशी छह माशे, कत्था छह माशे, सिन्दूर छह माशे, मुरदासंग छह माशे, छोटी इलायची के बीज छह माशे, सफेदा काशगरी छह माशे इन सब चीजों का मरहम बनाकर लगाने से घाव ठीक हो जाता है।

● (३) स्तनों में दूध बढ़ाना—कमलगट्टे की खीर से स्तनों में दूध बढ़ जाता है। (२) बिनौले की गिरी के दो तोले चूर्ण की दूध में खीर बनाकर खाने से स्तनों में दूध बढ़ जाता है।

● (४) रक्त प्रदर—नीम का तेल गाय के दूध में पीने से स्त्री का रक्त प्रदर नष्ट हो जाता है।

● (५) उन्माद—ईख कुटकी सम भाग दूध और शक्कर मिलाकर नासिका में डालकर नस्य लेने से सब प्रकार के उन्माद नष्ट होते हैं।

● (६) गर्भ प्राप्त—बिजौरे नीबू के बीजों को दूध में पकाकर घी के साथ पीने से स्त्री को गर्भ प्राप्त होता है।

● (७) ज्वरातिसार—असगन्ध, दालचीनी, नागरमोथा, वाराहीकन्द, धाय के फूल और कुड़ा इनसे सिद्ध जल क्वाथ चार-पांच दिन में ज्वरातिसार की शान्ति करता है।

● (८) अर्श—हरड़ और लहसन चार माशे और हाड़जोड़ आठ माशे, कुछ तेल और नमक मिलाकर लगाने से अर्श रोग का नाश होता है।

● (९) बवासीर—अगर बवासीर को जड़ से खोना है तो एक मास तक अन्न नहीं खाना चाहिए। केवल जिमीकन्द का सेवन सुख पूर्वक करने से बवासीर नष्ट होता है।

● (१०) बिच्छू का जहर—हुलहुल की जड़ बिच्छू काटे मनुष्य को सात बार सुंघाने से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

● (११) पुराने दस्त—साढ़े चारमाशे रीठा को आधा पाव पानी में भिगोकर झाग उठायें। फिर उस पानी को छानकर रोगी को पिला दें। कुछ दिन पिलाने से पुराने दस्त ठीक हो जाते हैं।

● (१२) जूएं—धतूरे के पत्तों का अर्क कूटकर निकाल लें। इस अर्क को सिर में लगाने से जुएं मर जाती हैं।

● (१३) आंख दुखना—बबूल के पत्तों को रात के समय कूटकर टिकियां बना लें। इन टिकियों को दुखती आंखों पर रखकर ऊपर से पट्टी बांध कर सो जायं, सुबह तक आंखों की लाली तथा पीड़ा दूर हो जायेगी।

● (१४) पेट का दर्द—पीपल के दो पत्तों को पीसकर गुड़ में मिलाकर खाने से पेट का दर्द दूर हो जाता है।

● (१५) गंज—बरगद के पत्तों को अलसी के तेल में भूनकर प्रातः सायं गंज पर मलने से कुछ दिनों में गंजे सिर पर बाल उग आते हैं।

● (१६) तुतलाना—प्रतिदिन सत्यानाशी की एक नई डाली को तोड़कर जीभ पर लगायें, फिर उसके दूध को उंगली से जीभ पर मलें। कुछ दिन तक यह क्रिया करने से तुतलाना ठीक हो जाता है।

● (१७) पेट के कीड़े—इन्द्रायण की जड़ को महीन पीसकर कपड़छान कर लें। ३ माशा चूर्ण में १ तोला पुराना गुड़ मिलाकर खूब कूटें फिर गुलाब जल के छींटे देकर नरम करके ६ गोलियां बना लें। प्रतिदिन २ गोली गरम पानी के साथ सेवन करने से पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

● (१८) दाद—ढाक के बीज तथा कत्था दोनों को बराबर लें, पानी में पीसकर लेप करने से दाद कुछ ही दिनों में ठीक हो जाता है।

● (१९) मुंह के दाग—तुलसी के पत्तों के रस में नीबू का रस मिलाकर चेहरे पर मलने से झांई, मुंहासे आदि चेहरे के दाग दूर होते हैं।

● (२०) उदर-विकार—१ पाव गुलाब जल में १ पाव अनारदाना भिगोकर रात भर रख दें, सुबह उसे मलकर छानकर पी जायं। इससे हर प्रकार के उदर-विकार, आधा सीसी तथा नेत्र रोगों को लाभ होता है।

● (२१) हैजा—ढाई तोला प्याज तथा ७ काली मिर्च को सिल या खरल में डालकर इतना पीसें कि छानने की जरूरत न रहे, फिर उसमें उतना पानी मिला दें जितना रोगी पी सके। इसे पिलाते ही हैजा की घबराहट, प्यास, कै तथा दस्तों को लाभ होता है।

● (२२) काली खांसी—छोटे बच्चों के गले में लहसुन की कलियों को गूंथकर माला बनाकर पहना देने से ही उनकी काली खांसी ठीक हो जाती है।

● (२३) जुलाब—ढाई तोला अण्डी का साफ किया हुआ तेल रात्रि के समय दूध के साथ पीने से प्रातः साफ दस्त आता है।

● (२४) पेचिश—सौंफ ५ तोला, बेलगिरी ५ तोला और मिश्री १० तोला—तीनों को कूट-पीस कर ६-६ माशे चूर्ण को ताजा पानी के साथ सुबह-शाम लेने से पेचिश दूर होती है।

● (२५) प्लीहा—कच्ची मूली का सेवन करना यकृत् तथा पीलिया रोग में लाभ करता है।

● (२६) मृगी—दो माशे तम्बाकू के पत्तों को एक पाव खौलते हुए पानी में एक घंटे तक डाले रक्खें। फिर पानी को छानकर आधी छटांक की मात्रा में प्रातः सायं पिलायें। एक सप्ताह के प्रयोग से मृगी रोग पूरी तरह ठीक हो जाता है।

● (२७) कण्ठ माला—काशीफल के टुकड़ों को पानी में गर्म करें। उस गर्म पानी के गरारे करने से कण्ठ माला रोग में लाभ होता है।

● (२८) दाढ़ का दर्द—एक लाल मिर्च को पानी में महीन पीसकर छान लें। उस पानी को थोड़ा-सा गरम करके जिस ओर की दाढ़ में दर्द हो उसके दूसरी ओर के कान में डाल दें तो दाढ़ का दर्द तुरंत बन्द हो जाता है। इस प्रयोग से कान में दर्द होने लगे तो थोड़ा-सा शुद्ध घी गरम करके कान में डाल देना चाहिए तो उससे कान का दर्द दूर हो जाता है।

● प्याज, लहसुन, नमक, मिर्च हल्दी, धनिया, अदरक, घी, शहद, जीरा, पानी, मिट्टी, मट्ठा, दूध, दही, कौड़ी आदि लगभग ७० वस्तुएं ऐसी हैं, जो हर घर में मौजूद रहती हैं और वे अकेली ही, मिन्टों में विभिन्न प्रकार के रोगों में लाभ पहुंचाती हैं। इन वस्तुओं के गुण तथा उपयोगों की जानकारी देने वाली अलग-अलग पुस्तकें हमारे यहां से प्रकाशित हुई हैं। इन पुस्तकों का अध्ययन आप अवश्य करें। इन पुस्तकों के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए हमारे यहां से 'घर का वैद्य' 15-00 नामक पुस्तक आज ही मंगायें।

# श्री रामशलाका प्रश्नावली

यहां नीचे श्री रामशलाका प्रश्नोत्तर विधि दी जाती है। अभीष्ट प्रश्न का उत्तर चाहने वाले सज्जन पहले भगवान् श्री रामचन्द्रजी का ध्यान करें, फिर श्रद्धापूर्वक किसी भी कोष्ठ में उंगली या शलाका रखें और उस अक्षर को कोरे कागज या स्लेट पर लिख लें। अब इसके आगे पढ़ें और नवें कोष्ठक में जो अक्षर पड़, उसे भी लिख लें। इस प्रकार प्रत्येक नवें अक्षर को गिनकर लिखते जाने से चौपाई तैयार होगी, जो आपके अभीष्ट प्रश्न का उत्तर होगा।

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सु | प्र | उ | वि | हो | मु | ग | व | सु | नु | वि | ध | धि | इ | द |
| र | रु | फ | सि | सि | रें | जस | है | मं | ल | ण | ल | य | न | अं |
| सुज | सो | ग | सु | कु | म | ग | ग | त | न | इ | ल | धा | बे | नो |
| त्य | र | न | कु | जो | म | रि | र | र | अ | की | हो | सं | रा | य |
| पु | मु | ध | सी | जे | इ | ग | ग | सं | क | रे | हो | स | स | नि |
| ति | र | त | र | श | ईं | ह | ब | ब | प | चि | स | इ | स | तु |
| म | का | ा | र | र | मा | मि | मी | ह्मा | ा | जा | हू | हीं | ा | जू |
| ता | रा | रे | री | ह | का | फ | खा | जि | ई | र | रा | पू | द | ल |
| णि | को | मि | गो | ण | म | ज | य | मे | मणि | क | ज | प | स | ल |
| हि | रा | मि | स | रि | ग | द | न् | ष | भ | खि | जि | मनि | त | जं |
| सिं | मु | ण | न | को | मि | ज | र | ग | धु | ख | सु | का | स | र |
| गु | क | म | अ | ध | नि | म | ल | ा | ण | य | तो | न | रि | भ |
| ना | पु | व | अ | ढा | र | ल | का | ए | तु | र | न | नु | व | थ |
| सि | हु | सु | ह्म | रा | र | स | हि | र | त | न | ख | ा | जा | ा |
| र | सा | ा | ला | धी | ा | री | ज | हू | हीं | खा | जू | ई | रा | रे |

उदाहरण—पहले कोष्ठक पर उंगली या शलाका रखने से अक्षर 'नु' आया 'मु' के बाद नवां अक्षर गिनकर लिखते गये तो चौपाई बनी:

**१—सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी॥**

फल—प्रश्न उत्तम है, कार्य की सिद्धि होगी।

इसी प्रकार बनने वाली आठ अन्य चौपाइयां और उनका फल इस प्रकार है—

**२—होईहै सोई जो राम रचि राखा। को करि तरक बढ़ावहि साखा॥**

फल—कार्य होने में सन्देह है। अतः उसे भगवान् पर छोड़ देना श्रेयस्कर है।

**३—प्रविसि नगर कीजै सब काजा। हृदय राखि कोसलपुर राजा॥**

फल—भगवान् का स्मरण करके कार्य आरम्भ करो, सफलता मिलेगी।

**४—उधरें अन्त न होई निबाहू। कालनेमि जिमि रावन राहू॥**

फल—इस कार्य में भलाई नहीं है। कार्य पूरा होने में सन्देह है।

**५—विधि बस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनिसमनिज गुन अनुसरहीं॥**

फल—खोटे मनुष्यों का संग छोड़ दो। कार्य पूरा होने में विलम्ब है।

**६—मुद मंगलमय सन्त समाजू। जिमि जग जंगम तीरथराजू॥**

फल—प्रश्न बहुत श्रेष्ठ है। कार्य सफल होगा।

**७—गरल सुधा रिपु करिय मिताई। गोपद सिन्धु अनल सितलाई॥**

फल—प्रश्न बहुत श्रेष्ठ है। कार्य सफल होगा।

**८—बरुन कुबेर सुरेस समीरा। रन सनमुख धरि काहु न धीरा॥**

फल—कार्य पूरा होने में सन्देह है।

**९—सुफल मनोरथ होहु तुम्हारे। राम लखन सुनि भए सुचारे॥**

फल—प्रश्न उत्तम है, कार्य सिद्ध होगा।

देहाती पुस्तक भण्डार


धार्मिक पुस्तकें पढ़कर पुण्य कमाइये

तुलसीकृत रामायण भाषा-टीका-सहित

टीकाकार—पं० ज्वालाप्रसाद जी

मूल्य 51/

इसमें आठों काण्डों के प्रत्येक दोहा, चौपाई, सोरठा और छन्दों का अर्थ सरल व अत्यन्त शुद्धतापूर्वक लिखा गया है। गोस्वामी तुलसीदासजी का जीवन-चरित्र, श्री रामशलाका प्रश्नोत्तरी, मास पारायण विधि, रामायण माहात्म्य, नवान्ह मास पारायण विश्राम, हनुमान चालीसा, श्री रामचन्द्र जी के वंश का वृक्ष, गूढ़ार्थ शब्द कोश, राम-नाम महामन्त्र, सप्तदेवों की आरती, राम कलेवा, सुलोचना सती, अहिरावण वध, नारान्तक वध सभी टीका सहित दिये गए हैं।

बाल्मीकीय रामायण भाषा

मूल्य 51/-

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6


CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# श्रीकृष्णशलाका प्रश्नावली



यहां नीचे कृष्णशलाका प्रश्नोत्तर विधि दी जाती है। अभीष्ट प्रश्न का उत्तर चाहने वाले सज्जन पहले भगवान् श्री कृष्ण-चन्द्र का ध्यान करें। फिर श्रद्धापूर्वक किसी भी कोष्ठ में उंगली या शलाका रखें और उस अक्षर को कोरे कागज या स्लेट पर लिख लें। अब इसके आगे पढ़ें और बारहवें कोष्ठक में जो अक्षर पड़े उसे भी लिख लें। इस प्रकार प्रत्येक बारहवें अक्षर को लिखते जाने से चौपाई तैयार होगी जो आपके अभीष्ट प्रश्न का उत्तर होगा।

| | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मि | भ | म | ह | हो | अ | त | वि | कि | क | का | मि | लि | ा | न | रि | इ | स |
| न | धि | ये | ह | य | ल | ह | गि | अ | इ | ह | फ | म | वि | सु | ध | न | त |
| हि | तु | नु | च्छा | हु | ल | न | धा | कृ | र्म | हो | न | तु | म्हा | फू | ह | स | हो |
| क | न | त | ध | इ | शा | म | रि | ल | रि | फ | इ | र | क | ब | जे | अ | न्ति |
| हि | न | स | स | ल | नि | जं | र | हु | हि | स | कु | धि | जा | दा | न | स | र |
| हु | उ | पा | प | म | स | ज | य | हो | न | दा | ा | में | ल | व | र | भ | ङ्ग |
| ब | व | इ | हिं | स | श | ल | ट | त | तृ | व | ति | र | ख | ज | पू | व | न |
| न | न | म | व | को | म | न | ा | ा | छ | ठ | ह | हो | ह | ा | दा | ई | ा |
| म | गी | ई | ा | ा | ो | ई | ा | हीं | या | स | हो | ा | थ | धि | हो | हीं | ई |
| व | रा | व | स | ा | नि | हीं | न्य | धि | इ | न | स | न | न | ह | ह | ह | त |
| जी | न | धि | ह | हीं | फ | त | हि | ग | ज | स | न | ति | को | धा | हु | त | ल |
| न | स | ति | हिं | क | व | न | उ | न | अ | नि | ह | क | म | द | सु | र | व्या |
| स | तु | मं | व | क | ो | ा | र्थ | ो | ल | इ | धि | क | न | ह | शि | सं | त |
| ज | को | न | भ | ल | ग्र | त | स | य | म | श | सं | क | उ | अ | वि | ह | ह |
| इ | म | ह | नो | य | श | ह | य | ा | ज | इ | त | न्द्र | ज | न | र | य | य |
| त | हि | जु | व | फ | न | हू | ग | हिं | ग | हि | न | स | सं | तो | य | ल | र |
| च | प्र | भ | छू | म | हि | व | स | हिं | दु | स | क | ा | ा | ा | छ | ा | को |
| को | ा | का | रा | ो | ा | ही | नी | ई | ा | हीं | ई | ई | रा | हीं | या | ई | हीं |

उदाहरण—हमने श्रीकृष्णशलाका प्रश्नावली में 'र' पर उंगली या शलाका रखी, इससे अगला अक्षर 'क' है। अतः 'क' को एक मानकर उससे आगे गिनने पर बारहवां अङ्क 'ज' मिला। इसी प्रकार गिनते रहने पर निम्न चौपाई बनी। ऐसी जो अन्य चौपाइयां बनती हैं, वे फल सहित यहां दी गई हैं:

तन मन कर जहं मेल न होई। बनत न काज कहत सब कोई॥

फल—भारतकाण्ड में गांधारी अपने पुत्र को समझा रही है। फल उत्तम नहीं। कार्य में पूर्ण रूप से मन नहीं लग रहा है। इससे अभीष्ट कार्य के सिद्ध होने में सन्देह है।

मन अनुकूल सदा होइ जाई। विधि विधान में यह नहिं भाई॥

फल—द्वारका काण्ड में जरासन्ध शिशुपाल को रुक्मणी स्वयम्वर के समय हार जाने पर समझा रहा है। इसका फल मध्यम है। किसी अभीष्ट की आशंका तो नहीं है, परन्तु अभीष्ट कार्य की सिद्धि भी नहीं होगी।

हरि इच्छा हरिसन नहिं पूछा। होइहहु अवसि मनोरथ छूछा॥

फल—स्वर्गारोहण काण्ड में बिना भगवान् कृष्ण के पूछे ऋषियों के शाप से साम्ब के पेट से निकले मूसल को चूर्ण करके समुद्र में फेंक दिया था। इसका फल खराब है। अभीष्ट कार्य की सिद्धि कभी भी नहीं होगी।

होइहहु सफल सदा सब ठांहीं। नहीं तनिक संशय यहि माहीं॥

फल—यह चौपाई भीष्मजी के राजनीतिक उपदेश के ज्ञान-काण्ड में से है। प्रश्न-फल उत्तम है। अभीष्ट कार्य की सिद्धि अवश्य होगी।

असफल होय निराश न होई। सफल होत संशय नहिं कोई॥

फल—यह चौपाई उस समय की है जब श्रीकृष्ण ने अपने सखाओं को समझाकर व्रजकाण्ड में भोजन के हेतु द्विज पत्नियों के पास भेजा था। फल सामान्य है। निरन्तर प्रयत्न करने से ही फल मिलना संभव है।

भागि तुम्हारि न जाय बखानी। धन्य न कोउ तुम सम जग प्रानी॥

फल—भारत-काण्ड में इसको सूर्य-ग्रहण के अवसर पर इकट्ठे हुए राजा-महाराजा उग्रसेन से कहते हैं। इसका फल उत्तम है। अभीष्ट कार्य की सिद्धि होगी

विधि विधान कर उलटन हारा। नहिं समर्थ कोउ यहि संसारा॥

फल—मथुरा-काण्ड में अक्रूरजी के समझाने पर धृतराष्ट्र का कथन है। प्रश्न फल सामान्यतया उत्तम नहीं है और अभीष्ट कार्य की सिद्धि पाना संदेहास्पद जान पड़ता है।

किये सुकृत बहु पावत नाहीं। वह गति दीन आजु तोहि काहीं॥

फल—स्वर्गारोहण काण्ड में भगवान् कृष्ण अपने पैर के तलवे में बाण मारने वाले व्याध को शुभ गति दे रहे हैं। प्रश्न-फल अतीव श्रेष्ठ है। अभीष्ट कार्य की सिद्धि शीघ्र ही मिलेगी।

कह धर्मज जेहि पर तत्व दाया। सहजहिं सुलभ विजय यदुराया।

फल—भारतकाण्ड में भीष्मपितामह के रथ से गिर जाने पर युधिष्ठिर भगवान श्रीकृष्ण से कह रहे हैं। प्रश्नफल श्रेष्ठ है। अभीष्ट कार्य सिद्ध होगा।

काम न होइ असम्भव कोई। साहस करइ लहइ फल सोई॥

फल—व्रजकाण्ड में भगवान् कृष्ण व्रजवासियों से वृषभासुर द्वारा भयभीत होने पर कह रहे हैं। प्रश्नफल सामान्यतया उत्तम है। साहसपूर्वक निरन्तर प्रयत्न करने पर ही अभीष्ट कार्य की सिद्धि होगी।

मिलत न शांति कुसंगति माहीं। नितनव व्याधि ग्रसत नर काहीं॥

फल—भारतकाण्ड में धृतराष्ट्र के दरबार में जाकर भगवान् श्रीकृष्ण सुयोधन को सन्धि के लिए समझा रहे हैं। प्रश्नफल अत्यन्त नेष्ट है। अभीष्ट कार्य के अतिरिक्त अनिष्ट होने की सम्भावना भी है।

मिलिहहि तुमहि विजय रन माहीं। जीत न सकत इन्द्रहू चाहीं॥

फल—युद्ध के लिए तैयार अर्जुन ने जब भगवती दुर्गा देवी की स्तुति की तो भगवती दुर्गा ने उन्हें यह आशीर्वाद दिया। यह उसी समय की चौपाई है। प्रश्नफल अत्यन्त श्रेष्ठ है। अभीष्ट कार्य की सिद्धि अवश्य ही शीघ्र प्राप्त होगी।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# भविष्य-ज्ञान प्रश्नावली

यह प्रश्नावली चौंतीस यन्त्र के आधार पर बनाई गई है। इससे प्रश्न का उत्तर जानने की क्रिया निम्न प्रकार है :

## यंत्र से प्रश्न का उत्तर जानने की क्रिया

प्रश्न करने वाला श्री सच्चिदानन्द-स्वरूप भगवान का स्मरण कर दाईं ओर लिखे प्रश्नों में से अपने प्रश्न का उच्चारण करे। नीचे लिखे चौंतीसा यन्त्र के कोठों में से किसी एक कोठे में अंगुली रखे। इसके पश्चात् प्रश्न की संख्या तथा जिस कोठे में अंगुली रखी थी उस कोठे के अंक को जोड़े और फिर उसमें से एक घटावे। जो शेष बचे उस संख्या के प्रश्न के सामने जिस देवता का नाम लिखा हो, उसी देवता के प्रश्न-फल में चौंतीसा यन्त्र में अंगुली रखे हुए कोठे के अंक पर अपने प्रश्न का उत्तर देखे तो इच्छित उत्तर प्राप्त होगा।

उदाहरण १—जैसे कि प्रश्न करने वाले ने भगवान का स्मरण कर १५ संख्या वाले प्रश्न को बोला कि 'स्वप्न का फल कैसा है।' यह प्रश्न करने के पश्चात् उससे चौंतीसा यन्त्र के कोठों में से किसी एक पर अंगुली रखने को कहा तो उसने तेरह अंक वाले कोठे पर अंगुली रखी। इसके पश्चात् कोठे के अंक १३ और प्रश्न की संख्या १५ को जोड़ा तो १३+१५=२८ हुए। इनमें से १ घटाया तो २८—१=२७ शेष रहे। अब सत्ताईसवें प्रश्न के सामने देवता का नाम देखा तो कुबेर मिला। अब कुबेर प्रश्न-फल में चौंतीसा यन्त्र में अंगुली रखे, कोठे के अंक १३ पर प्रश्न का उत्तर देखा तो 'स्वप्न का फल शुभ नहीं है' यह उत्तर मिला।

उदाहरण २—उपर्युक्त प्रकार से प्रश्न करने वाले ने २९ संख्या वाले प्रश्न, 'मेरी इच्छा पूरी होगी या नहीं' को बोला और चौंतीसा यन्त्र में १६ अंक वाले कोठे में अंगुली रखी तो प्रश्न-संख्या २९ और चौंतीसा यन्त्र के कोठे के १६ को जोड़ा तो २९+१६=४५ हुए। इनमें से १ घटाया तो ४५—१=४४ शेष रहे। ये ३४ से अधिक हैं इसलिए ४४ में से ३४ घटाये तो १० शेष रहे। अब १० संख्या वाले प्रश्न के सामने 'वसुदेव' का नाम मिला। अब वसु प्रश्न-फल में चौंतीसा यंत्र में अंगुली रखे हुए कोठे के १६ अंक पर प्रश्न का उत्तर देखा तो 'इच्छा पूरी होगी' यह उत्तर मिला। इस प्रकार सभी प्रश्नों का उत्तर जानना चाहिए।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ९ | १६ | २ | ७ |
| ६ | ३ | १३ | १२ |
| १५ | १० | ८ | १ |
| ४ | ५ | ११ | १४ |

## प्रश्न

| क्रम | प्रश्न | देव का नाम |
|---|---|---|
| १ | सन्तान सुख होगा या नहीं | गणेश |
| २ | मुकद्दमा में हार होगी या जीत | ब्रह्मा |
| ३ | भाग्योदय कब होगा | विष्णु |
| ४ | नौकरी मिलेगी या नहीं | शिव |
| ५ | तरक्की का योग है या नहीं | इन्द्र |
| ६ | खेती में लाभ होगा या हानि | अग्नि |
| ७ | मकान बनेगा या नहीं | वायु |
| ८ | पास होऊंगा या फेल | सूर्य |
| ९ | विद्या प्राप्त होगी या नहीं | चन्द्रमा |
| १० | मेरा जीवन कैसा व्यतीत होगा | वसु |
| ११ | जीवन में सफलता मिलेगी या नहीं | वरुण |
| १२ | गड़ा धन मिलेगा या नहीं | पृथ्वी |
| १३ | विवाह होगा या नहीं | अश्विनीकुमार |
| १४ | बीमार अच्छा होगा या नहीं | मंगल |
| १५ | स्वप्न-फल कैसा है | बुध |
| १६ | तबादला होगा या नहीं | बृहस्पति |
| १७ | व्यापार से लाभ रहेगा या हानि | शुक्र |
| १८ | मेरी चिंता दूर होगी या नहीं | शनि |
| १९ | मित्र के साथ कैसी बनेगी | राहु |
| २० | कर्ज मिलेगा या नहीं | केतु |
| २१ | खोई वस्तु मिलेगी या नहीं | ध्रुव |
| २२ | परदेशी कब आयेगा | यम |
| २३ | यात्रा से लाभ मिलेगा या हानि | विश्वेदेवा |
| २४ | भाइयों से कैसी बनेगी | यक्ष |
| २५ | कुआं बनेगा या नहीं | भैरव |
| २६ | यह वर्ष कैसा रहेगा | वासुकि |
| २७ | आज का दिन कैसा रहेगा | कुबेर |
| २८ | पुत्र होगा या कन्या | मित्र |
| २९ | मेरी इच्छा पूरी होगी या नहीं | जयन्त |
| ३० | स्त्री कैसे स्वभाव की मिलेगी | तक्षक |
| ३१ | सम्बन्धी धोखा तो नहीं देगा | शेष |
| ३२ | अमुक स्त्री मुझसे प्रेम करती है या नहीं | काम |
| ३३ | तीर्थ-यात्रा को जाना होगा या नहीं | काल |
| ३४ | मन्दिर बनेगा या नहीं | अनन्त |


## प्रश्न ज्योतिष शास्त्र

स्त्री-पुरुषों के जीवन में घटने वाली घटनाओं, भूत, भविष्य तथा वर्तमान कालीन किसी भी विषय की जानकारी प्रश्न के द्वारा जानने की अनेकों शास्त्रीय विधियां इस पुस्तक में दी गई हैं। मू० 15/-

## सरल भृगु गुप्त प्रश्नोत्तरी मू० 15/-

महात्मा भृगु की पद्धति से विभिन्न प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने की सरल विधियों का वर्णन इस पुस्तक में किया है। इसके द्वारा आप स्वयं तो लाभ उठायेंगे ही अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों को भी लाभान्वित कर सकते हैं।

**देहाती पुस्तक भंडार** (REGD.) चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006. फोन : 261030


CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## गणेश-प्रश्न-फल

१ सन्तान को सुख मिलेगा।
२ किसी की सहायता से मन्दिर बनेगा।
३ तीर्थ यात्रा में विघ्न पड़ेगा।
४ शुद्ध प्रेम करती है।
५ सम्बन्धी धोखा दे सकता है।
६ स्त्री का स्वभाव गरम रहेगा।
७ इच्छा पूरी होने में देरी है।
८ कन्या होगी।
९ दिन मध्यम रहेगा।
१० यह वर्ष उत्तम है।
११ कूप-निर्माण नहीं होगा।
१२ भाइयों में अच्छी बन जाएगी।
१३ यात्रा से लाभ मिलना कठिन है।
१४ परदेशी शीघ्र ही आयेगा।
१५ खोई वस्तु शीघ्र मिल जाएगी।
१६ कर्ज कठिनाई से मिलेगा।

## शिव-प्रश्न-फल

१ नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
२ भाग्योदय में देर है।
३ मुकदमे में हार होगी।
४ संतान सुख की आशा पूरी होगी।
५ मन्दिर नहीं बन सकेगा।
६ तीर्थ-यात्रा नहीं होगी।
७ प्रेम करती है।
८ सम्बन्धी धोखा दे। सावधान।
९ स्त्री के स्वभाव से मेल मिल जायगा।
१० इच्छा पूरी होगी।
११ पुत्र होगा।
१२ दिन शुभ है।
१३ यह वर्ष उत्तम नहीं बीतेगा।
१४ कूप-निर्माण की आशा पूरी होगी।
१५ भाइयों से बननी कठिन है।
१६ यात्रा से लाभ मिलेगा।

## वायु-प्रश्न-फल

१ मकान बनाने की कामना पूरी होगी।
२ खेती से लाभ कम होगा।
३ तरक्की का योग नहीं है।
४ नौकरी काफी प्रयत्न से ही मिलेगी।
५ भाग्योदय शीघ्र होने वाला है।
६ मुकदमे में जीत पाना कठिन है।
७ संतान का सुख मिलेगा।
८ मंदिर बनाने की कामना पूरी होगी।
९ विघ्न के कारण तीर्थ-यात्रा नहीं होगी।
१० प्रेम करती है।
११ संबंधी धोखा देने में नहीं चूकेगा।
१२ स्त्री का स्वभाव कुछ चिड़चिड़ा है।
१३ इच्छा पूरी होगी।
१४ कन्या होगी।
१५ दिन अच्छा नहीं है।
१६ यह वर्ष मध्यम रहेगा।

## ब्रह्मा-प्रश्न-फल

१ मुकदमे में जीत होगी।
२ संतान हेतु गृह देवता की पूजा करो।
३ मन्दिर अभी नहीं बनेगा।
४ तीर्थ-यात्रा की आशा पूरी होगी।
५ इस समय वह प्रेम नहीं करती है।
६ सम्बन्धी धोखा देगा।
७ स्त्री का स्वभाव सरल रहेगा।
८ इच्छा पूरी नहीं हो सकेगी।
९ पुत्र होगा।
१० दिन शुभ रहेगा।
११ यह वर्ष उत्तम नहीं है।
१२ कूप-निर्माण की आशा पूरी होगी।
१३ भाइयों से बननी बहुत कठिन है।
१४ यात्रा से लाभ होगा।
१५ परदेशी अभी नहीं आ रहा है।
१६ खोई वस्तु नहीं मिलेगी।

## इंद्र-प्रश्न-फल

१ तरक्की के योग अच्छे हैं।
२ नौकरी प्रयत्न से मिलेगी।
३ भाग्योदय अभी नहीं हो सकेगा।
४ मुकदमे में जीत होगी।
५ संतान-सुख उपाय से मिलेगा।
६ मन्दिर की आशा पूरी होगी।
७ तीर्थ यात्रा कर सकोगे।
८ प्रेम नहीं करती, दिखावटी प्रेम है।
९ सम्बन्धी गुप्त चाल चलेगा।
१० स्त्री का स्वभाव अच्छा रहेगा।
११ इच्छा पूरी होने में सन्देह है।
१२ कन्या होगी।
१३ दिन मध्यम है।
१४ यह वर्ष कठिनाई के साथ बीतेगा।
१५ कूप-निर्माण देरी से होगा।
१६ भाइयों से अच्छा मेल रहेगा।

## सूर्य-प्रश्न-फल

१ पास हो जाओगे।
२ मकान के बनने में देर है।
३ खेती से लाभ नहीं होगा।
४ तरक्की शीघ्र होगी।
५ नौकरी अभी नहीं मिलेगी।
६ भाग्योदय अभी देर से होगा।
७ मुकदमा जीत जाओगे।
८ संतान-सुख में बाधा, गोपालजप कराओ।
९ मन्दिर निर्माण देर से होगा।
१० तीर्थ-यात्रा सकुशल होगी।
११ प्रेम दिखावटी है।
१२ सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
१३ स्त्री का स्वभाव उत्तम रहेगा।
१४ इच्छा पूरी नहीं होगी।
१५ पुत्र होगा।
१६ दिन शुभ है।

## विष्णु-प्रश्न-फल

१ भाग्योदय शीघ्र ही होगा।
२ मुकदमे के जीतने में सन्देह है।
३ सन्तान-सुख उपाय से होगा।
४ मन्दिर बनाने की आशा पूरी होगी।
५ तीर्थ-यात्रा नहीं होगी।
६ गुप्त प्रेम करती है।
७ सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
८ स्त्री का स्वभाव उत्तम रहेगा।
९ इच्छा पूरी होने में सन्देह है।
१० कन्या होगी।
११ दिन शुभ नहीं रहेगा।
१२ यह वर्ष शुभ रहेगा।
१३ कूप निर्माण नहीं होगा।
१४ भाइयों से नहीं बनेगी।
१५ यात्रा से लाभ पाना कठिन है।
१६ परदेशी देर से आयेगा। चिन्ता न करें

## अग्नि-प्रश्न-फल

१ खेती से लाभ होगा।
२ तरक्की के योग में देर है।
३ नौकरी नहीं मिलेगी।
४ भाग्योदय शीघ्र ही होगा।
५ मुकदमे की जीत में सन्देह है।
६ सन्तान-सुख देर से होगा।
७ मन्दिर मित्र की सहायता से बनेगा।
८ तीर्थ-यात्रा होने में सन्देह है।
९ प्रेम का दिखावा ही अच्छा है।
१० सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
११ स्त्री का स्वभाव अच्छा नहीं होगा।
१२ इच्छा पूरी नहीं हो सकेगी।
१३ पुत्र होगा।
१४ दिन उत्तम हैं।
१५ यह वर्ष उत्तम है।
१६ कूप-निर्माण की आशा पूरी होगी।

## चंद्रमा-प्रश्न-फल

१ विद्या प्राप्त करोगे।
२ पास होने में सन्देह है।
३ मकान नहीं बन सकेगा।
४ खेती से लाभ मिलेगा।
५ तरक्की का योग अभी नहीं है।
६ नौकरी मिल जायेगी।
७ भाग्य का सितारा शीघ्र चमकेगा।
८ मुकदमा जीतने में संदेह है।
९ संतान-सुख देरी से होगा।
१० मन्दिर नहीं बन सकेगा।
११ तीर्थ-यात्रा नहीं कर सकोगे।
१२ प्रेम का चक्कर हानिकारक है।
१३ सम्बन्धी धोखा दे। सावधान।
१४ स्त्री का स्वभाव अच्छा नहीं है।
१५ इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१६ कन्या होगी।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji). Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## वसु-प्रश्न-फल

१ जीवन-सुखपूर्वक व्यतीत होगा ।
२ विद्या थोड़ी प्राप्त कर सकोगे ।
३ फेल हो जाओगे ।
४ मकान की आशा पूरी नहीं होगी ।
५ खेती से लाभ कम होगा ।
६ तरक्की का योग बन रहा है ।
७ नौकरी मिलने में देर है ।
८ भाग्योदय का समय नजदीक है ।
९ मुकद्दमे में जीत निश्चित है ।
१० सन्तान-सुख नहीं मिलेगा ।
११ मन्दिर अभी नहीं बनेगा ।
१२ तीर्थयात्रा की आशा पूरी नहीं होगी ।
१३ शुद्ध प्रेम करती है ।
१४ सम्बन्धी धोखा नहीं देगा ।
१५ स्त्री उत्तम स्वभाव की मिलेगी ।
१६ इच्छा पूरी होगी ।

## अश्विनी-प्रश्न-फल

१ विवाह हो जाएगा ।
२ गड़ा धन विशेष उपाय द्वारा मिले ।
३ जीवन में सफलता पाना कठिन है ।
४ जीवन उत्तम प्रकार से बीतेगा ।
५ विद्या प्राप्त नहीं कर सकोगे ।
६ पास नहीं हो सकोगे ।
७ मकान की कामना देर से पूरी होगी ।
८ खेती से लाभ नहीं होगा ।
९ तरक्की के योग में देरी है ।
१० नौकरी मिल जायेगी ।
११ भाग्योदय निकट-भविष्य में होगा ।
१२ मुकद्दमे में जीत होगी ।
१३ सन्तान-सुख उपाय से होगा ।
१४ मन्दिर अभी नहीं बनेगा ।
१५ तीर्थ यात्रा नहीं हो सकेगी ।
१६ शुद्ध प्रेम करती है ।

## बृहस्पति-प्रश्न-फल

१. तबादला शीघ्र हो जायेगा ।
२. स्वप्न का फल विशेष अच्छा नहीं है
३. बीमार के ठीक होने में सन्देह है ।
४ विवाह हो जायेगा ।
५ गड़ा धन उपाय से मिलेगा ।
६ जीवन में सफलता कम मिलेगी ।
७ जीवन अच्छी तरह से बीतेगा ।
८ विद्या प्राप्त होना कठिन है ।
९ पास हो जाओगे, शिव-पूजा करो ।
१० मकान की कामना पूरी होगी ।
११ खेती से पूरा लाभ नहीं मिलेगा ।
१२ तरक्की शीघ्र ही होगी ।
१३ नौकरी मिल जायेगी ।
१४ भाग्योदय अभी देर से होगा ।
१५ मुकदमे की जीत में सन्देह है ।
१६ संतान-सुख नहीं मिलेगा ।

## वरुण-प्रश्न-फल

१ जीवन में सफलता प्राप्त होगी ।
२ जीवन संघर्षमय बीतेगा ।
३ पूरी विद्या प्राप्त न कर सकोगे ।
४ पास हो जाओगे ।
५ मकान नहीं बन सकेगा ।
६ खेती से लाभ नहीं होगा ।
७ तरक्की होने में सन्देह है ।
८ नौकरी मिलने के अभी आसार नहीं हैं ।
९ भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है ।
१० मुकद्दमे में जीत होने में संदेह है ।
११ सन्तान-सुख उपाय से होगा ।
१२ मन्दिर-निर्माण की कामना पूरी हो ।
१३ तीर्थ-यात्रा कर सकोगे ।
१४ गुप्त प्रेम करती है ।
१५ सम्बन्धी का धोखा देना कठिन है ।
१६ स्त्री का स्वभाव मिलनसार होगा ।

## मगल-प्रश्न-फल

१ बीमार अच्छा हो जायेगा ।
२ विवाह होने में सन्देह है ।
३ गड़ा धन गृह-देव की पूजा से मिले ।
४ जीवन में सफलता मिलेगी ।
५ जीवन मध्यम श्रेणी में बीतेगा ।
६ विद्या प्राप्त कर लोगे ।
७ पास हो जाओगे ।
८ मकान शीघ्र बनेगा ।
९ खेती में लाभ मिलेगा ।
१० तरक्की अभी नहीं हो सकेगी ।
११ नौकरी मिलने में सन्देह है ।
१२ भाग्योदय अभी नहीं होगा ।
१३ मुकद्दमे की जीत में सन्देह है ।
१४ संतान-सुख मिलेगा, चिन्ता छोड़ दो
१५ मन्दिर निर्माण शीघ्र होगा ।
१६ तीर्थ-यात्रा की आशा पूरी होगी ।

## शुक्र-प्रश्न-फल

१ व्यापार में सावधानी से लाभ मिले ।
२ तबादले का योग चल रहा है ।
३ स्वप्न का फल उत्तम है ।
४ बीमार अच्छा हो जायेगा ।
५ विवाह उपाय से होगा ।
६ गड़ा धन मिलेगा ।
७ जीवन में सफलता पाना कठिन है ।
८ जीवन में कठिनाइयां अधिक आयें ।
९ विद्या थोड़ी प्राप्त होगी ।
१० पास हो जाओगे ।
११ मकान अभी देर से बनेगा ।
१२ खेती से लाभ मिलने में सन्देह है
१३ तरक्की अभी नहीं हो सकेगी ।
१४ नौकरी मिलने में सन्देह है ।
१५ भाग्योदय होने वाला है ।
१६ मुकद्दमे में जीत होगी ।

## पृथ्वी-प्रश्न-फल

१ गड़ा धन प्राप्त करोगे ।
२ सफलता मिल जाएगी ।
३ जीवन काफी कठिनाइयों से बीतेगा ।
४ विद्या प्राप्त करोगे ।
५ पास होने में सन्देह है ।
६ मकान अभी देरी से बनेगा ।
७ खेती से लाभ मिलेगा ।
८ तरक्की अभी न हो सकेगी ।
९ नौकरी मिल जाएगी ।
१० आपके सितारे चमकने में देर है ।
११ मुकद्दमे में हार की संभावना है ।
१२ सन्तान-सुख होगा ।
१३ मन्दिर अभी नहीं बन पायेगा ।
१४ तीर्थ-यात्रा नहीं हो सकेगी ।
१५ दिखावटी प्रेम करती है ।
१६ सम्बन्धी धोखा नहीं देगा ।

## बुध-प्रश्न-फल

१ स्वप्न का फल उत्तम है ।
२ बीमार देर से अच्छा होगा ।
३ विवाह हो जायेगा उपाय से ।
४ गड़ा धन प्राप्त होगा ।
५ जीवन में सफलता नहीं मिलेगी ।
६ जीवन में कठिनाइयां विशेष रहेंगी ।
७ विद्या प्राप्त शिव की पूजा से होगी ।
८ पास होने में सन्देह है ।
९ मकान अभी नहीं बनेगा ।
१० खेती से लाभ मिलेगा ।
११ तरक्की तो होगी, परन्तु देर से ।
१२ नौकरी अभी नहीं मिलेगी ।
१३ भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है ।
१४ मुकद्दमे में जीत होगी ।
१५ सन्तान-सुख उपाय से होगा ।
१६ मन्दिर अभी नहीं बनेगा ।

## शनि-प्रश्न-फल

१ चिन्ता अभी देर से मिटेगी ।
२ व्यापार में लाभ होगा ।
३ तबादला नहीं होगा ।
४ स्वप्न का फल उत्तम है ।
५ बीमार ठीक होने में सन्देह है ।
६ विवाह होने में सन्देह है ।
७ गड़ा धन आसुरी सिद्धि द्वारा मिले ।
८ जीवन में सफलता प्राप्त करोगे ।
९ जीवन सुखमय व्यतीत होगा ।
१० विद्या प्राप्त कर सकोगे ।
११ पास होना मुश्किल है ।
१२ मकान अभी नहीं बन सकेगा ।
१३ खेती से लाभ नहीं मिलेगा ।
१४ तरक्की का योग अभी नहीं बनता ।
१५ नौकरी मिल जायेगी ।
१६ भाग्योदय शीघ्र होगा ।

देहाती पुस्तक भण्डार

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# मनोकामना सिद्धि के लिये साधन (मनवांछित फल की प्राप्ति)

प्रत्येक प्राणी की कोई-न-कोई कामना होती ही है वह उस कामना की पूर्ति हेतु बुद्धि में अनेकों प्रकार की कल्पना करता है। और पूर्ति का लक्ष्य पूर्ण होता न देखकर भगवान की शरण में जाता है और सोचता है कि किसी भी उपाय से मेरी कामना पूर्ण हो जाए। ऐसे समय के लिए धार्मिक ग्रन्थों में धार्मिक उपाय बतलाये गये हैं। इसी आधार को मानकर नीचे अलग अलग कार्य सिद्धि के लिए अलग-अलग उपाय स्वरूप मन्त्र आदि लिखे गये हैं। जिनको विधि पूर्वक करने से प्राणी की मनोकामना सिद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है। हम यह स्तंभ पाठकों के लाभार्थ दे रहे हैं। यदि इसे पाठकों ने अपनाया तो हम प्रतिवर्ष प्रयोग देते रहेंगे।

## अतुल निधि दायक मन्त्र

जिन्हें सदैव व्यापार में हानि उठानी पड़ी हो और भोजन वस्त्र भी समय पर न मिल पाते हों, उन्हें नीचे लिखे अन्नपूर्णा मन्त्र का जप करना चाहिए।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवती माहेश्वरी अन्नपूर्णा स्वाहा ॥

मन्त्र जपने से पूर्व मन्त्र का नीचे लिखा विनियोग करें।

विनियोगः— ॐ अस्य श्री अन्नपूर्णेश्वरी मंत्रस्य ब्रह्मिण ऋषिः कृति-कृति छन्दः अन्न पूर्णेशो देवता ममाखिल कार्य सिद्ध्यर्थे जपे विनियोग ॥

इस प्रकार विनियोग करने के पश्चात् मूलमन्त्र से अंगन्यास करके नीचे लिखे प्रकार से ध्यान करना चाहिए।

## ध्यान

तप्त स्वर्ण निभा शशांक मुकुटा रत्न स्वरा भासुरा। नाना रत्न विराजिता त्रिनयना भूजि रमाभ्यां युता ॥
दर्वी हारक भाजनं च दधती रम्योच्च पीतस्तनी। नृत्यन्तं शिवमा कलय्य मुदिता ध्येयान्न पूर्णेश्वरी ॥

नियम—इस प्रकार ध्यान करके एकाग्र चित्त होकर मूल मन्त्र का ५,००,००० (पाँच लाख) जप करना चाहिये। मन्त्र जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण और तर्पण का दशांश मार्जन तथा मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए। अथवा दशांश का दुगुना मन्त्र जप करना चाहिए। जिस समय मन्त्र का जप चल रहा हो उस समय जितने दिन में मन्त्र पूर्ण हो उतने दिन पृथ्वी पर सोना चाहिए। एक समय भोजन करना चाहिए। सत्य बोलना चाहिए। ब्रह्मचर्य से रहना चाहिए। बाल नहीं बनवाने चाहिए। जप के पश्चात् रोजाना अन्नपूर्णा देवी का भोग लगाना चाहिए। इस प्रकार पाँच लाख का पुरश्चरण करने के उपरांत मूल मन्त्र का जप १००० (एक हजार) नियम पूर्वक करते रहना चाहिए। इसके करने से निश्चय ही साधक को धनधान्य की प्राप्ति होगी। घर अन्न धन से परिपूर्ण होगा और निर्धनता का पता भी न लगेगा।

## विघ्न विनाशक प्रयोग

जिनके प्रत्येक कार्य में विघ्न बाधा उपस्थित होती हो और किसी भी कार्य में सफलता न मिलती हो, उन्हें नीचे लिखी चौपाई का १,२५,००० (एक लाख पच्चीस हजार) सवा लाख सविधान जप करना चाहिए।

चौपाई—सकल विघ्न व्यापहिं नहीं ताही। राम सुकृपा बिलोकहिं जाही ॥

## बेरोजगारी दूर करने का प्रयोग

बेरोजगार व्यक्ति को सविधान १,२५,००० (सवा लक्ष) जप नीचे लिखी चौपाई का करना चाहिए। इससे बेरोजगारी दूर होगी तथा अन्न धन की कमी न रहेगी।

चौ०—विश्वभरण पोषण कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई।
गई बहोरि गरीब निवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू ॥

## निर्धनता नाशक मन्त्र

जिनके यहाँ निर्धनता का वास हो वे किसी योग्य गुरु से दीक्षा लेकर निम्न मन्त्र का अनुष्ठान करें।

ॐ रं ह्रीं श्रीं ह्रीं रं क्षुत्पिपासा मलां ज्येष्ठाय लक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धि च सर्वां निर्धुद मे गृहात्—रं ह्रीं श्रीं ह्रीं रं ॐ।

गुरु से दीक्षा लेकर इस मन्त्र का ५,००,००० (पांच लाख) जप करना चाहिए। जप के पश्चात् दशांश हवन तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए। इस प्रकार करने से कुल परम्परागत चली आई निर्धनता का नाश अवश्य हो जाएगा और शीघ्र ही घर धन-धान्य से परिपूर्ण हो जाएगा।

जो इसे न कर सकें वे हमारे कार्यालय से 31/-रु० भेजकर यन्त्र धारण करें, निर्धनता दूर होकर घर में धन-धान्य की वृद्धि होगी। मंगाने का पता—व्यवस्थापक ज्योतिष भवन, पैगांव, मु०पो० पैगांव, जि० मथुरा (उ.प्र.)

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

इस वर्ष अर्थात् सन् १९८२ ई० तदनुसार विक्रमी संवत् २०३९, शकाब्द १९०४ में लगभग १९ वर्ष के बाद पुनः क्षयाधिमास के सम्बन्ध में विवाद उत्पन्न हुआ है। विगत संवत् २०२० में भी दृक् पक्ष तथा सौर पक्ष के भेद से क्षयाधिमास विवादास्पद होने से भिन्न-भिन्न माने गये थे। उस समय भी ज्योतिर्विदों ने अपने-अपने शास्त्रीय प्रमाण दिये थे। वस्तु, इस वर्ष उस प्रकार का मत-भेद तो नहीं होगा, परन्तु कुछ व्रत एवं त्यौहारों के मनाने में विवाद संभव है।

इस वर्ष आश्विन मास संसर्पसंज्ञक अधिक मास होगा जो कि १८ सितम्बर, १९८२ ई०, शनिवार से १६ अक्टूबर, १९८२ ई०, शनिवार तक रहेगा।

इस प्रकार नवरात्र, दुर्गा पूजा महोत्सव, सरस्वती पूजन, विजयादशमी (दशहरा), शरद्-पूर्णिमा, धन्वन्तरि त्रयोदशी, (धन तैरस), दीपावली (महालक्ष्मी पूजन) भ्रातृ द्वितीया तथा देव प्रबोधिनी एकादशी व्रत विवादस्पद रहेंगे।

इस जन्त्री (श्री बापू मशहूर राष्ट्रीय जन्त्री) में प्रतिवर्ष मास प्रयुक्त होने वाले व्रतादि यथा क्रम संसर्पाधिमास में ही करना शास्त्र-सम्मत माना है। इसके लिए निम्नलिखित शास्त्रीय प्रमाण प्रस्तुत है—

मास प्रधानाऽखिलमेव कर्म,
लुप्त्वाऽखिलं कर्म न कार्यमत्र।
व्रतोपवासव्रतबंध यात्रा,
विवाह कर्मादि विनाशमेति॥
(वशिष्ठः)

मासद्वयेऽब्द मध्ये तु संक्रान्ति नं यदा भवेत्।
प्राकृतः तत्र पूर्वः स्यादधिमासस्तयोत्तरः॥
(जाबालि)

यां तिथिं समनुप्राप्य तुलां गच्छति भास्करः।
तथैव सर्वं संक्रान्तिर्यावन्मेषं न गच्छति॥
गृहप्रवेश गोदान स्थानाश्रम महोत्सवम्।
न कुर्यान्मलमासे तु संसर्पेऽहस्पतौ तथा।

इसी प्रकार और भी प्रमाण उपलब्ध हैं, परन्तु स्थानाभाववश उनका उल्लेख न कर अपना संक्षिप्त मत प्रस्तुत किया है। अतएव विवाह, उपनयन, गृह प्रवेश, गोदान, तीर्थयात्रा, काम्य यज्ञादि नवीन शुभ कार्य असंक्रान्त होने से मलमास संसर्पाधिमास तथा अहंस्पति क्षयमास में त्याज्य माने हैं। परन्तु मास प्रयुक्त कार्य संसर्प में कर लेना निषिद्ध नहीं है। हमारे शास्त्रीय आधार का समर्थन करने वाले महानुभाव ऊपर बताये गए व्रत-त्यौहार निम्न-लिखित तारीखों में मनायेंगे।

नवरात्रारंभ—१८ सितम्बर, शनिवार
दुर्गापूजा महोत्सव—२५ सितम्बर, शनिवार
सरस्वती पूजन—२६ सितम्बर, रविवार
विजयादशमी (दशहरा)—२७ सितम्बर, सोमवार
शरद् पूर्णिमा—२ अक्टूबर, शनिवार
धन्वन्तरि त्रयोदशी—१४ अक्टूबर, गुरुवार
दीपावली (महालक्ष्मी पूजन)—१६ अक्टूबर, शनिवार
भ्रातृ द्वितीया (भैया दोज)—१८ अक्टूबर, गुरुवार
देव प्रबोधिनी एका० व्रत—२८ अक्टूबर गुरुवार

केवल हिन्दू धर्मावलम्बियों के व्रत त्यौहारों में विवाद उत्पन्न होता है, ऐसा मानना उचित नहीं है। अन्य धर्मों में भी मतभेद हो जाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि उनमें किसी प्रकार की कटुता आ जाती है। वैसे भी प्रत्येक व्यक्ति को अपना मत प्रस्तुत करने का पूर्ण अधिकार है। इस सम्बन्ध में कुछ विद्वान उक्त तिथियों में महोत्सव न करने का निषेध करते हैं, संक्षेप में नीचे उसका उल्लेख करना भी आवश्यक है।

यस्मिन् वर्षे द्विसंक्रान्तः अधिमास द्वयं तथा।
तद्धि मासत्रयं त्याज्यं सर्वेषु शुभ कर्मसु॥
यद्वर्षे मध्येऽधिकमास युग्मं, तत्कार्तिकादि त्रितये त्यजाल्यः।
मासत्रयं त्याज्यमिदं प्रयत्नात्, विवाह यज्ञोत्सव मंगलेषु॥
यस्मिन् मासे न संक्रातिः संक्रातिद्वयमेव वा।
संसर्पाहस्पतीमासावधिमासश्च निन्दिताः॥
रविणालंघितोमासो ह्यनर्हः सर्व कर्मसु॥

इस पक्ष को मानने वाले महानुभावों के अनुसार—नवरात्रारंभ १७ अक्टूबर, दुर्गापूजा महोत्सव २५ अक्टूबर, विजयादशमी २७ अक्टूबर, शरद् पूर्णिमा ३१ अक्टूबर, दीपावली (महालक्ष्मी पूजन) १५ नवम्बर तथा देव प्रबोधिनी एकादशी २७ नवम्बर को मानी जायेगी।

निवेदन—इस लेख में हमने दोनों पक्षों का उल्लेख किया है। धर्मप्राण जनता तथा विद्वान लोग जिस मत को चाहें मानें। खंडन-मंडन करना हमारा ध्येय नहीं है।

निवेदक—मुकट बिहारी शर्मा

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

तेज रहेगा। धान्यादि का भाव मन्दा रहेगा। प्रमाण से सरसों में ८) १०), अलसी में ४) ५), लाहा में ४) ५) रु० की तेजी जाना पाया जाता है। रुई, कपास, सूत, सन, पाट, बारदाना आदि का भाव मन्दा रहेगा। हल्दी का भाव तेज; मुनक्का, किसमिस, गोला, छुआरे, पिस्ता, इलायची तथा सभी किराने की वस्तुओं का भाव मन्दा रहेगा। मासान्त में सोना में अच्छी तेजी चलेगी। चौपायों में अधिक रोग फैलेगा।

**द्वितीय आश्विन सर्प मास**—इस मास का फल विशेष रूप से शुभ फलदायी नहीं है। प्रजा में रोग आदि उपद्रवों के कारण बेचैनी व्याप्त होगी। वायु वेग के साथ-साथ कहीं-कहीं पर अनावृष्टि होगी। राजनैतिक वातावरण उग्र होगा। व्यापारिक वस्तुओं में घटा-बढ़ी चलेगी। सोना, चांदी तांबा, पीतल, जस्ता, लोहा आदि का भाव मन्दा रहेगा। सरसों, अलसी, तिल, तेल, लाहा आदि का भाव तेज। चावल का भाव मंदा रहेगा। गुड़, खांड, शक्कर तथा सभी रस पदार्थ वस्तुओं के भावों में घटा-बढ़ी होगी। व्यापारी तेजी में ही सौदा सिलटा दें। गेहूं, जौ, चना, मटर तथा सभी अन्नादि वस्तुओं के भावों में घटा-बढ़ी होकर मन्दा रहेगा।

**कार्तिक**—इस मास का फल सामान्य रीति से शुभ सूचक रहेगा। यह मास प्रजा को सुख शान्ति का रहेगा। राजनैतिक वातावरण उग्र होगा। बाजार में मन्दे की धारण बनती दिखाई देगी, परन्तु स्थाई नहीं होगी। प्रमाण से गेहू में ३) ४), जौ में ४) ५), चना में ४) ५), मटर में ८) १०), मूंग में ५) ६), ज्वार में ४) ५), रुपये का मंदा जाना पाया जाता है। रुई, सूत, सन, कपास, पाट-बारदाना आदि का भाव तेज रहेगा। कार्तिक सुदी २ से बाजार में तेजी अपना रंग जमायेगी। सोना, चांदी, तांबा, जस्ता, लोहा, पीतल तथा सभी धातुओं का भाव तेज रहेगा। घी, का भाव तेज रहेगा। प्रमाण से गुड़ में ५) ६), खांड में ४) ५), शक्कर में ३) ४), घी में ५) ६) रुपये की तेजी जाना संभव पाया जाता है। लाल मिर्च, जीरा, हींग, धनिया, मजीठ, लाख, चपड़ा, आदि का भाव मन्दा रहेगा। गोला, छुआरे, पिस्ता, चिरौंजी, मुनक्का, किसमिस, बादाम, काजू तथा सभी किराने की वस्तुओं में घटा-बढ़ी होकर मन्दा रहेगा। मासान्त में रुई, कपास, बिनोला, घी आदि का भाव तेजी पर रहेगा। व्यापारी सावधानी से व्यापार करें।

**मार्गशीर्ष (अगहन)**—इस मास का फल सामान्य रीति से अशुभ फलदायक है। इस मास में दो ग्रहण नेष्ट फलदायक हैं। नवीन घटनाओं से प्रजा में भय व्याप्त होगा। राजाओं में आपस में विरोध पैदा होगा। प्रजा में रोगों की बहुलता से व्याकुलता व्याप्त होगी। संसार में तनाव-पूर्ण स्थिति बनती दिखाई देगी। मास प्रारम्भ में बाजार में मन्दे की धारणा बनेगी। अगहन वदी १० से गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, मटर आदि का भाव मन्दा रहेगा। प्रमाण से गुड़ में ४) ५), शक्कर में ३) ४), खांड में ४) ५), घी में ३) ४) रुपये की तेजी जाना पाया जाता है। सरसों, अलसी, तिल, तेल, लाहा आदि के भावों में घटा-बढ़ी होकर मासान्त में तेजी आयेगी। सोना, चांदी पीतल, स्टील, तांबा, लोहा, कांसी आदि का भाव तेज रहेगा। किसमिस, मुनक्का, छुआरे तथा सभी सफेद रंग की वस्तुओं का भाव मन्दा होकर तेजी पर रहेगा। जीरा, हल्दी, नमक, काली मिर्च, सौंठ, इलायची तथा सभी किराने की वस्तुओं में घटा-बढ़ी चलेगी। व्यापारी वर्ग सावधानी से व्यापार करे। शास्त्र से प्रमाण यह है। आगे चक्र विहारी मालिक है।

**विशेष सूचना**—(१) व्यापारिक हलचलें बहुत ही उत्तम रहेंगी। व्यापारी लोग यदि सावधानी पूर्वक कार्य संभालेंगे तो व्यापार में उत्तम प्रगति करने में सफलता प्राप्त करेंगे। इसके लिए इस वर्ष के प्रत्येक वस्तु के खास खास चान्स हमारे कार्यालय में तैयार किए हैं। जिनसे समय-समय पर व्यापार की गति जानी जा सकती है और व्यापार में लाभ उठाया जा सकता है। मासिक चान्स की प्रत्येक वस्तु की फीस ११-०० ग्यारह रुपये, त्रय मासिक प्रत्येक वस्तु के चान्स की फीस ३१) रुपये, स्पेशल मासिक चान्स की फीस ५१) रुपये तथा वार्षिक चान्स की फीस १५१) रुपये है। डाक खर्च अलग से होगा। प्रत्येक चान्स मंगाने से पूर्व मनीआर्डर द्वारा फीस भेजनी चाहिए, ताकि समय से चान्स मिल सके। मनीआर्डर भेजनेवाले के चान्स पहले भेजे जाते हैं। सभी के लिए डाकखर्च अलग होगा।

(२) हमारे कार्यालय से पूजा, पाठ, गोपाल सहस्रनाम, लक्ष्मी स्तोत्र, महामृत्युंजय १२५००० (सवा लाख) जप, अनिष्ट ग्रह शान्ति तथा रोग निवारणार्थ अनुष्ठान आदि के लिए पंडित भेजे जाते हैं। फीस आदि पत्र भेजकर निश्चित कर लें या स्वयं आकर मिलें। आने से पहले पत्र डाल कर समय निश्चित कर लेना आवश्यक है। पैगांव आने के लिए कोसी कलां से बस तथा तांगे आदि की व्यवस्था है।

पता—पंचांगकर्त्ता पं० मुकट बिहारी शर्मा, मु० पो० पैगांव, वाया—छाता, जि० मथुरा (उ० प्र०)

देहाती पुस्तक भंडार (REGD.) चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006. फोन : 261030

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

इस वर्ष शनि महाराज वर्ष के प्रारम्भ अर्थात् १ जनवरी सन् १९८२ ई० से ता० ४ अक्टूबर सन् १९८२ ई० तक कन्या राशि पर विराजमान रहेंगे। इससे तुला राशि वालों को प्रारम्भ की ढैया तथा वृष राशि वालों को पंचम स्थान की ढैया रहेगी। इससे मिथुन, तुला, कुंभ, राशि वालों को क्रमशः ४, ८, १२वें स्थान पर अशुभ फलदायी हैं। ता० ५ अक्टूबर सन् १९८२ ई० से पूरे वर्षपर्यन्त अर्थात् ३१ दिसम्बर सन् १९८२ ई० तक शनि महाराज तुला राशि पर विराजमान रहेंगे। इससे मिथुन राशि वालों को पंचम स्थान की ढैया रहेगी तथा तुला राशि वालों को जन्म स्थान की ढैया रहेगी। कर्क, मीन, वृश्चिक राशि वालों को क्रमशः ४, ८, १२वें स्थान में अशुभ फलदायी है।

जिन राशियों के लिये शनि महाराज अशुभ फलदायी हैं उन राशि वाले व्यक्तियों को पूजा-दान, जप, आराधना अवश्य करनी चाहिए। श्रवण नक्षत्र में नीलम या शुद्ध लोहे की अंगूठी बनवा कर पहनें। इस शुद्ध लोहे की अंगूठी को हम खास विधि से अपने कार्यालय में शनिवार के दिन शुभ समय में बनवा कर तैयार करते हैं। इसकी फीस ११ रु० मनीआर्डर से आने वालों को रजिस्ट्री से भेज देते हैं तथा अनुष्ठान आदि भी किए जाते हैं।

## शनि साढ़े साती फल ज्ञान

शनि महाराज अपनी साढ़े साती के प्रारम्भ के दिन से १०० दिन मुख पर, ४०० दिन दक्षिण भुजा पर, ६०० दिन वाम भुजा पर, ३०० दिन मस्तक पर, १०० दिन नेत्रों में और १०० दिन गुदा पर रहते हैं।

फल—मुख पर हानि, दक्षिण भुजा पर विजय, चरणों पर विदेश घूमना, उदर पर लाभ, वाम (बायीं) भुजा पर दुःख, मस्तक पर राज्य पद, नेत्रों पर सुख और गुदा पर दुःख समझना चाहिए।

शनि वाहन ज्ञान—शनि के राशि बदलने की तिथि, वार, नक्षत्र की संख्या को जोड़ो और उसमें अपने नाम की अक्षर संख्या भी जोड़ो। इसे जोड़ कर आई हुई संख्या में ९ का भाग दें। १ शेष बचे तो खर, २ शेष बचे तो अश्व, ३ शेष बचे तो हाथी, ४ शेष बचे तो भैंसा, ५ शेष बचे तो सिंह, ६ शेष बचे तो भृगाल (जम्बुक, गीदड़), ७ शेष बचे तो काक (कौवा), ८ शेष बचे तो मयूर और ० शून्य बचे तो हंस के वाहन शनि का प्रवेश जानना चाहिए।

वाहन फल—खर से हानि, अश्व से विजय, हाथी से सुख, भैंसा से मध्यम, सिंह से शत्रु नाश, जम्बुक से शोक, काक से कलह, मयूर से लाभ और हंस के वाहन से सुख जानना चाहिए।

## शनि पाया ज्ञान

शनि राशि बदलने के समय चन्द्रमा १, ६, ११ हो तो सोने का पाया, चन्द्रमा २, ५, ९ हो तो चांदी का पाया, चन्द्रमा ३, ७, १० हो तो तांबे का पाया और चन्द्रमा ४, ८, १२ हो तो लोहे का पाया जानना चाहिए।

शनि पाया फल—सोना (स्वर्ण) का पाया हो तो सर्व सुख, चांदी (रजत) का पाया हो तो सौभाग्य, तांबे (ताम्र) का पाया हो तो सम तथा लोहे का पाया हो तो धन नाश जानना चाहिए।

## राहु—केतु

इस वर्ष राहु-केतु वर्ष के प्रारम्भ से अर्थात् १ जनवरी सन् १९८२ ई० से ३१ दिसम्बर तक राहु मिथुन राशि पर; केतु धन राशि पर विराजमान रहेंगे। इससे राहु मीन, वृश्चिक, कर्क राशि वालों को क्रमशः ४, ८, १२वें स्थान में तथा केतु कन्या, वृष, मकर राशि वालों को क्रमशः ४, ८, १२वें स्थान में अशुभ फलदायी हैं।

## बृहस्पति

इस वर्ष गुरुदेव महाराज ता० १ जनवरी १९८२ ई० से २९ नवम्बर तक तुला राशि पर विराजमान रहेंगे। जिससे कर्क, मीन, वृश्चिक राशि वालों को क्रमशः ४, ८, १२वें स्थान में अशुभ फलदायी हैं। ता० ३० नवम्बर से अर्थात् पूरे वर्षपर्यन्त गुरु महाराज वृश्चिक राशि पर विराजमान रहेंगे। जिससे सिंह, मेष, धन राशि वालों को क्रमशः ४, ८, १२वें स्थान तथा जन्म स्थान में अशुभ फलदायी हैं।

इसलिए इन राशि वालों को नवग्रहस्तोत्र का पाठ, पूजा, जप, दान आदि अवश्य कराने या करने चाहिए। जो व्यक्ति पाठ, पूजा, जप, दान, आराधना न करा सकें उन्हें हमारे कार्यालय से ११ रु० भेज कर "ग्रह पीड़ा निवारण यंत्र" मंगाना चाहिए। सभी ग्रहों की शांति के लिए तथा अशुभ समय को शुभ में परिवर्तित करने के लिए हमारे कार्यालय का बनाया हुआ 'ग्रह पीड़ा निवारण यंत्र' मंगाकर धारण करें। हमारे कार्यालय में ग्रहों का अनुष्ठान तथा पाठ भी किया जाता है।

प्रचारकर्त्ता पं० मुकट बिहारी शर्मा, मु० पो०—पैगांव, वाया—छाता, जिला—मथुरा (उ० प्र०)

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, देहली-110006 टेलीफोन-261030

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# स्वप्न देखने का शुभ-अशुभ फल



| स्वप्न | उनका फल |
|---|---|
| अंगूठी पहनना | सुन्दर स्त्री मिले |
| आकाश की ओर उड़ान | लम्बी यात्रा करनी पड़े |
| आकाश से गिरना | खराबी व कष्ट |
| आम खाना | धन मिले |
| अनार खाना | धन काफी मिले |
| ऊंट को देखना | धन लाभ |
| ऊंट पर चढ़ना | रोगी होवे |
| सूर्य को देखना | बड़े आदमी के दर्शन |
| सुरमा लगाना | बीमारी से कष्ट |
| बादल देखना | तरक्की होवे |
| घनघोर घटा | राजा के दर्शन से लाभ |
| आग उठा लेना | हराम का माल मिले |
| घोड़े पर चढ़ना | व्यापार में उन्नति |
| घोड़े से गिरना | हानि होवे |
| आंधी देखना | सफर में कष्ट हो |
| शीशे में मुंह देखना | स्त्री से प्रेम |
| जलती आग देखना | स्त्री से प्रेम |
| ऊंचे से गिरना | परेशानी व हानि हो |
| ताजू कटा देखना | भाई की मृत्यु हो |
| बाग-फुलवारी देखना | खुशी प्राप्त हो |
| सूखा बाग देखना | रंज-दुःख मिले |
| बारात देखना | रंज हो, स्त्री देखें तो उसको खुशी हो |
| पानी बरसता देखना | अनाज महंगा हो |
| सिर के कटे बाल | कर्ज से छुट्टी मिले |
| बर्फ देखना | मौसम खराब हो |
| बांसुरी बजाना | परेशानी होना |
| अपने को बीमार देखना | कष्ट मिले |
| मोटा बैल देखना | अनाज मंदा हो |
| पतला बैल देखना | अनाज महंगा हो |
| बाल बिखरे देखना | धन की हानि हो |
| सुअर देखना | रंज हो, उम्र कम हो |
| बिस्तर बिछाना | धन लाभ, दीर्घायु हो |
| बुलबुल देखना | विद्वान से लाभ हो |

| स्वप्न | उनका फल |
|---|---|
| हंस देखना | प्रतिष्ठा होगी |
| भैंस देखना | मुसीबत पेश हो |
| भेड़िया देखना | हाकिम से भय हो |
| बादाम खाना | धन प्राप्त हो |
| बादशाह मरण | देश में खराबी |
| मुर्गी के अण्डे खाना | लड़का हो |
| सफेद बाल देखना | आयु बढ़े |
| बिच्छू देखना | इज्जत प्राप्त हो |
| पहाड़ पर चढ़ना | तरक्की मिले |
| पहाड़ हिलते देखना | बीमारी फैलना |
| शरीर में पाखाना | दौलत प्राप्त हो |
| पाखाना खाना | मालामाल हो |
| पंजा कटा देखना | परेशानी हो |
| पाखाना फिरना | धन व्यय हो |
| खून का पेशाब | स्त्री देखे तो सुख पुरुष देखे तो दुःख |
| फल पाना | पुत्र हो |
| फूल देखना | प्रेमी मिले |
| पिंजड़ा देखना | कैद में कष्ट हो |
| छाती देखना | स्त्री मिले, खुशी हो |
| प्यास लगना | लोभ अधिक हो |
| पूड़ी खाना | प्रसन्नता प्राप्त हो |
| पुल पर चढ़ना | नेक काम करे |
| पान खाना | सुन्दर स्त्री मिले |
| पानी में डूबना | शुभ कार्य; लाभ हो |
| तैरना | धन मिले |
| तांबा देखना | हैरानी हो |
| नंगी तलवार देखना | शत्रु पर विजय |
| हरी तरकारी देखना | खुशी प्राप्त हो |
| खाना बनाना | बच्चे बीमार हों |
| तेल पीना | कुष्ठ रोग से भय |
| तिल चबाना | कलंक लगे |
| तोप देखना | शत्रु नष्ट हो |
| तीर चलाना | आशा पूर्ण हो |

| स्वप्न | उनका फल |
|---|---|
| तख्त पर चढ़ना | इज्जत मिले |
| थूक देखना | परेशानी हो |
| थूकना | व्यय बढ़ेगा |
| तीतर देखना | खुशी मिले |
| हँसता देखे | रंज प्राप्त हो |
| रोते देखना | खुशी मिले |
| तार खींचना | परेशानी मिले |
| तावीज देखना | आपत्ति में फसे |
| तरबूज खाना | रंज प्राप्त होवे |
| पानी देखना | दूसरे की धरोहर मिले |
| तालाब में नहाना | धन प्राप्त हो |
| पानी स्पर्श | साधारण लाभ |
| जहाज देखना | दूर का सफर हो |
| झण्डा देखना | धर्म की वृद्धि हो |
| हरा जंगल देखना | खुशी मिले |
| सूखा जंगल देखना | परेशानी हो |
| जंगल में उड़ना | मुसीबत दूर हो |
| मुरदा देखना | बीमारी से आराम |
| जोड़ा तंग पहनना | स्त्री से झगड़ा हो |
| जवाहरात देखना | आशाएं पूर्ण हों |
| स्त्री-प्रसंग करना | धन प्राप्त हो |
| लड़ाई करना | खुशी हो |
| लड़ाई में मारे जाना | हुकूमत मिले |
| जामुन खाना | तकलीफ दूर हों |
| बाल बनवाना | उम्र कम हो |
| जानवर पकड़ना | नया काम करना |
| चन्द्रमा देखना | प्रतिष्ठा प्राप्त हो |
| चांद टूटा देखना | तकलीफ हो |
| चन्द्र-ग्रहण देखना | हाकिम पर आफत |
| चीज देखना | रंज पैदा हो |
| कसीदा काढ़ना | पति से झगड़ा |
| चींटी देखना | मुसीबत पेश हो |
| चक्की देखना | मुसीबत में फसे |
| चांद देखना | माल मिले |
| चावल देखना | रंज दूर हो |

**स्वप्न-समय-फल**—रात्रि के चार पहर होते हैं, जिनमें प्रायः प्रथम पहर में स्वप्न कम दीखते हैं, फिर भी रात्रि के प्रत्येक पहर का देखा हुआ स्वप्न इस प्रकार है—यदि रात्रि के पहले पहर में स्वप्न दीखे तो उसका फल एक साल के अन्दर मिलेगा। यदि दूसरे पहर में दीखे तो ६ मास में फल प्राप्त हो; इसी प्रकार तीसरे पहर का फल है। चौथे पहर में दीखे हुए स्वप्न का फल एक माह में मिलेगा। अरुणोदय के काल में देखे हुए स्वप्न का फल १० दिन में और सूर्योदय के समय में देखे हुए स्वप्न का फल शीघ्र ही मिलेगा—ऐसा जानना चाहिए। खोटा स्वप्न देखने पर उसकी शान्ति के लिए महामृत्युञ्जय जाप, हवन, सोना तथा जौ का दान और विष्णु सहस्रनाम, गोपाल सहस्रनाम आदि शुभ कार्य कराने चाहिए।

स्वप्न-ज्योतिष शास्त्र मूल्य 18/-

स्वप्न विज्ञान
स्वप्न, भविष्य में घटने वाली घटनाओं के सूचक माने जाते हैं। स्वप्न देखने वाला हर मनुष्य उसके फल को जानने के लिये उत्सुक पाया जाता है। इस पुस्तक में पाश्चात्य विद्वानों की खोजों के आधार पर सहस्रों प्रकार के स्वप्नों के फल, आकारादि क्रम से लिखे गये हैं। हिन्दी भाषा में यह अपने विषय की एक ही, और बेजोड़ पुस्तक है। मू० ३५२, कलाथ बाइन्डिंग, 24-00
देशानी पुस्तक भण्डार, अलीगढ़

पंच पक्षी तंत्र
कव्वा, उल्लू, गिद्ध, कबूतर, इन पंच पक्षियों के दर्शन के अनुभव में
नैसर्गिक प्रतिक्रियाएं भी वही हैं। अगर कव्वा आपका दाना नहीं है रात है, जिस कारण में सच बातों है, उल्टा हो जाता है, तो यह पुस्तक आपका मान्य पलट सकती है। मूल्य कीमत। मू०-500, कलाथ बाइन्डिंग, क-130-00 नये कार्यालय
पता:- देशानी पुस्तक भण्डार, अलीगढ़

तारों के इस युग में कुछ भी असम्भव नहीं
मनचाही-सन्तान
यदि आप सन्तान का सुख पाने के लालची हैं, अपनी सन्तान की ओर बढ़ रही है या आपके सन्तान में लापरवाही पैदा होती है, तो आप इसी पुस्तक से लाभ उठा सकते हैं। इस में आपको वह सारी जानकारी और योग सन्तान [illegible] 12-00
देशानी पुस्तक भण्डार, अलीगढ़

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## अंग फड़कना विचार

## तिल विचार

| फड़कन वाले अंग | उनका फल |
|---|---|
| सिर पीछे | आशाएं पूर्ण हों |
| सिर | यात्रा होना संभव |
| दाहिना मत्था | सफर व तकलीफ संभव |
| बायां मत्था | खुशी होगी |
| बीच भौंह | प्रेम मिलता है |
| दाहिनी आंख | अच्छी है, खुशी होगी |
| बाईं आंख | स्त्री से दुःख या वियोग हो |
| दाहिना पलक | खुशी हो |
| बाईं पलक | दुःख व कष्ट मिले |
| दाहिनी आंख के नीचे | सम्मान मिले |
| बाईं आंख के नीचे | धन का व्यय |
| दाहिनी गाल | लाभ होना |
| बायां गाल | व्यय और हानि |
| दाहिनी भौंह | आदर व धन मिले |
| बाईं भौंह | प्रसन्नता या पुत्र सुख हो |
| दाहिना कान | पद बढ़े |
| बायां कान | परेशानी होगी |
| गर्दन | लाभ, स्त्री मिले |
| जीभ | लड़ाई-झगड़ा हो |
| ऊपर का होंठ | पद बढ़े |
| आंख के नीचे पलक | प्रेमी मिलेगा |
| दाहिना कन्धा | चिन्ता हो |
| बायां कन्धा | शत्रु पर विजय होगी |
| माथे पर | धनवान् होना |
| दाहिना बाजू | अच्छा है, लाभ होगा |
| बायां बाजू | रंज होगा |
| दाहिनी बगल | ऐश्वर्य बढ़े |
| बाईं बगल | ऐश्वर्य घटे |
| नाक | खुशी होती है |
| पीठ | बुरा समाचार मिले |
| पेट | प्रसन्नता मिले |
| कमर | सफर हो |
| दाहिना हाथ | प्रतिष्ठा हो |
| बांया हाथ | वियोग होना संभव |
| दाहिनी हथेली | लाभ होगा |
| बाईं हथेली | हानि होगी |
| दाहिना अंगूठा | शुभ समाचार |
| बांया अंगूठा | दुःख पहुंचे |
| पिंडली | शत्रु से भय होगा |
| पैर का अंगूठा | लाभ होगा |
| दाहिना पैर | रंज दूर होगा |
| बायां पैर | दूर की यात्रा |
| अण्डकोष | आनन्द हो |
| दाहिना बाजू | अकस्मात् दुःख हो |
| बायां घुटना | प्रेम मिलेगा |
| दांत का ऊपरी भाग | प्रसन्नता हो |

देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली

| तिल वाले अंग | तिल वाले अंग का फल |
|---|---|
| माथे के दाहिनी ओर | माल बढ़ता जायगा |
| माथे के बाईं ओर | परेशानी से जीवन बीते |
| ठुड्डी पर | स्त्री से मेल न रहेगा |
| दोनों भौंहों पर | यात्रा होती रहेगी |
| सीधी आंख पर | स्त्री से प्रेम रहेगा |
| बाईं आंख पर | चिन्ता बनी रहे |
| दाहिने गाल पर | धनवान् होगा |
| बायें गाल पर | निर्धन रहेगा |
| होंठ पर | कामी होगा |
| होंठ के नीचे | निर्धनता बनी रहे |
| कान पर | अल्पायु होगा |
| गर्दन पर | आराम मिले |
| सीधी भुजा पर | आदर मिलेगा |
| बाईं भुजा पर | लड़का हो |
| नाक पर | यात्रा होती है |
| दाहिनी छाती पर | स्त्री से प्रेम रहे |
| बाईं छाती पर | स्त्री से लड़ाई हो |
| दांतों के नीचे | लज्जित होना पड़ेगा |
| कमर पर | परेशानी में जीवन बीतेगा |
| बगल में | अन्य को हानि पहुंचावे |
| दाहिनी छाती पर | परेशान न रहे |
| बाईं छाती पर | कामी होगा |
| छातियों के बीच | आराम से निर्वाह हो |
| हृदय पर | बुद्धिमान होगा |
| पसली पर | भीरु होगा |
| पेट पर | उत्तम भोजन चाहेगा |
| पेट के बीच में | भीरु हो |
| पीठ पर | यात्रा करता रहे |
| दाहिनी हथेली पर | धनवान् हो |
| दाहिने हाथ पर | कोष वाला हो |
| बाईं हथेली पर | व्यर्थ व्यय हो |
| बाएं हाथ की पीठ पर | व्यय कम हो |
| दाहिने हाथ की पीठ पर | बुद्धिमान् हो |
| दाहिने पैर में | बहुत बुद्धिमान् हो |
| बाएं पैर में | व्यय अधिक करे |
| स्त्री की भग पर | विधवा या धनरहित या पुत्र हीन |

शरीर लक्षण विज्ञान—मनुष्य के हाथ, पांव, मुंह, आंख, नाक, कान, आकृति आदि की बनावट, रंग, बोली, लिखावट, चाल-ढाल, वेशभूषा आदि के द्वारा उसके जीवन का वृत्तान्त बताने वाली पुस्तक। मूल्य 18/-

स्त्री सामुद्रिक— मू० 18/-

देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

**सूर्य-रेखा**—यह रेखा मणिबन्ध, चंद्र व राहु-क्षेत्र, मस्तक-रेखा, हृदय-रेखा अथवा अन्य किसी स्थान से प्रारम्भ होकर अनामिका उंगली के नीचे सूर्य-क्षेत्र की ओर जाती है। यह रेखा प्रायः प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में नहीं पाई जाती। जिनके हाथ में यह रेखा होती है, वे व्यक्ति भाग्योन्नति, आदर-सत्कार तथा यश के धनी होते हैं। इसे 'यश-रेखा' भी कहा जाता है। यदि यह रेखा जीवन-रेखा से निकल कर सीधी सूर्य-क्षेत्र तक जाय तो ऐसा व्यक्ति यंत्र-तंत्र-मंत्र-वेत्ता, कलाकार, यशस्वी, चित्रकार तथा समाज में प्रतिष्ठा-प्राप्त होता है। यदि मंगल-क्षेत्र से निकल कर सूर्य-क्षेत्र पर जाय तो ऐसा व्यक्ति विद्रोही, परिश्रमी, बहादुर और आत्म-विश्वासी तथा प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करने वाला होता है। यदि रेखा कहीं खंडित हो तो यह अपयश की सूचक होती है। विशेष जानकारी के लिए हमारी सूर्य-रेखा नामक पुस्तक मंगाकर पढ़ें। मू० 10-50

**स्वास्थ्य-रेखा**—यह रेखा हथेली के मध्य-भाग से, जीवन-रेखा से, चन्द्र-क्षेत्र से अथवा अन्य किसी स्थान से निकल कर कनिष्ठा उंगली के नीचे बुध-क्षेत्र तक जाती है। इस रेखा से भारतीय विद्वान् भाग्य के बारे में भी विचार करते हैं, परन्तु पाश्चात्य विद्वान इसे स्वास्थ्य की दशा समझने में प्रयुक्त करते हैं। यह रेखा प्रायः बहुतों के हाथ में नहीं पाई जाती। विशेष रूप से जिनके हाथ में यह रेखा पाई जाती है, उनके स्वास्थ्य पर यह अपना शुभ या अशुभ प्रभाव अवश्य डालती है। जिनके हाथ में यह रेखा नहीं होती, वे व्यक्ति प्रायः स्वस्थ, दीर्घजीवी एवं प्रसन्नात्मा होते हैं। यदि यह रेखा मस्तक तथा हृदय-रेखा को काटती हुई जाती है, तो ऐसा व्यक्ति मस्तिष्क एवं हृदय दोनों से कमजोर होता है। यह रेखा जितनी स्पष्ट होगी, स्वास्थ्य उतना ही उत्तम होगा और जितनी टेढ़ी, कटी एवं टूटी होगी, स्वास्थ्य उतना ही कमजोर होगा। विशेष जानकारी के लिए हमारी 'स्वास्थ्य-रेखा' नामक पुस्तक मंगाकर पढ़ें। मूल्य 10-50

**विवाह-रेखा**—यह रेखा कनिष्ठा उंगली के नीचे होती है। जितनी रेखाएं होती हैं, उतने ही विवाह अथवा उतनी स्त्रियों का संसर्ग-सुख भोगने वाला होता है। यदि विवाह-रेखा पर द्वीप का चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति अपनी स्त्री से कलह करने वाला तथा व्यभिचारी होता है। यदि यह रेखा शुद्ध हो और एक हो तो ऐसा व्यक्ति एकपत्नी-व्रती होता है।

विवाह-रेखा के ऊपर-नीचे छोटी-छोटी रेखाएं, जो बहुत ही सूक्ष्म होती हैं, उनसे सन्तान के बारे में विचार करना चाहिए। ये छोटी-छोटी रेखाएं यदि टूटी-फूटी हों तो सन्तान की मृत्यु अथवा गर्भ-पात की सूचक जाननी चाहिए। संतान के विषय में अंगूठे के मूल से लेकर मणिबन्ध (पौंचे) के मोड़ तक की रेखाओं से भी विचार किया जाता है। सन्तान एवं विवाह-सम्बन्धी विस्तृत जानकारी के लिए हमारी 'विवाह-रेखा' नामक पुस्तक मंगाकर पढ़ें। मूल्य 10-50

**प्रभाव रेखा**—ऊपर लिखी गई रेखाओं के अलावा हाथ में और भी छोटी-छोटी रेखाएं होती हैं। उनका भी हाथ में पर्याप्त महत्व होता है जिनकी जानकारी इस प्रकार है—

१. गुरु-रेखा—यह रेखा तर्जनी तथा मध्यमा उंगलियों के बीच के भाग से शुरू होकर अंगूठी की तरह बृहस्पति के क्षेत्र पर स्थित होती है। इस रेखा वाला व्यक्ति मन्त्र-तन्त्र, जादूगरी, मैस्मेरिज्म आदि का विशेष ज्ञाता होता है।

२. मंगल-रेखा—यह रेखा शुक्र-स्थान में बनती है। यह जीवन-रेखा की सहायक रेखा होने से जीवन-रेखा को बल देती रहती है।

३. शनि-रेखा—यह रेखा तर्जनी तथा मध्यमा उंगली के बीच से चल कर शनि-क्षेत्र को गोलाई में घेरती है। इस रेखा वाला व्यक्ति विरक्त, आत्म-ज्ञानी एवं भगवद्भजन में लीन रहता है।

४. शुक्र-रेखा—तर्जनी एवं मध्यमा उंगली के नीचे से चलकर यह रेखा अनामिका एवं कनिष्ठा उंगली के नीचे अर्धवृत्ताकार स्थित होती है। इस रेखा वाला व्यक्ति कामुकता का अधिक शिकार होता है।

इसके अलावा और भी छोटी-बड़ी कई तरह की रेखाएं हथेली के किसी भी स्थान से शुरू होकर भाग्य, मस्तक, जीवन आदि पर अपना असर करती हैं। जो रेखाएं भाग्य आदि की रेखाओं में से, जिस रेखा के साथ लम्बाई में चलती हैं, उनके फल में वृद्धि करती है। जिस रेखा को ये काटती हैं, उसके फल में ये कमी कर देती हैं। विशेष जानकारी के लिए हमारी 'प्रभाव-रेखाएं' नामक पुस्तक मंगाकर पढ़ें। मूल्य 18/-

**हाथ के चिह्न-विचार**—हाथ में चतुष्कोण, त्रिकोण, क्रास, बिन्दु, द्वीप आदि अनेकों चिह्न होते हैं। ये भी हाथ में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। हाथ में त्रिभुज का चिह्न प्रायः शुभ फलसूचक होता है और चतुर्भुज का चिह्न दुर्घटनाओं को टालने का सूचक होता है। क्रास का चिह्न यदि गुरु-क्षेत्र के अलावा कहीं और जगह पर हो, तो अशुभ-सूचक ही होता है। कोण का चिह्न शुभ फलदायी होता है। यदि हाथ में काले रंग का बिन्दु हो तो प्रायः अशुभ और लाल रंग का हो, तो शुभ जानना चाहिए। द्वीप-चिह्न शुभ फलसूचक ही है। इसके अलावा हाथ में और भी चिह्न होते हैं जिनकी विस्तृत जानकारी के लिए हमारी 'हस्तचिह्न विज्ञान' नामक पुस्तक मंगाकर पढ़ें। मूल्य 18/- (अठारह रु०

**शरीर के चिह्न**—केवल हाथ की रेखाओं से ही किसी के चरित्र की ठीक-ठीक परीक्षा ठीक नहीं हो सकती। इसके लिए उसके शरीर के अंगों की बनावट भी जाननी चाहिए। जिनकी आकृति पशुओं व पक्षियों की आकृतियों से मिलती-जुलती होती है, उनमें उसी पशु-पक्षी के प्राकृतिक गुण तथा स्वभाव मिलते हैं। आंख की पुतली का रंग, आंख की बनावट, हाथ-पांव की उंगलियों की बनावट, शरीर की त्वचा का रंग आदि शरीर के सभी अंगों से जीवन के सुख-दुख का हाल जाना जाता है। बिना इसके हस्त-रेखा से विचार करना प्रायः अपूर्ण रहता है। इसलिए शरीर के अंगों की बनावट आदि की विस्तृत जानकारी करना भी परम आवश्यक है। व्यापक जानकारी के लिए पढ़िए 'शरीर-लक्षण-विज्ञान' मूल्य 18/-

**स्त्री सामुद्रिक**—शरीर के विभिन्न अंगों की बनावट आदि के द्वारा स्त्री के स्वभाव, चरित्र, रुचि एवं जीवन में घटने वाली घटनाओं का ज्ञान कराने वाली पुस्तक। मूल्य 18/- (अठारह रुपये)

**वी०पी०पी० द्वारा मंगाने का पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, देहली—६ फोन : 261030**

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

# वर-कन्या की कुण्डली मिलाने का तरीका

वर की कुण्डली में यदि मंगल १, ४, ७, ८, १२-स्थान में हो या चन्द्रमा अथवा शुक्र से ऊपरी खानों में मंगल हो तो स्त्री का नाश करता है। ऐसे ही लड़की की कुण्डली में भी विचारें। इसको ही मंगली योग कहते हैं।

## मङ्गलीनाशक योग

यह कुण्डली में मंगली योग बनता हो और उसी कुण्डली में शनि १, ४, ७, ९, १२ इन स्थानों में हो तो मंगल का दोष दूर हो जाता है। यदि एक कुण्डली में मंगली और दूसरे में मंगली न हो, परन्तु उस कुण्डली में मंगली के सप्तम घर का स्वामी ६, ८, १२ खाने में से किसी एक में हो तो मंगली दोष नष्ट हो जाता है। जन्म लग्न का स्वामी बली होकर सातवें स्थान में बैठा हो तो भी मंगली के बराबर फल देता है। यदि कुण्डलियों का मिलान ठीक न मिले तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। मंगल नीच राशि ४ का हो या हीन बली हो तो भी मंगल दोषकारक नहीं होता। मेलापक सारणी में यदि वर-वधू के गण अच्छे मिल जायें और कुण्डली से योग अच्छे न बनें तो भी सम्बन्ध करना उचित नहीं है। यदि लग्न और चन्द्रमा से पूर्व स्थान पर पाप-ग्रह स्थित हों तो भी सम्बन्ध ठीक नहीं।

## लड़कियों की कुण्डलियों में आवश्यक विचार

योग नं० (१) अश्लेषा नक्षत्र तिथि २, शनिवार। नं० (२) तिथि ७ शतभिषा नक्षत्र, मंगलवार। (३) तिथि १३ कृत्तिका नक्षत्र, रविवार—इन योगों में पैदा हुई कन्या विषकन्या कहलाती है।

## ग्रह-गति से वैधव्य (विषकन्या) योग

(१) जिस कन्या की जन्म-कुण्डली में ९ मंगल १ शनि ५ सूर्य हो।

(२) ८, १२ मंगल क्रूर से मिला हो, १ राहु हो।

(३) १ सूर्य मंगल हो नं० (४) १ सू० मं० रा०। ये योग जिस कन्या की जन्म-कुण्डली में एक भी हो, वह कन्या निश्चय ही विधवा होती है।

जिन कन्याओं को इन योगों में कोई योग बने, उसका मुहूर्त गणपति में लिखा है कि वह कन्या सावित्री व्रत कर अश्वत्थ वृक्ष (पीपल) से अथवा विष्णु परमात्मा से पहले विवाह करके फिर दीर्घायु वाले पुरुष से विवाह करे।

## ग्रहयोगों से उपर्युक्त कुयोगों का परिहार

१—जिस कन्या की जन्म-कुण्डली में लग्न से या चन्द्रमा से सातवें स्थान में शुभ ग्रह उच्च व मित्र राशि का या स्वक्षेत्री होकर बैठा हो तो विधवा दोष, निःसन्तान दोष, विषांगना दोष नष्ट हो जाता है।

२—लग्न व चन्द्र से सातवें शुभ ग्रह हों।

३—लग्न से चन्द्रमा से सप्तम पति सातवें हों तो भी विधवा योगनाशक हैं।

## स्त्री के बांझ होने के योग

१—जिस स्त्री के जन्म-लग्न से आठवें सूर्य-चन्द्रमा अपनी राशि के हों।

२—जिस स्त्री की कुण्डली में १, ८, १०, ११ राशियों में चन्द्रमा शुक्र के साथ हो और पाप ग्रहों से देखा गया हो।

३—जिस स्त्री के सातवें सूर्य व राहु हों और शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो बालक पैदा होकर मर जाते हैं।

४—जिस स्त्री के जन्म लग्न से आठवें चन्द्रमा और बुध अपनी राशि के हों तो स्त्री के एक ही प्रसव होता है।

## अथ पक्षी शकुन-विचार

प्रश्नकर्त्ता अपने मन में विचार करके इस चिड़िया पर जो 'श्री' लिखी हैं उनमें से किसी एक पर उंगली धरे। उसका फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चोंच दुःख पंखे मरण, कंठे मिलन समाज।
उदर सुभोजन पूंछ धन, मस्तक पावै राज॥
शुभ लक्षण पांवन परै, घर में मङ्गलचार।
प्रश्नोत्तर के समय यह, बुधजन करें विचार॥

देहाती पुस्तक भण्डार

पंच पक्षी तंत्र (ले० पं. राजेश दीक्षित)—उल्लू, कौवा, बाज, गिद्ध और मुर्गा ये पांचों पक्षी, जिनसे प्रत्येक मनुष्य पूरी तरह परिचित हैं, इनके द्वारा शुभ-अशुभ शकुनों के फल, जीवन में होने वाली आवश्यक घटनाएं, इत्यादि प्रतिदिन काम में आने वाली बहुत-सी बातें जानना यंत्र-मंत्र-तंत्र द्वारा संभव है। मूल्य 30-00

देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

पहले चक्र में जिस दिशा में जो राशियां दर्ज हैं, उन राशियों का चन्द्रमा उन-उन दिशाओं में रहता है। यात्रा के समय यदि चन्द्रमा सामने आये तो धन-लाभ, पीछे हो तो धन-हानि, दाहिने आवे तो सुख, वाम (बायें) हो तो मृत्यु।

चन्द्रवास चक्रम्

दिग्शूल चक्रम्

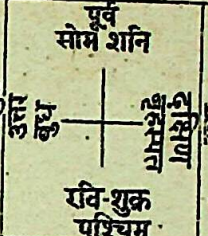


कालराहु चक्रम्

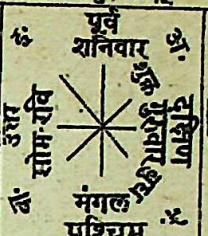


योगिनीवास चक्रम्

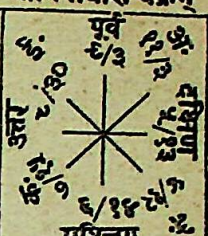


चन्द्र-फलम्—चन्द्रमा सामने तथा दायें हाथ का शुभ है। तीर्थ-यात्रा आदि में घात चन्द्र विचार-तीर्थ-यात्रा, विवाह, अन्नप्राशन, उपनयन (यज्ञोपवीत) आदि शुभ कार्यों में घात चन्द्र का विचार नहीं होता। घात तिथि, घात वार, घात नक्षत्र इनका अशुभ फल केवल यात्रा में माना गया है, अन्य शुभ कार्यों में कोई दोष नहीं होता।

जिस-जिस दिशा में ऊपर जो-जो वार लिखे गए हैं ये वार उस-उस दिशा में जाने को मना हैं, इसी को दिग्शूल कहते हैं।

ऊपर काल-चक्र का विचार भी यात्रा में अवश्य करना चाहिए। इसका फल चक्र के नाम तुल्य होता है।

इस चक्र में जो-जो तिथि जिस-जिस दिशा में लिखी हैं, उनकी योगिनी उसी दिशा में रहती हैं। बायें शुभ, पीछे लाभ, दाहिने धन-नाश, सामने मृत्यु।

दिन का चौघड़िया + रात्रि का चौघड़िया

| र | चं | मं | बु | बृ | शु | श | घ० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उ | अ | रो | ला | शु | चं | का | ३।।। |
| च | का | उ | अ | रो | ला | उ | ३।।। |
| ला | शु | चं | का | उ | अ | रो | ३।।। |
| अ | रो | ला | शु | च | का | उ | ३।।। |
| का | उ | अ | रो | ला | शु | चं | ३।।। |
| शु | चं | का | उ | अ | रो | ला | ३।।। |
| रो | ला | शु | चं | का | उ | अ | ३।।। |
| उ | अ | रो | ला | शु | च | का | ३।।। |

| र | चं | म | बु | बृ | शु | श | घ० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शु | च | का | उ | अ | रो | ला | ३।।। |
| अ | रो | ला | शु | च | का | उ | ३।।। |
| चं | का | उ | अ | रो | ला | शु | ३।।। |
| रो | ला | शु | च | का | उ | अ | ३।।। |
| का | उ | अ | रो | ला | शु | चं | ३।।। |
| ला | शु | चं | का | उ | अ | रो | ३।।। |
| उ | अ | रो | ला | शु | चं | का | ३।।। |
| शु | च | का | उ | अ | रो | ला | ३।।। |

देहाती पुस्तक भण्डार,

अगर जरूर जाना हो और दिशाशूल दोष हो तो वारों के मुताबिक पदार्थ खाकर जाने से दोष-निवृत्ति हो जाती है। नीचे चक्र में देखें।

## चक्रम्

| वार | र | चं | मं | बु | बृ | शु | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| खाने के पदार्थ | घृतयुक्त पान | चन्दन | गुड़ | तिल | दही | घृत | तिल |

## यात्रा के नक्षत्र

अ० अनु० ज्ये० मू० ह० म० पुन० पु० र० रो० इन नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, ११, १३ तिथियों में शुभ वारों में अच्छा शकुन विचार कर अनुकूल और सामने व दाहिने होने पर यात्रा करें। योगिनी बाएं या पीठ-पीछे हो तो यात्रा सफल होती है।

## यात्रा में अपशकुन

बिडाल, युद्ध, विधवा स्त्री, वन्ध्या स्त्री, चमड़ा, संन्यासी, लकड़ियां, छींक, बुरे शब्द, हड्डियां अगर इनमें से कोई यात्रा के समय सामने आवे तो कार्य नष्ट होता है, नई आपत्ति आती है।

## यात्रा में शकुन

हाथी, घोड़ा, ब्राह्मण, शराब, मांस, मछली, जल से भरा एक कलश, दही, नेवला, पुत्रवती स्त्री, सिंगार किए स्त्री, कन्या, ममोला, सरसों—ये शकुन हों तो कार्य सिद्ध होगा।

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली।

## यात्रा आदि में शुक्र-विचार

गांव-से-गांव जाने में, दुर्भिक्ष व विवाह में सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता। शुक्रान्ध—रेवती, अश्विनी, भरणी व कृत्तिका के प्रथम चरण तक शुक्र अन्धे रहते हैं। उसमें सम्मुख शुक्र दोष नहीं। शुक्र एवं गुरु, उदय व अस्त के तीन दिन पहले व तीन दिन बाद क्रमशः बाल व वृद्ध रहते हैं। इसमें शुभ कार्य न करें।

नोट—इस विषय पर पूरी पुस्तक शकुन ज्योतिष शास्त्र मंगाएं। मूल्य 24-00

देहाती पुस्तक भंडार (REGD.) चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006. फोन : 261030

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# नक्षत्रों की सुलोचन आदि संज्ञा से चोरी गये पशु या माल के मिलने-न-मिलने के देखने का चक्र

| नक्षत्र संज्ञा | नक्षत्र नाम | दिशा जिसमें पशु या माल गया | फल |
|---|---|---|---|
| सुलोचन | कृत्तिका, पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, स्वाति, मूल, श्रवण, उत्तराभाद्रपद | उत्तर दिशा में | नहीं मिले |
| अन्ध | रोहिणी, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, पूर्वाषाढ़, धनिष्ठा, रेवती, | पूर्व दिशा में | शीघ्र ही मिले |
| काण | मृगशिरा, श्लेषा, हस्त, अनुराधा, उत्तराषाढ़, शतभिषा, अश्विनी, | दक्षिण दिशा में | तीन दिन में मिले |
| मन्द | आर्द्रा, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, अभिजित, पूर्वाभाद्रपद, भरणी | पश्चिम दिशा में | पता लगाने पर नहीं मिले |

## ग्रहों द्वारा नित्यप्रति का शुभ-अशुभ फल देखने का चक्र

| सूर्य | | | चन्द्र | | | मंगल (भौम) | | | बुध | | | बृहस्पति | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र | वासस्थान | फल | नक्षत्र | वासस्थान | फल | नक्षत्र | वासस्थान | फल | नक्षत्र | वासस्थान | फल | नक्षत्र | वासस्थान | फल |
| ३ | मुख | कष्ट | ६ | मस्तक | लाभ | ६ | मस्तक | विजय | ३ | मस्तक | मान | ४ | मस्तक | मान |
| ४ | दायां हाथ | लाभ | १ | मुख | श्री.प्रा. | ३ | मुख | कष्ट | १ | मुख | श्री.प्रा. | ४ | दायां हाथ | श्री.प्रा. |
| ६ | पैर | यात्रा | ३ | दायां हाथ | हानि | ३ | दायां हाथ | लाभ | २ | नेत्र | प्रेमबढ़े | १ | गला (कंठ) | श्री.प्रा. |
| ४ | बायां हाथ | बन्धन | ६ | हृदय | सुख | ६ | बायां हाथ | यात्रा | ५ | नाभि | लाभ | ५ | मुख | कष्ट |
| ५ | हृदय | लाभ | ३ | बायां हाथ | कष्ट | ३ | पैर | भय | ६ | पैर | यात्रा | ६ | पैर | यात्रा |
| ४ | नेत्र | श्री.प्रा. | ६ | कुक्षि | चिन्ता | १ | गुदा | मृत्यु | ४ | बायां हाथ | श्री.प्रा. | ४ | बायां हाथ | सुख |
| १ | मस्तक | मान | १ | दायां पैर | हानि | १ | नेत्र | भय | ४ | दायां हाथ | श्री.प्रा. | ३ | नेत्र | सुख |
| १ | गुदा | कष्ट | १ | बायां पैर | कष्ट | ४ | हृदय | खुशी | २ | गुदा | बंधन | | | |

जन्मनक्षत्र से सूर्यनक्षत्र तक गिनने से जो संख्या आवे उससे शुभाशुभ फल जानें।

जन्मनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनने से जो संख्या आवे उससे शभाशुभ फल जानें।

जन्म नक्षत्र से मंगल के नक्षत्र तक गिनने से जो संख्या आवे उससे शुभाशुभ फल जानें।

जन्म नक्षत्र से बुध के नक्षत्र तक गिनने से जो संख्या आवे उससे शुभाशुभ फल जानें।

जन्म नक्षत्र से गुरु के नक्षत्र तक गिनने से जो संख्या आवे उससे शुभाशुभ फल जानें।

| शुक्र | | | शनि | | | राहु | | | केतु | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र | वास स्थान | फल | नक्षत्र | वास स्थान | फल | नक्षत्र | वास स्थान | फल | नक्षत्र | वास स्थान | फल |
| ३ | मुख | लाभ | [illegible] | मुख | हानि | ३ | मस्तक | मान | ४ | मस्तक | विजय |
| ५ | मस्तक | शुभ | ४ | दायां हाथ | विजय | ४ | दायां हाथ | नुकसान | १ | दायां हाथ | विजय |
| ३ | दायां पैर | दुःख | ६ | पैर | यात्रा | ६ | पैर | यात्रा | ५ | मुख | मान |
| ५ | बायां पैर | दुःख | ५ | उदर | लाभ | ५ | बायां हाथ | मृत्यु | ४ | बायां हाथ | विजय |
| २ | हृदय | श्री प्राप्ति | ४ | बायां हाथ | दुःख | ३ | हृदय | लाभ | ६ | पैर | सुख |
| ८ | बायां हाथ | सुख | ३ | मस्तक | राज्य पद | १ | कंठ (गला) | दुःख | २ | हृदय | चिन्ता |
| १ | गुदा | श्री प्राप्ति | २ | नेत्र | सुख | २ | मुख | विजय | ४ | गला (कंठ) | कष्ट |
| १ | दायां हाथ | स्त्री लाभ | २ | गुदा | दुख | ३ | नेत्र | सुख | १ | गुदा | अतिभय |

जन्म नक्षत्र से शुक्र नक्षत्र तक गिनने से जो संख्या आवे उससे शुभाशुभ फल जानें।

जन्म नक्षत्र से शनि नक्षत्र तक गिनने से जो संख्या आवे उससे शुभाशुभ फल जानें।

जन्म नक्षत्र से राहु नक्षत्र तक गिनने से जो संख्या आवे उससे शुभाशुभ फल जानें।

जन्म नक्षत्र से केतु के नक्षत्र तक गिनने से जो संख्या आवे उससे शुभाशुभ फल जानें।

**असली प्राचीन हस्त-लिखित पुराना इन्द्रजाल**—दुनिया में असम्भव कुछ नहीं, मनुष्य जो चाहे कर सकता है। अगर आज तक आपको असली इन्द्रजाल की किताब नहीं मिली, तो आप हमारे यहां से असली और पुराने छापे की किताब मंगाएं जिसमें भैरो, काली, दुर्गा, तथा हनुमान—सबके मन्त्र क्षणमात्र में सिद्धि प्रदान करने वाले दिये गए हैं। इसके अलावा वशीकरण विद्या के तन्त्र-मन्त्र को सिद्ध करना, चाहे जिस स्त्री-पुरुष को अपने वशीभूत कर उससे मनचाहा काम लो। इसमें यक्षणी साधन, भूत विद्या इत्यादि बातों का सविस्तार वर्णन है। यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों को सिद्धि करने की पूर्ण क्रिया लिखी गई है। पृष्ठ ६२८, मूल्य 31-00 **देहाती पुस्तक भण्डार**, चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## राहु-प्रश्न-फल

१ मित्र धोखा देगा, सावधान रहना।
२ चिंता शीघ्र ही मिट जायेगी।
३ व्यापार से लाभ नहीं होगा।
४ तबादला हो जाएगा।
५ स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
६ बीमार अच्छा हो जाएगा।
७ विवाह हो जायेगा।
८ गड़ा धन भाग्य में नहीं है।
९ जीवन में सफलता कम मिलेगी।
१० जीवन बाधाओं से युक्त बीते।
११ विद्या प्राप्त नहीं हो सकेगी।
१२ पास होने में सन्देह है।
१३ मकान की आशा पूरी होगी।
१४ खेती में लाभ मिलेगा।
१५ तरक्की का योग प्रयत्न से है।
१६ नौकरी अभी देर से मिलेगी।

## यम-प्रश्न-फल

१ परदेशी रास्ते में चल रहा है।
२ खोई वस्तु मिल जायेगी।
३ कर्ज इस समय मिलना मुश्किल है।
४ मित्र के साथ अच्छी बन जायेगी।
५ चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
६ व्यापार से लाभ रहेगा।
७ तबादला हो जायेगा।
८ स्वप्न का फल मध्यम है।
९ बीमारी अच्छी हो जायेगी।
१० विवाह हो जायेगा।
११ गड़ा धन प्राप्त होगा।
१२ जीवन में सफल होना कठिन है।
१३ जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करोगे।
१४ विद्या प्राप्त नहीं कर सकोगे।
१५ पास नहीं होगे।
१६ तरक्की में बाधा है।

## भैरव-प्रश्न-फल

१ कूप-निर्माण की कामना पूरी हो।
२ भाइयों से अच्छी बन जाएगी।
३ यात्रा से लाभ नहीं रहेगा।
४ परदेशी अभी नहीं आयेगा।
५ खोयी वस्तु प्रयत्न से मिले।
६ कर्ज मिल सकेगा।
७ मित्र से बननी कठिन है।
८ चिन्ता मिटेगी, देव-पूजा करो।
९ व्यापार में लाभ पाना मुश्किल है।
१० तबादला प्रयत्न से होगा।
११ स्वप्न का फल उत्तम नहीं है।
१२ बीमार अच्छा होना कठिन है।
१३ विवाह होगा, चिंता करना व्यर्थ है।
१४ गड़ा धन नहीं मिलेगा।
१५ जीवन में अच्छी सफलता मिलेगी।
१६ जीवन में बाधाएं विशेष आयेंगी।

## केतु-प्रश्न-फल

१ कर्ज तो मिलेगा, पर अभी देर है।
२ मित्र से सतर्क रहें।
३ चिंता हनुमान की पूजा से मिटेगी।
४ व्यापार में लाभ होगा।
५ तबादला रुक जायेगा।
६ स्वप्न का फल मध्यम होगा।
७ बीमार अच्छा हो जायेगा।
८ विवाह उपाय से होगा।
९ गड़ा धन पितृ-पूजा से मिलेगा।
१० जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
११ जीवन में सफलता कम मिलेगी।
१२ विद्या कठिन परिश्रम से प्राप्त होगी।
१३ पास हो जाओगे।
१४ विद्या प्राप्त नहीं कर सकोगे।
१५ पास नहीं होगे।
१६ तरक्की में बाधा है।

## विश्वेदेवा-प्रश्न-फल

१ यात्रा लाभदायी रहेगी।
२ परदेसी अभी नहीं आ रहा है।
३ खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
४ कर्ज देर से मिलेगा।
५ मित्र के साथ नहीं बन सकेगी।
६ चिन्ता सब दूर हो जाएगी।
७ व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
८ तबादला नहीं हो सकेगा।
९ स्वप्न का फल अशुभ है।
१० बीमार अच्छा नहीं होगा।
११ विवाह होने में सन्देह है।
१२ गड़ा धन नहीं मिलेगा
१३ जीवन में अच्छी सफलता मिले।
१४ जीवन में कष्ट अधिक मिले।
१५ शिक्षा प्राप्त करोगे।
१६ पास हो जाओगे।

## वासुकि-प्रश्न-फल

१ यह वर्ष मध्यम रहेगा।
२ कुआं बन जायेगा।
३ भाइयों से नहीं बनेगी।
४. यात्रा में लाभ मिलेगा
५. परदेशी शीघ्र ही आ जायेगा।
६. खोई वस्तु मिलेगी।
७. कर्ज मिलेगा।
८. मित्र धोखा देगा सावधान रहना।
९. चिन्ता मिट जायेगी।
१०. व्यापार से लाभ मिलेगा।
११. तबादला हो जायेगा।
१२. स्वप्न का फल शुभ है।
१३. बीमार के अच्छे होने में सन्देह है।
१४ विवाह उपाय से हो सकेगा।
१५ गड़ा धन पितृ-पूजा से मिल सकेगा।
१६ जीवन में सफलता कम मिलेगी।

## ध्रुव-प्रश्न-फल

१ खोई वस्तु प्रयत्न से मिल सकेगी।
२ कर्ज मिल जायेगा।
३ मित्र के साथ नहीं बनेगी।
४ चिन्ता शीघ्र दूर होगी।
५ व्यापार से लाभ नहीं हो सकेगा।
६ तबादला नहीं होगा।
७ स्वप्न का फल उत्तम है।
८ बीमार के अच्छे होने में सन्देह है।
९ विवाह देर से होगा।
१० गड़ा धन मिलने में सन्देह है।
११ जीवन में सफलता कष्ट से मिलेगी।
१२ जीवन में सुख नहीं मिलेगा।
१३ विद्या प्राप्त करोगे।
१४ पास होने में सन्देह है।
१५ मकान अभी नहीं बन पायेगा।
१६ खेती से लाभ मिलेगा।

## यक्ष-प्रश्न-फल

१ भाइयों से बननी मुश्किल है।
२ यात्रा से लाभ कम मिलेगा।
३ परदेशी शीघ्र ही आ जायेगा।
४ खोई वस्तु मिल जायेगी।
५ कर्जा नहीं मिलेगा।
६ मित्र के साथ अच्छा मेल होगा।
७ चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
८ व्यापार से लाभ मिलेगा।
९ तबादला होने के योग हैं।
१० स्वप्न का फल शुभ है।
११ बीमार अच्छा हो जायेगा।
१२ विवाह उपाय से होगा।
१३ गड़ा धन शीघ्र प्राप्त होगा।
१४ जीवन में सफल होना मुश्किल है।
१५ जीवन सुखपूर्वक बीतेगा।
१६ विद्या पूजा से प्राप्त होगी।

## कुबेर-प्रश्न-फल

१ दिन शुभ नहीं है।
२ यह वर्ष अच्छा रहेगा।
३ कुआं नहीं बन सकेगा।
४ भाइयों से अच्छी बन जायेगी।
५ यात्रा से लाभ नहीं मिलेगा।
६ परदेशी बीमार है, अभी नहीं आयेगा।
७ खोयी वस्तु मिलने में संदेह है।
८ कर्ज नहीं मिलेगा।
९ मित्र के साथ सावधानी से कार्य करो।
१० चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
११ व्यापार से लाभ मिलना कठिन है।
१२ तबादला नहीं होगा।
१३ स्वप्न का फल शुभ नहीं है।
१४ बीमार अच्छा हो जाएगा।
१५ विवाह उपाय से होगा।
१६ गड़ा धन शीघ्र प्राप्त हो जायेगा।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## मित्र-प्रश्न फल

१ पुत्र होगा।
२ दिन शुभ है।
३ यह वर्ष उत्तम है।
४ कुआं बन जायेगा।
५ भाइयों से बिगाड़ होगा।
६ यात्रा से लाभ कम है।
७ परदेशी लौट रहा है।
८ खोयी वस्तु नहीं मिलेगी।
९ क़र्ज कठिनाई से मिलेगा।
१० मित्र के साथ अच्छी बन जायेगी।
११ चिन्ता मिट जायेगी।
१२ व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१३ तबादला हो जायेगा।
१४ स्वप्न का फल शुभ है।
१५ बीमार के अच्छा होने में संदेह है।
१६ विवाह शीघ्र ही हो जायगा।

## शेष-प्रश्न-फल

१ सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
२ स्त्री तेज स्वभाव की मिलेगी।
३ इच्छा पूरी होने में संदेह है।
४ कन्या होगी।
५ दिन मध्यम रहेगा।
६ यह वर्ष उत्तम रहेगा।
७ कुआं बनाने में अचानक बाधा पड़े।
८ भाइयों से बननी मुश्किल है।
९ यात्रा से लाभ नहीं मिलेगा।
१० परदेशी शीघ्र घर आ जायेगा।
११ खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
१२ कर्ज अभी नहीं मिलेगा।
१३ मित्र के साथ अच्छी बन जायेगी।
१४ चिंता अभी दूर नहीं होगी।
१५ व्यापार से लाभ मिलेगा।
१६ तबादले की आशा देर से पूरी होगी।

## काम-प्रश्न-फल

१ गुप्त प्रेम करती है।
२ सम्बन्धी से धोखे की उम्मीद कम है।
३ स्त्री सरल स्वभाव की मिलेगी।
४ इच्छा पूरी होगी।
५ पुत्र होगा।
६ दिन शुभ नहीं हैं।
७ यह वर्ष मध्यम रहेगा।
८ गृह-निर्माण की कामना पूरी होगी।
९ भाइयों से साधारण मेल रहे।
१० यात्रा से लाभ होगा।
११ परदेशी अभी नहीं आ रहा है।
१२ खोई वस्तु मिल जायेगी।
१३ कर्ज मिल जायेगा।
१४ मित्र के साथ नहीं बनेगी।
१५ चिंता शीघ्र मिट जायेगी।
१६ व्यापार से हानि होगी।

## जयन्त-प्रश्न-फल

१ इच्छा देर से पूरी होगी।
२ कन्या होगी।
३ दिन मध्यम रहेगा।
४ यह वर्ष उत्तम रहेगा।
५ कुआं बनने में रुकावटें ज्यादा हैं।
६ भाइयों से मेल-मिलाप रहेगा।
७ यात्रा से लाभ रहेगा।
८ परदेशी अभी नहीं आयेगा।
९ खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
१० कर्ज नहीं मिलेगा।
११ मित्र के साथ बनना कठिन है।
१२ चिन्ता बढ़ जायेगी।
१३ व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
१४ तबादला होने में संदेह है।
१५ स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
१६ बीमार शीघ्र ही अच्छा होगा।

## तक्षक-प्रश्न-फल

१ स्त्री सरल स्वभाव की मिलेगी।
२ इच्छा पूरी होगी।
३ पुत्र होगा।
४ दिन शुभ है।
५ यह वर्ष अच्छा रहेगा।
६ कुआं बन जायेगा।
७ भाइयों से अनबन रहेगी।
८ यात्रा में लाभ मिलना कठिन है।
९ परदेशी अभी देर से आयेगा।
१० खोयी वस्तु देर से मिलेगी।
११ कर्ज देर से मिलेगा।
१२ मित्र के साथ नहीं बनेगी।
१३ चिन्ता शीघ्र दूर होगी।
१४ व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१५ तबादले की आशा पूरी होगी।
१६ स्वप्न का फल उत्तम होगा।

## काल-प्रश्न-फल

१ तीर्थ-यात्रा अभी नहीं हो सकेगी।
२ शुद्ध प्रेम करती है।
३ सम्बन्धी धोखा दे सकता है।
४ स्त्री अच्छे स्वभाव की नहीं मिलेगी।
५ इच्छा पूरी होने में देरी है।
६ कन्या होगी।
७ दिन शुभ रहेगा।
८ यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा।
९ कूप अभी देरी से बनेगा।
१० भाइयों से मेल कम रहेगा।
११ यात्रा से लाभ नहीं रहेगा।
१२ परदेशी अभी नहीं आयेगा।
१३ खोयी वस्तु मिलना कठिन है।
१४ कर्ज मिलने में संदेह है।
१५ मित्र के साथ अच्छी बन जायेगी।
१६ चिंता कुछ समय बाद मिटेगी।

## अनन्त-प्रश्न-फल

१ मन्दिर बनवाने की आशा पूरी होगी।
२ तीर्थ-यात्रा कर सकोगे।
३ प्रेम नहीं करती है।
४ सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
५ स्त्री उत्तम स्वभाव की मिलेगी।
६ इच्छा पूरी होगी।
७ पुत्र होगा।
८ दिन शुभ नहीं हैं।
९ यह वर्ष मध्यम है।
१० कूप-निर्माण की आशा शीघ्र पूरी हो।
११ भाइयों से नहीं बनेगी।
१२ यात्रा से लाभ मिलेगा।
१३ परदेशी आ रहा है।
१४ खोयी वस्तु नहीं मिल सकेगी।
१५ कर्ज शीघ्र ही मिल जायेगा।
१६ मित्र से बनना मुश्किल है, सावधान।


## आपकी स्वास्थ्य (YOUR HEALTH)

(ले०—स्वामी सेवानन्द)

मौत को रोका नहीं जा सकता, लेकिन भारतीय योग के द्वारा मनुष्य दीर्घकाल तक युवा जरूर रह सकता है। प्रातः आधा घण्टा नियमित रूप से विभिन्न प्रकार के आसनों द्वारा मनुष्य स्वस्थ व नीरोग रह सकता है। पुस्तक में अंकित चित्रों द्वारा मनुष्य सभी आसनों की क्रियाओं को स्वयं समझ सकता है। इस पुस्तक को मंगाकर अवश्य पढ़िए और पूरे परिवार को पढ़ाइये। मूल्य 10/- (दस रुपये)

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने का एकमात्र स्थान—

**देहाती पुस्तक भंडार** (REGD.) चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006. फोन : 261030


CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

रमल ज्योतिष शास्त्र
मूल्य 24/- (छपकर तैयार)

# भाग्य की हालत देखने की उत्तम प्रश्नावली

शकन ज्योतिष शास्त्र
24-00 (छपकर तैयार)

## रमल प्रश्नावली

सज्जनों ! 'श्री बापू मशहूर राष्ट्रीय जन्त्री' में हर वर्ष परिश्रम करके फलादेश बढ़ाया जाता है। यह प्रश्नावली नीचे लिखी जाती है। यह अति उत्तम विधि बहुत समय से परीक्षा की हुई है और ठीक निकली है। हर मनुष्य बिना दूसरे की सहायता के अपना भला-बुरा, जो होनहार है देख सकता है। इसमें किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं है। यह पुराने ग्रन्थों से ली हुई ऋषि-प्रणीत है। इसके देखने की रीति यह है कि चौकोर लकड़ी या हाथीदांत का पासा बनवा लें। इसमें हर तरफ क च ट त अक्षर खुदवा लें। जब प्रश्न करना हो तो शुद्ध होकर नीचे लिखे प्रश्न को पढ़कर पासा डालें, किसी देवता का स्मरण करें, फिर मन्त्र पढ़ें—"ओं अर्हंत महावीराय नमः।" पासे को हिला कर डालें। जो अक्षर ऊपर आवे उसे याद रखें। इस प्रकार तीन बार डालें और अक्षर याद करके फिर फल में देखें। जैसे किसी ने पासा डाला तो प्रथम त आया, फिर क, फिर च आया, अतः तकच में जो फल है वही आपका है। इसी प्रकार देखने का फल है।

देहाती पुस्तक भंडार

● क क क—तुम्हें एक मास से इस कार्य की चिन्ता है, मगर हुआ नहीं है। अब तुम्हारे शत्रु मित्र बन जायेंगे, व्यापार उत्तम होगा, लक्ष्मी का लाभ होगा, राजा से मान्यता प्राप्त होगी, स्त्री का भरोसा मत करना।

● क क च—जो बात विचारते हो, वह शीघ्र ही बिना प्रयत्न पूरी होगी। शत्रु शरण आवेंगे, लाभ का समय आ गया है, कार्य सिद्ध होंगे, दो दिन से चिन्ता है।

● क च च—जो काम विचारा है देरी से होगा। किसी मित्र से भेंट होगी, रुपया जो गया है वह प्राप्त होगा। इच्छा डेढ़ मास बाद पूरी होगी, पेट में दर्द रहता होगा।

● क ट ट—आपका विचार व्यापार करने का है, कुछ चिन्ता भी है। सब चिन्ता शीघ्र ही मिटेगी। १५ दिन बाद स्वतः विचार में काम आवेगा, लाभ होगा। पेट में गड़बड़ रहती है।

● क ट क—आपके काम अति हैं। रुपयों का लाभ होगा। चिन्ता जो है जाती रहेगी। भूमि धन की चिन्ता शीघ्र ही पूरी होगी। मित्रों से भेंट व लाभ होगा।

● क त क—काम तो अति परिश्रम से करते हो, मगर होता नहीं। किसी सहायता से कुछ समय पीछे बनेगा। अवश्य किसी की सहायता प्राप्त होगी, तभी काम होगा। स्त्री से क्लेश मत करो।

● क च ट—आपके सब काम पूरे बनेंगे। मित्रों से भेंट हो। व्यापार में लाभ हो। कुटुम्ब बढ़े, सफर के कार्य पूरे हों, बाहर जाते समय पूजा कर के जाना।

● क ट च—जिस काम को विचारते हो वह अति दूर है। अति कष्ट है। काम पूरा नहीं होगा। यदि हठ करोगे तो कष्ट व हानि है। ४ मास पीछे समय उत्तम आवेगा, तब होगा।

● क त त—तुमको अति शीघ्र लाभ होगा, लगभग एक मास तक इच्छा पूरी होगी। समय आपका उत्तम है, अच्छा काम मिलेगा। स्वप्न में हरे वृक्ष दीखते हैं।

● क क त—काम कुछ समय पीछे होगा। चिन्ता जो है जाती रहेगी। जो काम करोगे लाभ होगा। किसी से भेंट होगी। भाई तुमसे क्लेश रखते हैं, ध्यान रखो।

● क च त—मित्र आपके प्रतिकूल हैं, मित्र धोखा देते हैं और अपना काम निकालते हैं। उनकी राय से काम मत करो। विचारा हुआ काम कुछ समय पीछे होगा।

● क ट त—आपका कार्य अति कठिन है, शत्रु बहुत हैं, इस कारण इस काम को छोड़ दो। अपने विचार व्यापार में लगाओ जिससे लाभ हो। हठ करोगे तो हानि होगी। भूख तुमको कम लगती है।

● क त च—जिस काय का बार-बार विचार करते हो शीघ्र पूरा होगा। खुशी होगी। सन्तान से आराम मिलेगा। धन का लाभ होगा, काम उत्तम रहेगा।

● क त ट—आपकी इच्छा पूरी होगी। लाभ भी होगा। शरीर से सुख, कुटुम्ब में वृद्धि होगी। पूजा दान करो। जो विचार है पूरे होंगे। पशु से लाभ होगा; देखो, मकान तीन मंजिला है।

● क त क—चित में जो चिन्ता है शीघ्र जाती रहेगी। इच्छा पूरी होगी। व्यापार से लाभ होगा। विचार सब पूरे होंगे। मित्रों से भेंट होगी, गुप्त स्थान पर देखो, तिल है।

● क क ट—जो काम विचारते हो, अकेले से न होगा किसी की सहायता से होगा, आधा होगा। शत्रु शत्रुता करते हैं। उनसे सावधान रहो। देखो, तुम्हारे माथे पर निशान है।

● च च च—अभी समय साधारण है। जो काम विचारते हो उस वास्ते इष्ट देवता की पूजा करो। काम पूरा होगा, किसी झगड़े में जीत होगी। स्त्री से कहा-सुनी रहती है।

● च च क—आपका काम अति कठिन है। धर्म के सहारे से ही हो सकता है। साधु के बताये मार्ग से लाभ होगा व काम पूरा होगा। दान-पूजा व भगवान् का भजन करो। चित्त में स्त्री के विचार हैं।

● च क क—नेष्ट है जो भी काम करते हो, हानि उठाते हो। कुछ समय और रुको, कार्य पूरा होगा। इस समय बाहर जाने से लाभ है।

● च क च—तुम्हारे भाई तुमसे प्रतिकूल हैं। तुम अपनी आदत नहीं छोड़ते इससे कष्ट उठाते हो। अब पुण्य का जोर है, समय आ गया है। सब काम पूरे होंगे। तुम्हारे मिजाज में देखो, क्रोध है।

● च ट ट—तुमको एक मास से धन की चिन्ता है। अब तक शुभ काम नहीं होने देते। एक मास पीछे शत्रु

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

दब जावेंगे। उस समय काम पूरा होगा, लाभ भी होगा। व्यापार अच्छा होगा, मान बढ़ेगा।

● च च च—आपका समय अब उत्तम आ रहा है। जो काम विचार रहे हो, पूरा होगा। व्यापार में लाभ होगा, मुकदमे में जीत होगी। किसी का भरोसा न करना, धोखे का ख्याल है।

● च ट च—तुमको व्यापार की बराबर चिन्ता है सो देरी से पूरी होगी। सहायता लेनी पड़ेगी। लोग मुंह पर बड़ाई पीछे बुराई करते हैं। थोड़ा समय जाने पर शत्रु दब जायेंगे, तब काम होगा।

● च त क—काम नहीं होगा; बल्कि बीमारी का भय है। रुपये की हानि है। विचार से काम करो। कोई धोखा देगा। भरोसा किसी का भी मत करना। शान्ति से समय बिताओ, तीन मास पीछे काम होगा।

● च त त—काम तुम्हारा अति कठिन है और दूर से लाभ भी नहीं है; बल्कि हानि की शका है। सुख मिलना कठिन है। आगे चलकर सुख होगा। देखो, मकान का दरवाजा उत्तर में है।

● च च त—आपको एक चिंता है। अपने शत्रु को नष्ट करना चाहते हो। कुछ समय पीछे होगा। कुछ हानि हो गई थी। अब समय उत्तम है, कार्य पूरे होंगे तुम्ह खांसी रहती है।

● च त च—शत्रु दब जायेंगे। काम ऐसे होता दीखेगा, जैसे रोजाना चन्द्रमा बढ़ता रहता है। तुमसे जो प्रतिकूल रहेंगे कष्ट पावेंगे। तुन अपने देव की पूजा करो। तुम्हारा चित्त घबराहट में है।

● च क त—तुम बहुत समय से चिंता में रहते हो अब आपका समय अति उत्तम आ रहा है। काम पूरे होंगे। घबराओ नहीं। किसी सम्बन्धी से सहायता मिलेगी। देखो, तुम्हारे माथे में दर्द रहता है।

● च क क—अब चिंता मत करो। किसी उत्तम मनुष्य से भेंट होगी। सब कष्ट दूर होने का समय आ गया है। डेढ़ मास तक कष्ट दूर होंगे, दिल के अरमान पूरे होंगे।

● च च क—आपको किसी परदेशी की चिंता है। उसको लाना चाहते हैं, विचार अच्छा है, मगर होनी बलवान है, इस कारण अभी काम नहीं होगा। कुछ समय बाद होगा। देखो, पेट में दर्द रहता है।

● च क च—अभी आपका समय नेष्ट है। कुछ समय में काम होगा, लाभ भी होगा। कष्ट सब जाते रहेंगे, चित्त में चिन्ता मत करो। उत्तम मनुष्य से भेंट होगी और काम पूरा होगा, इज्जत बढ़ेगी।

● च त क—आपको रुपये की चिंता है। आप चित्त के नरम हो, जल्दी कर जाते हो, शत्रु गालिब हो जाते हैं। मित्र भी पूरी सहायता नहीं देते। नरमी छोड़ दो लाभ होगा। शत्रु शरण में आवेंगे।

● ट ट ट—विवाह की आपको चिंता है। लाभ के लिए बाहर भी जाना चाहते हो। सोचा हुआ कार्य शीघ्र ही पूरा होगा, इज्जत बढ़ेगी। सफर के काम पूरे होंगे, चिंता मिट जायेगी।

● ट ट क—आपका विचार बाहर जाने का है। कोई अच्छी जगह मिलेगी या नहीं सो अपने इष्ट देवता की पूजा दान करके जाओ और गुरु से आज्ञा लो आपको अति लाभ होगा। सब काम पूरे होंगे, स्वप्न से ऊंचे चढ़ते दीखते हो।

● ट क क—आपका रोग-कष्ट शीघ्र दूर होगा। नेष्ट दिन गए, उत्तम आगए। सब काम पूरे होंगे, मन की इच्छाएं पूरी होंगी। सब चिंता मिटकर शान्ति मिलेगी। शत्रु मित्र बनेंगे, शरीर में मस्से हैं।

● ट क ट—आप कहीं जाना चाहते हो। वहां जाने से आपका काम पूरा होगा। नेष्ट समय गया, अच्छा आ गया है। जो काम चाहोगे पूरा होगा। किसी मित्र की सहायता करनी होगी।

● ट च च—तुमको रोजगार की चिंता है, व्यापार में किसी की सहायता चाहते हो। सहायता वाला समय नष्ट कर रहा है। तुम किसी का भरोसा मत करो, लाभ होगा। काम को स्वयं करो।

● ट ट च—आपको शीघ्र ही लक्ष्मी का लाभ होगा। एक मास तक जो काम विचार रहे हो, सब पूरे होंगे। अच्छा लाभ होगा, रिश्तेदारी से कुछ समाचार प्राप्त होंगे, स्त्री से प्रीति होगी।

● ट च ट—जो काम विचारते हो कठिन है, दूर है लाभ होगा। क्रोध करोगे तो कष्ट उठाओगे। इस कारण वह काम छोड़ दो और काम करो। मित्र से भेंट होगी, तीन मास पीछे लाभ होगा।

● ट क च—जो काम विचार रहे हो, शीघ्रता करो। देरी मत करो। काम से हर प्रकार का लाभ होगा। मान्यता बढ़ेगी। साधु के दर्शन का लाभ होगा, सफर के काम पूरे होंगे, पुराना रुपया आयेगा बिना आशा के।

● ट त त—तुम बिना सबब औरों के लिए चिंता में रहते हो। इससे क्या लाभ है? तुमको अपना काम करना चाहिए दूसरों की बाबत चिंता मत करो, इससे लाभ नहीं होगा। किसी साधु दर्शन का लाभ होगा और उसके बताये काम से लाभ होगा।

● ट त ट—जो काम विचार रहे हो, नहीं होगा। इसलिए उसे छोड़ दो, और विचारो। देखो, आपको रात में बुरे स्वप्न दीखते हैं। देवता का पूजन करके दूसरा काम शुरू करो, काम पूरा होगा।

● ट ट त—तुम जो काम विचारते हो अति कठिन है। कारण, आपमें उसे करने की ताकत नहीं है। परिश्रम करना बेकार है। और विचारो, उसमें आपको लाभ होगा। चित्त का विचार पूरा होगा। दाहिनी तरफ देखो, तिल है।

● ट क ट—आप दूसरों के काम की बिना कारण चिंता करते हो। इससे कोई लाभ नहीं। अपना काम सोचो और करो, लाभ होगा। किसी का बुरा करने का विचार छोड़ दो। उसका बुरा न होगा शर्मिन्दगी होगी आपको कहीं जाने का विचार बराबर बना रहता है। सो यदि जाना चाहते हो, जाओ। रहना चाहते हो, रहो। जो काम विचारा है, छोड़ दो। और विचारो, वह पूरा होगा। पैर में दर्द रहता है।

● ट त त—आपको रंज व चिंता बराबर रहती है। प्राय: बीमारी की चिन्ता रहती है। विचार करो, नेष्ट समय से भला नहीं हो सकता। समय सावधानी से व्यतीत करो। सभी सुख कम हैं।

● त त ट—आप दूसरों के धन से अपना काम पूरा करना चाहते हो, दूसरे से धन मिलना कठिन है। काम

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## सच्चा फालनामा मूल्य 15/-

करोगे तो लाभ अवश्य होगा। बुरे विचार छोड़ दो। काम में चित्त लगाओ, जिससे काम पूरा हो।

टतच—आपका विचार किसी से भेंट करने का है। सो करो या न करो, काम बिना सहायता के ही पूरा होगा। यदि सहायता दी तो देरी से होगा। सफर के विचार बने रहेंगे, देखो, अक्सर पेट में दर्द रहता है।

टतत—आपका समय उत्तम आ गया है। यदि सफर के विचार हैं तो अवश्य करो। लाभ अवश्य होगा, काम करने से व्यापार में लाभ होगा। किसी मामले में जीत होगी, भूमि या जेवर का लाभ है।

ततक—तुम उन्नति के वास्ते हर समय चिन्ता में रहते हो समय आ गया है प्रयत्न करते हो, मगर नेष्ट समय अभी है इससे नहीं होता, ७ मास पीछे पूरे होंगे और लाभ भी होगा।

तकत—आपके शरीर में दुःख रहता है, किसी काम की भी चिंता रहती है, शरीर कमजोर हो गया, इलाज से कोई लाभ नहीं, कष्ट का समय है चित्त में घबराओ नहीं, भगवान का भरोसा रखो।

ततट—आपकी भाइयों से शीघ्र ही भेंट होगी। लोग बड़ाई करेंगे, सब काम ठीक होंगे। इज्जत बढ़ेगी, पूजा-भजन अवश्य करो, धर्म करने से ही सब काम होंगे। देखो, कान में पीड़ा रहती होगी।

तकक—आपको किसी स्त्री की चिन्ता रहती है

## D.P.B.

वह बहुत समय से आपको कष्ट दे रही है। तुम इधर-उधर घूमते रहते हो लड़ाई झगड़ा करने वाले रहते हैं। ४ मास बाद कष्ट दूर होगा, किसी मित्र से मिलाप होगा।

तचच—आपको रोजगार व रुपया की चिन्ता है जिसके वास्ते परेशान हो दान पूजा जाप करो, जिससे शीघ्र इच्छा पूरी हो लाभ भी हो। रुपया हाथ में आवे, मित्रों से लाभ हो भेंट हो।

ततच—आपने अपने चित्त में एक बड़ा काम विचारा है। धन की चिंता है सो अब समय अच्छा आ गया है। अच्छा होगा, भाई से मिलाप होगा, काम पूरे होंगे। स्वप्न में मकान पर चढ़ना दीखता होगा

तचत—आपका चित्त बेचैनी में है। दुविधा रहती है। जो काम सोचा है इससे लाभ है। कुटुम्ब से कुछ फायदा करना चाहते हो। वह पूरा होगा, इष्टदेवता को याद करो, सब काम होंगे।

तटट—आपके सब काम पूरे होंगे। नये काम के विचार करते हो तो शीघ्रता न करो, काम होगा लाभ होगा, मित्र से भेंट होगी विचारे हुए सब कार्य तीन मास में पूरे होंगे।

तटच—आपका काम ऐसा है कि जैसे जब तक तेल है लैम्प जलता है उसमें बहुत शक्ति है। उनकी शान्ति के वास्ते देवता का भजन करो, जिससे सब काम

## मुहूर्त ज्योतिष शास्त्र मूल्य 15/-

पूरे हों। दिल को सम्भालो।

तटत—समय ऐसा नहीं है किसी का भरोसा करो, आप भरोसे पर ही काम करते हो, आपकी भोलेपन ने हानि पहुंचाई है। धैर्य रखो, चिंता अवश्य नष्ट होगी।

तकक—आपके भाई ही आपके प्रतिकूल हैं। तुम अपना स्वभाव छोड़ते नहीं, कष्ट उठा रहे हो। अब तुम्हारे पुण्य का जोर है सो आपके सब काम पूरे होंगे।

ततक—आपका जो काम बिगड़ चुका है और नुकसान हो चुका या जिसने धोखा किया है उन सबको भूल जाओ। यहां से बाहर जाने से लाभ होगा। नेक मनुष्य से भेंट होगी।

तटक—आपने किसी स्त्री के ख्याल में हानि उठाई है। व्यापार कम हो गया है। अब आपका समय उत्तम आ गया है व्यापार उत्तम रहेगा, रुपया हाथ में आवेगा, कार्य पूरे होंगे।

तचक—जो काम आपने विचारा है, कुछ समय बाद पूरा होगा। जल्दी मत करो, धैर्य से काम लो, काम पूरा होगा, लाभ होगा, नाम भी होगा। देखो आपको स्त्री से प्रीति अधिक है।

तकट—जो काम आप विचार रहे हैं इससे अति कष्ट है। यदि पूरा हुआ भी तो बहुत देरी और कष्ट उठाने से होगा। इससे इसे छोड़ दो भगवान् पर भरोसा करो, चिंता सब मिट जायेगी।


## असली प्राचीन हस्तलिखित भृगुसंहिता महाग्रन्थ (भृगु ऋषि प्रणीत)

इस ग्रन्थ की पौराणिक महत्ता इस प्रकार बताई जाती है कि त्रिदेवों की परीक्षा करने के हेतु महर्षि भृगु ने भगवान् विष्णु के वक्षःस्थल में चरण प्रहार किया था। उनके इस पदाघात से विष्णु-पत्नी लक्ष्मी जी ने शाप दिया था कि आज से ब्राह्मण मात्र निर्धन रहेगा। इसके प्रतिशोध में भृगुजी ने उस शाप का 'अल्टीमेटम' यह कह कर दिया था कि मैं एक ऐसे ग्रन्थ की रचना करूंगा कि वह ग्रन्थ जिस ब्राह्मण के पास होगा, लक्ष्मी उसकी चेरी रहेगी। इस घटना के परिणामस्वरूप 'भृगु संहिता महाग्रन्थ' भृगुजी ने रचा। ग्रंथ के आधार पर कोई भी पण्डित कुण्डली का मिलान करके २१. ३१. ५१ ७१ १०१ १५१ रु० तथा और अधिक रुपयों की दक्षिणा तक प्राप्त कर सकता है।

यह ग्रन्थ हमें बहुत प्राचीन व जीर्ण अवस्था में बड़ी कठिनाई से काफी रुपया खर्च करने के पश्चात् मिला है। महान् पण्डितों से इस ग्रन्थ की नकल लेने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ। आशा है इस महाग्रन्थ को मंगाकर प्रत्येक पण्डित जनता को लाभ पहुंचाने के साथ-साथ अपना जीवन भी सुख से व्यतीत कर सकेगा। न्योछावर 501/-

मात्र 51/- आज ही मनीआर्डर से भेजकर बाकी 450.00 रुपये की वी० पी० मंगाएं।

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने का एकमात्र स्थान **देहाती पुस्तक भंडार** (REGD.) चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006. फोन : 261030


CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji). Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## ● शिव प्रश्नावली ●

प्रश्नावली देखने की विधि—प्रश्न करने वाला भगवान् शिव का ध्यान करके और 'ओ३म् नमः शिवाय' यह मंत्र बोलकर शिव शंकर प्रश्नावली में किसी भी अंक पर अंगुली रखे और अपने प्रश्न का फल इस प्रकार जाने।

फल १—धन लाभ श्रेष्ठ, कार्य सिद्ध हो। २—कष्ट मिटें। धन लाभ। ३—उत्तम कार्य सिद्धि हो। ४—शत्रु

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १ | २३ | २१ | २० | ६ |
| २४ | २ | २२ | ७ | १९ |
| ११ | १२ | ३ | ८ | १८ |
| १३ | ९ | २५ | ४ | १७ |
| १० | १४ | १५ | १६ | ५ |

शिव

से बचो। कार्य सिद्ध होगा। ५—उत्तम धन लाभ श्रेष्ट। ६—मनोकामना सिद्ध होगी। ७—मित्रों के संहयोग से कार्य बने। ८—अभी देर। ९—इच्छा पूरी होगी। १०—धन लाभ, कार्य सिद्ध हो। ११—कार्य की सिद्धि कुछ देर से होगी। १२—कार्य सिद्धि होने में संदेह है। १३—कार्य-सिद्धि नहीं होगी। १४—दक्षिण-पश्चिमी से लाभ हो। कार्य सिद्धि हो। १५—प्रेमी के सहयोग से कार्य बनेगा। १६—कार्य के पूरे होने में संदेह है। १७—प्रसन्नता व धन लाभ हो। १८—परिश्रम से ही कार्य सिद्धि सम्भव है। १९—तीन माह में कार्य सिद्धि संभव है। २०—उत्तम धन का लाभ व कार्य सिद्धि हो। २१—कार्य पूरा होने में संदेह है। २२—कार्य सिद्धि होगी। २३—उत्तम धन लाभ। कार्य सिद्धि हो। २४—इच्छा पूरी होगी। २५—मित्रों के सहयोग से कार्य सिद्धि हो।

## ● मनोकामना सिद्धि प्रश्नावली ●

| | | |
|---|---|---|
| अ | च | इ |
| क | प | ट |
| उ | त | रा |

प्रश्न करने वाला अपने इष्ट देव का ध्यान धर कर प्रश्नावली में अंगुली रखें। फल अ—उत्तम है। धन-प्राप्ति कार्य सिद्ध हो। च—कार्य पूरा होने में सन्देह है। इ—कार्य सिद्ध नहीं होगा। क—धन लाभ, कार्य सिद्ध हो। प—श्रेष्ठ फल है। धन लाभ, कार्य सिद्ध। ट—कार्य पूरा नहीं होगा। उ—सफलता प्राप्त होगी। त—अभी कार्य-सिद्धि में देरी है। रा—कार्य सिद्ध होगा। प्रश्न उत्तम है।

## ● शुभ-अशुभ शकुन-विचार ●

### छिपकली गिरने का विचार

मनुष्य के किस अंग पर छिपकली गिरने का क्या फल होता है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए। जो फल छिपकली के गिरने का होता है, वही फल विभिन्न शारीरिक अंगों पर गिरगिट के चढ़ने का होता है।

नीचे छिपकली गिरने का जो फल लिखा है, वह पुरुष के दायें अंग पर तथा स्त्री के बायें अंग पर गिरने का समझना चाहिए।

| शारीरिक अंग | फल |
|---|---|
| सिर पर | प्रतिष्ठा मिले |
| ललाट पर | प्रियजनों का दर्शन |
| नाक पर | बीमारी |
| दायें कान पर | आयु में वृद्धि |
| बायें कान पर | विशेष लाभ |
| दाईं भुजा पर | राज्य द्वारा सम्मान |
| बाईं भुजा पर | राज्य द्वारा भय |
| कण्ठ पर | शत्रु-नाश |
| पेट पर | सुख, भूषण-लाभ |
| पीठ पर | बुद्धि-नाश |
| जांघ पर | शुभदायक |
| हाथों पर | वस्त्र-लाभ |
| नाभि पर | विशेष लाभ |
| कंधों पर | विजय-प्राप्ति |

### छींक-विचार

चलते समय अपनी पीठ के पीछे अथवा बाईं ओर को छींक हो तो वह शुभ फल देती है।

चलते समय यदि सामने की ओर कोई छींके तो झगड़ा होता है।

चलते समय दाईं ओर छींक हो तो धन की हानि होती है।

चलते समय ऊंचाई पर छींक हो तो विजय प्राप्त होती है।

यदि एक साथ दो छींकें हों तो वे शुभ फलदायक होती हैं।

मार्ग में जाते समय छींक होना शुभ फलदायक होता है।

आसन, शयन, शौच, दान, भोजन, औषध-सेवन, विद्यारम्भ, बीज बोने का समय, युद्ध अथवा विवाह के लिए जाते समय छींक होना शुभ फलदायक होता है।

कन्या, विधवा, वेश्या, रजस्वला, मालिन, धोबिन तथा हरिजन स्त्री की छींक अशुभ फल देने वाली होती है। इनके छींकने पर यात्रा स्थगित कर देनी चाहिए तथा किसी कार्य को प्रारम्भ नहीं करना चाहिए।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# लाटरी या सट्टा से धन मिलेगा या नहीं

लाटरी या सट्टा से अनायास ही धन प्राप्त करने की इच्छा वाले व्यक्तियों को अपनी जन्म-कुंडली में नीचे लिखे योग मिलाकर पहले यह निश्चय कर लेना चाहिए कि जीवन में कभी लाटरी या सट्टा से धन मिलने का योग है या नहीं। यदि योग है तो जिस ग्रह से योग बन रहा है उसके शुभ सम्बन्ध की दशा या गोचर भ्रमण वश जब भी धन-लाभ का समय जीवन में बन रहा हो उसी समय लाटरी व सट्टे का काम करना चाहिए ताकि लाभ मिल सके अन्यथा हानि ही उठानी पड़ेगी।

१—जिसकी जन्म-कुंडली में जन्म लग्न या चंद्र लग्न से ३, ६, १०, ११ स्थान में शुभ ग्रह हों और भाग्येश केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो वह ३० वर्ष की अवस्था तक लखपति बन जाता है।

२—धनेश, लग्नेश या धनेश, लाभेश या भाग्येश, लाभेश या भाग्येश, दशमेश या धनेश, पंचमेश का योग नीच या नीचांश रहित १, २, ५, ९, १०, ११ स्थान में हो तो उसे लाटरी या सट्टा के लाभ से योग के बलाबलानुसार दस हजार से ५० हजार तक अनायास ही धन लाभ होता है।

३—मीन लग्न हो, पांचवें बुध व ग्यारहवें शनि हो तो ४० हजार का लाभ होता है।

४—केन्द्र स्थान १, ४, ७, १० स्थान में शुभ ग्रह बली हों तो ६० हजार का लाभ होता है।

५—मेष लग्न में गुरु और पांचवें सूर्य हो या मेष लग्न से चतुर्थ गुरु, सप्तम शनि, अष्टम शुक्र हो या मेष लग्न से नवम गुरु, दशम मंगल, पांचवें चन्द्र हो तो ६० हजार से २ लाख तक अनायास ही धन लाभ होता है।

६—अष्टम स्थान में कुंभ राशि में बुध-शुक्र हों और शुभ स्थान में चंद्र-मंगल की युति हो तो ४० हजार का लाभ होता है।

७—लग्न से सभी ग्रह १, २, ५, ७, ८, १०, ११ स्थान में हों और किसी भी स्थान में दो से अधिक ग्रह न हों तो अनायास ही महाधनी होता है।

८—पंचम भाव में चंद्रमा और उसे शुक्र देख रहा हो तो अनायास धनी होता है।

९—पंचम भाव में बृहस्पति हो और लग्नेश बलवान हो तो अनायास ही धनी होता है।

१०—मकर का सूर्य रहित चंद्रमा लग्न में हो, चौथे या सातवें स्थान में गुरु हो तथा अस्त नीच और नीचांश रहित शनि शुभ स्थान में हो तो अनायास ही धनी होता है।

११—लग्न सिंह हो और उसमें पूर्ण चन्द्रमा विराजमान हो तथा सप्तम भाव में शनि, ग्यारहवें भाव में गुरु, मंगल का योग हो तो अनायास ही धनी होता है।

१२—लग्नेश बली हो और राहु बुध कारक हो तो अनायास ही धनी होता है।

१३—पंचमेश और लग्नेश का योग हो तो अनायास ही धनी होता है।

१४—धनेश और लाभेश चतुर्थ में हों और चतुर्थेश शुभ ग्रह की राशि में शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो अनायास ही धनी होता है।

नोट—दो ग्रहों का एक राशि में योग ५ अंश से जितना कम हो वहीं उत्तम योग होता है।

## लाटरी व सट्टा से धन लाभ का समय

यदि जन्म-कुंडली में लाटरी या सट्टा से धन-लाभ के योग बन रहे हों तो लाभकर्ता ग्रहों में से जो ग्रह बली हो उसकी या उसके सम्बन्धी की दशा अन्तर्दशा में प्रायः लाभ होता है। या जन्म-कुंडली में सम्पत्तिदायक १, २, ४, ५, ७, ९, १०, ११ भाव के स्वामी गोचर में स्वगृही होकर अपने-अपने स्थान में आवें या सम्पत्तिदायक स्थान के स्वामियों की किसी भी सम्पत्तिदायक स्थान में युति होय तो उस समय में लाटरी या सट्टा से अनायास ही धन लाभ होता है।

विशेष नोट—उपरोक्त योग जन्म कुंडली से देखें जिनकी जन्म-कुंडली न हो उनको प्रश्न-लग्न से देखना चाहिए। जिस समय यह प्रश्न देखना चाहें उसी समय की लग्न बनाकर योग देखें। विशेष के लिए पंचांगकर्ता को २१) रु० व जन्म-कुंडली, यदि जन्म-कुंडली न हो तो पत्र लिखने का समय भेजकर लाटरी के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त करें।

पता—पंचांगकर्ता पं० रामगोपाल शास्त्री, मु०, पो०—पैगांव (बाया छाता) मथुरा उ० प्र०, (भारत)

## आपकी लाटरी कब निकलेगी (लाट्री गाइड) (लाटरी विज्ञान)

ले० पं० रामगोपाल शास्त्री

हर व्यक्ति की यह इच्छा होती है कि मेरी लाटरी कब निकलेगी? अब तक लाटरी क्यों नहीं निकली? अपने तथा अपने रिश्तेदार अथवा अपने परिवार में से किसकी लाटरी निकलेगी—इत्यादि लाटरी से सम्बन्धित पूर्ण जानकारी के लिए इस पुस्तक की आज ही मंगाइए। ऐसे-ऐसे उपाय जिनसे प्रभु चाहेगा तो लाटरी अवश्य निकलेगी, इस पुस्तक में दिये गए हैं। मूल्य 24-00

मंगाने का पता—देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-6


CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# जन्म की तारीख के आधार पर मानव-स्वभाव एवं शुभ-अशुभ घटनाओं का काल-ज्ञान

अंक-विद्या (Numerology) के अनुसार मनुष्य जिन तारीखों में जन्म लेता है, उनके अनुसार ही उसके स्वभाव तथा भाग्य का निर्माण होता है।

अंक-विद्या के आधार पर मानव-स्वभाव एवं उसके भविष्य का ज्ञान प्राप्त करने के लिए पहले 'मूल-अंक' को जान लेने की आवश्यकता पड़ती है।

१ से लेकर ९ तक की तारीखों में जन्म लेने वाले जातकों का 'मूल-अंक' वही होता है, जो उस तारीख का अंक हो; परन्तु १० से ३१ तारीख के बीच किसी तारीख में जन्म लेने वाले जातक के 'मूल अंक' को नीचे लिखे नियम के अनुसार निकाला जाता है—

| | |
|---|---|
| १०—१+०=१ | २०—२+०=२ |
| ११—१+१=२ | २१—२+१=३ |
| १२—१+१=३ | २२—२+२=४ |
| १३ - १+३=४ | २३—२+३=५ |
| १४—१+४=५ | २४—२+४=६ |
| १५—१+५=६ | २५—२+५=७ |
| १६—१+६=७ | २६—२+६=८ |
| १७—१+७=८ | २७—२+७=९ |
| १८—१+८=९ | |

१९ तथा २८ तारीखों में जन्म लेने वाले जातकों के मूल अंक नीचे लिखे अनुसार निकाले जाते हैं—

१९—१+९=१०
२८—२+८=१०

अर्थात् १९ और २८ तारीखों में जन्म लेने वाले जातकों का अंक १० बनता है, परन्तु चूंकि 'शून्य' को मूल अंकों में सम्मिलित नहीं किया जाता, इसलिए १० में से शून्य को हटा दिया जाता है, फलतः जिस प्रकार १० तारीख में जन्म लेने वाले जातक का 'मूल अंक' १ माना जाता है उसी प्रकार १९ तथा २८ तारीख में जन्म लेने वाले जातकों का 'मूल अंक' भी १० के स्थान पर १ ही माना जाता है।

१०—१+०=१
१९—१+९=१०—१+०=१
२८—२+८=१०—१+०=१

इसी नियम के अनुसार २९ तारीख को जन्म लेने वाले जातक का 'मूल अंक' २ होता है। उदाहरणार्थ—

२९—२+९=११—१+१=२

इसी नियम के अनुसार ३० तारीख को जन्म लेने वाले जातक का 'मूल अंक' ३ होता है। उदाहरणार्थ—

३०—३+०=३

इसी नियम के अनुसार ३१ ता० को जन्म लेने वाले जातक का 'मूल अंक' ४ होता है। उदाहरणार्थ—

३१—३+१=४

● उपर्युक्त नियमों के अनुसार १ से लेकर ३१ तारीखों में जन्म होने वाले जातकों के जो 'मूल अंक' बनते हैं, उन्हें एक दृष्टि में नीचे लिखे अनुसार समझा जा सकता है—

| जन्म की तारीखें | मूल अंक | जन्म की तारीखें | मूल अंक |
|---|---|---|---|
| १, १०, १९, २८ | १ | १५, २४ | ६ |
| ११, २०, २९ | २ | १६, २५ | ७ |
| १२, २१, ३० | ३ | १७, २६ | ८ |
| १३, २२, ३१ | ४ | १८, २६ | ९ |
| १४, २३ | ५ | | |

विभिन्न मूल अंकों वाले जातकों के जीवन पर उनके अंक का क्या प्रभाव पड़ता है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

## ● मूल अंक १ ●

● इस अंक का स्वामी 'सूर्य' है। १ मूल अंक वाले व्यक्ति अपने संकल्पों, विचारों एवं सिद्धान्तों पर दृढ़ रहने वाले होते हैं। ये एक बार जिस निश्चय को कर लेते हैं, उस पर अन्त तक स्थिर बने रहते हैं। कोई भी प्रयोजन अथवा आकर्षण उन्हें अपने निश्चय से डिगा पाने में असमर्थ रहता है।

● इस अंक वाले व्यक्ति किसी के अनुशासन में रहना पसन्द नहीं करते। वे या तो स्वतन्त्र व्यवसाय करते हैं अन्यथा नौकरी में किसी ऐसे पद को प्राप्त करते हैं जहां विभागाध्यक्ष के रूप में उन्हें काम करने की पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त हो। ऐसे लोग अपने ऊपर किसी की हुकूमत, अनुशासन अथवा रौब को स्वीकार नहीं करते। नौकरी करते समय यदि ऐसी कोई घटना घटित हो तो या तो ये लोग अपनी ही बात रखने में सफलता प्राप्त करते हैं, अन्यथा ऐसी जगह से स्वयं ही हट जाते हैं।

● ऐसे लोगों को यदि स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य करने दिया जाय तो इस अंक वाले लोग बड़े योजनाकार, कुशल प्रशासक तथा योग्य संचालक सिद्ध होते हैं। इन लोगों में नेतृत्व एवं हुकूमत करने का गुण जन्मजात होता है। किसी के लिए भी इन्हें अपने अधीन रख पाना बहुत कठिन होता है।

● इन लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४ तथा ७३ होते हैं। महत्वपूर्ण तारीखें १, १०, १९ तथा २८ होती हैं। रविवार तथा सोमवार के दिन इनके लिए बहुत अच्छे सिद्ध होते हैं। हरा, भूरा, पीला अथवा सुनहरी रंग इनके लिए शुभ होता है।

## ● मूल अंक २ ●

● इस अंक का स्वामी 'चन्द्रमा' है। इस अंक वाले व्यक्ति कल्पनाशील, कला-प्रेमी, शान्ति-प्रिय तथा ठंडे स्वभाव के

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

होते हैं। शारीरिक दृष्टि से भले ही ये दुर्बल हों, परन्तु इनकी मस्तिष्क-शक्ति प्रबल होती है। इनका स्वभाव चंचल होता है, अतः इनके विचारों में परिवर्तन होता रहता है। एक काम को अधूरा छोड़कर, दूसरे काम में लग जाना इनका प्राकृतिक स्वभाव होता है। धैर्य तथा अध्यवसाय की इनमें कमी होती है। अतिशय भावुकता तथा उदारता इनके लिए हानिकारक सिद्ध होती है। ये थोड़ी-सी असफलता, हानि एवं कष्टों से ही घबरा जाते हैं और निराश हो जाते हैं। इसी कारण ये लोग अपने जीवन में विशेष उन्नति नहीं कर पाते। इस अंक वाले लोगों को अपने चंचल स्वभाव पर काबू पाना आवश्यक है।

● इन लोगों के जीवन के अधिक महत्वपूर्ण वर्ष १, १०, १९, २८ होते हैं। अन्य महत्वपूर्ण वर्ष निम्नलिखित होते हैं—
४, ७, १३, १६, २२, २५, ३१, ३४, ३७, ४३, ४६, ५२, ५५, ६१, ६४, ७० और ७३।

● इनके लिए २, ११, २० और २९ तारीखें महत्वपूर्ण होती हैं तथा सोमवार, रविवार एवं शुक्रवार के दिन शुभ होते हैं। सफेद कापूरी, अंगूरी अथवा हरा रंग इनके लिए शुभ होता है।

## ● मूल अंक ३ ●

● इस अंक का स्वामी 'बृहस्पति' है। इस अंक वाले व्यक्ति महत्वाकांक्षी, कठोर अनुशासन का पालन करने तथा कराने वाले एवं नेतृत्वप्रिय होते हैं। हुकूमत करने में ये इतने कठोर होते हैं कि कभी-कभी इनके अधीनस्थ कर्मचारी, सहयोगी तथा मित्र इनसे रुष्ट होकर शत्रुता मान बैठते हैं। यदि ये लोग सेना, पुलिस अथवा ऐसे ही किसी विभाग में काम करें, जहां कि इन्हें नेतृत्व करना हो, तो ये अपने सहयोगियों अथवा अधीनस्थ कर्मचारियों में शिथिलता की भावना नहीं आने देते। इनके तेज तथा कार्यप्रणाली के समक्ष इनके शत्रु अथवा विरोधी नहीं ठहर पाते। राजनैतिक, सामाजिक अथवा अन्य क्षेत्रों में नेतृत्व करने में इन्हें सफलता प्राप्त होती है।

● इन लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३,१२,२१,३०,३९, ४८, ५७ तथा ६६ होते हैं। महत्वपूर्ण तारीखें ३,१२,२१ और ३० होती हैं। बृहस्पतिवार, शुक्रवार तथा मंगलवार के दिन इनके लिए शुभ होते हैं। सोमवार का दिन भी अच्छा रहता है। चमकीला गुलाबी तथा हल्का जामुनी रंग इनके लिए शुभ होता है।

## ● मूल अंक ४ ●

● इस अंक का स्वामी मंगल है। इस अंक वाले व्यक्ति संघर्ष-प्रिय, आश्चर्यजनक कार्य करने वाले तथा नवीनता के उपासक होते हैं। ये प्राचीन रूढ़ियों को तोड़कर नई मान्यताओं को स्थापित करते हैं। अपने स्वभाव के कारण अनेक लोगों से इनका संघर्ष होता है, फलतः इनके विरोधियों, निन्दकों, आलोचकों तथा शत्रुओं की संख्या में वृद्धि होती रहती है। ये लोग धन-संग्रह को अधिक महत्व नहीं देते। उल्लासमय तथा परिवर्तनशील जीवन बिताने में इनकी रुचि होती है। इनमें सहिष्णुता कम होती है। अपनी धुन के ये बहुत पक्के होते हैं। यदि ये लोग कुछ सहिष्णु बन सकें और व्यर्थ के शत्रुओं तथा प्रतिद्वन्द्वियों को उत्पन्न न करें तो इन्हें धन तथा जीवन के अन्य क्षेत्रों में विशेष सफलता प्राप्त हो सकती है।

● इन लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ४, १३, २२, ३१, ४०, ४९, ५८ तथा ६७ होते है। महत्वपूर्ण तारीखें ४, १३, २२ तथा ३१ होती हैं। शनिवार, रविवार तथा सोमवार इनके लिए शुभ दिन होते हैं। धूपछांही, नीला तथा खाकी (भूरा) रंग इनके लिए शुभ होता है।

## ● मूल अंक ५ ●

● इस अंक का स्वामी 'बुध' है। इस अंक वाले व्यक्ति व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करते हैं। ये लोग सट्टा आदि शीघ्र लाभ देने वाले व्यवसायों की ओर अधिक आकर्षित होते हैं। ये बड़े मिलनसार स्वभाव के होते हैं, अतः इनके मित्रों की संख्या अधिक होती है। ये लोग किसी भी बात पर अधिक चिन्ता, शोक अथवा पश्चाताप नहीं करते। ये जल्दबाज स्वभाव के, फुर्तीले तथा चंचल प्रकृति के होते हैं। किसी भी मानसिक आघात को ये बहुत थोड़े समय में ही भूल जाते हैं। ऐसे लोगों को क्रोध भी बहुत जल्दी आ सकता है। इनके मिजाज में कुछ चिड़चिड़ापन भी पाया जा सकता है।

● इन लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८ तथा ७७ होते हैं। महत्वपूर्ण तारीखें ५, १४ तथा २३ होती हैं। बुधवार, गुरुवार तथा शुक्रवार के दिन इनके लिए विशेष शुभ होते हैं। हल्का खाकी, सफेद तथा चमकीला उज्जवल रंग इनके लिए शुभ होता है।

## ● मूल अंक ६ ●

● इस अंक का स्वामी 'शुक्र' है। इस अंक वाले व्यक्ति ललित कलाओं के प्रेमी, सौंदर्योपासक, हँसमुख तथा मिलनसार होते हैं परन्तु स्वभाव के हठी होते हैं। इन लोगों के व्यक्तित्व में एक अजीब आकर्षण होता है, जिसके कारण इनके सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति इनके मित्र तथा प्रशंसक बन जाते हैं। ये लोग अतिथि-सत्कार करने में पटु होते हैं, परन्तु हठवादिता एवं ईर्ष्या इनमें पाए जाने वाले दुर्गुण हैं। ये लोग अपनी हठ को अन्त तक निभाते हैं तथा किसी अन्य व्यक्ति की प्रतियोगता को सहन नहीं कर पाते।

● ये लोग साहित्य, संगीत, अभिनय अथवा चित्रकला के प्रेमी और जानकार होते हैं। इन्हें सुन्दर भूषणों से लगाव होता है तथा अपने घर को बहुत सजाकर रखते हैं। धन तथा सौभाग्य की दृष्टि से ऐसे लोग सम्पन्न होते हैं।

● इन लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१,६०, ६९ तथा ७८ होते हैं। महत्वपूर्ण तारीखें ६,१५

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

तारीखें ६, १५ तथा २४ होती हैं। शुक्र, मंगलवार तथा बृहस्पतिवार इनके लिए शुभ दिन होते हैं। हल्का नीला, आसमानी तथा गहरा नीला रंग इनके लिए शुभ होता है।

## मूल अङ्क ७

इस अङ्क का स्वामी 'नेपच्यून' है। इस अङ्क वाले व्यक्ति परिवर्तन-प्रिय होते हैं। उन्हें नवीन स्थानों की यात्रा, समुद्रपारीय यात्रा तथा ललित कलाओं में विशेष रुचि रहती है। ये लोग दूसरे के मन की बात को अपने आप जान लेते हैं। धार्मिक रीति-रिवाजों से ये लोग रूढ़िवादी नहीं होते। इनकी धार्मिक मान्यताएं प्रचलित परम्पराओं से भिन्न होती हैं। ये शान्त प्रकृति के, उदार, दयालु, स्नेही तथा परोपकारी होते हैं। ये सौंदर्य-प्रेमी होते हैं तथा जीवन में अनेक प्रेम-सम्बन्ध करते हैं, परन्तु आर्थिक दृष्टि से ये लोग सफल नहीं हो पाते। यदि ये लोग धन-संग्रह कर भी लें तो वह नष्ट हो जाता है। इस अङ्क वाली स्त्रियों का विवाह धनी घरों में होता है और वे वस्त्राभूषण तथा शृंगार से विशेष प्रेम करती हैं।

इन लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ७, १६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१, ७० तथा ७९ होते हैं। महत्वपूर्ण तारीखें ७, १६ तथा २५ हैं। सोमवार तथा रविवार के दिन इनके लिए शुभ होते हैं।

## मूल अङ्क ८

इस अङ्क का स्वामी 'शनि' है। इस अङ्क वाले व्यक्ति बड़े परिश्रमी, उत्साही, लगनशील, स्पष्टवादी तथा निर्भय प्रकृति के होते हैं, परन्तु अन्य लोगों का व्यवहार इनके प्रति सहानुभूतिपूर्ण नहीं होता, अतः ये मन-ही-मन खिन्न बने रहते हैं। ये लोग बाह्य प्रदर्शन से दूर रहते हैं, अतः इन्हें प्रायः शुष्क तथा कठोर स्वभाव का समझा जाता है, जबकि यथार्थ में ये लोग अपनी धुन के धनी तथा अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहने वाले होते हैं और अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए इन्हें बहुत परिश्रम करना पड़ता है तथा कष्ट भी उठाना पड़ता है। फिर भी ये लोग हिम्मत नहीं हारते। ये इतने स्वाभिमानी होते हैं कि लोग इन्हें अहंकारी समझकर ईर्ष्या-द्वेष कर उठते हैं, जबकि यथार्थ में ऐसे लोग बड़े धीर, गम्भीर, विचारशील, दूरदर्शी तथा बुद्धिमान् होते हैं। ये बड़े-से-बड़े खतरे को उठाने और बड़े-से-बड़े संकटों का सामना करने के लिए तैयार रहते हैं और उनमें सफलता प्राप्त करते हैं। इनका सम्पूर्ण जीवन परिस्थितियों से संघर्ष करते ही बीतता है, परन्तु इन्हें कभी पराजित नहीं होना पड़ता।

इन लोगों के जीवन के अधिक महत्वपूर्ण वर्ष ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ तथा ८० होते हैं। महत्वपूर्ण तारीखें ८, १७ तथा २६ होती हैं। इनके लिए शनिवार, रविवार तथा सोमवार के दिन विशेष शुभ होते हैं।

## मूल अङ्क ९

इस अङ्क का स्वामी मङ्गल है। इस अङ्क वाले व्यक्ति अत्यन्त परिश्रमी, संघर्षशील, स्वाभिमानी तथा कठिनाइयों से जूझ कर सफलता पाने वाले होते हैं। इनके स्वभाव में उग्रता तथा अक्खड़पन की मात्रा अधिक होती है, अतः इनके शत्रुओं की संख्या भी बहुत होती है, परन्तु कोई शत्रु इनका कुछ बिगाड़ नहीं पाता। प्रकट रूप में कोई शत्रु सामने भी नहीं पड़ता। ये अपने शत्रु के सामने पहुंचकर उससे अपने निर्देशानुसार कार्य करा सकते हैं और शत्रु को इनके सामने पड़ने का साहस नहीं होता। ये लोग दृढ़-निश्चयी, स्पष्टवक्ता तथा अपने भाग्य के स्वयं निर्माता होते हैं। ऊपर से उग्र तथा कठोर दिखाई देने पर भी इनका हृदय अत्यन्त कोमल होता है। ये परोपकारी, दानी तथा दयालु भी होते हैं और दूसरों की सहायता करना इन्हें अच्छा लगता है। ये अपने वचन का पालन करने वाले तथा स्थिर स्वभाव के होते हैं। इन्हें इनके संकल्प से नहीं डिगाया जा सकता।

इन लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३ तथा ७२ होते हैं। महत्वपूर्ण तारीखें ६, १८ तथा २७ होती हैं। मंगलवार, बृहस्पतिवार तथा शुक्रवार के दिन इनके लिए शुभ होते हैं।

**आयु निर्णय** मूल्य 24.00

**बृहद् अंक ज्योतिर्विज्ञान (अंक-विद्या) ग्रन्थ**

अंक-विद्या (Numerology) पर हिन्दी भाषा में इससे अच्छी तथा प्रामाणिक पुस्तक आज तक प्रकाशित नहीं हुई है। इस पुस्तक की सहायता से साधारण हिन्दी पढ़ा-लिखा कोई भी स्त्री-पुरुष अपने भूत, भविष्य तथा वर्तमान में घटने वाली घटनाओं की जानकारी प्राप्त कर सकता है। इसमें विभिन्न प्राच्य तथा पाश्चात्य सिद्धान्तों के आधार पर जन्म की तारीख तथा नाम के एवं जीवन में घटने वाली विभिन्न घटनाओं, जातक के स्वभाव, उसके लिए लाभ तथा हानिकारक वर्ष, महीने, दिन, घंटा, स्थान, नगर, व्यक्ति आदि का विस्तृत वर्णन किया गया है। जन्म, मास तथा राशि के अनुसार विस्तृत फलादेश, नाम के अंकों में परिवर्तन करने की विधि, विभिन्न राशियों के लिए लाभदायक मन्त्र, नग (पत्थर) विवाह तथा प्रेम सम्बन्धों का स्थायित्व, चरित्र-परीक्षा, व्यवसाय का चुनाव आदि सैकड़ों विषय सरल भाषा में दिये गए हैं। मूल्य 15

**देहाती पुस्तक भंडार** (REGD.) चावड़ी बाजार, चौक बड़ शाह बुला दिल्ली-110006

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## शरीर की बनावट

लम्बे कद वाला व्यक्ति कुछ अहंकारी, लापरवाह, स्वार्थी, भोगी, अकड़ वाला, अपने मन की इच्छानुसार चलने वाला तथा धार्मिक मर्यादाओं के प्रति लापरवाही बरतने वाला होता है।

छोटे कद (ठिगना) वाला व्यक्ति अधिक स्वार्थी, महान् परिश्रमी, गुप्त रीति से अपने लाभ की ओर ध्यान देने वाला, वाणी से अधिक विनम्रता तथा मीठापन प्रदर्शित करने वाला, परन्तु अपना मतलब निकालने में निपुण तथा मन-ही-मन चिन्तित रहने वाला होता है।

सामान्य कद का व्यक्ति बहुत बुद्धिमान्, सावधान, समयानुसार क्रोध तथा शक्ति का प्रदर्शन करने वाला, अपने तथा पराये का समान ध्यान रखने वाला, सज्जन, विवेकी, धर्म-अधर्म का विचार करने वाला, दूरदर्शी, सहृदय, उदार तथा सामाजिक एवं लौकिक नियमों का पालन करने वाला होता है।

मोटे शरीर वाला व्यक्ति हंसमुख, लापरवाह, अहंकारी, स्वार्थ-साधन में चतुर, आरामी, अधिक भोजन करने वाला, अधिक मुनाफा कमाने वाला, लौकिक सफलताओं को महत्त्व देने वाला, धर्म का पालन करने वाला तथा कुछ सीमाओं तक मान-सम्मान का ध्यान रखने वाला होता है।

पतले शरीर वाला व्यक्ति कुछ सन्तोषी, कुछ स्वाभिमानी, कुछ क्रोधी तथा हृदय में सदैव कुछ चिंताएं रखने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति के पूर्ण सुख के साधनों में कुछ कमी बनी रहती है। इस प्रकार का व्यक्ति अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला तथा बनावट प्रिय होता है।

गोरे रंग वाला व्यक्ति सौंदर्य एवं कला-प्रेमी, स्वाभिमानी, नवीनता-प्रिय तथा जीवनोपयोगी वस्तुओं को सरलता से प्राप्त करने वाला होता है। उसे अपने इष्ट मित्रों का सहयोग भी प्राप्त होता है।

गेहुंआ रंग वाला व्यक्ति सुन्दर तथा श्रेष्ठ कर्म करने वाला यशस्वी, स्वाभिमानी, विचारक, परिश्रमी मधुरभाषी, चतुर, दृढ़ मैत्री का निर्वाह करने वाला, सन्तोषी, दूरदर्शी, ईश्वर-भक्त, शुभ कर्म करने वाला तथा अपने-पराये के मान-सम्मान का ध्यान रखने वाला होता है।

काले रंग का व्यक्ति स्वार्थी, आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिए विशेष परिश्रम करने वाला, दूसरों की उन्नति से ईर्ष्या करने वाला, क्रोधी, हठी, साहसी, धर्मपालन में विशेष रुचि न रखने वाला, चतुर, चालाक, गुप्त युक्तियों से अपना काम निकालने वाला तथा कटुभाषी होता है।

## चेहरे की बनावट

भरे हुए चेहरे तथा फूले हुए गालों वाला व्यक्ति सुखी, श्रेष्ठ भोजन प्राप्त करने वाला, हँसोड़, प्रसन्न-मुख, अपने हृदय में चिन्ताओं को कम स्थान देने वाला, मित्रों से युक्त, थोड़े ही परिश्रम से लौकिक सफलताएं प्राप्त करने वाला, उदार, स्वाभिमानी, यशस्वी तथा प्रभावशाली होता है।

पतले चेहरे वाला व्यक्ति सुख-प्राप्ति के साधनों में कुछ कमी पाने वाला, हृदय का कमजोर, चिन्ताशील, जिद्दी, क्रोधी तथा आत्मग्लानि से सम्पन्न होता है। वह अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए गुप्त युक्तियों से काम लेता है तथा उसके मित्रों की संख्या भी कम ही होती है।

जिस मनुष्य का सिर छोटा हो तथा गाल फूले हुए हों, उसे धन, भोजन तथा सुख के साधनों की प्राप्ति तो होती रहती है परन्तु ज्ञान एवं विद्या की कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति अपने प्रभुत्व में कमी का अनुभव करता है तथा बेफिक्री का जीवन बिताते हुए भी बातचीत करते समय प्रायः हिचकिचाता है।

जिस मनुष्य का मस्तक चौड़ा तथा मुंह पतला हो, वह लौकिक सफलताओं को प्राप्त करने वाला, होशियार, दूरदर्शी, सम्मान पाने वाला तथा भाग्यवान् होता है। परन्तु उसे अपने पारिवारिक जीवन में दुःख एवं कमी का अनुभव होता रहता है। उसके आन्तरिक मित्रों की संख्या भी कम होती है।

जिस मनुष्य का मस्तक लम्बा-चौड़ा तथा चेहरा भरा हुआ हो, वह भाग्यवान धनी, दूरदर्शी, बुद्धिमान्, यशस्वी सुखी, विद्वान् तथा इष्ट-मित्रों से युक्त, ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाला होता है। ऐसे लोग लौकिक तथा पारलौकिक विषयों के ज्ञाता, धर्माचरण करने वाले, स्वाभिमानी तथा सर्वत्र सम्मान प्राप्त करने वाले होते हैं।

जिस मनुष्य का मस्तक कम चौड़ा तथा मुंह हल्का और पतला हो वह दब्बू प्रकृति का, गुप्त युक्तियों द्वारा स्वार्थ-साधन करने वाला, परिश्रमी, मनचाही स्थिति एवं सम्मान को प्राप्त न करने वाला तथा सामान्य जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

## भौंहें

जिस मनुष्य की दोनों भौंहें परस्पर मिली हुई हों, वह बड़ा चुस्त-चालाक, मतलबी, स्वार्थ-सिद्धि का ध्यान रखने वाला तथा अपने मन की बात को छिपाये रखने वाला होता है।

जिस मनुष्य की भौंहें धनुषाकार हों वह कलाकार, कला-प्रेमी, गंभीर,, ज्ञानी, यशस्वी, दूसरों पर अपना प्रभाव डालने वाला, धनी, सुखी, प्रतिष्ठित तथा लोगों द्वारा प्रशंसनीय होता है।

जिस मनुष्य की भौंहें अधिक मोटी तथा बल खाये हुए हों, वह दूसरों पर अपना प्रभाव जमाने की चेष्टा करने वाला, अधिक लाभ उठाने में प्रयत्नशील, अहंकारी तथा विलासी होता है।

छोटी और हल्की भौंहों वाला व्यक्ति सन्तोषी, शान्त, शीलवान, दब्बू प्रकृति का तथा सामान्य जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

## विविध

जिस मनुष्य की छाती पर बाल न हों, वह झूठा बोलने वाला, आडम्बरी, स्वार्थी, खर्चीला, अविश्वासी तथा धोखा देने वाला होता है।

छोटी आंखों वाला व्यक्ति स्वार्थी, ऊपर से भला दिखाई देने वाला, मतलबी तथा विद्या-बुद्धि और विवेक के क्षेत्र में त्रुटि पाने वाला होता है।

बड़े और चौड़े कानों वाला व्यक्ति बुद्धिमान होता है। ऐसे व्यक्ति हठी तथा अहंकारी भी होते हैं।

जिसके कानों पर बाल हों वह व्यक्ति दीर्घायु, गम्भीर तथा विद्वान् होता है।

छोटे कानों वाला व्यक्ति जिद्दी, लापरवाह, चिन्ताशील, गृहस्थ-जीवन में सुख की कमी पाने वाला तथा सामान्य जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

# मानव जीवन पर रत्नों का प्रभाव

रत्न अनेक प्रकार के होते हैं परन्तु उनमें ८४ प्रकार के रत्न मुख्य माने जाते हैं। इन रत्नों में से कुछ रत्न ऐसे होते हैं, जिनका सम्बन्ध विशेष ग्रहों से होता है अर्थात् कुछ विशेष प्रकार के रत्नों में भिन्न-भिन्न ग्रहों की राशियों को आत्मसात् करने की प्रबल शक्ति विद्यमान है। इन रत्नों को जब मनुष्य अपने शरीर पर धारण करता है, तब वे अपने माध्यम से ग्रहों की राशियों को मानव-शरीर में प्रविष्ट कर देते हैं, जिसके फलस्वरूप रत्न धारण करने वाला मनुष्य उससे सम्बन्धित ग्रह के शुभ प्रभाव का पर्याप्त लाभ उठाने लगता है। यह निम्नलिखित देखें।

## विभिन्न अंग्रेजी महीनों में जन्म लेने वाले व्यक्तियों के लिए धारण करने योग्य रत्न

| महीने का नाम | सम्बन्धित रत्न | महीने का नाम | सम्बन्धित रत्न |
|---|---|---|---|
| १. जनवरी | मूंगा (प्रवाल) | ७. जुलाई | माणिक |
| २. फरवरी | एमेथिस्ट | ८. अगस्त | गोमेद |
| ३. मार्च | एक्वामरीन | ९. सितम्बर | नीलम |
| ४. अप्रैल | हीरा | १०. अक्टूबर | चन्द्रकान्त |
| ५. मई | पन्ना | ११. नवम्बर | पुखराज |
| ६. जून | सुलेमान | १२. दिसम्बर | वैदूर्य |

## विभिन्न ग्रहों के रत्न और धातुएं

| ग्रह | रत्न | धातुए |
|---|---|---|
| १. सूर्य | माणिक्य | स्वर्ण |
| २. चन्द्र | मोती | चांदी |
| ३. मंगल | मूंगा | स्वर्ण |
| ४. बुध | पन्ना | स्वर्ण, कांसी |
| ५. गुरु | पुखर | चांदी |
| ६. शुक्र | हीरा | चांदी |
| ७. शनि | नीलम | लोहा, शीशा |
| ८. राहु | गोमेद | पंच धातु |
| ९. केतु | लहसनियां | पंच धातु |

## १२ राशियों के रत्न और उपरत्न

| राशि | रत्न और उपरत्न |
|---|---|
| १. मेष | त्रिकोण प्रवाल (मूंगा) |
| २. वृष | हीरा एवं षट्कोण पन्ना |
| ३. मिथुन | पंचकोण पन्ना एवं मोती |
| ४. कर्क | नीलम एवं गोल मोती |
| ५. सिंह | गोल माणिक |
| ६. कन्या | पन्ना |
| ७. तुला | श्वेत पुखराज एवं हीरा |
| ८. वृश्चिक | प्रवाल (मूंगा) |
| ९. धनु | पीला पुखराज |
| १०. मकर | नीलम |
| ११. कुम्भ | वैदूर्य (लहसनियां) फिरोजा एवं नीलम |
| १२. मीन | गोमेद और पुखराज |

रत्न, अंगूठी और आपका भाग्य—इस पुस्तक में किस दिन, तारीख अथवा महीने में जन्म लेने वाले किस राशि के स्त्री-पुरुष को प्राच्य तथा पाश्चात्य ज्योतिष के अनुसार कौन-सा रत्न धारण करना चाहिये तथा रत्नों की उत्पत्ति, परीक्षा, प्रकार, इतिहास, वजन आदि का विस्तृत विवेचन चित्रों सहित किया गया है। हिन्दी भाषा में प्रथम प्रामाणिक पुस्तक। मूल्य केवल 24.00 रुपये। लिखें—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६ फोन : 261030

## ग्रहों के अनुसार रत्नों की प्रयोग विधि

● १. सूर्य—सूर्य के लिए माणिक धारण किया जाता है। इसे सोने अथवा तांबे की अंगूठी में रविवार के दिन जब पुष्य, कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी अथवा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र हो, उस दिन प्रातः सूर्योदय से ९ बजे के बीच जड़वाकर दांये हाथ की अनामिका उंगली में सूर्य की पूजा करने के बाद धारण करना चाहिए।

● २. चन्द्र—चन्द्रमा के लिए मोती धारण किया जाता है। इसे चांदी की अंगूठी में गुरुवार अथवा रविवार के दिन जब पुरुष नक्षत्र हो तब सूर्योदय से १० बजे के बीच जड़वाकर बांये हाथ की कनिष्ठिका उंगली में पहनना चाहिए।

● ३. मंगल—मंगल के लिए मूंगा धारण करता है। इसे मंगलवार के दिन मेष या वृश्चिक राशि पर चन्द्रमा अथवा मंगल हो और उसी दिन मृगशिरा, चित्रा या धनिष्ठा नक्षत्र हो, तब सूर्योदय से प्रातः ११ बजे के बीच सोने की अंगूठी में जड़वाकर बांये हाथ की मध्यमा उंगली में पहनना चाहिए।

● ४. बुध—बुध के लिए पन्ना धारण किया जाता है। इसे बुधवार के दिन जब आश्लेषा, ज्येष्ठा अथवा रेवती नक्षत्र हो, उस दिन सूर्योदय से १०॥ बजे तक सोने की अंगूठी में जड़वाकर दांये हाथ की मध्यमा उंगली में धारण करना चाहिए।

● ५. गुरु—गुरु के लिए पुखराज धारण किया जाता है। गुरुवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो तब सूर्योदय से ११ बजे तक सोने की अंगूठी में जड़वाकर दांये हाथ की तर्जनी या अनामिका उंगली में धारण करना चाहिए।

● ६. शुक्र—शुक्र के लिए हीरा धारण किया जाता है। वृष, तुला अथवा मीन राशि पर जब शुक्र हो अथवा शुक्रवार के दिन भरणी, पूर्वाफाल्गुनी अथवा पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र हो, तब प्रातः सूर्योदय से पहले ११॥ बजे तक सोने की अंगूठी में जड़वाकर दांये हाथ की तर्जनी अथवा अनामिका उंगली में धारण करना चाहिए।

● ७. शनि—शनि के लिए नीलम धारण किया जाता है। इसे मकर अथवा कुंभ राशि में जब शनि हो अथवा शनिवार को उत्तराषाढ़ा श्रावण, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद, चित्रा, स्वाति अथवा विशाखा नक्षत्र हो, तब पंचधातु, फौलाद अथवा सोने की अंगूठी में जड़वाकर दांये हाथ की मध्यमा उंगली में धारण करना चाहिए।

● ८. राहु—राहु के लिए गोमेद धारण किया जाता है। इसे स्वाति, शतभिषा अथवा आर्द्रा नक्षत्र वाले दिन प्रातः १० बजे तक पंचधातु अथवा लोहे की अंगूठी में जड़वाकर दांये हाथ की कनिष्ठा उंगली या बांये हाथ की मध्यमा उंगली में धारण करना चाहिए।

● ९. केतु—केतु के लिए लहसनियां धारण किया जाता है। इसे जब चन्द्रमा मेष, मीन या धनु राशि का हो अथवा अश्विनी, मघा या मूलनक्षत्र हो, अथवा बुधवार या शुक्रवार हो तो किसी भी दिन सायं ५ बजे से ८ बजे के बीच लोहे अथवा पंचधातु की अंगूठी में जड़वाकर बांये हाथ की मध्यमा अथवा कनिष्ठिका उंगली में पहनना चाहिए।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

भारतवर्ष में टोटकों द्वारा विभिन्न रोगों की चिकित्सा करने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। आज के भौतिकवादी वैज्ञानिक युग के पढ़े-लिखे लोग इन बातों पर विश्वास नहीं करते और सामान्य रोगों के लिए भी डाक्टरों की शरण में जाकर ढेरों रुपये खर्च कर देते हैं, जबकि ये टोटके कौड़ियों की लागत में अथवा बिना पैसे के तैयार होकर कठिन रोगों पर अपना जादू-जैसा प्रभाव प्रदर्शित करते हैं।

यहां पर कुछ प्रसिद्ध टोटकों को लिखा जा रहा है। अन्य टोटकों की जानकारी के लिए हमारे यहां से प्रकाशित 'टोटका विज्ञान-चिकित्सा' पुस्तक मूल्य 3/- पढ़नी चाहिए।

● १. रविवार के दिन आक या सफेद कनेर की जड़ को कान पर बांधने से हर प्रकार के विषय-ज्वर (पारी से आने वाले अथवा कम-अधिक आने वाले बुखार) दूर हो जाते हैं।

● २. रविवार के दिन सफेद धतूरे की जड़ को उखाड़कर दायें हाथ में बांधने से पारी से आने वाला शीत-ज्वर एक ही दिन में दूर हो जाता है।

● ३. हुलहुल की जड़ को कान में बांधने से भूत-ज्वर दूर हो जाता है।

● ४. चौलाई की जड़ को सिर में बांधने से भी विषय-ज्वर ठीक हो जाता है।

● ५. ओंगा (अपामार्ग) अथवा नील की जड़ को अपने सिर से पांव तक की लम्बाई वाले लाल डोरे में बांध कर बायें कान अथवा कमर में धारण करने से तिजारी बुखार दूर हो जाता है।

● ६. रोगी की कमर में सर्प की केंचुल बांध देने से पारी का बुखार रुक जाता है।

● ७. चिरचिटे की जड़ अथवा लालपलाश की जड़ को हाथ में बांधने से भूत-प्रेत आदि की बाधा के कारण होने वाले ज्वर दूर हो जाते हैं।

● दांत दर्द—छोटे बच्चे के गिरे हुए दूध के दांत को तावीज में मढ़वा कर पास रखने से दांत का दर्द दूर हो जाता है।

● संग्रहणी—गेहुंअन सर्प की केंचुल को कपड़े की थैली में सीकर पेड़ के ऊपर बांधने से संग्रहणी रोग दूर हो जाता है।

● दस्त—सहदेई की जड़ के सात टुकड़े करके, उन्हें लाल रंग के डोरे में लपेटकर कमर में बांधने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

● पथरी—लोहे की अंगूठी को दायें हाथ की मध्यमा उंगली में धारण करने से पथरी रोग का दर्द दूर हो जाता है।

● बवासीर—बवासीर के मस्से के नीचे सर्प की केंचुल रखने से बवासीर कष्ट दूर हो जाता है।

● मृगी—१. जायफल को रेशम के धागे में गूंथकर बांह या कण्ठ में धारण करने से मृगी रोग दूर हो जाता है।

● २. एक तोला असली हींग को कपड़े में सीकर तावीज जैसा बनाकर गले में पहन लें। इससे मृगी का दौरा नहीं आता।

● ३. गाय के बायें सींग की अंगूठी बनवाकर बायें हाथ की कनिष्ठा उंगली में पहनने से मृगी का दौरा नहीं आता।

● तिल्ली-जिगर—१. नागफनी की जड़ की माला पहनने से यकृत् और प्लीहा (तिल्ली-जिगर) रोग शीघ्र दूर हो जाता है।

● २. बांझककोड़े की गांठ को रविवार के दिन लाकर रोगी के समीप एक जलते हुए चूल्हे से बांध दें। वह गांठ जैसे जैसे सूखती जायेगी, वैसे-वैसे तिल्ली भी घटती जायेगी।

● हिचकी—१. जिसे अधिक हिचकियां आ रही हों, उसे यदि अचानक डरा दिया जाय तो हिचकी आना बन्द हो जाता है।

● २. हिचकी आने वाले व्यक्ति के मुंह पर अचानक पानी के छींटे मार देने से भी हिचकी बन्द हो जाती है।

● प्रेम का पागलपन—जो व्यक्ति किसी से प्रेम करने के कारण पागल हो गया हो, उसके लिए बिच्छू का डंक, कुत्ते का नाखून तथा कछुए के नाखून को ऊंट के चमड़े में मढ़कर तावीज की तरह गले में बांध देने से, उसका पागलपन कुछ ही दिनों में दूर हो जाता है।

● मोटापा—रांगे की अंगूठी दायें हाथ की मध्यमा उंगली में पहनाने से मोटापा कम हो जाता है।

● सेंहुआ रोग—धोबी के घर से तुरन्त धुलकर आये हुए कपड़ों को रोगी के शरीर से स्पर्श करा देने से सेंहुआ रोग दूर हो जाता है।

● आधासीसी का दर्द—प्रातःकाल दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके हाथ में गुड़ की एक डेली लेकर उसे दांत से काटें।

● स्त्री रोग—१. प्रसव-कष्ट से पीड़ित स्त्री की कमर में यदि नीम की जड़ बांध दी जाय तो प्रसव सुखपूर्वक होता है।

● २. प्रसव कष्ट से पीड़ित स्त्री के हाथ में चुम्बक पत्थर रख देने से प्रसव सुखपूर्वक होता है।

● ३. थोड़ा-सा नमक लाल कपड़े में बांधकर प्रसव कष्ट से पीड़ित स्त्री के बायें हाथ की ओर लटकाने से प्रसव-काल का कष्ट बहुत कम रह जाता है।

● ४. केले की जड़ को स्त्री की कमर में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है। बच्चे की नाल के निकलते ही जड़ को खोलकर फेंक देना चाहिए।

● ५. मासिक-धर्म की खराबी के कारण स्त्री के पेड़ू में दर्द हो तो उसे रात को सोते समय अपनी कमर से मूंज की रस्सी बांधकर सोना चाहिए तथा प्रातःकाल उस रस्सी को खोलकर चौराहे पर फेंक देना चाहिए। इससे माहवारी की खराबी के कारण होने वाला पेड़ू का दर्द दूर हो जाता है।

● बाल रोग—१. सीपियों की माला बनाकर बच्चे के गले में पहनाने से दांत आसानी से निकल आते हैं।

● २. संभालू की जड़ को गले में बांध देने से बच्चे के दांत आसानी से निकल आते हैं।

● बिच्छू का डंक—जिस व्यक्ति को बिच्छू ने काटा हो, उसे चिरचिटे की जड़ का स्पर्श कराने अथवा दो बार दिखा देने से जहर उतर जाता है।

देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi, Digitized by eGangotri

यंत्र-मंत्र-तंत्र को सिद्ध करने से पहले किसी योग्य तांत्रिक या चिकित्सक से परामर्श ले लें। प्रकाशक कोई भी हानि या गलती का जिम्मेदार नहीं होगा। 84

हस्त सामुद्रिक शास्त्र 10-00

# अथ मंत्र-चमत्कार

मंत्र महोदधि 21.00

## ज्वर उतारने का मन्त्र

मन्त्र—या हफीजन या हफीजन या हफीज।

विधि—नीम का ढाई पत्ता लेकर सात बार मन्त्र पढ़े और फूंक मारता जाय। मन्त्र पढ़ने के बाद उस ढाई पत्ते को मल देवे और उसको पान में रखकर ज्वर आने से आध घण्टा पहले खिला दें। उस दिन ज्वर नहीं आयेगा।

## बच्चे की पसली झाड़ने का मन्त्र

मन्त्र—नौ अंगुल सरकण्डा काटूं दस अंगुल हो जाय। फलने का डिब्बा झाड़ूं पानीपत को जाय। दुहाई हजरत नूर कुतुब आलम की।

विधि—सरकण्डा नौ अंगुल का जड़ सहित काट लेवे। चाक की नोक और सरकण्डे की नोक बराबर करके झाड़े और मन्त्र पढ़ता जाय और बराबर फूंक मारता जाय तथा १५१ एक सौ इक्यावन बार उस सरकण्डे को बीच में से चीरकर फेंक दें। उसको ऐसी जगह फेंकना चाहिए जहां पर किसी का पांव न पड़े। उसके बाद दोनों ओर की पसलियों पर हींग-अफीम का लेप कर दो।

## स्त्री के स्तन झाड़ने का मन्त्र

मन्त्र—कामरू देश को उछा रहे उछा को खाय, फलानी का मैं थनेला झाड़ूं, छाती भस्म हो जाय।

विधि—जब तक छाती पके नहीं और पीव न पड़े, तब तक नहीं झाड़े नहीं तो मन्त्र काम न देगा। स्त्री का नाम पूछे और जिस तरफ उसकी छाती में दुःख है उससे विपरीत अपनी दूसरी तरफ की छाती पर २१ बार मन्त्र पढ़कर हाथ फेरे। छाती लाल कड़ी होय और बाद में गरम-गरम पानी का सेक दो भगवन् चाहेगा तो अवश्य आराम होगा।

## सर्वजन वशीकरण मंत्र

निम्नलिखित मन्त्र केवल १००८ बार जपने से सिद्ध हो जाता है। स्नानोपरान्त स्वच्छ वस्त्र धारण करके, पवित्र आसन पर बैठकर इस मन्त्र का १०८ बार जप करना चाहिए।

ओ३म् सर्वलोक वशंकराय कुरु कुरु स्वाहा।

जब मन्त्र का जप पूरा हो जाय तब निम्नलिखित में से किसी भी एक विधि के अनुसार वस्तुओं को इस मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके साध्य व्यक्ति के ऊपर प्रयुक्त करने से वह वशीभूत हो जाता है—

(१) ब्रह्मदण्डी, वच तथा कूठ को समभाग लेकर चूर्ण बना ले। इस चूर्ण को पूर्वोक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर पान में रखकर जिस साध्य व्यक्ति को खिला दिया जायगा, वही साधक के वशीभूत हो जायगा।

(२) सहदेई को छाया में सुखाकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे। फिर उसका चूर्ण बनाकर चूर्ण को पान में रखकर साध्य व्यक्ति को खिलादे तो वह साधक के वशीभूत हो जाता है।

(३) सफेद दूब को कपिला गाय के दूध में पीसकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमंत्रित करें। फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य-स्त्री अथवा पुरुष के सामने पहुंचे तो वह देखते ही वशीभूत हो। उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमंत्रित करके अपने मस्तक पर तिलक लगाकर जिस साध्य व्यक्ति के पास पहुंचा जायगा, वही साधक के वशीभूत हो जायगा।

## शत्रु मोहन मंत्र

निम्नलिखित मन्त्र १०,००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है —

"ओ३म् नमो महाबल महापराक्रम शस्त्र विद्या विशारद अमुकस्य भुजबलं बंधय तव्य दृष्टि स्तंभय स्तम्भय अंगानि धूनय धूनय पातय पातय महीतले हुं।"

इस मन्त्र में जहां 'अमुक' शब्द आया है, वहां शत्रु के नाम का उच्चारण करना चाहिए। इस मन्त्र की प्रयोग-विधि इस प्रकार है—

अपामार्ग (ओंगा) का रस निकाल कर, उसे इस मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके अपने शस्त्र पर लेपकर फिर युद्ध-भूमि में जाय तो शत्रु उसे देखते ही मोहित हो जाता है।

## ज्वर नाशक मंत्र

निम्नलिखित मन्त्र को १०८ बार जपकर, पानी को अभिमंत्रित करे तथा वह पानी ज्वर के रोगी को पिला दे तो उसका ज्वर आना दूर हो जाता है। मन्त्र यह है —

ओ३म् शान्ति शान्ति सर्व रिष्ट नाशिनी स्वाहा।

## भूत-ज्वरनाशक मंत्र

निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए झाड़ा देने से भूत-ज्वर उतर आता है। मन्त्र यह है—

ओ३म् नमो भगवतेउड्डामरेश्वराय कुहनी कुर्वली स्वाहा।

## सुख-प्रसवकर मंत्र

निम्नलिखित मन्त्र का ८ बार उच्चारण करके जल को अभिमंत्रित करे तथा अभिमंत्रित जल गर्भवती स्त्री को पिला दे तो उसे सुखपूर्वक प्रसव होता है। मंत्र यह है—

ओ३म् मुक्ता पाशा विपाशाश्च
मुक्ता सूर्येण रश्मयः।
मुक्तः सर्वभयाद्गर्भ
ऐहि माचिर माचिर स्वाहा॥

## सर्पों को भगाने का मंत्र

ओ३म् यः सर्वकुलाय स्वाहा अशेष कुल सर्प कुलाय स्वाहा

इस मन्त्र द्वारा मिट्टी को सात बार अभिमंत्रित करके उसे घर में बिखरा दे तो इस मन्त्र के प्रभाव से उस घर में रहने वाले सर्प वहां से भाग जाते हैं।


## मंत्र-सिद्धि

प्राचीन यन्त्र-मन्त्र शास्त्रों में वर्णित विभिन्न कामनाओं को पूर्ण करने वाले तथा विभिन्न देवी देवताओं के साधन-मन्त्रों का इस ग्रन्थ में विस्तृत वर्णन किया गया है। शास्त्रीय मन्त्रों के अतिरिक्त लोक प्रचलित, प्रभावशाली मन्त्र भी इसमें संकलित हैं। मूल्य 21.00

देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली


CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# ✻✻ चमत्कारिक यन्त्रों के प्रभाव से लाभ उठाइए ✻✻

## ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः ● तीर्थ-यात्रा ●

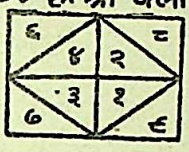

इस यन्त्र को भोज-पत्र के ऊपर अष्ट गंध द्वारा ५००० की संख्या में लिखकर धूप-दीप देने तथा बाद में उन यन्त्रों को किसी नदी अथवा समुद्र के जल में विसर्जित कर देने से तीर्थयात्रा का सुयोग बनता है तथा यश की प्राप्ति होती है।

## ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः ● वाहन-प्राप्ति ●

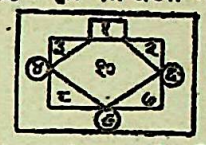

इस यन्त्र को मंगलवार के दिन केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर ५००१ की संख्या में लिखकर पूजनोपरान्त नदी के जल में प्रवाहित कर दे। इसके प्रभाव से इच्छित वाहन (मोटर, गाड़ी आदि) की प्राप्ति होती है। यह प्रयोग ३१ दिन तक निरन्तर करना चाहिए।

असली प्राचीन सच्ची आक. शक्तियां मू. 15/-

## ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः ● मन्दिर-निर्माण ●

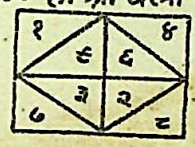

इस यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केशर द्वारा शुक्लपक्ष के गुरुवार के दिन ७००० की संख्या में लिखकर उनका धूप-दीप आदि से पूजन करे, फिर उन यन्त्रों को किसी बहती हुई नदी के जल में प्रवाहित कर दे, तो मन्दिर-निर्माण की अभिलाषा पूरी होती है।

## ● ऋण-मुक्ति ●

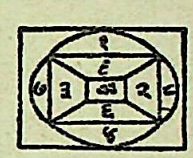

इस यन्त्र को मंगलवार के दिन प्रातः ६ बजे से केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना आरम्भ करे। कुल ५००० यंत्र लिखकर, पूजनोपरान्त उन्हें नदी के जल में प्रवाहित कर दे। ४० दिन तक प्रतिदिन यही क्रिया करने से मनुष्य ऋण-मुक्त हो जाता है।

## ● जलाशय-निर्माण ●

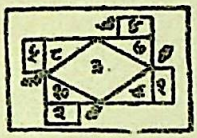

इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष के रविवार के दिन भोजपत्र या सफेद कागज के ऊपर केशर द्वारा ३१०० की संख्या में लिखकर धूप-दीप देकर नदी के बहते हुए जल में प्रवाहित कर देने से जलाशय, कुआं, बावड़ी, तालाब आदि बनवाने का मनोरथ पूरा होता है।

## ● रोग-मुक्ति ●

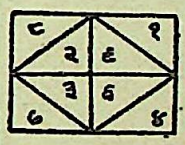

इस यन्त्र को रविवार के दिन केशर द्वारा भोज पत्र या कागज के ऊपर २५०० की संख्या में लिखकर, यथाविधि पूजनोपरान्त नदी के जल में प्रवाहित कर दे। इस क्रिया को एक सप्ताह तक निरन्तर करता रहे तो रोग से छुटकारा मिल जाता है।

## ● गृह-निर्माण ●

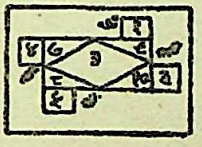

इस यन्त्र को किसी शुभ तिथि तथा शुभ दिन में प्रातः ५ बजे से लिखना आरंभ करें। केशर द्वारा चमेली की कलम से भोजपत्र के ऊपर ११००० की सख्या में यन्त्र लिखने चाहिए, फिर उन्हें नदी में पानी में प्रवाहित कर देना चाहिए। इसके प्रभाव से गृह-निर्माण की इच्छा पूर्ण होती है।

## ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः ● ईश्वर-भक्ति ●

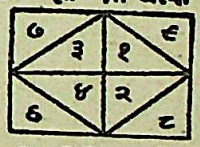

इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष के पुष्य नक्षत्र वाले दिन लिखना आरंभ करे तथा आठ दिन में ५००० की संख्या में यन्त्र लिखकर अन्त में उन्हें नदी के जल में प्रवाहित कर दे तो ईश्वर की कृपा तथा भगवद्भक्ति की प्राप्ति होती है। यन्त्र लेखक को आध्यात्मिक ज्ञान मिलता है।

## ● सन्तान-प्राप्ति ●

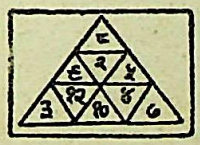

इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन प्रातः ४ बजे से अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना आरंभ करे। लिखने की कलम चांदी की होनी चाहिए। यन्त्र ५००१ की संख्या में लिखने और बाद में नदी के जल में प्रवाहित कर देने चाहिए। इस यन्त्र के प्रभाव से सन्तान की प्राप्ति होती है।

## ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः ● पदोन्नति ●

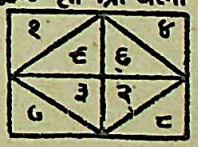

इस यन्त्र को मंगलवार अथवा गुरुवार के दिन लिखना आरंभ करे। यन्त्र को केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना चाहिए। प्रतिदिन १०० यन्त्र लिखकर नदी के जल में प्रवाहित कर देने चाहिए। इस प्रकार कुल ५००० यंत्र लिखकर जल में प्रवाहित कर देने पर पदोन्नति होती है।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## भाग्योन्नति

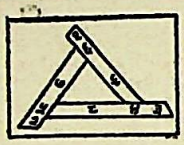

इस यन्त्र को गुरुवार के दिन से लिखना आरंभ करे। प्रतिदिन भोजपत्र के ऊपर केशर से ६२५ यन्त्र लिखे। जितने दिनों में संख्या १०००० पूरी हो जाय, उतने दिनों तक प्रतिदिन यन्त्रों को लिख-लिखकर नदी के जल में प्रवाहित करता रहे, तो भाग्य की उन्नति होती है एवं कामनाएं पूर्ण होती हैं।

## पुत्री का विवाह

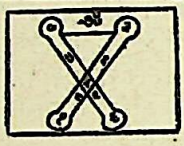

इस यन्त्र को सोमवार के दिन से लिखना आरंभ करे। प्रतिदिन २२५ यन्त्र भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखे। जब ५००० यंत्र लिखे जा चुकें, तब सबको एकत्र कर, धूप-दीप देकर नदी के जल में प्रवाहित कर दे। इस यंत्र के प्रभाव से पुत्री का विवाह आनन्दपूर्वक हो जाता है और उसके लिए चिन्ता नहीं करनी पड़ती।

## पारिवारिक सुख

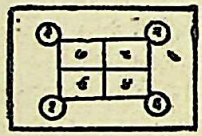

इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष के पुष्य नक्षत्र वाले दिन से प्रतिदिन १०१ की संख्या में लिखना आरंभ करे। यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केशर द्वारा लिखना चाहिए। जब ५००० की संख्या पूरी हो जाय, तब सब यन्त्रों का पूजन कर उन्हें नदी के जल में विसर्जित कर दे। इसके प्रभाव से पारिवारिक सुख प्राप्त होता है।

## यश-प्राप्ति

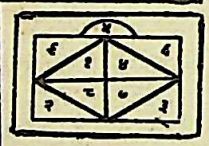

इस यन्त्र को रविवार के दिन प्रातःकाल ५ बजे से लिखना आरंभ करे। प्रतिदिन १०१ यन्त्र भोजपत्र के ऊपर केशर अथवा गोरोचन से लिखे। जब २५०० यन्त्र लिखे जा चुकें, तब उन्हें किसी नदी या समुद्र के जल में प्रवाहित कर दे तो इसके प्रभाव से यश तथा सन्तान की प्राप्ति होती है।

## आजीविका प्राप्ति

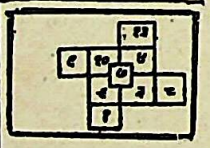

इस यन्त्र को मंगलवार अथवा गुरुवार के दिन से लिखना प्रारंभ करे। प्रतिदिन २०१ यन्त्र अष्टगंध से भोजपत्र के ऊपर लिखे। जब ५००० यन्त्र लिखे जा चुके, तब उन्हें किसी नदी के जल में प्रवाहित कर दे। इसके प्रभाव से आजीविका (नौकरी आदि) की प्राप्ति होती है।

## स्थानान्तरण

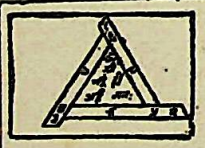

इस यन्त्र को मंगलवार के दिन से प्रतिदिन १०१ की संख्या में लिखना आरंभ करे। सफेद कागज या भोजपत्र के ऊपर केशर से यंत्र लिखने चाहिए। जब २५०० यन्त्र लिख जायं, तब उन्हें किसी नदी के जल में प्रवाहित कर दे तो साधक व्यक्ति का स्थानान्तरण उसके इच्छित स्थान पर हो जाता है।

## आत्म-रक्षा

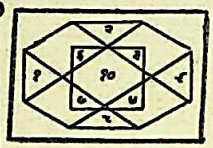

इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष के पुष्य नक्षत्र वाले दिन अष्टगंध से भोजपत्र के ऊपर लिखकर यथाविधि धूप-दीप आदि से पूजन कर, त्रिलोह के तावीज में भरकर अपनी दाईं भुजा अथवा कण्ठ में धारण कर ले तो आत्म-रक्षा होती है। ऐसे व्यक्ति को कहीं भय नहीं होता।

## धन-प्राप्ति

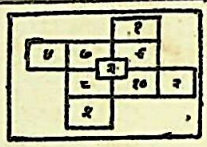

इस यन्त्र को गुरुवार के दिन से केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना आरम्भ करे। प्रतिदिन १२५ यन्त्र लिखे, जब ५००० यन्त्र लिख जायं, तब उन्हें जल में प्रवाहित कर दे तथा एक यन्त्र को चांदी के तावीज में भरकर अपनी दाईं भुजा में धारण करे तो धन की प्राप्ति होती है।

## सन्तान-सुख

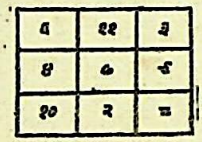

इस यन्त्र को रविवार के दिन से लिखना आरम्भ करे। प्रतिदिन २०१ यन्त्र लिखे। जब २५०० यन्त्र पूरे हो जायं, तब उनका पूजन करके नदी में प्रवाहित कर दे। इस यन्त्र के प्रभाव से सन्तान का सुख प्राप्त होता है तथा बिगड़ी हुई सन्तान सुधर जाती है।

## विद्या-प्राप्ति

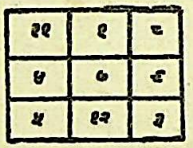

इस यन्त्र को गुरुवार के दिन से लिखना आरम्भ करे। प्रतिदिन २२५ यन्त्र केसर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखे और उन यन्त्रों को उसी दिन पूजन करके नदी के जल में प्रवाहित कर दे। १५ दिन तक इसी प्रकार निरन्तर करता रहे तो साधक को इच्छित विद्या की प्राप्ति होती है। एक यन्त्र तावीज में भरकर अपनी भुजा में भी धारण करना चाहिए।

## परीक्षा में सफलता

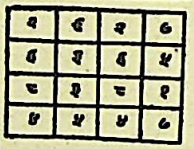

परीक्षा आरम्भ होने से १५ दिन पूर्व इस यन्त्र को केसर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना आरम्भ करे। प्रतिदिन १०१ यन्त्र लिखकर नदी के जल में प्रवाहित कर दे। सोलहवें दिन एक यन्त्र को यथाविधि पूजकर तावीज में भरकर अपनी दाईं भुजा अथवा गले में धारण कर ले और परीक्षा देने को जाय तो उसमें सफलता प्राप्त हो।

## बन्धन-मुक्ति

इस यन्त्र को रविवार के दिन कागज या भोजपत्र के ऊपर चन्दन से लिखकर, एक जंगली कबूतर के गले में बांधकर कबूतर को छोड़ दें। इस यन्त्र में जिस स्थान पर 'कैदी का नाम' लिखा है वहां कैदी के नाम को तथा जहां 'मां का नाम' लिखा है, वहां कैदी के मां का नाम को लिखना चाहिए। यह बड़ा प्रभावकारी यन्त्र है।

देहाती पुस्तक भण्डार

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

## कारावास-मुक्ति

इस चक्र को पुए के ऊपर घी से लिखकर बीच में देवदत्त के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लिखे जो जेल में पड़ा हो। गन्ध, पुष्प आदि से यन्त्र वाले पुए का पूजन करके, वह पुआ उसी कैदी व्यक्ति को खिला दे। इस यन्त्र के प्रभाव से वह कैदी व्यक्ति तीन अथवा सात दिन के भीतर ही कैद से छूट जाता है। यह यन्त्र भी बहुत प्रभावशाली है।

## राजदण्ड से मुक्ति

इस यन्त्र को कपूर कुंकुम से एक बड़े भोजपत्र के ऊपर लिखकर बीच में 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखे। फिर यन्त्र का गन्ध पुष्प आदि से पूजन कर, त्रिलोह के तावीज में भरकर कंठ अथवा भुजा में धारण करे तो इसके प्रभाव से राजदण्ड अथवा बन्धन (कैद का भय) दूर हो जाता है। यदि किसी ने किसी को जबर्दस्ती रोक रक्खा हो तो छुटकारा मिल जाता है।

## क्रोध-शमन

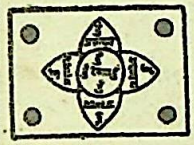

इस यन्त्र को लोहे के कांटे से गोरोचन द्वारा ताड़-पत्र के ऊपर सोमवार के दिन लिखे। मध्य में 'देवदत्त' के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए, जिसका क्रोध शान्त करना हो। फिर यन्त्र को कुम्हार की मिट्टी में रखकर ७ दिन तक पूजन करे। अन्त में ब्राह्मण को भोजन कराये। इसके प्रभाव से शत्रु, मित्र अथवा अन्य व्यक्ति का क्रोध दूर हो जाता है।

## शत्रु-विनाश

| | | | |
|---|---|---|---|
| लं॰ | लं॰ | लं॰ | लं॰ |
| लं॰ | लं॰ | लं॰ | लं॰ |
| लं॰ | लं॰ | लं॰ | लं॰ |
| लं॰ | लं॰ | लं॰ | लं॰ |

शत्रु का उच्चाटन करने तथा शत्रु से छुटकारा पाने के लिए इस यन्त्र को लोहे की कलम से तांबे के यन्त्र (ताम्र पत्र) पर लिखकर गंध-पुष्पादि से पूजन करे तथा जिस शत्रु का विनाश करना हो, उसका ध्यान करे तो यन्त्र के प्रभाव से शत्रु का उच्चाटन होता है और वह उस स्थान को छोड़कर दूर चला जाता है तथा शत्रुता करने का कभी नाम भी नहीं लेता।

## शत्रु-विजय

| | | | |
|---|---|---|---|
| लं॰ | लं॰ | लं॰ | लं॰ |
| लं॰ | लं॰ | लं॰ | लं॰ |
| लं॰ | लं॰ | लं॰ | लं॰ |
| लं॰ | लं॰ | लं॰ | लं॰ |

इस यन्त्र को श्मशान के कोयले द्वारा शत्रु के वस्त्र के ऊपर लिखकर उसे धूप-दीप दे। तत्पश्चात् उस वस्त्र को भूमि में गाड़ दे अथवा किसी नदी में बहा दे तो शत्रु पर विजय प्राप्त होती है। इस यन्त्र के प्रभाव से शत्रु देश छोड़कर चला जाता है अथवा क्षमा मांगकर शत्रुता को त्याग देता है। यह प्रभावशाली यन्त्र है।

## सम्मान-प्राप्ति

| | | | |
|---|---|---|---|
| दं॰ | दं॰ | दं॰ | दं॰ |
| यं॰ | यं॰ | यं॰ | यं॰ |
| सं॰ | सं॰ | सं॰ | सं॰ |
| अं॰ | अं॰ | अं॰ | अं॰ |

इस यन्त्र को केसर अथवा अष्ट-गंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर सवा लाख की संख्या में लिखे। लिखने का प्रारम्भ शुक्ल पक्ष के गुरुवार अथवा पूर्णिमा के दिन से करना चाहिए। निश्चित संख्या में लेखन कार्य पूरा हो जाने पर यन्त्र-लेखक को सर्वत्र सम्मान की प्राप्ति होती है। यन्त्र लिखते समय प्रतिदिन धूप-दीप भी जलानी चाहिए।

## गये हुए व्यक्ति का लौटना

| | | | |
|---|---|---|---|
| २४९ | २५४ | २५० | २४२ |
| २५६ | २४६ | २४८ | २५३ |
| २४४ | २४९ | २५७ | २४७ |
| २५१ | २४६ | २४५ | २५५ |

यदि किसी के घर से लड़का, लड़की, स्त्री, पुरुष, भाई, बहिन, सेवक अथवा अन्य व्यक्ति रूठकर या किसी भी कारण से चुपचाप घर से बाहर चला गया हो और न आ रहा हो, तो उसे वापिस बुलाने के लिए इस यन्त्र को रविवार के दिन भोजपत्र पर चन्दन से लिखकर चरखे पर बांध दें और क्वारी कन्या के हाथ से उल्टा चरखा चलवाकर सूत कतवायें तो गया हुआ व्यक्ति वापिस लौट आता है।

## खोई हुई वस्तु का मिलना

| | | | |
|---|---|---|---|
| ह्रीं॰ | ह्रीं॰ | ह्रीं॰ | ह्रीं॰ |
| ह्रं॰ | ह्रं॰ | ह्रं॰ | ह्रं॰ |
| ॐ | ॐ | ॐ | ॐ |
| ह्रीं॰ | ह्रीं॰ | ह्रीं॰ | ह्रीं॰ |

इस यन्त्र को कनेर के वृक्ष की छाया में बैठकर बकरे की हड्डी से पृथ्वी के ऊपर १०८ बार लिखें। तत्पश्चात् भगवान् शिव का यथाविधि पूजन करे तो इसके प्रभाव से खोई हुई वस्तु मिल जाती है अथवा गई हुई वस्तु वापिस आ जाती है। इस यन्त्र को मंगलवार या शनिवार के दिन लिखना चाहिए।

## दूकान की बिक्री में वृद्धि

| | | | |
|---|---|---|---|
| २१ | ८ | २ | ० |
| ६ | ६ | २५ | २९ |
| २० | १२ | ८ | १ |
| ६ | ५ | २३ | २६ |

इस यंत्र को शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन तुलसी के रस से चमेली की लकड़ी की कलम द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर धूप-दीप दें। फिर दूकान में जिस स्थान पर गद्दी हो, उस स्थान में गाड़ दे और ऊपर गद्दी बिछा कर बैठे। इस यन्त्र के प्रभाव से दूकान की बिक्री में वृद्धि होती है। यह यन्त्र बड़ा प्रभावकारी है।

## लाटरी में सफलता

| | | | |
|---|---|---|---|
| ६० | ६० | २ | ० |
| ६ | ३ | ६४ | ६३ |
| ६६ | ६१ | ८ | १ |
| ४ | ५ | ६२ | ६५ |

इस यन्त्र को अनार की लकड़ी की लेखनी से लाल चन्दन द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखें। फिर इसे अष्टधातु के ताबीज में रखकर गूगल की धूनी देकर दाईं भुजा में धारण कर लें। लिखते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि यन्त्र ऊपर को उठने न पाये। इस यन्त्र को धारण करने से लाटरी में सफलता प्राप्त होती है।

D.P.B.

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## ● रेस में सफलता ●

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | २३ | २७ | २७ |
| ३१ | २० | ३५ | ३६ |
| १४ | ८ | २४ | १८ |
| २६ | १७ | ३० | ४० |

इस यन्त्र को अष्टगंध से भोजपत्र के ऊपर लिखकर धूप दे। फिर यन्त्र को तावीज में भरकर अपनी दांयी भुजा में बांधकर रेस खेलने के लिए जाय तो रेस में सफलता प्राप्त होती है। इस यन्त्र को शुभ दिन तथा शुभ तिथि में लिखकर अपनी भुजा में बांधना चाहिए तथा कार्य के दिन इसको धूप देनी चाहिए।

## ● कृषि-उत्पादन में वृद्धि ●

| | | | |
|---|---|---|---|
| २ | १० | ३ | ८ |
| ७ | ३ | २४ | २४ |
| २६ | २१ | ९ | १ |
| ४ | ६ | १२ | २४ |

इस यन्त्र को अष्टगंध से भोजपत्र के ऊपर लिखकर खेत में गाड़ दें तत्पश्चात् विधि पूर्वक क्षेत्रपाल का पूजन करे तो खेत में अन्न अथवा अन्य वस्तुओं की उपज बहुत अधिक होती है। जो किसान अपने खेत की उपज में वृद्धि करना चाहते हों, उन्हें इसका प्रयोग करना चाहिए। यन्त्र को किसी भी शुभ दिन और तिथि में लिखा जा सकता है।

## ● जुए में सफलता ●

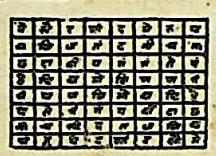

एरण्ड के पत्ते के ऊपर कौए के पंख की कलम से काली स्याही के द्वारा रात्रि के समय इस यंत्र को लिख कर धूप दीप से पूजन करे। फिर उसे कलावे में लपेट कर दाईं भुजा में बांध ले। जो व्यक्ति इस यन्त्र को धारण करके जुआ खेलता है वह जुए में अवश्य ही विजय प्राप्त करता है। यह प्रसन्न यन्त्र नामक यन्त्र बड़ा प्रभावशाली कहा गया है।

## ● मुकद्दमे में सफलता ●

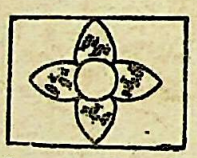

भोजपत्र के ऊपर कुंकुम से इस यन्त्र को बनाकर धूप, दीप, नैवेद्य पुष्प आदि से पूजा करें। फिर त्रिलोह तावीज में भरकर यन्त्र को दूध के भीतर डालदे। ऐसा करने के बाद मुकद्दमे-झगड़े आदि में जाय तो सफलता प्राप्त होती है।

## ● व्यवसाय में सफलता ●

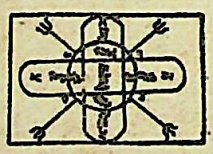

इस यन्त्र को शुक्लपक्ष में गुरुवार के दिन चमेली की लकड़ी की कलम से केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर धूप-दीप से पूजन कर, किसी तावीज में भरकर अपनी दूकान या दफ्तर की तिजोरी में रख दे तो व्यवसाय में खूब सफलता मिलती है तथा धन वैभव की उत्तरोत्तर वृद्धि होती चली जाती है। यह यन्त्र बहुत ही प्रभावशाली माना गया है।

## ● हर कार्य में सफलता ●

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७ | १२ | १ | १४ |
| २ | १३ | ८ | ११ |
| १६ | ३ | १० | ५ |
| ९ | ६ | १५ | ४ |

इस यन्त्र को गुरुवार, पूर्णमासी अथवा ग्रहण के दिन अष्टगंध से भोजपत्र के ऊपर लिखकर अपनी भुजा में बांध ले अथवा गले में डाल ले या अपने पास रक्खे तो प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त होती है। यन्त्र को तावीज में भरकर भी धारण किया जा सकता है। यन्त्र लिखने के बाद धूप-दीप से पूजा कर लेनी चाहिए।

## ● कामना-पूर्ति ●

| | | |
|---|---|---|
| ३ | ६ | २२ |
| २१ | ३१ | ३ |
| ७२ | २४ | ६ |

इस चिन्तामणि नामक यन्त्र को चन्दन तथा सिन्दूर से भोजपत्र के ऊपर लिखकर अपने मस्तक पर धारण करे तो समस्त कामनाएं पूर्ण होती हैं। यन्त्र लेखनोपरान्त उसका धूप, दीप, पुष्प आदि से पूजा कर लेनी चाहिए तथा जो भी मनोकामना हो, उसका ध्यान करना चाहिए, इस यन्त्र के प्रभाव से पूरी हो जायेगी।

## ● मनोरथ-प्राप्ति ●

| | | |
|---|---|---|
| १ | ५ | ९ |
| ८ | ३ | ४ |
| २ | ७ | ६ |

इस यन्त्र को बरगद के वृक्ष के नीचे बैठ कर अनार की कलम से पृथ्वी पर या भोजपत्र पर चार हजार बार लिखने से मनोरथ की प्राप्ति होती है। भोजपत्र पर लिखकर इस यन्त्र को तावीज में भरकर भुजा या कंठ में धारण भी किया जा सकता है। परन्तु यन्त्र को ४००० बार लिखना आवश्यक है।

## ● विदेश यात्रा में सफलता ●

| | | |
|---|---|---|
| [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] |

इस यन्त्र को शुभ मुहूर्त में तांबे के पत्र पर चन्दन द्वारा अनार की कलम से लिखकर विधिपूर्वक प्रतिदिन पूजन करते रहने से सब कार्यों में सिद्धि, सब मनोरथों में पूर्णता तथा विदेश यात्रा में सफलता प्राप्त होती है। यह यन्त्रराज समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला कहा गया है।

## ● विदेशी व्यवसाय में सफलता ●

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | ४ | २ | ७ |
| ६ | ३ | २ | ३ |
| ५ | ८ | १ | १ |
| ४ | ५ | ० | ३ |

इस यन्त्र को सरसों के रस से भोजपत्र के ऊपर लिखकर, विधि पूर्वक पूजन करके वन में गाड़ देने से हर प्रकार की अभिलाषा पूर्ण होती है तथा विदेशों से वस्तुओं के आयात-निर्यात संबंधी व्यापार में लाभ होता है।

## ● सब प्रकार की सुरक्षा ●

| | | | |
|---|---|---|---|
| अ | आ | इ | ई |
| उ | ऊ | ऋ | ॠ |
| ऌ | ॡ | ए | ऐ |
| ओ | औ | अं | अः |

इस यन्त्र को कस्तूरी, केशर तथा चंदन से भोजपत्र के ऊपर लिखकर धूप, दीप, चंदन, पुष्प, अक्षत, नैवेद्य आदि से पूजन करे। तत्पश्चात् धन, वस्त्र आदि से ब्राह्मणों का पूजन कर, तांबे के तावीज में यन्त्र को भरकर पुरुष अपनी दाईं भुजा में तथा स्त्री कंठ में धारण करे। इस यन्त्र के प्रभाव से हर प्रकार से सुरक्षा बनी रहती है। भय दूर होता है तथा भाग्य की वृद्धि होती है।

## ● मनवांछित सन्तान ●

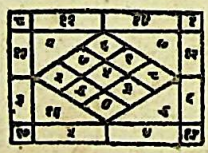

इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन प्रातःकाल के समय चमेली की लकड़ी की कलम से अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर धूप-दीप देकर १०८ दिन तक प्रतिदिन पूजन करता रहे, तत्पश्चात् यन्त्र को चांदी, सोने, तांबा या अष्टगंध के तावीज में भरकर अपनी भुजा अथवा कंठ में धारण करे तो मनवांछित सन्तान की प्राप्ति होती है।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## स्नेह-वृद्धि

| | | |
|---|---|---|
| २१ | २६ | २ |
| २८ | २४ | २७ |
| २३ | २२ | १० |

इस यन्त्र को केशर द्वारा भोजपत्र पर लिखकर पूजन करे, फिर यन्त्र लिखित भोजपत्र को फुलेल के तेल में जलाये तथा जलाते समय अपनी मनोभिलाषा का चिन्तन करता रहे। इस यन्त्र के प्रभाव से इच्छित व्यक्ति से स्नेह की वृद्धि होती है तथा उसके मन में प्रीति उत्पन्न होती है। यन्त्र को शुभ तिथि तथा शुभ दिन में लिखना चाहिए।

## विवाह

| | | |
|---|---|---|
| ६१ | १७ | १६ |
| १७ | कु | ६५ |
| ४५ | ६ | ८१ |

इस यन्त्र को रविवार के दिन केशर से अपनी हथेली पर लिखकर अभिलषित स्त्री के समक्ष जाय और उसे दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करे तो वह स्त्री शीघ्र वश में हो जाती है और विवाह करने के लिए तैयार हो जाती है। मनोनुकूल स्त्री से विवाह कराने में यह यंत्र अत्यन्त प्रभावकारी कहा गया है।

## सास-श्वसुर का सुख

इस यन्त्र को गेहूं की रोटी पर लिखकर काली कुतिया को खिलाने से श्वसुर का सुख प्राप्त होता है। इस यंत्र के साधक के लिए किसी विधि-विधान की आवश्यकता नहीं है। यह यन्त्र सास-श्वसुर अच्छे स्वभाव के न हो तो उनके स्वभाव में परिवर्तन भी ला देता है।

## मानिनी-आकर्षण

अपने दायें हाथ की अनामिका ऊंगली के रक्त से अपने बायें हाथ की हथेली पर इस यन्त्र को लिखकर यन्त्र में जहां देवदत्त' लिखा है, उस स्थान पर साध्य-स्त्री का नाम लिखे। यन्त्र लिखने के बाद गंध पुष्पादि से पूजन कर जिस मानिनि स्त्री को अपनी ओर आकर्षित करना हो उसका चिन्तन करे। इस यन्त्र के प्रभाव से मानिनी स्त्री एक प्रहर में ही आकर्षित होकर प्राप्त होती है।

## प्रेमिका-मिलन

इस यन्त्र को गोरोचन, केशर और कुंकुम द्वारा चमेली की कलम से भोज-पत्र के ऊपर लिखे तथा यन्त्र के मध्य में जहां देवदत्त लिखा है, वहां अपनी प्रेमिका का नाम लिखे। फिर यन्त्र का पूजन कर, रात्रि के समय श्वेत वस्त्र धारण कर यन्त्र को सामने रखकर प्रेमिका का चिन्तन करे। इस प्रकार सात दिन करके ब्राह्मण-स्त्रियों को भोजन कराये। फिर यन्त्र को त्रिलोह के ताबीज में भरकर भुजा पर बांधे तो प्रेमिका से मिलन होता है।

## प्रेम में सफलता

इस यन्त्र को गोरोचन, कुंकुम, लालचन्दन और कस्तूरी द्वारा चमेली की कलम से भोजपत्र के ऊपर लिखे। यन्त्र में जहां 'देवदत्त' लिखा है, वहां साध्य व्यक्ति का नाम लिखकर राई द्वारा निर्मित कामदेव के हृदय भाग में रक्खे। प्रतिमा को लकड़ी के तारों पर रखकर धूप, दीपादि से पूजन करें। सिद्धि होने तक प्रत्येक रात्रि में यह क्रिया करे तो प्रेम में सफलता प्राप्त होगी।

## प्रेमी-मिलन

इस यन्त्र को गोरोचन से भोज-पत्र के ऊपर लिखकर मध्य में 'देवदत्त के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखे फिर यन्त्र को दो मिट्टी के शकोरों में बन्द करके अग्नि में रख दे। ठंडा हो जाने पर शकोरों को खोलकर यन्त्र की भस्म का प्रयोग करे। इस प्रयोग द्वारा प्रेमी से मिलन होता है तथा साध्य व्यक्ति जीवनभर वशीभूत रहता है। पति को वश में रखने का श्रेष्ठ उपाय है।

## राजा वशीकरण

गोरोचन, केशर, लालचन्दन तथा अनामिका का रक्त—इन सब द्रव्यों को एकत्र कर, इनसे भोजपत्र के ऊपर इस यन्त्र को लिखे। मध्य में देवदत्त के स्थान पर साध्य-व्यक्ति का नाम लिखे। यन्त्र लिखकर धूप, दीप, पुष्प आदि से पूजन कर कुमारी ब्राह्मणी को भोजन कराके, यन्त्र को मुट्ठी में दबाकर राजा के पास जाय तो राजा वशीभूत हो जाता है। राजा क्रुद्ध हो तो प्रसन्न हो जाता है।

## सेवक वशीकरण

इस यन्त्र को गोरोचन से भोज-पत्र के ऊपर लिखे। मध्य में 'देवदत्त' के स्थान पर जिस सेवक को वश में करना हो, उसका नाम लिखे। लिखने के बाद पुष्प आदि से पूजन करके यन्त्र को दही के भीतर रख दे।

जब अपना ही कोई सेवक किसी कारणवश क्रुद्ध होकर अपना अनिष्ट करना चाह रहा हो, उस समय इस यन्त्र का प्रयोग करना चाहिए। इसके प्रभाव से सेवक स्वामी को हानि नहीं पहुंचाता।

## कुटुम्ब वृद्धि

| | | | |
|---|---|---|---|
| ८०५ | ८१८ | ८१५ | ८१२ |
| ८१६ | ८११ | ८०६ | ८१० |
| ८१० | ८१३ | ८२० | ८०७ |
| ८११ | ८०८ | ८०६ | ८१४ |

यदि किसी के सन्तान न होती हो, अथवा लड़कियां ही होती हों, या सन्तान होकर मर जाती हो या गर्भ ही गिर जाया करता हो अथवा मृत सन्तान पैदा होती हो तो इस यन्त्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र के उपर पूर्णिमा के दिन लिखकर ताबीज में भरे और धूप-दीप देकर स्त्री की बाईं बांह या गले में पहना दें। यह यन्त्र कुटुम्ब की वृद्धि करता है और दीर्घायु सन्तान पैदा करता है।

D.P.B.
CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## वर्षा को रोकना

| | | | |
|---|---|---|---|
| ११ | १८ | २ | ८ |
| ७ | ३ | ३०६ | ३०४ |
| ३०८ | ३०३ | ९ | १ |
| ४ | ६ | ३०० | ३०५ |

इस यन्त्र को कागज के ऊपर काली स्याही से लिखकर, कलावे द्वारा किसी बबूल के वृक्ष की शाखा से बांध दे तो वर्षा का पानी रुक जाता है। जिन दिनों अत्यधिक वर्षा हो रही हो और उसके कारण फसल को हानि पहुंचने की आशंका हो, उस समय वर्षा को रोकने के लिए इस यन्त्र का प्रयोग करना चाहिए। लिखने के बाद यन्त्र का पूजन भी करना चाहिए।

## विघ्न-विनाश

| | | |
|---|---|---|
| ८ | २ | १० |
| ९ | ७ | ४ |
| ३ | ११ | ६ |

शुक्ल पक्ष आरम्भ होने पर जो पहला रविवार आये उस दिन मध्याह्न १२ बजे इस यन्त्र को केसर द्वारा लिखकर, धूप-दीप देकर अपनी भुजा अथवा कंठ में धारण करे तो हर प्रकार के विघ्न दूर होते हैं। जिस विघ्न को दूर करना हो, यन्त्र लिखते समय उसी का मन में ध्यान रखना चाहिए।

## भय-विनाश

| | | | |
|---|---|---|---|
| ३१ | ३८ | २८ | १ |
| ७ | ३ | ३५ | ३४ |
| ३७ | ३७ | ४ | १ |
| ४ | ६ | ३३ | ३६ |

इस यन्त्र को केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर पुष्प गन्धादि से पूजन कर अपने घर के सामने गाड़ दे। यंत्र को किसी शुभ तिथि तथा शुभ दिन में लिखना चाहिए। इस यंत्र के प्रभाव से हर प्रकार का भय दूर हो जाता है। यह यंत्र चमत्कारिक प्रभाव प्रदर्शित करने वाला कहा गया है।

## दुःस्वप्न-नाशक

| | | | |
|---|---|---|---|
| हं० | सं० | स्वं० | फं० |
| बं० | टं० | धं० | जं० |
| भं० | वं० | मं० | टं० |
| यं० | यं० | जं० | टं० |

इस यंत्र को केसर के द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर गंध, पुष्प, धूप दीपादि से पूजन करे। फिर इस यंत्र को सोते समय अपने सिरहाने रखकर सो जाय तो दुःस्वप्नों का दीखना बन्द हो जाता है। साथ ही दुःस्वप्नों का कोई फल नहीं होता। यन्त्र को चाहे जिस दिन लिखा जा सकता है।

## प्रीति-विनाश

| | | |
|---|---|---|
| ४१ | १८ | ११ |
| २० | ३० | १० |
| २३ | ३२ | १९ |

इस यन्त्र को कंटाई (कटेली) के पत्ते पर केसर से लिखकर सुखा ले। फिर जिस व्यक्ति का प्रेम किसी से नष्ट करना हो, उस दूसरे व्यक्ति का नाम लेकर पहला व्यक्ति सोता हो, वहां उसके ऊपर सुखाये हुए पत्ते को डाल दे तो उस व्यक्ति की दूसरे व्यक्ति से प्रीति नष्ट हो जाती है।

## कलह-वृद्धि

| | | |
|---|---|---|
| ४१ | १८ | ११ |
| १० | २० | ३० |
| १९ | २३ | ३२ |

इस यन्त्र को केशर द्वारा भोजपत्र पर लिखकर सरसों के तेल में जिस साध्य व्यक्ति का नाम लेकर बलाया जायगा, उसके घर में कलह की वृद्धि होगी तथा जिस व्यक्ति से उसका प्रेम होगा वह टूट जायेगा। इस प्रयोग को भी चाहे जिस दिन किया जा सकता है।

## रोग-विनाश

| | | |
|---|---|---|
| ६ | १ | ८ |
| ७ | ५ | ३ |
| २ | ९ | ४ |

यदि कोई रोग दूर न होता हो तो इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन अष्टगन्ध से भोजपत्र के ऊपर लिखकर, धूप-दीप दे, चांदी के तावीज में भरकर रोगी के गले में डाल दे।

इस यन्त्र के प्रभाव से कुछ ही दिनों में रोग दूर हो जाता है तथा रोगी को स्वास्थ्य लाभ होता है। पूर्ण यन्त्र का प्रयोग हर रोग के लिए किया या सकता है।

## तिजारी (तीसरे दिन का) नाशक

| | | |
|---|---|---|
| ९ | २ | ७ |
| ४ | ६ | ८ |
| ५ | १० | ३ |

इस यंत्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर धूप, दीप, पुष्प आदि से पूजन कर पुरुष अपनी दाईं और स्त्री अपनी बाईं भुजा में बांधे तो तृतीयक ज्वर अर्थात् तीजारी का बुखार आना बन्द हो जाता है।

## कष्टा-स्त्री के लिए सुखकर

| | | |
|---|---|---|
| ३३ | ३३ | ३३ |
| ३३ | ३३ | ३३ |
| ३३ | ३३ | ३३ |

इस यन्त्र को कांसी की थाली में केसर से लिखकर, पूजनोपरान्त थाली को पानी से धोकर, पानी कष्टा-स्त्री को पिला दे तो वह रजस्वला हो जाती है और उसका कष्ट दूर हो जाता है। यह यन्त्र भी बहुत प्रभावशाली बताया गया है।

## बच्चों का रोना बन्द करना

| | | |
|---|---|---|
| २ | ९ | ५ |
| ७ | ५ | ३ |
| ६ | १ | ८ |

नीचे लिखे यन्त्र को कागज पर लिखकर, धूप, दीप आदि से पूजन कर, ताबीज या मोमजामे में भरकर बालक के गले में पहना दे तो उसका रोना कम या बन्द हो जाता है। जो बच्चा अधिक रोता हो उसे यह यन्त्र पहना देना चाहिए। यन्त्र को चाहे जब लिखा जा सकता है।

## उदर शूल नाशक

| | | |
|---|---|---|
| १६ | २ | [illegible] |
| २ | ५१२ | ३ |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] |

इस यन्त्र को केशर द्वारा कांशी की थाली में लिखकर, पूजनोपरान्त, उस थाली को पानी से धोकर, पानी पेट दर्द के रोगी को पिला देने से पेट का दर्द तुरन्त बन्द हो जाता है। यन्त्र को आवश्यकता के समय कभी भी लिखा जा सकता है।

## विषम ज्वर नाशक

| | | |
|---|---|---|
| ७१ | ७१ | ७१ |
| ७१ | ७१ | ७१ |
| ७१ | ७१ | ७१ |

इस यन्त्र को केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर, रोगी की भुजा में बांध देने से हर प्रकार का विषम-ज्वर तिजारी आदि का आना रुक जाता है। यन्त्र को आवश्यकता के समय कभी भी लिखा जा सकता है।

देहाती पुस्तक भंडार

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## दर्द नाशक

| | | |
|---|---|---|
| १६ | ६ | ८ |
| २ | १० | १८ |
| १२ | १४ | ७ |

इस यन्त्र को केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर पूजन करे, तो हर प्रकार का दर्द नष्ट हो जाता है।

D.P.B.

## अकाल-मृत्यु-नाशक

| | | |
|---|---|---|
| २ | ९ | ४ |
| ७ | ५ | ३ |
| ६ | १ | ८ |

इस यन्त्र को कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के दिन बरगद की कलम से भोजपत्र के ऊपर एक हजार की संख्या में लिखने से अकाल मृत्यु का भय दूर होता है तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। यह यन्त्र सब जग रक्षा करता है।

## नित्य-ज्वर-नाशक

| | | | |
|---|---|---|---|
| ८२ | ८९ | २ | ७ |
| ६ | ३ | ५६ | ५५ |
| ५८ | ६३ | ८ | १ |
| ४ | ५ | ८४ | ५७ |

इस यन्त्र को ठीकरी के ऊपर केशर से लिखे। फिर उस ठीकरी को उस व्यक्ति के हाथ से, जिसे ज्वर आता हो, किसी कुएं में गिरवा दे तो उस रोगी को नित्य आने वाला ज्वर रुक जाता है। यन्त्र को आवश्यकतानुसार चाहे जब लिखा जा सकता है।

## दंगल में विजय

| | | |
|---|---|---|
| ६ | ७ | २ |
| १ | ५ | ९ |
| ८ | ३ | ४ |

इस यन्त्र को अपामार्ग (औजा) के रस से भोजपत्र के ऊपर लिखकर अपनी दाईं भुजा अथवा गले में धारण करने से दंगल तथा शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त होती है। यन्त्र लिखने का कार्य किसी शुभ दिन तथा शुभ तिथि में करना चाहिए। यन्त्र को तावीज में भरकर धारण किया जा सकता है।

## आधाशीशी नाशक

| | | | |
|---|---|---|---|
| ३८ | ४६ | २ | ७ |
| ६ | ३ | ४३ | ४६ |
| ४ | ४० | ८ | १ |
| ४ | ५ | ४१ | ४८ |

इस यन्त्र को रविवार के दिन केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर, आधाशीशी के रोगी के मस्तक पर बांध देने से आधाशीशी का दर्द बन्द हो जाता है। यन्त्र को दोपहर के समय बांधना चाहिए। यन्त्र को आवश्यकतानुसार चाहे जब लिखा जा सकता है।

## गढ़े धन की प्राप्ति

| | | |
|---|---|---|
| २ | ७ | ६ |
| ९ | ५ | १ |
| ४ | ३ | ८ |

इस यन्त्र को बेलपत्र के रस, हरताल तथा मैनसिस के घोल से बेल की कलम से किसी शुभ स्थान में बैठकर पृथ्वी पर दो हजार की संख्या में लिखे तो गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है तथा मनोभिलाषाओं की पूर्ति होती है। यह यन्त्र अनेक प्रकार की मनोकामनाओं को पूर्ण करता है।

## नजर-दोष नाशक

| | | | |
|---|---|---|---|
| ३ | २ | ७ | ८ |
| २ | ४ | ८ | ६ |
| ६ | ८ | ४ | २ |
| ८ | ६ | २ | ४ |

इस यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर लाल-चन्दन से लिखकर, धूप-दीप देकर ताँबे के ताबीज में भरकर, उस बालक के गले में बांध दे, जिसे नजर लग गई हो। इस यन्त्र के प्रभाव से नजर लगने का दोष तुरन्त दूर हो जाता है। यन्त्र को चाहे जब लिखा जा सकता है।

## धरोहर की सुरक्षा

| | | |
|---|---|---|
| ८ | १ | ६ |
| ३ | ५ | ७ |
| ४ | ९ | २ |

इस यन्त्र को चमेली की कलम से केसर द्वारा भोजपत्र के उपर लिखकर पुष्प, धूप, आदि से पूजन करने पर धरोहर की सुरक्षा होती है। यन्त्र का पूजन करते समय जिस व्यक्ति के यहां धरोहर रक्खी हो उसका चिन्तन करना चाहिए। इसके प्रभाव से धरोहर सुरक्षित रहेगी।

## ज्वर-नाशक

| | | | |
|---|---|---|---|
| ९२ | ९९ | २ | ७ |
| ६ | ३ | ९६ | ९५ |
| ९८ | ९३ | ८ | १ |
| ४ | ५ | ९४ | ९७ |

इस यन्त्र को केशर द्वारा ठीकरी पर लिखकर, उस ठीकरी को रोगी की भुजा में बांध दिया जाय तो इकतरा बुखार अर्थात् एक दिन छोड़कर आने वाला ज्वर दूर हो जाता है। इस यन्त्र को अपनी आवश्यकतानुसार चाहे जब लिखा और प्रयोग में लाया जा सकता है।

## ऋण-प्राप्ति

| | | | |
|---|---|---|---|
| ५२ | ६२ | २ | ८ |
| ६ | ३ | ५९ | ५८ |
| ६१ | ५६ | ८ | १ |
| ४ | ५ | ६५ | ५७ |

इस यन्त्र को पीपल की कलम से केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर १००१ की संख्या में लिखने तथा एक यंत्र लिखित भोजपत्र को अपनी भुजा अथवा कण्ठ में धारण करने से साहूकार से ऋण की प्राप्ति होती है तथा दरिद्रता का नाश होता है। यह यन्त्र बहुत प्रभावशाली है।

## सर्पविष-प्रभाव नाशक

| | | | |
|---|---|---|---|
| ||| | = | ।=। | = |
| ||| || | । | || || | = |
| ≡ | = | / | ≡ |
| ||| | = | । | ≡। |

इस यन्त्र को कागज के ऊपर केशर से लिखकर धूप-दीप से पूजन करे। फिर उस कागज को पानी से धोकर वह पानी उस व्यक्ति को पिला दे, जिसे सांप ने काट लिया हो। इस यन्त्र के पानी के प्रभाव से सामान्य सर्प का काटा हुआ व्यक्ति बच जाता है और विष उतर जाता है।

## अभिनय क्षेत्र में सफलता

| | | |
|---|---|---|
| ६ | १ | ८ |
| ७ | ५ | ३ |
| २ | ९ | ४ |

इस यन्त्र को केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखें। ऐसे सवालाख यंत्र लिखकर, प्रत्येक यन्त्र को आटे की गोली में भरकर वे गोलियां मछलियों को खिलादे तो फिल्म, नाटक थियेटर आदि अभिनय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी तथा अन्य कामनाएं भी पूर्ण होती हैं। यह यन्त्र अन्य क्षेत्रों में भी सफलता दिलाता है।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## ● साझेदारी में सफलता ●

| | | |
|---|---|---|
| ८ | ३ | ४ |
| १ | ५ | ९ |
| ६ | ७ | २ |

इस यन्त्र को कुत्ते के नख द्वारा पृथ्वी पर १००१ बार लिखने से साझे के काम में सफलता प्राप्त होती है। यह यन्त्र अन्य कार्यों में भी सफलता एवं सिद्धि देने वाला है। इस यन्त्र को किसी शुभ दिन तथा शुभ तिथि में लिखना चाहिए।

## ● प्रेत बाधा नाशक ●

| | | | |
|---|---|---|---|
| ३१ | ३८ | २८ | १ |
| ७ | ३ | ३५ | ३४ |
| ३७ | ३७ | ४ | १ |
| ४ | ६ | ३३ | ३६ |

इस यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केशर से लिखकर अपने घर के सामने गाढ़ देने से हर प्रकार की प्रेतबाधा तथा भय दूर हो जाता है। यन्त्र को चाहे जिस दिन लिखा जा सकता है। विघ्न बाधाओं को दूर करने में यह यन्त्र प्रभावशाली है।

असली प्राचीन सच्ची आक. शक्तियां पं० जगन्नाथ मू. 15.00

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | | | १३ | |
| ६ | १० | | ४ | |
| | | ७ | | |
| | ९ | | ३ | ८ |
| | १ | | | |

ज्योतिष, धन-सम्पत्ति और परिवार पं० जगन्नाथ मू. 8.25

## ● सर्व सिद्धिदाता लक्ष्मी यन्त्र ●

इस यन्त्र को किसी शुभ दिन तथा मुहूर्त में भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर यथाविधि पूजन करने के उपरान्त कीच के फ्रेम में मढ़वा लेना चाहिए। तत्पश्चात् प्रतिदिन प्रातः-काल इस यन्त्र का पूजन करके, धूप-दीप देकर 'लक्ष्मी स्तोत्र' का पाठ करते रहना चाहिए।

इस यन्त्र के पूजन के प्रभाव से घर में धन-सम्मत्ति ऐश्वर्य, एवं सुखों की वृद्धि होती है, लक्ष्मी स्थिर बनी रहती है तथा हर प्रकार के दुःख दूर होते हैं।

प्राचीन ग्रंथों में इस लक्ष्मी यन्त्र की बड़ी महिमा कही गई है, अतः प्रत्येक श्रद्धालु व्यक्ति को इस यन्त्र के पूजन से लाभ उठाना चाहिए।

### आपत्ति दूरीकरण यन्त्र

ओं

| | | |
|---|---|---|
| ऊं | हैं | ऊं |
| ह | ऊंहं अ पु | [illegible] |
| ऊं | हं | ऊं |

### ज्वर यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| प | व | क | ० |
| ३ | ४९ | ८ | ३३ |
| ३४ | ०७ | ५ | ३३ |
| ५१ | ७ | ३ | २५ |

ओं

● आपत्ति दूरीकरण यन्त्र—इसको प्रथम सिद्ध कर लो या एक हजार यंत्र भोजपत्रपर लिखकर गोरोचन व आटे की गोली बनाकर मछलियों को खिलाओ, और फिर सोमवार के दिन ताबीज में मढ़वा कर धारण करें।

● ज्वर यन्त्र—प्रथम इसको सिद्ध करें। सफेद कागज पर लाल चन्दन से २१०० बार लिख कर गोली बनाकर मछलियों को खिलाओ, सिद्ध होगा। जिसको बुखार आता हो इस यंत्र को लिखकर उसकी भुजा में बांधो। बुखार नहीं आयेगा।

## सर्व कार्य सिद्धि यंत्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | २ |
| १ | ९ | ८ | |
| | श्री | | |
| | ७ | ६ | ४ |
| | ३ | | |

देहाती पुस्तक भण्डार

यन्त्र-विधि—प्रथम स्नान आदि से शुद्ध होकर ४० यन्त्र रोजाना लिखें २१ दिन तक। जब २१वां दिन हो उस दिन इन सबकी गोली बनाये। एक-एक करके नदी में डाल दें, सिद्ध हो जायेगा। इस यंत्र को दो के अंक से भरना शुरू कर दें।

वशीकरण के लिए भुजा में बांधें। इस यन्त्र को सिर पर रखने से कार्य सिद्ध हो। इस यन्त्र को शत्रु का नाम लेकर आग दिखावे, पुत्र प्राप्त हो और गर्भ-रक्षा के लिए स्त्री की कमर में बांधें तो रोग जाय। इस यन्त्र का पूजन करने से धन-वृद्धि हो परन्तु धूप दे और हवन करावे। इस यन्त्र को इतवार के दिन सिराहने रखकर सोवे तो प्रश्न उत्तर मिले। अगर कोई मनष्य परदेश गया हो या लापता हो तो उसके वस्त्र में इस यन्त्र को बांधकर खूंटी से लटका दे और सुबह-शाम के समय सात कोड़े मारे तो परदेश गया आदमी वापस आवे।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## ● सन्तान को फिल्म स्टार बनाना ●

जो लोग अपनी सन्तान को फिल्म-क्षेत्र में प्रविष्ट होते हुए देखना चाहते हों, उन्हें निम्नलिखित यन्त्र भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर स्वयं धारण करना चाहिए तथा जिस सन्तान को फिल्म-स्टार बनाना हो, उसे भी धारण कराना चाहिए। प्रतिदिन दोनों को विष्णु सहस्त्र-नाम का पाठ करना भी आवश्यक है।

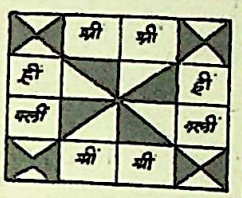


## ● अखबार निकालने में लाभ ●

जो लोग अखबार निकाल कर उससे लाभ कमाने के इच्छुक हों, उन्हें यह यन्त्र केशर, कस्तूरी या गोरोचन द्वारा एक बड़े भोजपत्र पर लिख कर तथा कांच के फ्रेम में मढ़वा कर अपने दफ्तर में टांग देना चाहिए तथा प्रतिदिन इस यन्त्र का पूजन करके लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। इससे उन्हें सफलता मिलेगी।

## ● सन्तान का इच्छित स्थान पर विवाह ●

जो व्यक्ति अपने पुत्र अथवा पुत्री का किसी इच्छित स्थान पर विवाह करना चाहते हों और उस संबंध के होने में कोई कठिनाई आ रही हो तो यह यन्त्र किसी शुभ मुहूर्त में अष्टगंध से भोजपत्र के ऊपर लिखकर कण्ठ या भुजा में धारण करना चाहिए तथा संकट मोचन हनुमान स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। इससे बाधा दूर हो जाएगी।

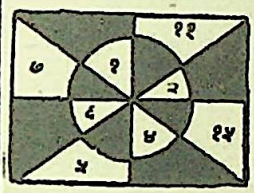


## ● लड़के का जन्म ●

जिन लोगों के यहां केवल लड़कियां-ही-लड़कियां होती हों और जो लड़के का जन्म चाहते हों, उन्हें यह यन्त्र अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर अपनी दाईं भुजा तथा स्त्री की बाईं भुजा में, चांदी के ताबीज में भरकर बांधना चाहिए तथा प्रतिदिन 'सन्तान गोपाल स्तोत्र' का पाठ करते रहना चाहिए। इससे उनकी कामना पूर्ण होगी।

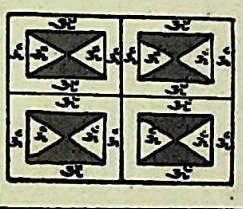


## ● विदेशी वस्तु के व्यवसाय में लाभ ●

जो लोग विदेश से कोई वस्तु मंगवाकर उसके व्यवसाय से लाभ प्राप्त करने के इच्छुक हों, उन्हें यह यन्त्र केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर धूप-दीप से पूजन करने के बाद अपनी भुजा अथवा कण्ठ में धारण करना चाहिए तथा प्रतिदिन लक्ष्मी स्त्रोत, कष्टमोचन, हनुमान स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। इससे मनोकामना पूरी होगी।

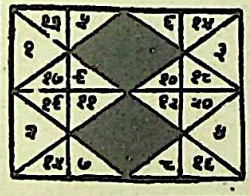


## ● सन्तानों की दीर्घ आयु ●

जिन लोगों की सन्तान अल्पायु में ही मर जाती हो, उन्हें अपनी सन्तान के दीर्घ जीवन के लिए इस यन्त्र को केशर तथा गोरोचन द्वारा भोजपत्र पर लिखकर यथाविधि पूजन करने के बाद स्वयं तथा अपनी पत्नी के गले में धारण करना चाहिए। यन्त्र को ताबीज में भरवा कर पहना जा सकता है। भगवान की दया से उनकी कामना पूरी होगी।

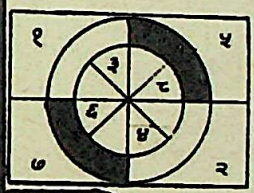


DPB

## ● मित्र से वफादारी पाना ●

जो लोग यह चाहते हों कि उनका मित्र अथवा सम्बन्धी उन्हें धोखा न दे, उन्हें इस यन्त्र को केशर तथा कस्तूरी द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिख कर एवं चांदी के ताबीज में मढ़वा कर अपनी दांई भुजा में धारण करना चाहिए। इस यन्त्र के प्रभाव से मित्र या सम्बन्धी कभी बेवफाई नहीं करेंगे तथा हमेशा साथ देते रहेंगे।

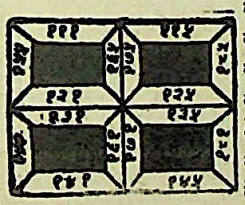


## ● कर्ज से छुटकारा ●

जो लोग कर्ज से छुटकारा पाना चाहते हों, उन्हें यह मन्त्र भोजपत्र के ऊपर अष्ठगंध से लिखकर, विधिपूर्वक पूजन करने के बाद ताबीज में भरकर अपनी दाईं भुजा में धारण करना चाहिए तथा प्रतिदिन 'ऋणमोचन स्तोत्र' का पाठ करना चाहिए। 'ऋणमोचन स्तोत्र' देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६ से मंगवाया जा सकता है। धनी-मानी दानियों को इस स्तोत्र को बड़ी संख्या में मंगवाकर बटवाना तथा पुण्य लाभ लेना चाहिए।

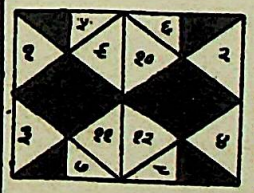


CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## ● पशु बेचने से लाभ ●

जो लोग अपने पशु को बेचकर लाभ उठाना चाहते हों, उन्हें यह यन्त्र भोजपत्र के ऊपर केशर से लिखकर तथा तांबे के ताबीज में मढ़वा कर पशु के गले में बांध देना चाहिए तथा स्वयं पशु की बिक्री होने तक 'शिव महिमा स्तोत्र' का पाठ करते रहना चाहिए। इससे पशु बहुत लाभ के साथ बिकेगा।

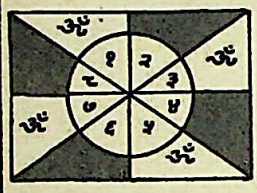

## ● सेना में नौकरी ●

जो लोग सेना में नौकरी प्राप्त करने में इच्छुक हों, उन्हें यह यन्त्र भोजपत्र के ऊपर केशर से लिखकर अपनी दाईं भुजा में धारण करना चाहिए तथा प्रतिदिन 'पंचमुखी हनुमत्कवच' का पाठ करना चाहिए। इससे उनकी मनोकामना पूर्ण होगी।

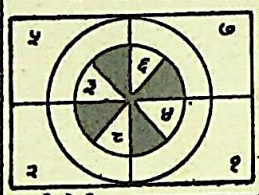

## ● चुनाव में विजय ●

जो लोग किसी चुनाव में विजय पाना चाहते हों अथवा किसी कम्पीटीशन में सफलता प्राप्त करना चाहते हों, उन्हें यह यन्त्र भोजपत्र के ऊपर केशर से लिखकर पूजन करने के बाद ताबीज में भरकर अपनी भुजा अथवा कण्ठ में धारण करना चाहिए तथा प्रतिदिन गरीबों को कुछ-न-कुछ दान करना चाहिए।

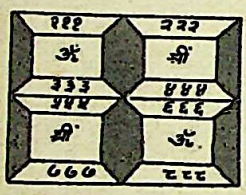

## ● फर्स्ट डिवीजन में पास होना ●

जो विद्यार्थी अपनी परीक्षा में फर्स्ट डिवीजन में पास होना चाहते हों, उन्हें यह यन्त्र भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर पूजनोपरान्त, चांदी के ताबीज में भरकर अपनी दाईं भुजा में धारण करना चाहिए तथा प्रतिदिन सरस्वती देवी का पूजन और 'सरस्वती स्तोत्र' का पाठ करना चाहिए। ऐसा करने से उन्हें इच्छित सफलता मिलेगी।

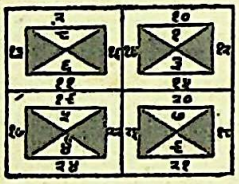

## ● सन्तान की विदेश यात्रा ●

जो लोग अपनी सन्तान—लड़के या लड़की को विदेश जाते हुए देखना चाहते हों, उन्हें यह यन्त्र अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर तथा चांदी के ताबीज में भरकर सन्तान की भुजा अथवा गले में पहना देना चाहिए तथा स्वयं प्रतिदिन कुबेर का पूजन करना चाहिए। इससे उन्हें वांछित सफलता प्राप्त होगी।

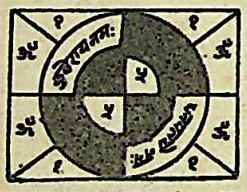

## ● वृद्धावस्था में सुख ●

जो लोग वृद्धावस्था में सुख प्राप्त करने के इच्छुक हों, उन्हें अपनी युवावस्था में ही किसी शुभ मुहूर्त्त में यह यन्त्र भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर तथा पूजनोपरान्त अष्टधातु के ताबीज में भरवाकर अपनी दाईं भुजा में धारण कर लेना चाहिए तथा संकट मोचन स्तोत्र का प्रतिदिन पाठ करना चाहिए

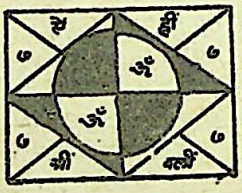

## ● अपनी विदेश यात्रा ●

जो लोग स्वयं विदेश-यात्रा के इच्छुक हों, उन्हें यह यन्त्र भोजपत्र के ऊपर कुंकुम से लिखकर यथाविधि पूजन करने के बाद अष्टधातु के ताबीज में भर कर अपनी दाईं भुजा में धारण करना चाहिए तथा प्रतिदिन गणेश जी का पूजन करना चाहिए। इससे उन्हें सफलता प्राप्त होगी। गरीबों को भोजन कराने से शीघ्र काम बनेगा।

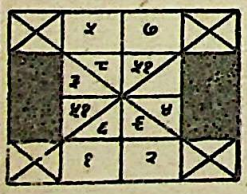

## ● लाटरी का पुरस्कार ●

जो लोग लाटरी का पुरस्कार प्राप्त करने के इच्छुक हों उन्हें यह यन्त्र भोजपत्र के ऊपर लाल चन्दन से लिखकर, यथा विधि पूजनोपरान्त चांदी के ताबीज में भरकर अपनी दाईं भुजा में धारण करना चाहिए। फिर अंक ज्योतिष के आधार पर लाटरी का टिकट खरीदना चाहिए। इससे उन्हें पुरस्कार प्राप्त करने में सफलता मिलेगी।

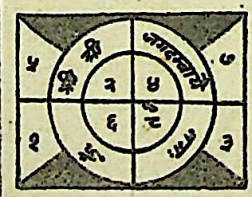

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## सम्पूर्ण कार्य सिद्ध करने वाला होरा मुहूर्त

होरा मुहूर्त सभी कार्यों की सिद्धि के लिए अचूक व शुभ फलदायक है। पाठकों के कल्याण के लिए नीचे होरा मुहूर्त उदाहरण सहित दिया जा रहा है, उसे समझकर अपनी कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग में लायें।

सूर्य से लेकर शनि तक सातों ग्रहों के सात होरे होते हैं, जो दिन-रात में चौबीस घंटों में घूमते रहकर कार्य सिद्धि के लिए अशुभ समय में भी शुभ समय प्रदान करते हैं। १—सूर्य का होरा राज सेवा के लिए, २—शुक्र का होरा यात्रा के लिए, ३—बुध का होरा ज्ञानोपार्जन के लिए, ४—चन्द्रमा का होरा सम्पूर्ण कार्य सिद्धि के लिए, ५—शनि का होरा धन एकट्ठा करने के लिए, ६—गुरु का होरा विवाह (शादी) के लिए और कलह तथा विवाद के लिए, ७—मंगल का होरा युद्ध के लिए उत्तम माना गया है। प्रत्येक होरा १ घंटे का होता है। जिस दिन किसी कार्य सिद्धि के लिए होरा देखना हो उस दिन जो वार हो उस वार के सूर्योदय के समय १ घण्टा तक उसी वार का होरा रहता है। १ घंटा बाद दूसरा होरा क्रमशः उस वार से छठे वार का होता है। यह भी १ घंटा रहता है। उसके बाद तीसरा होरा उससे छठे वार का होता है और यह भी १ घंटा रहता है। इसी प्रकार रात-दिन में २४ घंटो के होरा जानने चाहिए और फिर दूसरे दिन जो अगला वार होगा सूर्योदय के समय उसी वार का होरा प्रवृत हो जायेगा।

जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा लिखा गया है, किसी भी दिन उस कार्य की सिद्धि के लिए उस कार्य को सिद्ध करने वाले उत्तम होरा में १ घंटे के समय मुहूर्त कर सकते हैं। ऐसा करने से उस कार्य की सफलता में अवश्य सिद्धि मिलेगी। प्रत्येक वार में अलग-अलग २४ घंटों के होरा आसानी से देख सकें। इसके लिए नीचे चक्र दिया जा रहा है उससे समझ लें।

### सम्पूर्ण कार्य-सिद्ध करने वाला होरा-चक्र

| वार | हो. १ | हो. २ | हो. ३ | हो. ४ | हो. ५ | हो. ६ | हो. ७ | हो. ८ | हो. ९ | हो. १० | हो. ११ | हो. १२ | हो. १३ | हो. १४ | हो. १५ | हो. १६ | हो. १७ | हो. १८ | हो. १९ | हो. २० | हो. २१ | हो. २२ | हो. २३ | हो. २४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सू. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. |
| चं. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. |
| मं. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. |
| बु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. |
| गु. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. |
| शु. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. |
| श. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | सू. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. |

उदाहरण माना कि आज शुक्रवार है—यात्रा के लिए शुक्र का होरा देखना है तो शुक्रवार के समाने चक्र में दखा तो १, ८, १५, २२ के घंटे में शुक्र का होरा मिलाया तो इससे जाना गया कि सूर्योदय के पहले घंटे में, सूर्योदय से ८ वें घंटे में, सूर्योदय से १५ वें घंटे में तथा सूर्योदय से २२ वें घंटे में यात्रा करना उत्तम है। इसी प्रकार अन्य कार्यों के लिए भी मानना चाहिए।

### किसी माह का वार जानने की विधि

अक्टूबर जनवरी ७ अप्रैल जुलाई ६ ही जो। ३ फरवरी मार्च नवम्बर पर अगस्त में २ ही जानो॥
५ सितम्बर और दिसम्बर, जून ४ मई १ रो। इष्ट वर्ष चौथाई कर, वांच्छित तारीख सही धरो॥

इन चारों का जोड़ कर, सात दिवस का दीजै भाग। शेष अंक को शनि से गिनिये, सही दिवस पर लग जायलग॥

उदाहरण—मानाकि हमें ११ अगस्त १९७१ का वार देखना है तो अगस्त मास का नियमित अंक २ लिया। १९७१ व १९७१ का चौथाई ४९२ लिया। ११ अगस्त का ११ लिया। इन चारों का क्रमशः २+१९७१+४९२+११=२४७६ योग आया। योग में ७ का भाग दिया, तो शेष ५ रहा। इसको शनि से गिना तो बुधवार मिला। इससे जाना गया है कि ११ अगस्त १९७१ को बुधवार है।


अंक ज्योतिष द्वारा लाट्री का पुरस्कार प्राप्त कीजिए

**भारतीय ज्योतिष, अंक विद्या, हस्तरेखाएं और लाट्री**

प्रकाशन घोषित

इस पुस्तक में अंक-ज्योतिष (Numerology) के ढग पर लाट्री की टिकटों से पुरस्कार प्राप्त करने की सरल विधियों का वर्णन किया गया है। यदि आप लाट्री का टिकट खरीदने के शौकीन हैं तो इस पुस्तक को खरीदना भी आपके लिए अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हो सकता है। किन नम्बरों वाला लाटी टिकट आपको पुरस्कार दिला सकता है। मूल्य 15/-

**देहाती पुस्तक भंडार** (REGD.) चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006. फोन : 261030


CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

D.P.B.

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 4 | 8 | 16 | 32 |
| 3 | 3 | 5 | 9 | 17 | 33 |
| 5 | 6 | 6 | 10 | 18 | 34 |
| 7 | 7 | 7 | 11 | 19 | 35 |
| 9 | 10 | 12 | 12 | 20 | 36 |
| 11 | 11 | 13 | 13 | 21 | 37 |
| 13 | 14 | 14 | 14 | 22 | 38 |
| 15 | 15 | 15 | 15 | 23 | 39 |
| 17 | 18 | 20 | 24 | 24 | 40 |
| 19 | 19 | 21 | 25 | 25 | 41 |
| 21 | 22 | 22 | 26 | 26 | 42 |
| 23 | 23 | 23 | 27 | 27 | 43 |
| 25 | 26 | 28 | 28 | 28 | 44 |
| 27 | 27 | 29 | 29 | 29 | 45 |
| 29 | 30 | 30 | 30 | 30 | 46 |
| 31 | 31 | 31 | 31 | 31 | 47 |
| 33 | 34 | 36 | 40 | 48 | 48 |
| 35 | 35 | 37 | 41 | 49 | 49 |
| 37 | 38 | 38 | 42 | 50 | 50 |
| 39 | 39 | 39 | 43 | 51 | 51 |
| 41 | 42 | 44 | 44 | 52 | 52 |
| 43 | 43 | 45 | 45 | 53 | 53 |
| 45 | 46 | 46 | 46 | 54 | 54 |
| 47 | 47 | 47 | 47 | 55 | 55 |
| 49 | 50 | 52 | 56 | 56 | 56 |
| 51 | 51 | 53 | 57 | 57 | 57 |
| 53 | 54 | 54 | 58 | 58 | 58 |
| 55 | 55 | 55 | 59 | 59 | 59 |
| 57 | 58 | 60 | 60 | 60 | 60 |
| 59 | 59 | 61 | 61 | 61 | 61 |
| 61 | 62 | 62 | 62 | 62 | 62 |
| 63 | 63 | 63 | 63 | 63 | 63 |

## यात्रा में शुभाशुभ शकुन 96

यात्रा में शुभाशुभ शकुन यात्रा की सफलता और असफलता का द्योतन करते हैं। अशुभ शकुनों को बायां छोड़कर चलने से हानि की सम्भावना नहीं रहती एवं शुभ शकुनों को दायां छोड़कर चलने से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है।

● अशुभ चिह्न—(१) वन्ध्या स्त्री, (२) सर्प, (३) जलावन की लकड़ी, (४) तेल, (५) तेल मालिशयुक्त व्यक्ति, (६) संन्यासी, (७) शत्रु, (८) बुभुक्षित, (९) लड़ती हुई बिल्लियां, (१०) विधवा, (११) युद्धरत भैंस, (१२) रुई, (१३) काला अन्न, (१४) क्रोधी, (१५) गर्भवती, (१६) रजस्वला, (१७) मुंडित केश, (१८) गीला वस्त्र, (१९) अन्धा-बहरा और (२०) दायें से गर्दभ आदि अशुभ है।

● शुभ चिह्न—(१) ब्राह्मण, (२) घोड़ा-हाथी, (३) फल, (४) अन्न, (५) दूध-दही, (६) गाय, (७) सरसों, (८) कमल, (९) विमल वस्त्र, (१०) वेश्या, (११) मोर, (१२) बकुल, (१३) मछली, (१४) पुष्प, (१५) भरा घड़ा, (१६) छाता, (१७) रत्न, (१८) सफेद बैल, (१९) दर्पण, (२०) धोबी, (२१) पुत्रवती नारी आदि के दर्शन शुभ हैं।

यात्रा में शुभाशुभ शकुन जानने के लिए—सरल सुगम ज्योतिष, मूल्य १२/- रु०, डाक खर्च अलग।

## काक (कौआ) स्पर्श-फल

● काक (कौआ) यदि मस्तक का स्पर्श करे तो मृत्यु समान कष्ट या मृत्यु, कलह तथा धन का एवं कमर या कंधा का स्पर्श करे तो अशुभ होता है।

● स्त्री के मस्तक का स्पर्श करे तो पति पुत्र का नाश।

● वृक्ष के नीचे दही आदि खाने के पदार्थ पर झपटते समय यदि स्पर्श हो जाय तो कोई दोष नहीं होता है। परन्तु यदि बिना किसी कारण के अचानक ही स्पर्श हो जाय तो दोष होता है। शान्ति करानी चाहिए।

● काक मैथुन देखने से छह महीना के अन्दर मृत्यु या मृत्यु के समान कष्ट तथा सभी मन के साचे कार्य नष्ट होते है। प्रमाण भी है 'षडमा साभ्यन्तरे मृत्युः काक मैथुन दर्शने' इसका दोष दूर करने के लिए उड़द व आटे की काक-प्रतिमा बनाकर मिट्टी के बर्तन में रखकर उड़द, चावल, घी तथा मीठा दें तथा आवश्यक शान्ति करायें।

## दूसरे के दिल की बात बतलाना

आपकी आयु कितनी होगी, अमुक व्यक्ति की जेब में कितने रु० हैं, उनकी ठीक संख्या को दिल में सोचकर याद रख लें। अगर वह यह पूछना चाहता है कि इस समय उनकी आयु कितने वर्ष की है तो आयु का अंक सोच लें। इसके बाद उससे पूछो कि उसने जो अंक सोचा है वह इस टेबिल की कौन-कौन सी पंक्ति में है। जिस-जिस पंक्ति में हो उस की चोटी पर जो अंक दिया है उनको आपस में जोड़ लो। जो जोड आवे वही उस व्यक्ति की सोची हुई संख्या है।

उदाहरण—एक व्यक्ति दिल में सोच लेता है कि मेरी आयु ५१ वर्ष है तो वह आप को बतलाएगा कि मेरा अंक पंक्ति १, २, ५, ६ में है तो आप तुरन्त ऊपर चोटी वाले अंक १, २, १६, ३२ को जोड़कर ५१ बता दें।

विस्तार पूर्वक मालूम करने के लिये आयु निर्णय १२/-।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## जिस के सन्तान न होती हो उनके लिए मन्त्र

देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते देहो मे तत्वं कृष्ण त्वामहं शरणं गता। इस मन्त्र का एक लाख जाप करे तिल बहुत आदि से हवन करे। कम से कम एक माला प्रतिदिन जप किया करें। पति पत्नी दोनों ब्रह्मचर्य का पालन करें सात्विक भोजन करें, झूठ से बचें, पृथ्वी पर सोएं, मनुष्य अपने केश (बालों) न कटवाए। एक लाख जप होने पर दसवां भाग जप का हवन करे, ब्राह्मणों को भोजन करवा दें।

## रोग दूर करने का मंत्र

ओं ह, सं सि सौं, सुं, सुं, सं सैं सौं सं सः वं, वां वि वौं वुं, वुं, वं वैं वौं वं वां सह अमृत वरवे स्वाहा। एक जल का गिलास लेकर इस मन्त्र को दस बार पढ़कर उस जल को थोड़ा सा पी लिया करें। रोगी का रोग तत्काल दूर हो जाएगा।

## अज्ञातपता करना

ओं ऐं ह्रीं क्लीं इस मन्त्र [illegible]

| | | |
|---|---|---|
| ऐं | ह्रीं | क्लीं |
| डा | मुं | चा |
| यै | वि | वे |

भाग हुए का नाम

## वशीकरण मन्त्र

ओ३म् नमः सर्वलोक वशिंग कराय कुरु कुरु स्वाहा। पुनर्नवा की जड़ को पुष्य नक्षत्र में उखाड़कर सात बार इस मन्त्र को पढ़ कर भुजा पर बांधे। सब लोग मेहरबान हो जाएं। मन्त्र ओं कच्छ गीतम शीघ्रत्वं ग्रामेषु नगरेषु च आसन, वसत्र, तांम्बूलम् अन्नं कलपय। होली दिवाली या ग्रहण में जप करने से काम देता है। जब कहीं जा कर ठहरना हो, यात्रा में कष्ट में पड़ने से काम देता है।

## चोर पकड़ने का मंत्र

राम तू है ते छे किन विन वसी आछे, आछे सात रविवार को तेल घी चीनी से हवन करे एक बार में १०८ बार मन्त्र जप करे। तब सिद्ध होगा इसके बाद जो काम करना होगा सब सिद्ध होगा चोर पकड़ा हो तो चोर को शूल हो यदि चोर पकड़ना हो तो मन्त्र में खजूर के सात कांटे लेकर मन्त्र पढ़ कर केले के खम्बे में गाड़ देवें। तब चोर को शूल हो। यदि उखाड़ दें तो अच्छा हो जाए।

## बुद्धि तेज करने का मंत्र

ओं नमोदेवी कामाक्षा, त्रिशूल, ख, हस्त, पाधा, पाती, गरुड़, सर्व लखी हु प्रीतये, समांगन, तस्य चिन्तामणि, नरसिंह, चल, चल, क्षीनकोटी कात्यानी तालय प्रसाय, के ओं हों हीं, फ्रूं त्रिभवन चालिया, चालिया स्वाहा। स्नान करने के उपरांत ४१ तुलसी के पत्ते लेकर १०८ बार इस मंत्र को पढ़कर प्रति दिन खा लिया करें।

**हनुमान मन्त्र**—ओं हिं पवननन्दनाय स्वाहा, यह मूल मंत्र है। इस का तरीका यह है कि सूर्योदय होने से पहले उठकर नदी पर जाकर स्नान करके खड़े होकर इस मंत्र का आह्वान करे। ओं गंगेच युमुने चैव गोदावरी, सरस्वती, नरवदे, सिंधु, कावेरी, जले अस्मिन सनिधी कुरु। इस मंत्र को पढ़कर अंकुश, मुद्रा से तीर्थ का जल में आवाहन कर आठ बार मूल मंत्र का जप कर बारह बार जल से सिर पर मार्जन करे। फिरे दूसरे कपड़े पहन कर गंगा के किनारे या पर्वत पर बैठकर अंगन्यास करे। हुं अंगुष्टाभ्यां नमः ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ह्रं शिखायै वषट् ह्रीं कवचाय हुं, हुं, ह्रौं, नेत्रायवषट्, हरा अस्तराय फट्, इसका छ हजार जप दैनिक करे, ऐसा छः दिन करने से सातवें दिन सूर्य उदय से सूर्य अस्त तक जप करे, ऐसा करने से रात्रि को बहुत भयानक स्वरूप महावीर जी का प्रकट होगा। पहिले तो यह बहुत भयानक स्वरूप दिखलावेंगे। परन्तु भय नहीं खाना, होशियार रहना, फिर आपको महावीर जी वर प्रधान करेंगे।

## सर्वकार्य सिद्धि यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ८ | १५ | २ | ७ |
| ६ | ३ | १२ | ११ |
| १४ | ९ | ८ | १ |
| ४ | ५ | १० | १३ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| १६ | ३ | ६ | ९ |
| ५ | १० | १५ | ४ |
| ११ | ८ | १ | १४ |
| २ | १३ | १२ | ७ |

## शर्म यंत्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ३४२ | ३४९ | २ | ८ |
| ६ | ३ | ३४६ | २४१ |
| ४४८ | २४३ | ८ | १ |
| ४ | ५ | ३४४ | ३४३ |

## पुत्र रक्षा यंत्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४२ | ४६ | ३ | ७ |
| ६३६ | ३ | ४६ | ४५ |
| ४८ | ४३ | ८ | ७ |
| ४ | ५ | ४४ | ४७ |

## भूत निकल जावे

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ओं | ह्रीं | श्री | क्लीं | क्लीं |
| नमोहा | १० | ४ | ६ ह | ह्रीं |
| वमा | ३ | ७ | ११ २१ | ह्रां |
| म | ८ | ९ | ३ कन | ह्रं |
| आ | म | नः | ओं | नं |

D.P.B.

## सिर पीड़ा का यंत्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७ | ७। | ५ | ८ |
| ३ | २ | ४ | ७ |
| ३। | ४ | २ | ५ |
| ७। | ० | ५ | ० |

देहाती पुस्तक भण्डार

## बंधी छूट

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| म | मु | ७ | १ | ८ |
| ब | ११ | ५ | २ | ७ |
| मणी | ७७ | ५ | ७ | |

## जुआ जीते

| | | | |
|---|---|---|---|
| २८ | ३५ | २ | ७ |
| ६ | ६ | ३२ | ३१ |
| ३४ | २५ | ८ | १ |
| ४ | ५ | ३० | ३३ |

देहाती पुस्तक भण्डार

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# जीवन में आवश्यक घटने वाले यंत्र-मंत्र तंत्र

D.P.B.

वशीकरण यन्त्र

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं |
| ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं |
| ह्रीं | ह्रीं | नाम | ह्रीं | ह्रीं |
| ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं |
| ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं |

पाप सिद्धि यन्त्र

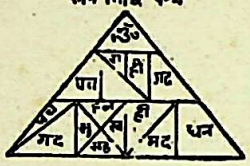

शत्रु भूत यन्त्र

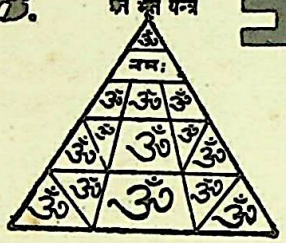

चौथा ताप का यंत्र

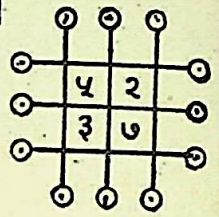

| | | |
|---|---|---|
| ५ | २ | |
| ३ | ७ | |

नारी ताप नाशक यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४ | ५ | ६ | ६ |
| २ | ७ | ७ | १२ |
| ६ | ९ | ३ | १५ |
| ८ | ११ | २ | ६ |

नजर उतारने का यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ६२ | ४ | ५१ | ६१ |
| ०९ | ५ | ११ | १ |
| ९८ | ८ | ६ | ० |
| २७ | ५ | ७ | ०० |

शेर यन्त्र

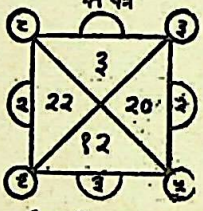

शेर यंत्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| १४ | ७ | ४ | ३ |
| ६ | ३ | ६ | ५ |
| | ३ | ४ | १४ |
| ० | १४ | ३ | ७ |

ताप नाशक यंत्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| कं | ठः | मं | नः |
| शीः | जूः | डा | दाः |
| | ना | म | |
| द्वै | पै | कः | हुः |

पन्चा यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| १४८ | १३ | १३८ | ६ |
| २ | १४६ | १३ | १३६ |
| १३ | ७ | १४० | १ |
| २० | १३४ | ६ | १४७ |

वशीभूत यंत्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ११० | १२४ | २ | ७ |
| ६ | ३ | १२१ | १२० |
| ११३ | ११८ | ८ | १ |
| ४ | ५ | ११९ | १२२ |

पैसा यंत्र

यो जेब में रखे जेब भरे पड़ा होवे बगैरह ॥

ताप निवारण यंत्र २

| | | | |
|---|---|---|---|
| ५५१ | २१७ | ३६६ | |
| ६५५ | १३८१ | ४६३ | |
| ७७२ | १२७७ | १५२१ | |
| ८८१ | ९६६ | १००१ | |

पुत्र दाता यंत्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४० | ४२ | ४ | ५ |
| १ | ३ | ४८ | ४३ |
| ४६ | ४५ | ५ | ४ |
| २ | ७ | ४७ | ४४ |

मान पीड़ा यन्त्र

| | | |
|---|---|---|
| म | ज | घ |
| क | ग | जः |
| थ | ह्रः | दः |

नाप का यन्त्र १

| | | |
|---|---|---|
| ७ | २ | ८ |
| ८ | ६ | ४ |
| ३ | ८ | ५ |

पाषाणीसी यन्त्र १

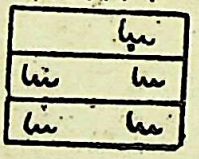

चौथिया ताप का यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| सं ७ | सः १ | सां: ३ |
| सः ६ | २ सः | स. ५ |
| सुः ८ | स. ६ | स. ४ |

जीत यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| भु ४ | हां १ | ॐ ६ |
| हु ५ | ही २ | श्री ८ |
| स. ६ | श्री ३ | हौं ७ |

२ विश्व वशीकरण यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ॐ | वे | जे | ऽ. |
| टे | ड्ं | ही | ऽ० |
| वं | ड्ं | [illegible] | ऽ॥ |

शत्रुदी नाशक यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| ६६ | १६ | ८६ |
| ७६ | ५६ | ३६ |
| १६ | ६६ | ४६ |

पम्मान यन्त्र

शत्रुता नाशक यंत्र

कर्ण यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| २ | ९ | ४ |
| ७ | ५ | ३ |
| ६ | १ | ८ |

| | | |
|---|---|---|
| ३ | ५ | ७ |
| ८ | १ | ६ |
| ४ | ९ | २ |

वामन यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ३७ | ००३ | ७१३ | ७९०० |
| ३७ | ००० | ७७ | ००३७०० |
| ३७००० | देवदत्त | ३०७० | |

नजर टोक यंत्र

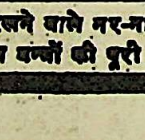

मनन यात्रा यन्त्र

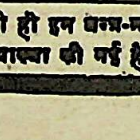

आधासीसी यंत्र २

| | |
|---|---|
| ५३ | ४२ |
| ३११ | ७० |

वायगोला यन्त्र

| | |
|---|---|
| ७ | ५ |
| ९ | १ |

मनु मान जाप

| | | |
|---|---|---|
| | देवदत्त | |

पान पुरुषी का यन्त्र

५७८२०६०२

पंचाक्षरा यन्त्र

ठ ठ ठ ठ ठ ठ ठ ठ ठ ठ

सात्विक विचार रखने वाले नर-नारी ही इन यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों का प्रयोग करें। विशेष जानकारी के लिये आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति जिसमें इन यन्त्रों की पूरी व्याख्या की गई है। हमसे खरीदें। मूल्य 24-00 (आपी राम आठे)

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# शुभाशुभ फल देने वाले शकुनों को जानिये !

## शकुनों की बलवान दिशाएं

(१) पूर्व दिशा—पूर्व दिशा में मुर्गा, हाथी, मोर, पक्षी और सिंहनाद के शकुन बलवान होते हैं।

(२) पश्चिम दिशा:—पश्चिम दिशा में गाय, खरहा, क्रौंच, लोमड़ी, हंस, बिल्ली सफेद तीतर तथा उत्सव, वाद्य-गीत एवं हास्य के शकुन बलवान होते हैं।

(३) उत्तर दिशा:—उत्तर दिशा में हरिण, घोड़ा, चूहा, कोयल, नीलकंठ, सेही, शतात्रपक्षी तथा वेदध्वनि, शंखध्वनि एवं घंटाध्वनि के शकुन बलवान होते हैं।

(४) दक्षिण दिशा:—दक्षिण दिशा में उल्लू, शृगाल, कौआ, तोता, चक्रवाक, पिंगला तथा कबूतर इन पशु-पक्षियों के रोने, चिल्लाने तथा क्रूर शब्द करने के शकुन बलवान होते हैं।

## यात्रा के शुभ शकुन

यात्रा अथवा गृह-प्रवेश के समय यदि निम्नलिखित वस्तुएं सामने आयें तो उन्हें शुभ शकुन समझना चाहिए—

१ फल, २ दूध, ३ दही, ४ जलपूर्ण घट, ५ गाय, ६ ब्राह्मण, ७ कन्या ८ कमल, ९ सरसों, १० वस्त्र, ११ वेश्या, १२ नेवला, १३ बकरी, १४ मोर, १५ कोयल, १६ मछली, १७ ईख, १८ दर्पण, १९ रत्न, २० पगड़ी, २१ सफेद रंग का बैल २२ मिट्टी, २३ मद्य, २४ पुत्र को गोद में लिए हुए स्त्री, २५ चामर, २६ छत्र, २७ मधु, २८ घृत, २९ गोरोचन, ३० राजचिह्न, ३१ अंजन, ३२ मंगल-गीत, ३३ रुदन-रहित शव यात्रा, ३४ वेदध्वनि, ३५ मांस, ३६ वाद्य, ३७ मधुर वाणी, ३८ प्रज्वलित अग्नि और ३९ नीलकण्ठ पक्षी।

यद्यपि खाली घड़े को देखना अशकुन माना जाता है परन्तु यदि वह अपने से पीछे हो तो उसे शुभ समझना चाहिए। यात्रा के समय गदहे का शब्द सुनना भी अशकुन है, परन्तु यदि वह आगे से बाईं ओर हो तो शुभ समझना चाहिए।

यात्रा के समय कौआ, बिल्ली, कुत्ता तथा पिंगला पक्षी का दाईं ओर होना शुभ मानना चाहिए।

युद्ध, भय, भगदड़, नदियों के पार उतरने तथा नष्ट वस्तु को खोजते समय शुभ शकुन अशुभ फलदायक तथा अशुभ शकुन शुभ फलदायक माने जाते हैं।

## कुत्ते का शकुन

यात्रा के समय यदि कुत्ता मनुष्य, घोड़ा, हाथी, घड़ा, दुधारा, वृक्ष, ईंटों का ढेर, छत्र, सेज, आसन, उलूखल, ध्वज, चामर, अन्न का खेत और फुलवारी वाले स्थान पर मूत्रत्याग करे अथवा आगे जाय तो कार्य की सिद्धि होती है।

यदि कुत्ता गीले गोबर पर मूत्र त्याग करके चला जाय तो यात्री को मीठा भोजन प्राप्त होता है। यदि सूखी वस्तु पर मूत्र त्याग कर चला जाय तो लड्डू अथवा गुड़ खाने को मिलता है।

यदि कुत्ता कांटेदार वृक्ष, पत्थर काष्ठ तथा श्मशान पर मूत्रत्याग कर लौटकर यात्री के आगे चले तो यात्री का अनिष्ट होता है।

यदि कुत्ता वस्त्र लेकर आये तो शुभ समझना चाहिए।

यदि यात्रा के समय कुत्ता यात्री के पांव चाटे, कान फटफटाये अथवा उसपर दौड़े तो यात्रा करने वाले को विघ्नों का सामना करना पड़ता है।

यात्रा के समय यदि कुत्ता अपने शरीर को खुजलाता हुआ दिखाई दे तो यात्री को समझ लेना चाहिए कि कुत्ता यात्रा का विरोध कर रहा है। ऐसी स्थिति में यात्रा करना हानिकारक सिद्ध होता है।

यदि यात्रा के समय कुत्ता ऊपर की ओर पांव करके सोता हुआ दिखाई दे तो यात्रा नहीं करनी चाहिए। ऐसी यात्रा दोषपूर्ण होती है।

यदि किसी गांव के बीच में सूर्योदय के समय सूर्य की ओर मुंह करके एक अथवा अधिक कुत्ते इकट्ठे होकर रोयें तो उस गांव के प्रधान व्यक्ति पर संकट आता है। या तो वह अपदस्थ हो जाता है अथवा उसकी मृत्यु हो जाती है।

यदि यात्रा करते समय कुत्ते परस्पर लड़ते हुए दिखाई दें तो यात्राकारी की यात्रा में विघ्न उपस्थित होते हैं। यदि कुत्ता या कुत्ते रोते हुए दिखाई दें तो अनिष्ट होता है। ऐसी स्थिति में यात्रा नहीं करनी चाहिए।

## शकुन विद्या

भारतीय जन जीवन में शकुन विद्या का बड़ा महत्व है। छींक होना, छिपकली का गिरना, बिल्ली का रास्ता काटना, आकाश में धूम्रकेतु का उदय होना अथवा तारों का टूटना, शारीरिक अंगों का फड़कना, यात्रा के समय सामने पड़ने वाले पशु-पक्षी, मनुष्य अथवा अन्य वस्तुओं का प्रभाव, आकाश में समय-असमय दिखाई पड़ने वाले लक्षण, कौए, उल्लू आदि पक्षियों तथा सियार, लोमड़ी, कुत्ता आदि पशुओं के रोने का प्रभाव-तात्पर्य यह कि सैकड़ों प्रकार के शुभाशुभ शकुनों के विषय में जानने की इच्छा सब लोगों के हृदय में रहती है। विवाह, यात्रा, यज्ञ का विचार विशेष रूप से किया जाता है।

प्रस्तुत पुस्तक में शुभाशुभ शकुनों के सम्बन्ध में विशेष जानकारी दी गई है। आज ही हमारे यहां से प्रकाशित पुस्तक 'बृहद् शकुन ज्योतिष शास्त्र' मूल्य 24-00 मंगालें।

देहाती पुस्तक भंडार (REGD.) चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006 फोन : 261030

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# शुभाशुभ फल देने वाले शकुनों को जानिये !

## सियार का शकुन

यदि सियार दिन के पहले प्रहर में ईशान कोण, पूर्व दिशा अथवा अग्नि कोण में बोले तो उसका शब्द सुनने वाले को भय, त्रास, नाश अथवा बंधन की प्राप्ति होती है।

यदि सियार दिन के दूसरे प्रहर में पूर्व दिशा अग्नि कोण अथवा दक्षिण दिशा में बोले तो भय, बंधन और शरीर का नाश होता है।

यदि सियार दिन के तीसरे प्रहर में अग्नि कोण, दक्षिण दिशा अथवा नैऋत्य कोण में बोले तो भय, नाश अथवा बन्धन होता है।

यदि सियार दिन के चौथे प्रहर में दक्षिण दिशा, पश्चिम दिशा अथवा नैऋत्य कोण में बोले तो भय, बन्धन अथवा शरीर का नाश होता है।

यदि सियार रात्रि के पहले प्रहर में नैऋत्य कोण, पश्चिम दिशा अथवा वायव्य कोण में बोले तो भी उपर्युक्त फल होता है।

यदि सियार रात्रि के दूसरे प्रहर में पश्चिम दिशा, वायव्य कोण अथवा उत्तर दिशा में बोले तो भी उपर्युक्त फल होता है।

यदि सियार रात्रि के तीसरे प्रहर में वायव्य कोण, उत्तर दिशा अथवा ईशान कोण में बोले तो भी उपर्युक्त फल होता है।

यदि सियार रात्रि के चौथे प्रहर में उत्तर दिशा, ईशान कोण अथवा पूर्व दिशा में बोले तो भी उपर्युक्त फल होता है।

पूर्व दिशा में शृगाली के प्रथम शब्द से धनलाभ, दूसरे शब्द से धन दर्शन, तीसरे शब्द से कन्या की प्राप्ति, चौथे शब्द से बन्धु-आगमन तथा पांचवें शब्द से अर्थ सिद्धि होती है।

## चील का शकुन

यदि चीलें किसी मकान पर बैठना आरंभ कर दें अथवा रहने लगें तो वह मकान बहुत जल्दी सूना हो जाता है।

यदि चील किसी व्यक्ति के मस्तक का स्पर्श करती हुई चली जाय तो उसकी शीघ्र मृत्यु होती है।

चील के दस प्रकार के शब्द कहे गये हैं, जिनके फल इस प्रकार हैं—

(१) यदि चील 'चिलि-चिलि' का शब्द करे तो लाभदायक समझना चाहिए। (२) यदि 'शूलि-शूलि' का शब्द करे तो यह भी लाभदायक होता है। (३) यदि 'कूचि-कूचि' का शब्द करे तो 'चील को प्यास लगी है' यह समझकर उसके पीने के लिए पानी रख देना चाहिए। (४) यदि 'चिकु चिकु' शब्द करे तो वह किसी के आगमन का सूचक होता है। (५) यदि 'कीतु-कीतु' शब्द करे तो कामनापूर्ति होती है। (६) यदि 'चिची-चिची' शब्द करे तो भय प्राप्त होता है। (७) यदि 'चिलिकु चिलिकु' शब्द करे तो धनलाभ होता है। (८) यदि 'चिरि-चिरि' शब्द करे तो कष्ट और भय प्राप्त होता है। (९) यदि 'चिक्रु चिक्रु' शब्द करे तो दरिद्रता आती है और (१०) यदि 'चीची-चीची' का अखंड शब्द करे तो कामनाएं पूर्ण होती हैं

## पिंगला पक्षी का शकुन

पिंगला पक्षी वर्ग के अन्तर्गत (१) घुग्घू, (२) चंडी, (३) पिंगली का, (४) काली चिड़िया, (५) चीवरी, (६) रात्रिचरी, (७) उल्लू, (८) पेचक तथा (९) भैरवी की गणना की जाती है।

यात्रा के समय यदि पिंगला सामने हो तो उसे निरन्तर सुखदायक समझना चाहिए।

यदि पिंगला अन्य पक्षियों में बैठी हो तो वह किसी का संग कराती है।

यदि पिंगला रति करती हुई दिखाई दे तो सहवास की प्राप्ति होती है।

यदि पिंगला पूंछ को हिलाती हुई दिखाई दे तो प्रेम की वृद्धि होती है।

## भूमि का शुभ शुभ ज्ञान

किसी जगह पर मकान बनवाना हो तो उस जगह का शुभाशुभ जानने के लिए नींव को इतना गहरा खोदे कि पानी दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी तक या साढ़े तीन हाथ या मनुष्य की लम्बाई के बराबर गहरा खोदे। खोदते समय जमीन में से पत्थर निकलें तो धन-आयु की वृद्धि हो। गुठली निकले तो धन का नाश हो और हाड़, राख या बाल निकलें तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा होगी—ऐसा समझना चाहिए। बाकी करुणाधार भगवान हैं, उसकी लीला वही जाने।


## रमल ज्योतिष शास्त्र

रमल संसार की प्राचीन विद्याओं में से एक है। रमल के पासों के द्वारा किसी भी स्त्री-पुरुष के जीवन में भूत, भविष्य एवं वर्तमान में घटने वाली घटनाओं की की सही-सही जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इसे आज ही मंगाय। मू० 24/-

राजेश दीक्षित

**प्रश्न ज्योतिष शास्त्र** ले० पं० जगन्नाथ मू० 15/-

**देहाती पुस्तक भंडार** (REGD.) चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006. फोन : 261030


CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# मनोकामना-सिद्धि के लिये साधन (मनवांछित फल की प्राप्ति)

प्रत्येक प्राणी की कोई-न-कोई कामना होती ही है वह उस कामना की पूर्ति हेतु बुद्धि में अनेकों प्रकार की कल्पना करता है। और पूर्ति का लक्ष्य पूर्ण होता न देखकर भगवान् की शरण में जाता है। और सोचता है कि किसी भी उपाय से मेरी कामना पूर्ण हो जाय। ऐसे समय के लिये धार्मिक ग्रन्थों में धार्मिक उपाय बतलाये गये हैं। इसी आधार को मानकर नीचे अलग-अलग कार्य सिद्धि के लिये अलग-अलग उपाय स्वरूप मंत्र आदि लिखे गये हैं। जिनको विधि पूर्वक करने से प्राणी की मनोकामना सिद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है। हम यह स्तंभ पाठकों के लाभार्थ दे रहे हैं यदि इसे पाठकों ने अपनाया तो हम प्रति वर्ष अलग-अलग प्रयोग देते रहेंगे।

## अतुल निधि दायक मन्त्र

जिन्हें सदैव व्यापार में हानि उठानी पड़ी हो और भोजन वस्त्र भी समय पर न मिल पाते हों, उन्हें नीचे लिखे अन्नपूर्णा मन्त्र का जप करना चाहिये।

## अन्नपूर्णा मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवती माहेश्वरि अन्न पूर्णा स्वाहा ॥

मन्त्र जपने से पूर्व मन्त्र का नीचे लिखा विनियोग करें।

विनियोग:—ॐ अस्य श्री अन्नपूर्णेश्वरी मंत्रस्य ब्रुहिण ऋषिः कृति-कृति छन्दः अन्न पूर्णेशो देवता ममाखिल कार्य सिद्ध्यर्थे जपे विनियोग:

इस प्रकार विनियोग करने के पश्चात् मूल मन्त्र से अंगन्यास करके नीचे लिखे प्रकार से ध्यान करना चाहिये।

## ध्यान

तप्त स्वर्ण निभा शशांक मुकुटा रत्न स्वरा भासुरा। नाना रत्न विराजिता त्रिनयना भूमि रमाभ्यां युता ॥
दवी हारक भाजनं च दधती रम्योच्च पीतस्तनी। नृत्य न्तं शिवमा कलय्य मुदिता ध्येयान्न पूर्णेश्वरी ॥

नियम—इस प्रकार ध्यान करके एकाग्र चित्त होकर मूल मन्त्र का ५००,००० पांच लाख जप करना चाहिये। मन्त्र जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण और तर्पण का दशांश मार्जन तथा मार्जन की दशांश ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये। अथवा दशांश का दुगुना मन्त्र जप करना चाहिये। जिस समय मन्त्र का जप चल रहा हो उस समय जितने दिन में मन्त्र पूर्ण हो उतने दिन पृथ्वी पर सोना चाहिये। एक समय भोजन करना चाहिये। सत्य बोलना चाहिये। ब्रह्मचर्य से रहना चाहिये। बाल नहीं बनवाने चाहिये। जप के पश्चात् रोजाना अन्नपूर्णा देवी का भोग लगाना चाहिये। इस प्रकार पांच लाख का पुरश्चरण करने के उपरांत मूल मन्त्र का जप १००० एक हजार नियम पूर्वक करते रहना चाहिये। इसके करने से निश्चय ही साधक को धनधान्य की प्राप्ति होगी। घर अन्न धन से परिपूर्ण होगा। और निर्धनता का पता भी न लगेगा।

## विघ्न विनाशक प्रयोग

जिनके प्रत्येक कार्य में विघ्न बाधा उपस्थित होती हो और किसी भी कार्य में सफलता न मिलती हो, उन्हें नीचे लिखी चौपाई का १२५००० सविधान जप करना चाहिये।

चौपाई—सकल विघ्न व्यापहि नहीं ताही। राम सुकृपा विलोकहि जाही ॥

## बेरोजगारी दूर करने का प्रयोग

बेरोजगार व्यक्ति के लिये सविधान १२५००० सवा लक्ष का जप नीचे लिखी चौपाई का करना चाहिये। बेरोजगारी दूर होगी तथा अन्न धन की कमी न रहेगी।

चौ०—विश्वभरण पोषण कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई।
गई बहोरि गरीब निवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू ॥

## निर्धनता नाशक मन्त्र

जिनके यहां निर्धनता का वास हो वे किसी योग्य गुरु से दीक्षा लेकर निम्न मन्त्र का अनुष्ठान सविधान करें।

मन्त्र—ॐ रं ह्रीं श्रीं ह्रीं रं प्सुत्पि पासा मलां ज्येष्ठाय लक्ष्मीं नाशयाम्य हम्। अभूतिमसमृद्धि च सर्वां निर्णुद मे गृहात्—रं ह्रीं श्रीं ह्रीं रं ॐ।

गुरु से दीक्षा लेकर इस मन्त्र का ५,००,००० पांच लाख जप करना चाहिये। जप के पश्चात् दशांश हवन, दर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये। इस प्रकार करने से कुल परम्परागत चली आई निर्धनता का नाश अवश्य हो जायगा और शीघ्र ही घर धन धान्य से परिपूर्ण हो जाएगा।

जो इसे न कर सकें उन्हें हमारे कार्यालय से 31/- भेजकर तांत्रिक अंगूठी स्पेशल नं० १ फुल पावर मंगाकर धारण करनी चाहिये। निर्धनता दूर होकर घर में धन धान्य की वृद्धि होगी। और रोजगार मिलेगा। मू. 31/-

मंगाने का पता—व्यवस्थापक, ज्योतिष भवन, मु० पो० पैगांव, जि० मथुरा, उ०प्र० (भारत)

रत्न, अंगूठी आपका भाग्य:—रत्न, अंगूठी द्वारा पाप ग्रहों की शान्ति एवं सुख-समृद्धि के लिए मंगाएं। मू० 24.00
मूक प्रश्न बतलाने की अपूर्व पुस्तक मूक गुप्त प्रश्नावली अर्थात् चमत्कार ज्योतिष मू० 5/- रु०। दोनों पुस्तकें मंगाने के लिये 29/- रु० M. O. से आने पर डाक व्यय माफ। पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# शुभाशुभ फल देने वाले शकुनों को जानिये !

## कौए का शकुन

यात्रा करते समय यदि कौआ बाईं ओर तथा कौवी दाईं ओर दिखाई दें तो यात्रा शुभ होती है।

यदि कौआ पके हुए धान अथवा नवीन घास से परिपूर्ण खेत, मकान, अटारी, हरे रंग के स्थान, धान्य के ऊंचे ढेर अथवा किसी अन्य मंगल-वस्तु पर बैठ कर कांव-कांव करे तो धन की प्राप्ति होती है।

यदि कौआ मकान की मुंडेर पर बैठकर कांव-कांव करे तो घर में किसी अतिथि का आगमन होता है अथवा धन की प्राप्ति होती है।

यदि कौआ गाय की पूंछ अथवा बमई पर बैठकर बोले तो सर्प का दर्शन होता है। यदि भैंस के ऊपर बैठकर बोले तो ज्वर होता है। यदि घोड़े पर बैठकर बोले तो वाहन की प्राप्ति होती है, यदि पीछे जाकर शब्द करे तो खून बहता है।

यदि वैशाखमास में कौआ किसी निरुपद्रवी वृक्ष पर घोंसला बनाये तो सुभिक्ष एवं मंगल कारक होता है। यदि वह कांटेदार अथवा निन्दित वृक्ष पर घोंसला बनाये तो दुर्भिक्ष की आशा रहती है।

यदि शरद ऋतु में कौआ वृक्ष की पूर्व दिशा वाली शाखा पर घोंसला बनाये तो पहले पश्चिम दिशा में वर्षा होती है। यदि दक्षिण अथवा उत्तर दिशा वाली डाली पर घोंसला बनाये तो घोर वर्षा होती है। यदि अग्नि कोण में बनाये तो मंडल वृष्टि होती है। यदि नैऋत्य कोण में बनाये तो शरद ऋतु की खेती अच्छी होती है। ईशान कोण में घोंसला बनाये तो सुभिक्ष होता है। वायव्य कोण में बनाये तो चूहे अधिक होते हैं।

यदि किसी स्थान पर कौए अकारण ही इकठे होकर महान् कांव-कांव शब्द करें तो दुर्भिक्ष पड़ता है। यदि चक्र बांध कर घूमें तो प्रकृति का प्रकोप होता है यदि चारों कोणों में स्थित हों तो उपद्रव होते हैं। यदि कौए निर्भय होकर मनुष्यों को चोंच मारें तो शत्रुओं की वृद्धि होती है। यदि कौए रात्रि के समय विचरण करें तो मनुष्यों का नाश होता है। यदि सुन्दर फल-फूल वाले वृक्षों पर बोले तो आनन्द होता है।

## मधुमक्खी का शकुन

जिस मकान में मधुमक्खियां अपना छत्ता लगायें, वह मकान बहुत जल्दी सूना हो जाता है अर्थात् उस मकान में रहने वाले विपत्तियों में घिर कर, उस घर को छोड़कर चले जाते हैं।

## चिमगादड़ का शकुन

जिस मकान में चिमगादड़ बसेरा लेना आरंभ कर दें, वह मकान भी बहुत जल्दी सूना हो जाता है। उस मकान के निवासी दरिद्रता के शिकार बनते हैं।

## नीले रंग की मक्खी का शकुन

यदि नीले रंग की मक्खी सिर के ऊपर बैठे तो शीघ्र मृत्यु होती है।

## चीटियों का शकुन

यदि चीटियां अपने अंडे पानी में डालें तो वर्षा रुक जाती है यदि वे अपने अंडों को नीचे से वृक्ष के ऊपर ले जायं तो शीघ्र वर्षा होती है।

## स्वर का शकुन

नासिका के दो छिद्र हैं। उनमें से किसी समय दायें और किसी समय बायें छिद्र से श्वास का आवागमन होता है। जिस समय नासा-छिद्र से श्वास वायु का आवागमन हो रहा होता है उस समय उसी ओर के छिद्र को स्वर का चलना कहते हैं।

यदि दाईं ओर का छिद्र चल रहा हो अर्थात् दाईं ओर के नासा-छिद्र से वायु का आवागमन हो रहा हो तो उस समय यात्रा करना शुभ होता है। यदि बायां स्वर चल रहा हो तो शुभ नहीं होता। यदि बायें स्वर के चलते समय यात्रा करना आवश्यक ही हो तो पहले अपना बायां पांव उठाकर आगे बढ़ाना चाहिएं। इसी प्रकार दायें स्वर के चलते समय यदि पहले दायें पांव को आगे बढ़ाकर चला जाय तो यात्रा शुभ होती है।


स्वर ज्योतिष शास्त्र नामक पुस्तक 15.00 पन्द्रह रुपये

## शकुन ज्योतिष शास्त्र

(ले० पं० राजेश दीक्षित)

शुभाशुभ शकुन हजारों प्रकार के होते हैं सामान्य जनों को तो अलग बड़े बड़े विद्वानों तक को हर प्रकार के शकुनों का ज्ञान नहीं होता। इस पुस्तक में हजारों प्रकार के शुभाशुभ शकुनों के प्रभाव को सैकड़ों ग्रंथों तथा विद्वानों की सहायता से संकलित किया गया है। हर घर में हर समय रहने योग्य अपूर्व पुस्तक है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य 15 रु०।

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६


## शुभाशुभ मुहूर्त

हमारे देश में प्रत्येक कार्य करने से पूर्व उसकी सफलता के लिए 'शुभ मुहूर्त' की जानकारी प्राप्त करना और उसी मुहूर्त में कार्य प्रारम्भ करना आवश्यक माना जाता है।

प्रस्तुत पुस्तक में यात्रा के शुभाशुभ मुहूर्त के बारे में विस्तार से वर्णन किया गया है। संस्कृत भाषा में मुहूर्त विषय पर अनेक प्राचीन ग्रन्थ पाये जाते हैं। हिन्दी भाषा में लिखित पुस्तक 'वृहद् मुहूर्त ज्योतिष शास्त्र' मूल्य 24-00 रुपये (डाक व्यय पृथक) शीघ्र मंगालें।

देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाजार, दिल्ली ६

CC-0. Swami Omanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# पिछले व आने वाले 40 वर्षों के सूर्य व चन्द्र ग्रहण का विवरण

101/- एक सौ एक M.O. मिलने पर एक सौ वर्षीय पंचाग भेज दें।

| संवत् | ग्रहण | तारीख | स्पर्श | मध्य | मोक्ष | संवत् | ग्रहण | तारीख | स्पर्श | मध्य | मोक्ष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2028 | खग्रास चन्द्रग्रहण | 6- 8-71 | 11-27 | 1-11 | 2-57 | 2047 | ग्रस्तोदित चन्द्रग्रहण | 6- 8- 90 | 6-12 | 7-42 | 9-10 |
| 2028 | ग्रस्तोदय खग्रास च.ग्र. | 30- 1-72 | 0-42 | 5-25 | 6-7 | 2048 | चन्द्रग्रहण | 21-12- 91 | 3-23 | 4-3 | [illegible] |
| 2030 | ग्रस्तास्त खण्ड च.ग्र. | 10-12-73 | 6-32 | 7-14 | 7-55 | 2049 | चन्द्रग्रहण | 9-12- 92 | 3-24 | 5-11 | [illegible] |
| 2031 | चन्द्रग्रहण | 4- 6-74 | 2-2 | 3-41 | 5-18 | 2050 | ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण | 4- 6- 93 | 4-42 | 6-33 | [illegible] |
| 2031 | खग्रास चन्द्रग्रहण | 29-11-74 | 6-55 | 8-43 | 10-26 | 2052 | ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण | 15- 4- 95 | 5-6 | 6-25 | [illegible] |
| 2032 | चन्द्रग्रहण | 18-11-75 | 2-16 | 4-0 | 5-44 | 2052 | सूर्यग्रहण | 24-10- 95 | 7-22 | 8-30 | [illegible] |
| 2033 | चन्द्रग्रहण | 13- 5-76 | 12-48 | 1-31 | 1-12 | 2053 | खग्रास चन्द्रग्रहण | 3- 4- 96 | 3-5 | [illegible] | [illegible] |
| 2033 | सूर्यग्रहण | 29- 4-76 | 4-29 | 5-42 | 6-52 | 2053 | ग्रस्तोदय सूर्यग्रहण | 9- 3- 97 | 5-10 | [illegible] | [illegible] |
| 2034 | चन्द्रग्रहण | 24- 3-78 | 8-0 | 9-49 | 11-38 | 2054 | खग्रास चन्द्रग्रहण | 16- 9- 97 | 10-40 | [illegible] | [illegible] |
| 2035 | चन्द्रग्रहण | 16- 9-78 | 10-52 | 12-38 | 2-22 | 2057 | खग्रास चन्द्रग्रण | 16- 7-2000 | 5-29 | [illegible] | [illegible] |
| 2035 | चन्द्रग्रहण | 13- 3-79 | 12-53 | 2-38 | 4-19 | 2057 | खग्रस चन्द्रग्रहण | 9- 1-2001 | 12-5 | [illegible] | [illegible] |
| 2036 | सूर्यग्रहण | 16- 2-80 | 2-29 | 3-43 | 4-46 | 2058 | ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण | 5- 7-2001 | 7-5 | [illegible] | [illegible] |
| 2038 | सूर्यग्रहण | 31- 7-81 | 6-50 | 7-47 | 8-25 | 2060 | सूर्यग्रहण | 31- 5-2003 | 7-32 | [illegible] | [illegible] |
| 2038 | चन्द्रग्रहण | 8- 1-82 | 11-45 | 1-28 | 3-12 | 2060 | चन्द्रग्रहण | 9-11-2003 | 5-0 | [illegible] | [illegible] |
| 2039 | सूर्यग्रहण | 15-12-82 | 3-0 | 4-13 | 5-10 | 2061 | चन्द्रग्रहण | 4- 5-2004 | 12-15 | 1-57 | [illegible] |
| 2039 | चन्द्रग्रहण | 30-12-82 | 3-20 | 4-49 | 6-38 | 2061 | ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण | 27-10-2004 | 6-45 | 8-36 | 10-25 |
| 2042 | चन्द्रग्रहण | 4- 5-85 | 12-17 | 1-59 | 3-39 | 2062 | सूर्यग्रहण | 3-10-2005 | 4-13 | 5-3 | 5-15 |
| 2042 | चन्द्रग्रहण | 28-10-85 | 9-38 | 11-25 | 1-15 | 2062 | चन्द्रग्रहण | 17-10-2005 | 4-27 | 3-50 | 5-11 |
| 2043 | चन्द्रग्रहण | 24- 4-86 | 4-55 | 6-37 | 8-15 | 2062 | सूर्यग्रहण | 29- 3-2006 | 4-27 | 2-23 | 6-0 |
| 3043 | चन्द्रग्रहण | 17-10-86 | 11-0 | 12-50 | 2-30 | 2063 | चन्द्रग्रहण | 7- 9-2006 | 120 | 12-50 | 1-39 |
| 2044 | ग्रस्तोदय सूर्यग्रहण | 23- 9-87 | 5-50 | 6-41 | 7-37 | 2063 | खग्रास चन्द्रग्रहण | 3- 3-2007 | 2-58 | 4-50 | 6-40 |
| 2044 | ग्रस्तोदय सूर्यग्रहण | 18- 3-88 | 4-43 | 6-28 | 7-9 | 2063 | सूर्यग्रहण | 19- 3-2007 | 6-9 | 6-58 | 7-48 |
| 2045 | सूर्यग्रहण | 11- 9-88 | 7-24 | 8-24 | 8-55 | 2064 | चन्द्रग्रहण | 20- 2-2008 | 7-14 | 8-58 | 14-47 |
| 2045 | सूर्यग्रहण | 6- 2-89 | 7-12 | 2-6 | 10-58 | 2065 | सूर्यग्रहण | 1- 8-2008 | 2-31 | 3-21 | 4-24 |
| 2046 | चन्द्रग्रहण | 9- 2-90 | 11-0 | 12-45 | 2-29 | 2065 | चन्द्रग्रहण | 16- 8-2008 | 1- 1 | 2-53 | 4-25 |

**इच्छापूरक सिद्धियाँ** (मनवांछित फल की प्राप्ति मनोकामना सिद्धियाँ) — मनुष्य चन्द्रमा तक पहुंच गया है। और मंगल, ध्रुव सितारों की खोज में बड़ी तेजी से लगे हैं। दुनिया में कुछ भी असम्भव नहीं है। हमारी पुस्तक आपकी समस्त इच्छाएं पूरी करेगी। पुस्तक पढ़ें और देखें इसका कमाल मू० 24-00

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने तथा वी०पी०पी० द्वारा मंगाने का एक-मात्र स्थान

देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाजार, दिल्ली

प्रत्येक पुस्तक का डाक-व्यय खरीदार को देना होगा।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

सावधान! आप क्या बनेंगे—वकील, डाक्टर, प्रोफेसर, इंजीनियर, व्यापारी, नेता, अभिनेता या कुछ और? आपके जीवन में क्या-क्या घटनाएँ घटेंगी? इन सबका लेखा-जोखा आपके हाथ की रेखाओं में है। इनकी सही जानकारी के लिए प्रस्तुत है:

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त, सहस्राधिक ग्रन्थों के रचयिता, सुप्रसिद्ध विद्वान, विद्यावारिधि पं० राजेश दीक्षित द्वारा लिखित प्राच्य तथा पाश्चात्य मत से हस्त-परीक्षा विषयक हिन्दी का सर्वोत्तम, शास्त्रीय एवं प्रामाणिक ग्रन्थ-रत्न

# वृहद् हस्तरेखा विज्ञान

## (भाग्य का कम्प्यूटर)

- केवल इस एक ही पुस्तक के अध्ययन द्वारा सामान्य हिन्दी पढ़ा-लिखा कोई भी स्त्री-पुरुष, बिना किसी गुरु अथवा पण्डित के समीप जाये, घर बैठे ही सफल हस्त-परीक्षक (पामिस्ट) बनकर, अपने, अपने परिवारी जनों, मित्रों एवं अन्य लोगों के जीवन में घटने वाली घटनाओं की जानकारी प्राप्त कर सकता है तथा हस्तरेखाविद् बनकर प्रचुर धन तथा यश भी कमा सकता है।
- भारतीय तथा पाश्चात्य—दोनों मतों के हस्त-परीक्षा विषयक प्रामाणिक एवं अकाट्य-नियमों तथा मत-मतान्तरों का विशद् साङ्गोपाङ्ग तथा शास्त्रीय वर्णन।
- हस्त-रेखा सम्बन्धी 400 से अधिक शास्त्रीय योगों का सचित्र उल्लेख
- प्रेम, विवाह, सन्तान, माता, पिता, भाई-बन्धु, मित्र, शत्रु, रोग, स्वास्थ्य, नौकरी, व्यवसाय, सुख-दुःख, सफलता-असफलता, विद्याध्ययन, परीक्षा; कला, विज्ञान, साहित्य, संगीत, बन्धन, मुक्ति, ऋण, धन, धर्म, यात्रा, विदेश-गमन, अभिनय, पदोन्नति, पदावनति, झगड़ा, मुकद्दमा, शान्ति, यश, सम्मान, प्रतिष्ठा, भाग्योन्नति आदि सभी विषयों से सम्बन्धित भूत, भविष्य एवं वर्तमान के शुभाशुभ-फल की विस्तृत जानकारी इस पुस्तक के अध्ययन तथा हस्त-परीक्षा द्वारा सरलता से प्राप्त की जा सकती है।
- यह ग्रन्थ उन उच्चकोटि के अनुभवी विद्वान की कृति है, जिन्होंने सामुद्रिक विद्या विषयक कई हजार पृष्ठों का हिन्दी में सबसे विशाल ग्रन्थ तथा विभिन्न विषयों पर सहस्राधिक पुस्तकें लिखकर विश्व-कीर्तिमान स्थापित किया है। इस पुस्तक के माध्यम से वे हस्त-परीक्षा विज्ञान को 'गागर में सागर' की भाँति भरकर, अपनी लेखनी द्वारा हिन्दी-जगत को एक नया उपहार भेंट कर रहे हैं। इस अत्युपयोगी ग्रन्थ को आज ही मंगाइये तथा अपनी लागत का हजारों गुना लाभ पाइये।
- पसन्द न आने पर, 7 दिन के भीतर मूल्य-वापसी की गारन्टी—इससे अधिक आप और क्या चाहेंगे?

- बड़े साइज के 400 से अधिक पृष्ठ
- 600 से अधिक चित्र
- आकर्षक आवरण, नयनाभिराम मुद्रण
- कपड़े की पक्की जिल्द
- बढ़िया ग्लेज कागज

मूल्य 24/- रु० गारंटी सहित

देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाज़ार, देहली-110006 टेलीफ़ोन-261030


CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## ॥ अपने आप तेजी मन्दी निकालने की सारिणी ॥

| तिथि ध्रुवा | १ १ | २ २ | ३ ३ | ४ ४ | ५ ५ | ६ ६ | ७ ७ | ८ ८ | ९ ९ | १० १० | ११ ११ | १२ १२ | १३ १३ | १४ १४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार ध्रुवा | रवि २१ | सोम १५ | मंगल १२ | बुध २ | गुरु १० | शुक्र १४ | शनि ० ० | पूर्णिमा १५ | अमावस्या ३० | | | | | |
| राशि ध्रुवा | मेष ३ | वृष २५ | मिथुन २२ | कर्क २५ | सिंह १९ | कन्या १३ | तुला २० | वृश्चि १३ | धन १७ | मकर १९ | कुम्भ २३ | मीन २४ | | |
| नक्षत्र ध्रुवा | अश्वि १७ | भरणी ५ | कृति ३२ | रोह १४ | मृग ४ | आर्द्रा १३ | पुन २८ | पुष्य २८ | श्ले ३६ | मघा १५ | पू० फा० ३ | उ०फा ३१ | हस्त १८ | चित्रा २५ |
| नक्षत्र ध्रुवा | स्वा १४ | विशाखा २४ | अनुराधा २९ | ज्ये ३७ | मूल १८ | पू षा ७३ | उ०षा० ३० | श्रवण २५ | धनि० २३ | शत २४ | पू० भा० ९ | उ० भा ४१ | रेवती २८ | - |
| योग ध्रुवा | विष्कं १३ | प्रीति १२ | आयुष्मा. ४७ | सौभाग्य ५९ | शोभन ३६ | अतिगण्ड ४७ | सुकर्मा १८ | धृति ४४ | शूल १३ | गण्ड २५ | वृद्धि १७ | ध्रुव २२ | व्यघात १५ | हर्षल २५ |
| योग ध्रुवा | वज्र १४ | सिद्धि २२ | व्यतीपा. १३ | वरीयान ३९ | परिघ १५ | शिव १५ | सिद्धि २६ | साध्य १९ | शुभ १२ | शुक्ल २५ | ब्रह्म २२ | ऐन्द्र १३ | वैकृ० २७ | |
| करण ध्रुवा | बव ५ | बाल १७ | कौ. २० | तैति २५ | गर ४१ | वाणी २९ | विस्टि ३५ | शकुनि ४० | चतुष्य ३७ | नाग १५ | किस्तुघ्न ३० | | | |
| मास ध्रुवा | चैत्र ६१ | वैशाख ६३ | ज्येष्ठ ६५ | आषाढ़ ६७ | श्रावण ६९ | भाद्रपद ७१ | आश्वि. ७३ | कार्ति. ५७ | मार्ग ५३ | पौष ५५ | माघ ५७ | फाल्गुन ५९ | | |
| राशि ध्रुवा | मेष ३७ | वृष ८४ | मिथुन ६६ | कर्क १०९ | सिंह १२५ | कन्या १०२ | तुला १४० | वृश्चि. १४४ | धन १४५ | मकर १९८ | कुम्भ १९० | मीन १०० | | |
| वस्तु ध्रुवा | वस्त्र १०९ | स्वर्ण ९६ | हल्दी ७३ | चांदी ८१ | चन्दन १८७ | मिर्च ६०८ | जस्त ५०७ | पित्तल ९८ | कस्तूरी १३४ | रुई ४४ | कपास १२० | गुड़ ४७ | शक्कर १०१ | खांड ९९ |
| वस्तु वा | धान्य ७७ | कनक १०५ | चावल १०० | ज्वार १३३ | चना ३५ | मूंग ४१ | सन ५० | घी ९५ | तेल ९९ | वेजिटे० ३९ | पत्थर १०९ | लकड़ी ३८ | कायला ४९ | नमक ९७ |
| राशि नाम | मेष जौ गेहूं | वृष वस्त्रचाव | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चि | धन | मकर | कुम्भ | मीन | | |
| वस्तु | घी सरसों चावल मिर्च बाजरा ज्वार शेयर सुपारी | हीरी तिल धातु नमक चीनी रुई | ज्वार मक्का नमक सोना बिनौला मूंगफली जूट | केला जायफल तम्बाकू गुड़ गेहूं चावल घी चांदी | खाण्ड अलसी सर्वप्रकार के रस अन्न सोना लालबत्ती | सफेद गेहूं मूंग चदन कपूर अरहर मटर सन कपास | अरण्डी सुपारी मिर्च हींग जौ मसूर नारियल रुई | नागरपान लोहा गुगल भेड़बकरी काली वस्तु कालेतिल | घोड़ी हाथी सफेद वस्त्र कन्दमूल आलू अन्य पदार्थ | मजीट दाख इलायची कोयला जस्ता ताम्बा काशी | तेल तिल पोस्त मोती कुल पसरटा बिजली सामान | समुद्र की वस्तु सीप हीरा गोरोचन चीनी घी तेल | | |

### सारिणी प्रयोग

तिथि, वार, वस्तु, राशि अंक, नक्षत्र, योग, करण, संक्रांति, वस्तु के ध्रुवा का योग करें, एक कम कर के सात से गुणा करे ३ का भाग दे, २ शेष हो तो मन्दा, ३ शेष रहे तो तेज तथा एक शेष रहे यो भाव सम जाने।

चन्द्र--वस्तु की राशि से चन्द्रमा ४, ८, १२ हो तो तेज, १, २, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११ में हो तोमंदी क्रूर गृह की दृष्टि न हो, चन्द्र २,६,७ १०, ११ हो तो मन्दी कारक है।

गुरु-३,६,८,१२ में तेज २,५,७,९,१०,११ में मंदा

शुक्र-१,२,४,५,८,९,१० ११, १२ में मंदा ६, ७ में जाकर लौटे तो तेज, शेष में तेज।

बुध-१, ३, ४, ६,७ ९, १२ में तेज २, ५, ८, १० ११ में मन्दा।

मू० 10/- (दस रुपये)

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार दिल्ली

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली

देहाती पुस्तक भण्डार (Rd.)
चावड़ी बाजार, दिल्ली फोन : 261030

# नक्षत्र कष्टावली

देहाती पुस्तक भण्डार (Regd.)
चावड़ी बाजार, दिल्ली-110006

| क्र० | नक्षत्र | कष्टलक्षण | चरणानुसार कष्ट | गन्धादि पदार्थ | दान वस्तु | बलि द्रव्य | होम द्रव्य | हाथमेंधरणार्थऔषध | देवता | जप संख्या | जपनीय मन्त्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | अश्विनी | वातज्वर निद्राभगशरीर पीड़ाबुद्धिभ्रम | १-९दि.२-११ दि.३-१० दि. ४-२० दिन | चन्दन कमल घी गुग्गलखीर गुड़ गुड़प्रसाद | घी का घड़ा एवं स्वर्ण | तिल गुड़ोदन | खांड जौ घी | पुठकन्डा अपामार्ग की जड | आश्वनी कुमारी | ५,००० | ओं अश्विनी तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वति वीर्यम् वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम ॥ ओं अश्विनी कुमाराभ्यां नमः । |
| २ | भरणी | तेज ज्वर कंपकंपी आलस | १ मृत्युसम २ ८०दि.३-४०, व ४-११दिन | अगर रवीर फूल घी गुड़ धन | गाय भैंस काघी खांड आया दान | खिचड़ी | घी शहद तिल चावल | अगस्त की जड़ | यम | १०,००० | ओ यमायत्वा महायत्वा सूर्यस्यत्वातपसे देवस्यत्वा सविता मध्यानवतु ॥ पृथिव्यासे संस्पर्शस्पाहि अर्चिरसिशोचिर सितपोसि ॥२॥ ओं यमाय नमः |
| ३ | कृतिका | नींद न आना जलन आंख व गोड़ों में दर्द | १-९,२-११, ३-१६,४-२८ दिन | चंदन घी घीखीर गुग्गलजू ी तिलउड़द | स्वर्ण एवं गोदान | दूध घी लड्डू | घी तिल जौ | कपास की जड़ | अग्नि | १०,००० | ओं अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पति पृथिव्या अयम अपाᳬ रेताᳬ सिजन्वति॥६॥ओं अग्नये नमः ॥ |
| ४ | रोहिणी | सिर व कूख में दर्द ज्वर रोनी | १-७,२-९, ३-१८, ४-३० दिन | चन्दन कमल घी दीप दशांग धूप पायसघृत | पतान्न का गोदान कन्या भोज | घी शहद सांठी की खीर | तिल जौ घी | पुठकन्डा की जड़ | ब्रह्मा | ५,००० | ओं ब्रह्म जज्ञानं प्रथम पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य निष्ठा सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥४॥ |
| ५ | मृगशीर्ष | पागलपन आधे शरीर में दर्द | १-९,२-५,३-७, ४-१० दिन | उपरोक्त४वस्तु दूध पुड़ा भात व शहद | दहीचावल गाय बच्छे सहित | खांड दही सांठी के चावल | दूध दही | जयन्ति की जड़ | चन्द्र | १०,००० | ओं इमं देवा असपत्नᳬसुवध्यं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठया महते जान राज्यायेन्द्र स्येन्द्रियाय इमम मुष्य पुत्रमुष्यै पुत्रमस्यै विश एषवोऽमी राजा मोऽस्माकं ब्राह्मणानाᳬ राजा ।।५॥ओंचंद्रमसेनमः |
| ६ | आर्द्रा | पागलपन सारे शरीर में दर्द नींद न आना | १-मृत्युसम कष्ट २-१८दिन ३-४ मृत्युसम | चन्दन सौरभ फूलदशांगधूप घी का दीपक | काला कपड़ा एवं काला बैल | दहीचावल शहद घी | घी शहद | बड़ की जड़ तथा चन्दन | शिव | १०,००० | ओं नमस्यं रुद्रमत्वय उतो त इषवे नमः ॥ बाहुभ्याम् उतते नमः ॥६॥ ओं रुद्राय नमः ॥ |
| ७ | पुनर्वसु | ज्वर सिर व कमर में दर्द | १-७,२-१४, ३-२,४-२१ दिन | हल्दीकुंगु.घी कादीपकअष्ट गंधधूप घीदीप | वस्त्र कमल व स्वर्ण कन्याभोज | घी पीले चावल | घी चावल | आक की जड़ | अदिति | १०,००० | ओं अदिति द्योरदिति रन्तरिक्ष मदितिर्माता स पिता पुत्रः विश्वेदेवा अदितिः पन्चजना अदिरिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥ ओं आदित्यै नमः ॥ |
| ८ | पुष्य | ज्वर कष्टशूल | १-७,२-७, ३-१०, ४-२१ दिन | कुंगु. कमलघी दूधगुग्गलखांड का प्रसाद | गौ पीला वस्त्र स्वर्ण | लड्डू | घी दूध | तुपार की जड़ | गुरु | १०,००० | ओं बृहस्पत अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतु मज्जनेषु यदीदयच्छ वस ऋत प्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ओं बृहस्पये नमः ॥ |
| ९ | अश्लेषा | पैर व सारे शरीर में पीड़ा मृत्युगम कष्ट | १. मृत्युसम ३-४, २-४ मृत्युसम | कुंगु. अगर का फूलघीगग लघीदूधप्र० | बछड़े वाली काली गाय | दही चावल | खांड घी | पटोल की जड़ | सर्प | १०,००० | ओं नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथ्वी ममुः ये दिवितेभ्य सर्पेभ्यो नमः ॥९॥ ओं सर्पेभ्यो नमः |
| १० | मघा | सिर व आधे शरीर में दर्द | १-१५,२-७, ३-१७, ४-२० दिन | चन्दन चम्पक फूल घी गुग्गल दीव मीठेभोग | वस्त्र तिल मोठ | तिल घी दूध धान्य | तिल घी चावल | भृंगराज का जड़ | पितृ | १० ००० | ओं पितृभ्य स्वधयिभ्य स्वाधनमः ॥ पिता मेहभ्यः स्वाधयिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्य स्वधायिभ्य स्वधानामः····· |

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji). Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११ | पू. फा. | ज्वर व शरीर में दर्द | प्र. व तृतीयमृ १२-१५४-३० | चन्दन मालती का फूल घी विल्वधूप पूड़ा भात लड्डू | जौ उड़द अन्न स्वर्ण व गोदान | घीचा-वलदूध | कंगन घीतिल | कण्डा की जड़ | भग | १०,००० | ओंभगप्रणतभगसत्यराधोभगमाँधियमुदवादन्न।।भगप्र ननायगोभिरश्चभंगप्रणेनभिनर्वतुस्यामओंभगायनम |
| १२ | उ. फा | कुखमेंशूलसिर दर्द बुखार | ७,१४,७,३० | कपूर केसर अर्कफूल गुगल धूप घी दूध प्रसाद | अन्न वस्त्र चाँद ब्रह्मभोजन गोदान | घी खा अन्न | जौतिल | पटोल की जड | अर्यमा | १०,००० | ओंदेव्यावध्वर्यु आगत् रथेनसूयत्वचा मध्वाज्ञं समन्जाथेप्रत्यर्थायंवेनश्चित्रंदेवानाँओंअर्यमणेनमः |
| १३ | हस्त | उफारापेट दर्द ठंडा पसीना | १५,१७,१५ मृत्युसम | लाल चन्दन केसर कमल गुगल घी दूध का प्रसाद | स्वर्ण व गोदान ब्राह्मण भोजन | मीठा अन्न | दहीघी | जाति की जड | सविता | ५,००० | ओंविभ्राड्बृहत्पिवतुसौम्यमध्वायुर्दधद्यज्ञपभावावेहुरुत म्वातजूतोयोअभिरक्षतत्मनाप्रजापुपोषपुंधाविराजति |
| १४ | चित्रा | अनेक विचित्र कष्टअतिकष्ट | ११,९.९,१६ | केसर अगर विचित्रवर्णपुष्प गुगल घीविचित्र अन्न लड्डू | तिलगुड़वैल छाया दानब्राह्मणभोजन | अन्न घी | तलघी चावल | मरवा की जड़ | विश्व-कर्मा | १०,००० | ॐत्वष्टातुरीयोअद्भुतइन्द्राग्निपुष्टिवर्द्धनम्द्विपदाछंद इन्द्रीयमुक्षागौन्नवयोदधु ।। ॐविश्वकर्मणेनमः ।। |
| १५ | स्वाति | अनेक प्रकार के कष्ट | ६०,१७,३० मृत्युसम | चन्दन कमल का फूल अगर गुगल घी घी-दूध का प्रसाद | स्वर्ण लाल गाय मिठाई ब्र० भोज | घी दूध | तिल जौ घी | जाति की जड़ | वायु | १०,००० | वायायेतेसहस्रिणोरथासस्तत्रिरागहिनियुत्वा म साम पीतये ।। ओं वायये नमः ।। |
| १६ | विशा-खा | कूख दर्द सारे शरीर में दर्द | १५मृत्यु सम ४,१३ | चन्दनकेसर कमल फूल देव दार घीधूप घीदूधका प्रसाद | लालवपीलाकपड़ा कालावैल ब्र.भोज | सहवि-चित्रान | घी दूध | गुंजा की जड़ | इन्द्राग्नि | १०,००० | ॐइन्द्राग्नीआगतँ सुतंगीर्भिर्नमो वरेस्तवं ।। अस्य पातं वियोविता । ॐ इन्द्राग्नीभ्यां नमः ।। |
| १७ | अनुरा धा | तेजबुखारसिर में दर्द | ६०,१२,३६ ३० | केसर कमल फूलचन्दन घी दूध का प्रसाद | स्वर्ण गौछायादान ब्रह्म भोज | घी गुड़ मोठ | जौ घी | फूलकी जड | मित्र | १०,००० | ॐनममित्रस्यवरुणस्यचक्षुसेमहोदेवायतदृतँ सपर्यतेदू रदृशेदेवजातावकेतवेदिवसपुत्रायसूर्यायशंसत् ।। ॐ |
| १८ | ज्येष्ठा | व्याकुलताग-र्मी से रोग | ५९,९ ६,४, | सफेद चन्दन चम्पा का फूल कपूर घी मनोहर भोजन | स्वर्ण तिल नीला वस्त्र ब्रह्मभोज | दद्योन्न व फूल | तिलघी चावल | अपामा की जड़ | इन्द्र | ५,००० | ॐत्रीतारमिन्द्रमवितारमिन्द्रँ हवेसुहवँशूरमिन्द्रम् ह्वं यामिशक्रं पुरुहूतगिन्दँ स्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः ।ॐ |
| १९ | मूल | पेट व मुँह में रोग सन्निपात | मृत्युसम ९, १५, ६, | काला अगर नीलोत्पल पुष्प घी मीठे का भोजन | स्वर्ण कपड़ा कप ला गाय छा पत्र | सहवि-मोठ | घी कद मूल | मंदार की जड | राक्षस | ५,००० | ॐमातवपुत्रंपृथिवीपुरीष्यमाग्नँ स्वधानावमारुता.तां विश्वेदेवःऋतुभिसंवामःप्रजापतिविश्वकर्माविमुन्चतु |
| २० | पू. षा. | सिरदर्द कष्ट कंपकंपी | मृत्युसम ५,१४, १०, | सफेद चन्दन कमलपुष्प घी गुगल घी दूध भोजन | स्वर्ण कपड़ा तिल चावल घड़ा गौ | घी दूध मिठाई | तिल घ चावल | कपास की जड़ | जल | ५,००० | ॐअपांधमप किल्विषं मपकृत्यामनोरपः । अपाम्-मार्गत्वमप्मदप दुष्वप्न्यँ सुव ।। ॐप्रदम्यीनम। ।। |
| २१ | उ. षा. | पेट कमर में दर्द प्रलाप | ३०, २४-२६ १६ | सफेद चन्दन कमलपुष्प घी गुगल घी दूध भोजन | स्वर्ण अन्न ब्रह्म. भोजन | सहवि दूध घी | तिल घी जौ | ,, | विश्वे-देवा | १०,००० | ॐविश्वेदेवाशृणुतम् हममेयेअन्तरिक्षेये उपद्यविष्ठय अग्निजिह्वाउतवोयजत्राआसद्यास्मिनब्रर्हिषिमादयध |
| २२ | श्रवण | अतिसारसन्नि पात का भय | ६०,२४,६,९ | सफेद चन्दन मालती कापुष्प कपूर गुगल घी दूध भोजन | स्वर्ण गौ छाता पत्र ब्रह्म. भोजन | सहवि दूध | तिल घी जौ | अपामा की जड़ | विष्णु | १०,००० | ॐ विष्णोरराटमसिविष्णोः श्नप्त्रेस्थोविष्णो स्थुर सिविष्णोःसिवैष्णवमसिविष्णवेत्वा । ॐविष्णवेनमः |
| २३ | धनि | मुत्रकृच्छ्रज्वर कंपकंपी | १५, २, २०, २१ | सफेद चन्दन कमल पुष्प गुगल घी दूध भोजन | छतरी घोड़ास्वर्ण ब्राह्मण भोजन | दूध लड्डू | तिल घी दूध | भृंगरा जकी ज | वसु | १०,००० | ॐनमोपवित्रमशीशतधारवसोःपवित्रमसिसहस्रधारम् देवस्त्वासवितापुनासवसोपवित्रेणशतधारेणसुप्त्वा |
| २४ | शत | सन्निपातजोड़ का बुखारकष्ट | मृत्युसम ४५ ३, २२ | केसर अगर कमलपुष्प कपूर चन्दन घृत पोलिका | स्वर्ण तिल अन्न घड़ा घोड़ा दान | घी अन्न | घी दही अन्य | कमल की जड | वरुण | १०,००० | वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कम्भसर्जनीस्थोवरुणस्य ऋतसदन्यसिवरुणस्यऋतसदनमसिवरुणस्यऋतसदन |
| २५ | पू. भा. | शरीर पीड़ा सन्नि० उल्टी | मृत्यु सम १२ २१,१९ | केसरचन्दन अर्ककापुष्प शतो पधि दही दूध भोजन | स्वर्ण चाँदी अन्न गौ. वस्त्र ब्रा भो. | दही अन्न | खीरघी खाँड | भृंगरा जकी ज | अजैक पात | १०,००० | ॐउतनाऽहिर्बुध्न्यशृणात्वजएकपापृथिवीसमुद्रःविश्वे देवाऽऋतावृधोहुतानास्तुतामंत्राः कविस्ताभवन्तु ।। |
| २६ | उ. भा. | ज्वर कामला रोग शूल | १०, २०, ९ १५ | चन्दन कपूर कमल पुष्प बेल फल गुगल घी दूध भोजन | स्वर्ण चाँदी तिल काला कपड़ा ब्रा० भोजन | तिल घीमोठ | तिल जौ घी | अश्वत्थ की जड़ | महिर्बुध्न्य | १०.००० | ॐशिवोनाम साधस्वतिस्वपितानगस्तेऽस्तु मामा-नीःनिवर्तयाम्वायूषेन्नाद्यायप्रजनेतायरावस्पोषायस्रत्र जास्त्वायसुवीर्याय ।। ॐ प्रहिर्बुध्न्याव नमः ।। |
| २७ | रेवती | चित्तभ्रम पेट दर्दबुखार वायु | १८,१०,९१ २० | लाल चन्दन मल र के फूल घी गुगल घी दूध भोजन | चाँश्वेतवस्त्र बैछा दानब्रा.भो पीतल | सहवि अन्न | तिलघी चावल | अश्वत्थ की जड़ | पुषा | ५,००० | ॐपूषनतवव्रतेवयनरिष्येमकदाचनस्तोतारस्तइतस्रांस ॐ पूष्णेनमः । |

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# दशम लग्न सारिणीयम्

(सर्वत्र उपयोगी)



| राशय | | ०० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष. ० | १ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ |
| | | ३४ | ४३ | ५३ | २ | ११ | २० | ३० | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५८ | ८ | १८ |
| वृष. १ | १ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ |
| | | २८ | ३८ | ४८ | ५८ | ८ | १८ | २८ | ३८ | ४९ | ०० | १० | २१ | ३२ | ४३ | ५३ | ४ | १५ | २५ | ३६ | ४७ | ५८ | ८ | १९ | ३० | ४१ | ५१ | २ | १३ | २३ | ३४ |
| मिथुन २ | २ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ |
| | | ४५ | ५६ | ६ | १७ | २८ | ३९ | ४९ | ०० | ११ | २१ | ३२ | ४३ | ५४ | ४ | १५ | २६ | ३७ | ४७ | ५८ | ९ | १९ | ३० | ४१ | ५२ | २ | १३ | २४ | ३५ | ४५ | ५६ |
| कर्क. ३ | ३ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ |
| | | ७ | १७ | २८ | ३९ | ५० | ०० | ११ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | २ | १२ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | १ | ११ | २१ | ३१ | ४१ | ५१ | १ | ११ | २१ | ३१ | ४१ | ५१ | [illegible] |
| सिंह. ४ | ४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ | २८ | २८ |
| | | ११ | २१ | ३१ | ४१ | ५१ | १ | ११ | २१ | ३० | ३९ | ४९ | ५८ | ७ | १७ | २६ | ३५ | ४५ | ५४ | ३ | १२ | २२ | ३१ | ४० | ५० | ५९ | ८ | १८ | २७ | ३६ | ४६ |
| कन्या. ५ | ५ | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ |
| | | ५५ | ४ | १३ | २३ | ३२ | ४१ | ५१ | ०० | ९ | १९ | २८ | ३७ | ४७ | ५६ | ५ | १४ | २४ | ३३ | ४२ | ५२ | १ | १० | २० | २९ | ३८ | ४७ | ५७ | ६ | १५ | २५ |
| तुला. ६ | ६ | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ |
| | | ३४ | ४३ | ५३ | २ | ११ | २० | ३० | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५८ | ८ | १८ |
| वृश्चिक. ७ | ७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ |
| | | २८ | ३८ | ४८ | ५८ | ८ | १८ | २८ | ३८ | ४९ | ०० | १० | २१ | ३२ | ४३ | ५३ | ४ | १५ | २५ | ३६ | ४७ | ५८ | ८ | १९ | ३० | ४१ | ५१ | २ | १३ | २३ | ३४ |
| धनु. ८ | ८ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ |
| | | ४५ | ५६ | ६ | १७ | २८ | ३९ | ४९ | ०० | ११ | २१ | ३२ | ४३ | ५४ | ४ | १५ | २६ | ३७ | ४७ | ५८ | ९ | १९ | ३० | ४१ | ५२ | २ | १३ | २४ | ३५ | ४५ | ५६ |
| मकर. ९ | ९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ |
| | | ७ | १७ | २८ | ३९ | ५० | ०० | ११ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | २ | १२ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | १ | ११ | २१ | ३१ | ४१ | ५१ | १ | ११ | २१ | ३१ | ४१ | ५१ | १ |
| कुंभ १० | १० | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ |
| | | ११ | २१ | ३१ | ४१ | ५१ | १ | ११ | २१ | ३० | ३९ | ४९ | ५८ | ७ | १७ | २६ | ३५ | ४५ | ५४ | ३ | १२ | २२ | ३१ | ४० | ५० | ५९ | ८ | १८ | २७ | ३६ | ४६ |
| मीन ११ | ११ | ५८ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ |
| | | ५५ | ४ | १३ | २३ | ३२ | ४१ | ५१ | ०० | ९ | १९ | २८ | ३७ | ४७ | ५६ | ५ | १४ | २४ | ३३ | ४२ | ५२ | १ | १० | २० | २९ | ३८ | ४७ | ५७ | ६ | १५ | २५ |

विधिः—दशम स्पष्ट करने के लिए इष्ट प्रविष्टे के दिनार्द्ध को अपने इष्ट में से रन कर दो और यदि आप का इष्ट दिनार्द्ध से न्यून हो तो इस में ६० घड़ी और युक्त करके जोड़ में से दिनार्द्ध को हीन कर दो, इस प्रकार जो लब्धि प्राप्त हो इस को दशम भावेष्ट कहते हैं; इसी दशम भावेष्ट को जन्म कालीन इष्ट मान कर इस से ऊपर लिखित दशम सारिणी द्वारा शेष विधि लग्न की क्रिया पूर्वक करने से दशम भाव स्पष्ट हो जाता है

उदाहरणः—१० जुलाई सन् १९४९ ई० को सूर्योदय इष्ट ४३।७ पर दशम स्पष्ट करने के लिये इस प्रविष्टे के दिनार्द्ध १७।१० को ४३।७ में से रन किया तो लब्धि २५।५७ दशम भावेष्ट निकला, इस को ऊपर लिखित सारिणी में इष्ट स्पष्ट सूर्य मिथुन राशि और २५ अंशों के तुल्य के कोष्ट १८।२ में युक्त करके जोड़ फल ४३।५९ को ऊपर लिखित सारिणी में देखा तो इस से न्यून का कोष्ट ४३।५६ धन राशि के १ अंश के तुल्य मिला, फिर ४३।५९ और ४३।५६ के अन्तर ३ पल को ६० से गुणा करके गुणनफल को ४३।५६ और ४४।६ के अन्तर १० पल से भाग दिया तो $३\times\frac{६०}{१०}$=१८ कला लब्धि प्राप्त हुई, इसको स्पष्ट सूर्य की केवल ४० कला ११ विकला में धन किया तो ५८ कला १६ विकला धन फल निकला, जिससे ज्ञात हुआ कि इस समय दशम लग्न धन राशि के एक अंश ५८ कला १६ विकला पर है।

लग्न के अन्य भाव स्पष्ट करने की विधिः—लग्न के अन्य भाव स्पष्ट करने के लिये दशम स्पष्ट में ६ राशि युक्त करने से चतुर्थ स्पष्ट निकल आवेगा, इस चतुर्थ स्पष्ट में लग्न को हीन करके ६ पर भाग दें, लब्धि को खटांश कहते हैं, फिर खट अंश को लग्न में युक्त करने से सन्धि लग्न, सन्धि लग्न में खट अंश जोड़ने से दूसरा भाव स्पष्ट हो जावेगा, इसी प्रकार इसी खट अंश से चतुर्थ भाव पर्यन्त सब भाव स्पष्ट करें, फिर तृतीय सन्धि में १ राशि युक्त करने से चतुर्थ सन्धि, तृतीय भाव में २ राशि युक्त करने से पंचम भाव, द्वितीय सन्धि में ३ राशि जोड़ने से पंचम भाव सन्धि और द्वितीय भाव में ४ राशि युक्त करने से ६वां भाव स्पष्ट होगा, फिर लग्न सन्धि में ५ राशि युक्त करने से छटी सन्धि और लग्न में ६ राशि युक्त करने से सप्तम स्पष्ट निकल आवेगा, फिर इन सब भावों तथा सन्धियों के स्पष्टों में क्रमशः छः छः राशि युक्त करके द्वादश भाव तक शेष सभी भाव और सन्धियां स्पष्ट कर लेवें।

देहाती पुस्तक भण्डार

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## स्टैंडर्ड लोकल टाइम अन्तर सारिणी देहली

| प्रविष्ट | जनवरी | फरवरी | मार्च | अप्रैल | मई | जून | जुलाई | अगस्त | सितम्बर | अक्तूबर | नवम्बर | दिसम्बर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २४ | ३८ | ३४ | २६ | १८ | १९ | २४ | २७ | २१ | १० | ५ | ११ |
| २ | २५ | ३५ | ३४ | २५ | १८ | १९ | २४ | २७ | २१ | १० | ५ | ११ |
| ३ | २५ | ३३ | ३४ | २५ | १८ | १९ | २४ | २७ | २० | १० | ५ | ११ |
| ४ | २६ | ३२ | ३४ | २५ | १८ | १९ | २५ | २७ | २० | ९ | ५ | १२ |
| ५ | २६ | ३५ | ३३ | २४ | १८ | १९ | २५ | २७ | २० | ९ | ५ | १२ |
| ६ | २७ | ३५ | ३३ | २५ | १८ | १९ | २५ | २७ | १९ | ९ | ५ | १२ |
| ७ | २७ | ३५ | ३२ | २४ | १७ | १९ | २५ | २७ | १९ | ९ | ५ | १३ |
| ८ | २७ | ३५ | ३३ | २३ | १७ | १९ | २५ | २६ | १९ | ८ | ५ | १३ |
| ९ | २८ | ३५ | ३३ | २३ | १७ | २० | २५ | २६ | १८ | ८ | ५ | १४ |
| १० | २८ | ३५ | ३२ | २३ | १७ | २० | २५ | २६ | १८ | ८ | ५ | १४ |
| ११ | २९ | ३६ | ३२ | २३ | १७ | २० | २६ | २६ | १७ | ७ | ५ | १५ |
| १२ | २९ | ३६ | ३२ | २२ | १७ | २१ | २६ | २६ | १७ | ७ | ६ | १५ |
| १३ | २९ | ३६ | ३२ | २२ | १७ | २१ | २६ | २६ | १७ | ७ | ६ | १५ |
| १४ | ३० | ३६ | ३१ | २१ | १७ | २१ | २६ | २५ | १७ | ७ | ६ | १६ |
| १५ | ३० | ३६ | ३१ | २१ | १७ | २१ | २६ | २५ | १६ | ७ | ६ | १६ |
| १६ | ३० | ३६ | ३१ | २१ | १७ | २१ | २७ | २५ | १६ | ६ | ६ | १७ |
| १७ | ३१ | ३६ | ३१ | २१ | १७ | २१ | २७ | २५ | १५ | ६ | ६ | १७ |
| १८ | ३१ | ३५ | ३० | २१ | १७ | २१ | २७ | २५ | १५ | ६ | ७ | १८ |
| १९ | ३१ | ३५ | २० | २१ | १७ | २२ | २७ | २४ | १५ | ६ | ७ | १८ |
| २० | ३२ | ३५ | २९ | २१ | १७ | २२ | २७ | २४ | १४ | ६ | ७ | १९ |
| २१ | ३२ | ३५ | २९ | २० | १७ | २२ | २७ | २४ | १४ | ५ | ७ | १९ |
| २२ | ३२ | ३५ | २९ | २० | १७ | २२ | २७ | २४ | १४ | ५ | ८ | २० |
| २३ | ३३ | ३५ | २९ | २० | १७ | २३ | २७ | २३ | १३ | ५ | ८ | २० |
| २४ | ३३ | ३५ | २८ | १९ | १७ | २३ | २७ | २३ | १३ | ५ | ८ | २१ |
| २५ | ३३ | ३५ | २८ | १९ | १८ | २३ | २७ | २३ | १२ | ५ | ८ | २१ |
| २६ | ३३ | ३५ | २७ | १९ | १८ | २३ | २७ | २३ | १२ | ५ | ९ | २१ |
| २७ | ३३ | ३५ | २७ | १९ | १८ | २३ | २७ | २२ | १२ | ५ | ९ | २२ |
| २८ | ३४ | ३५ | २७ | १९ | १८ | २४ | २७ | २२ | ११ | ५ | ९ | २२ |
| २९ | ३४ | ३४ | २७ | १९ | १८ | २४ | २७ | २२ | ११ | ५ | १० | २३ |
| ३० | ३४ | × | २६ | १८ | १८ | २४ | २७ | २२ | ११ | ५ | १० | २३ |
| ३१ | ३४ | × | २६ | × | १८ | × | २७ | २१ | × | ५ | × | २४ |

## स्टैंडर्ड लोकल सारिणी का प्रयोग

स्टैंडर्ड लोकल टाइम अन्तर सारिणी में इष्ट प्रविष्टे को जितने मिनट लिखे हैं इतने मिनट स्टैंडर्ड टाइम में से कम करने से इष्ट दिन का देहली का लोकल [ध्रुप घड़ी का] टाइम निकल आता है और देहली के लोकल टाइम में इसी अन्तर को जोड़ने से स्टैंडर्ड टाइम बन जाता है।


### देहाती जड़ी-बूटियां—मूल्य 30/-

इस पुस्तक में कौन-कौन बुटियां कहां-कहा पाई जाती हैं, उनका प्रांतीय तथा वैद्यक नाम क्या है और किन-किन रोगों पर लाभ दिखाती हैं? एक एक रोग पर कई-कई अनुभूत योग दिये हैं, साथ ही बूटियों का पूरा परिचय, उनकी पहचान, आकार-प्रकार व गुण दिये गए हैं। अधिकतर बूटियों के फोटो भी दिये गये हैं। मधुमेह को जड़मूल मिटाने, ९ दिन में नपुन्सकता दूर करने, बांझ को पुत्र देने, दमे व तपेदिक का अचूक इलाज करने वाली, खोई हुई ताकत को फिर से प्राप्त कराने वाली इत्यादि सैकड़ों बूटियों का सचित्र वर्णन।


## सूर्य क्रान्ति चक्र

| सूर्य क्रमांक | क्रांति अंश | क्रांति कला | सूर्य क्रमांक | क्रांति अंश | क्रांति कला | सूर्य क्रमांक | क्रांति अंश | क्रांति कला | सूर्य क्रमांक | क्रांति अंश | क्रांति कला | सूर्य क्रमांक | क्रांति अंश | क्रांति कला | सूर्य क्रमांक | क्रांति अंश | क्रांति कला |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ०० | २४ | १६ | ६ | १८ | ३१ | ११ | ४९ | ४६ | १६ | ३८ | ६१ | २० | २२ | ७६ | २२ | ४३ |
| २ | ०० | ४८ | १७ | ६ | ४१ | ३२ | १२ | १० | ४७ | १६ | ५५ | ६२ | २० | ३४ | ७७ | २२ | २६ |
| ३ | १ | १२ | १८ | ७ | ४ | ३३ | १२ | ३१ | ४८ | १७ | १२ | ६३ | २० | ४६ | ७८ | २२ | ५४ |
| ४ | १ | ३६ | १९ | ७ | २६ | ३४ | १२ | ५२ | ४९ | १७ | २९ | ६४ | २० | ५७ | ७९ | २२ | ११ |
| ५ | १ | ५९ | २० | ७ | ४९ | ३५ | १३ | ११ | ५० | १७ | ४५ | ६५ | २१ | ८ | ८० | २३ | [illegible] |
| ६ | २ | २३ | २१ | ८ | १२ | ३६ | १३ | ३१ | ५१ | १८ | १ | ६६ | २१ | १९ | ८१ | २३ | ९ |
| ७ | २ | ४७ | २२ | ८ | ३४ | ३७ | १३ | ५१ | ५२ | १८ | १६ | ६७ | २१ | २९ | ८२ | २३ | १२ |
| ८ | ३ | ११ | २३ | ८ | ५६ | ३८ | १४ | ११ | ५३ | १८ | ३१ | ६८ | २१ | ३९ | ८३ | २३ | १६ |
| ९ | ३ | ३४ | २४ | ९ | १९ | ३९ | १४ | ३१ | ५४ | १८ | ४८ | ६९ | २१ | ४८ | ८४ | २३ | १९ |
| १० | ३ | ५८ | २५ | ९ | ४१ | ४० | १४ | ४९ | ५५ | १९ | १ | ७० | २१ | ५७ | ८५ | २३ | २१ |
| ११ | ४ | २१ | २६ | १० | ३ | ४१ | १५ | ८ | ५६ | १९ | १५ | ७१ | २२ | ६ | ८६ | २३ | २४ |
| १२ | ४ | ४५ | २७ | १० | २४ | ४२ | १५ | २६ | ५७ | १९ | ३० | ७२ | २२ | १४ | ८७ | २३ | २७ |
| १३ | ५ | ८ | २८ | १० | ४६ | ४३ | १५ | ४५ | ५८ | १९ | ४३ | ७३ | २२ | २२ | ८८ | २३ | [illegible] |
| १४ | ५ | ३१ | २९ | ११ | ७ | ४४ | १६ | ३ | ५९ | १९ | ५७ | ७४ | २२ | २९ | ८९ | २३ | ३७ |
| १५ | ५ | ५४ | ३० | ११ | २८ | ४५ | १६ | २० | ६० | २० | ९ | ७५ | २२ | ३६ | ९० | २३ | ३७ |

## सूर्य क्रांति जानने की विधि

जिस दिन सूर्य की क्रांति जाननी हो प्रथम उस दिन के निकट का सूर्य स्पष्ट इस जन्त्री में से लेकर इसकी दैनिक गति से इष्ट काल का सूर्य स्पष्ट करो और फिर इसमें "आयन अंश" धन करके सायन रवि मालूम कर लो। सायन रवि यदि [१] तीन राशि तक हो तो इसके अंशादि कर लो [२] यदि तीन राशि से छः राशि तक हो तो इस को छः राशि में से कम कर लो [३] यदि छः राशि से अधिक व नौ राशी से कम हो तो इस में से छः राशि कम कर दो और यदि [४] नौ राशि से १२ राशि तक हो तो उसे बारह राशि में से कम कर दो। बस, इस तरह जो लब्धि हो उसके अंशादि कर लो, इसको "भुज अंशादि" कहते हैं, फिर उपरलिखित सारिणी में इन भुज अंशों के सामने जो क्रांति दर्ज है इस में भुज कलाओं का फल अनुपात द्वारा जान कर धन कर दो तो लब्धि इष्ट कालिक क्रांति ज्ञात होगी। सायन सूर्य मेष आदि अर्थात् छः राशि से कम हो तो क्रांति उत्तर और तुला आदि अर्थात् छः राशि से अधिक हो तो क्रांति दक्षिण जाननी चाहिये।


### देहाती पुस्तक भण्डार


उदाहरणः—सं० २००६ वि० आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा रविवार १० जुलाई सन् १९४९ ई० को सूर्योदय समय रवि क्रांति जानने के लिए इस समय के स्पष्ट सूर्य २।२३।५९।२५ में 'आयनांश' २३।४७ को युक्त करने से ३।१७।४६।२५ सायन रवि ज्ञात हुआ, तीन राशि से अधिक होने पर इसे छः राशि में से कम किया तो राशि आदि २।१२।१३।३५ भुज निकला, इस के अंशादि किये तो ७२।१३।३५ हुए, सारिणी में ७२ अंशों के तुल्य देखा तो २२ अंश १४ कला क्रांति लिखी है इसमें भुज कला १५ के लिये [१३ कला ३५ विकला को सुविधा केलिये १५ कला मान लिया] अनुपात द्वारा लाया हुआ फल २ कला (७२ व ७३ अंश की क्रांति का अन्तर किया तो ८ कला हुआ, इसलिए १ अंश अर्थात् ६० कला के लिये क्रांति अन्तर ८ कला, तो १५ कला के लिए क्रांति अन्तर २ कला हुआ) धन किया तो २२ अंश १६ कला इष्टकालिक क्रांति ज्ञात हुई, सायन रवि मेष आदि होने से क्रांति उत्तर है।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

| | २३ | २२ | २१ | २० | १९ | १८ | १७ | १६ | १५ | १४ | १३ | १२ | ११ | १० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २३ | २१ | २२ | २४ | २० | २५ | २२ | २२ | २२ | २२ | २० | २४ | २५ | २५ | १७ | २४ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| २२ | २४ | २० | २५ | २२ | २२ | २१ | २२ | २४ | २५ | २२ | २२ | २० | २४ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| २१ | २४ | २४ | २१ | २२ | २४ | २४ | २१ | २२ | २४ | २४ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| २० | २५ | २५ | २४ | २४ | २४ | २१ | २० | २५ | २५ | २५ | २४ | २४ | २४ | २४ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| १९ | २५ | २१ | २५ | २५ | २४ | २४ | २५ | २५ | २४ | २१ | २० | २५ | २५ | २५ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| १८ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| १७ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २० | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| १६ | २० | २१ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २० | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| १५ | २५ | २० | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २० | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| १४ | २० | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २० | २५ | २५ | २५ | २५ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| १३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २० | २४ | २४ | २४ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| १२ | २५ | २० | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २० | २५ | २५ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| ११ | २५ | २५ | २० | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २० | २५ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| १० | २० | २५ | २५ | २० | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २० | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| ९ | २४ | २४ | २४ | २४ | २० | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २० | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| ८ | २४ | २० | २४ | २४ | २४ | २० | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २० | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| ७ | २४ | २४ | २० | २४ | २४ | २४ | २० | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २० | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| ६ | २० | २४ | २४ | २० | २४ | २४ | २४ | २० | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २० | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| ५ | २० | २० | २४ | २४ | २० | २४ | २४ | २४ | २० | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २० | २२ | २२ | २२ | २२ |
| ४ | २० | २० | २० | २४ | २४ | २० | २४ | २४ | २४ | २० | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २० | २२ | २२ | २२ |
| ३ | २० | २० | २० | २० | २४ | २४ | २० | २४ | २४ | २४ | २० | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २० | २२ | २२ |
| २ | २० | २० | २० | २० | २० | २४ | २४ | २० | २४ | २४ | २४ | २० | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २० | २२ |
| १ | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २४ | २४ | २० | २४ | २४ | २४ | २० | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २० |

१८ अक्षांश व २२।१६ क्रांति का चर=१।२५+००।१=१।२६
इसी प्रकार १९ अक्षांश व २२।१६ क्रांति का फल=१।२१ दोनों का अन्तर=००।५
∴ अच फला २५ का अन्तर = $\frac{५}{६०} \times \frac{२५}{१२} = २$
∴ अक्षांश १८।२५ व क्रांति २२।१६ का चर=१।२६+००।२=१।२८

२२ अक्षांश व २२ क्रांति अंश का फल=१।२५
१८ अक्षांश व २३ क्रांति अंश का फल=१।१९
∴ १ क्रांति अंश का अन्तर =००।१
∴ १६ कला क्रांति का अन्तर=$\frac{५}{६०} \times \frac{१६}{१} = \frac{१६}{६०}$=१=००।१

चर जानने की विधिः—चर जानने के लिये प्रथम पृष्ट नं० 109 पर दी हुई विधि से इष्टकालिक क्रांति जान कर इसी क्रांति और इष्ट नगर के अक्षांश (अंश कला को छोड़ कर) के तुल्य इस पृष्ट पर दी हुई सारिणी में से अनुपात द्वारा चर घड़ी व पल को मालूम करो, फिर दूसरी बार इसी क्रांति और इष्ट नगर के अक्षांश में एक अंश और युक्त करके इनका चर मालूम करो, फिर दोनों चरों का अन्तर निकालकर इस अन्तर से अच कला का फल अनुपात द्वारा निकाल कर इस फल को प्रथम चर में धन कर दो तो लब्धि इष्ट कालिक चर ज्ञात हो जावेगा।

काकमैथुन—काकमैथुन देखे, काक सिर पर बैठ जाय, किसी अंग में पंजे से मारे या सोये हुए मनुष्य के ऊपर काक बैठ जाय तो शास्त्रकारों ने इसे महा भयानक-अनिष्ट कहा है। इसी प्रकार आधीरात में अकारण काक वाले तथा जंगली कबूतर घर पर बैठे बनाकर अन्य व्याधि से उसका पञ्चोपचार पूजन करके उड़द दही, घी तथा भात को मिट्टी के बरतन में उसके सामने दाह [illegible] भात [illegible] का दान [illegible] पश्चिम में रखकर दक्षिण दिशा में चौराहे पर दक्षिणा सहित बलि को रख [illegible] पञ्चाग्नि से स्नान करे तथा "ॐ नमः शिवाय" इस मन्त्र का जप करे तथा घी में अपनी छाया देखकर दान करे तो

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by S3 Foundation USA
CC-0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by Siddhanta eGangotri Project
CC-0. Vedic Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# (लग्न बनाने की रीति) लग्न सारणी देहली चरखण्डा ६५।५२।२२

| अंश | ०० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष | ०२ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ०० | ४३ | ५० | ५७ | ५ | १२ | १९ | २६ | ३३ | ४१ | ४९ | ५७ | ५ | १३ | २१ | २९ | ३७ | ४५ | ५३ | १ | ९ | १७ | २५ | ३४ | ४२ | ५१ | ५९ | ८ | १७ | २५ | ३४ |
| वृष | ०६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ |
| ०१ | ४२ | ५१ | ५९ | ७ | १६ | २४ | ३२ | ४० | ५० | ०० | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ०० | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ०० | १० | २१ | ३१ | ४१ | ५१ | १ | १ | २१ |
| मिथुन | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ |
| ०२ | ३१ | ४१ | ५१ | १ | ११ | २१ | ३१ | ४१ | ५३ | ४ | १६ | २७ | ३९ | ५१ | २ | १३ | २५ | ३५ | ४७ | ५१ | १० | २२ | ३४ | ४५ | ५७ | ८ | ११ | ३० | ४२ | ५३ |
| कर्क | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| ०३ | ६ | १७ | २९ | ४१ | ५२ | ३ | १५ | २६ | ३८ | ५० | २ | १४ | २५ | ३७ | ४९ | ०० | १२ | २४ | ३५ | ४६ | ५८ | ९ | २० | ३२ | ४४ | ५५ | ७ | ११ | ३१ | ४२ |
| सिंह | २२ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ |
| ०४ | ५५ | ७ | १८ | ३० | ४२ | ५४ | ६ | १७ | २९ | ४० | ५१ | २ | १४ | २५ | ३७ | ४९ | ०० | १२ | २४ | ३५ | ४६ | ५८ | ९ | २० | ३२ | ४४ | ५५ | ६ | १८ | २८ |
| कन्या | २८ | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ | ३४ |
| ०५ | ४१ | ५२ | ४ | १५ | २६ | ३८ | ४९ | ०० | १२ | २४ | ३५ | ४७ | ५८ | १० | २१ | ३३ | ४४ | ५६ | ७ | १९ | ३० | ४२ | ५३ | ४ | १५ | २६ | ३८ | ४९ | १ | १२ |
| तुला | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ४० |
| ०६ | २४ | ३५ | ४६ | ५७ | ९ | २० | ३२ | ४३ | ५५ | ६ | १८ | ३० | ४२ | ५३ | ५ | १६ | २८ | ३९ | ५० | ०१ | १३ | २५ | ३४ | ४८ | ०० | १२ | २४ | ३६ | ४८ | ०० |
| विश्चक | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ |
| ०७ | १२ | २४ | ३६ | ४८ | ५९ | ११ | २३ | ३४ | ४६ | ५७ | ९ | २० | ३२ | ४३ | ५० | ७ | १८ | ३० | ४१ | ५३ | ४ | १६ | २७ | ३९ | ५१ | २ | १३ | २४ | ३६ | ४७ |
| धन | ४५ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५१ |
| ०८ | ५९ | १० | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ८ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ०९ | २० | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ०० |
| मकर | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ | ५५ |
| ०९ | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ०० | १० | २० | २८ | ३६ | ४४ | ५२ | ०० | ८ | १६ | २४ | ३२ | ४१ | ४९ | ५७ | ६ | १४ | २२ | ३० | ३९ | ४७ | ५६ | ५ | १३ | २१ |
| कुम्भ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५९ |
| १० | २९ | ३७ | ४५ | ५४ | २ | ११ | १९ | २७ | ३४ | ४१ | ४८ | ५५ | २ | ९ | १६ | २३ | ३० | ३७ | ४४ | ५१ | ५८ | ५ | १६ | २० | २८ | ३५ | ४२ | ५० | ५६ | ३ |
| मीन | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ११ | १० | १७ | २५ | ३३ | ३९ | ४६ | ५३ | ० | ७ | १४ | २१ | २८ | ३५ | ४२ | ४९ | ५६ | ३ | १० | १७ | २४ | ३१ | ३८ | ४६ | ५३ | ०० | ७ | १५ | २१ | २९ | ३६ |
| अंश | ०० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |

## लग्नसारणी से लग्न देखने रीति

जिस समय इस लग्न सारणी से लग्न देखने की आवश्यकता हो तो उस समय का इष्ट बनाकर उस में उस दिन का सूर्य स्पष्ट जो कि जंत्री में सूर्य स्पष्ट लिखा है जिस राशि में जितने अंश पर हो लग्न सारणी में उस राशि के सामने और उन अंशों की कोष्टक के नीचे जो घड़ीपल हो उन में अपने जन्म समय के इष्ट के घड़ीपल जोड़ने से लग्न की घड़ीपल बन जाती हैं सो यह घड़ी पल लग्नसारणी में जिस राशि के सामने और जितने कोष्टफ के नीचे मिलेंगे वह स्पष्ट लग्न राशि अंशादि होगा

उदाहरण :—२०१६ आषाढ़ प्र० ८ को इष्ट घटियादि १०।१५ पर क्या लग्न होगा। इस दिन जंत्री में स्पष्ट राशि १।७।१।९ लग्न सारणी २ राशि के सामने और ७ अंश के नीचे घटयादि १२।४१ में इष्टादि १०।१५ जोड़ दिया तो २२।५६ घटयादि हुई, लग्न सारणी में इस से स्पष्ट कोण देखा तो ४ राशि २० अंश के नीचे घटयादि २२।५५ और इष्ट युक्त घटयादि २२।५६ अन्तर १ पल को अमुककोष्ट और अगले कोष्ट के अन्तर १२ पल हैं, मालूम किया गया कि १२ पल अन्तर है ६० कला में तो १ पल का अन्तर होता है तो ६०×१×१२ तो लब्ध ५ कला हुआ सो उस समय स्पष्ट लग्न ४ राशि ०० अंश ५ कला अर्थात लग्न सिंह हुआ।

## पलभा सारणी

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४५ | ४ | ५२ | ३९ | ३९ | ५२ | ० | ७ | ५ | ५५ | ३७ | ५२ | ९ | ० | २५ | ५२ | ४ | ० | ३७ | ५ | ५५ | ३७ | ५ | ५२ | ३९ | ३९ | ५२ | ४ | ५५ | ३७ | ५२ |
| ५२ | ९ | ५५ | ५२ | ५२ | ४७ | ५ | ४ | ३९ | ३७ | ५२ | ४ | ५५ | ५२ | ५२ | ५ | ० | ५ | ५२ | ५५ | ३७ | ५२ | ५५ | ३७ | ५२ | ५२ | ५५ | ३७ | ५२ | ५२ | ५५ |
| ६ | ३९ | ५ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ९ | ९ | ९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ५७ | ५२ | ० | ५२ | ५२ | ३९ | ४ | ५५ | ३७ | ७ | ३९ | ५ | ० | ५२ | ५२ | ३९ | ५ | ५५ | ३७ | ५२ | ३९ | ५ | ५५ | ३७ | ५२ | ३९ | ५ | ५५ | ३७ | ५२ | ३९ |
| ३७ | ५ | ४७ | ३९ | ० | ३९ | ५२ | ७ | ० | ४ | ५५ | ३७ | ५२ | ० | ४७ | ५ | ५५ | ३७ | ५२ | ० | ५ | ५२ | ३९ | ५ | ५५ | ३७ | ५२ | ० | ७ | ५ | ५० |
| ५२ | ५ | ७ | ५० | ३९ | ५ | ५२ | ७ | ४ | ५ | ३९ | ३७ | ० | ५२ | ३९ | ५ | ३९ | ५२ | ७ | ४ | ५ | ३९ | ३७ | ५२ | ३९ | ५ | ३९ | ५२ | ७ | ४ | ५ |
| ० | ० | ० | ५ | ५२ | ५२ | ७ | ७ | ९ | ० | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५२ | ५२ | ३९ | ५ | ५ | ४७ | ७ | ७ | ९ | ० | ५२ | ५२ | ३९ | ५ | ५२ | ५२ | ३९ | ५ | ५२ | ५२ | ३९ | ५ | ५२ | ५२ | ३९ | ५ | ५२ | ५२ | ३९ | ५ | ५२ |

सारणी प्रवेश रीति—देशान्तर सारणी से इष्ट स्थान के अक्षांश लेकर इष्ट स्थान की पलभा बनाओ। उदाहरण:—किसी ने अक्षांश ३२।१० की पलभा बनानी है तो सारणी में ३२ की पलभा ७।२९।५३ हैं, ३३ की ७।४७।३१ दोनों का अन्तर

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

१७।३८ के शेषांक १० से गुणा करो तो १७६।२० हुए ६० से भाग दिया तो व्यगुलात्मक लब्धि २।५६।२० पलभा ७।२९।५३ में भक्त किया तो ७।३२।४९ पलभा हुई। इसी प्रकार प्रत्येक स्थान की पलभा आप निकाल सकते हैं।

## अथ सूर्यादिग्रहों का द्वादश भावों में गोचरफलम्

| ग्रहाः | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्यः | स्थाननाश | भय | श्रीः | मानभंग | दैन्य | विजयः | मार्गः | पीड़ा | सुकृनाश | सिद्धि | धनला. | द्रव्यनाश |
| चंद्रः | अन्नला | धननाश | सुखं | रोगः | कार्यनाशः | धनलाभ | स्त्रीला. | रोगः | धमलाभ | सौख्यं | धनला. | धननाश |
| भौमः | शत्रुभी | धननाश | धनलाभ | शत्रुभी | धननाश | धनलाभ | द्रव्यनाश | शत्रुभि | शत्रुपी. | शोकः | धनला. | धनना. |
| बुद्धः | बधन | धनलाभ | शत्रुभीः | पशुलाभ | सुख | स्थानलाभ | पीड़ा | धनलाभ | पीड़ा | सौख्यं | धनला. | धनना. |
| गुरुः | भय | धनलाभ | क्लेशः | धननाश | सुखं | शोकः | रजमा | पीड़ा | सौख्यं | दैन्यं | धनला. | पीड़ा |
| शुक्रः | शत्रुनाश | धनलाभ | सौख्यं | धनलाभ | पुत्रलाभ | शत्रुभयः | शोकः | धनलाभ | वस्त्रलाभ | दुःखं | धनला. | धनला. |
| शनिः | भय | धननाश | ऐश्वर्य | शत्रुभीः | पुत्रनाश | धनलाभ | दोषः | पीड़ा | धर्मनाश | दीर्मन. | धनला. | धनला. |
| राहुः | हानिः | धननाश | धनलाभ | वैर | शोकः | श्रीः | कलहः | मृत्यु | दुःखं | वैरं | सुखं | शोकः |
| केतुः | रोगः | वैरं | सुखं | भयं | सुखं | धनलाभ | कलहः | रोगः | पापं | शाकः | कीर्त्तिः | शत्रुभीः |

## अथ वर्ष कुण्डली से द्वादश भाव ग्रहफलम्

| ग्रहाः | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्यः | चिन्ता | नृपभी | धनलाभ. | हानिः | कष्टम् | शत्रुना | पीड़ा | कष्टम् | धर्मनाश | सुखं | धनला. | पीड़ा |
| चन्द्रः | पीड़ा | धनलाभ | हर्षः | शत्रना. | सुखम् | पीड़ा | कष्टम् | दुःखम् | भाग्योद | विजयः | धनला. | व्ययः |
| भौमः | व्रणाः | धननाशः | जयः | व्यसनं | दुर्मतिः | शत्रुना. | स्त्रीकष्ट | पीड़ा | पुण्योद | राज्यला. | धनला. | विरोध |
| बुध | सौख्या | धनलाभ | सुखम् | द्रव्यला. | पुत्रला. | कलह | धनलाभ | व्यग्रता | सुखम् | मानला. | सुखला. | रोगः |
| गुरुः | सुखम् | धनलाभ | जयः | वाह.ला. | पुत्र प्रा. | कष्टम् | सुखम | रोगः | धर्मलाभ | राज्यला. | धनला. | शोकः |
| शुक्रः | मानप्र. | धनप्राप्ति | कीर्तिला | सुखला. | धनलाभ | शत्रुभी | स्त्रीसुख | कष्टम् | धर्मोद | मानला. | क्षेमला | व्ययः |
| शनि | वातार्त्ति | पीड़ा | धनलाभ | दुःखम् | पुत्र पी | जयः | स्त्रीकष्ट | रोगः | भाग्यहा | धनहा. | धनला. | चिंता |
| राहुः | शिरोर्ति | राजभी | सुखम् | दुःखम् | बुद्धिनाश | शत्रुनाः | रोगभीः | कष्टम् | धर्म हा. | विजयः | सुलाभ | व्याधि |
| केतुः | चिन्ता | क्लेशः | आरोग्य | राजभीः | दुर्बुद्धि | सुखम् | क्लेशः | पीड़ा | भाग्यना | धनला. | लाभ. | शोक |
| मुन्था | सुखम् | यज्ञोऽर्थ | पुष्टिः | दुःखम् | सुखाप्नि | कष्टम् | व्यसनं | दुःखम् | भाग्योद | राज्य प्रा | लाभः | कष्टम् |

## अथ पुरुष जन्म कुण्डली में १२ भावों मे स्थित ग्रहों का फल

| ग्रहाः | तनुः १ | धनं २ | भ्राता ३ | सुखं ४ | पुत्रः ५ | शत्रुः ६ | स्त्री ७ | मृत्यु ८ः | धर्म ९ | कर्म १० | लाभ ११ | व्यय १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्यः | शूरः | धनी | सुखी | दुखी | अपुत्रः | वली | स्त्रीजित | अल्पायु | सुखी | शूरः | धनी | पतीत |
| चन्द्र | जड़ः | कुटम्बी | क्रूरः | सुशीलः | पुत्रवान | अल्पायु | ईर्ष्यालुः | रोगी | सुभगः | धीरः | ख्यात | हीनांग |
| भौमः | व्रणीः | कुटिल | विक्रमी | पीड़ित | अपुत्र | शत्रुजित | स्त्रीपीड़ा | रोगी | पापत्मा | सुखीं | धनाढ्य | पतीत |
| बुध | विद्वान | धनी | दुर्जनः | सुखी | मन्त्री | दुशीलः | धर्मयज्ञ | गुणी | पुत्रवान | विक्रमी | धनी | जड़ः |
| गुरु | चिरायु | धनी | कृपणः | सुखी | प्रतापी | कामी | प्रसिद्ध | अल्पायु | पुत्रवान | सकति | धनी | दरिद्र |
| शुक्रः | सुखी | धनी | पापी | सुखी | धीमान | रोगी | क्रोधी | नीग | प्रतापी | सुमति | धनीढ्य | खलः |
| शनिः | रोगी | चका | विक्रमी | दुखी | दरिद्र | सुखी | दुःखी | नैंत्ररो | सुखी | पराक्रमी | धनी | दुखी |
| राहुः | रोगी | विरोधी | विक्रमी | दुखी | दर्भग | बली | अशचि | गताय | दैन्य | मानी | ख्यात | पतितः |
| केतु | अल्पायु | धर्महा | नूरः | दुखी | अपुत्रः | बली | स्त्री | कलेशी | पापी | अधर्मों | धनी | दुर्जन |

## अथ स्त्री जन्म कुण्डली में १२ भावों में स्थित ग्रहफल

| ग्रहाः | तनुः | धन २ | भ्राता ३ | सुखं ४ | पुत्रः ५ | शत्रु ६ | पति ७ | मृत्युः ८ | धर्म ९ | कर्म १० | लाभ ११ | व्ययः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्यः | सक्रोधाः | निर्धन | सुपुत्रा | सपीडा | अपुत्रा | धनाढ्य | दुःखार्ता | विधवा | धर्भिक्ष | सति | सधना | सक्रोधा |
| चन्द्र | अल्पायुः | सधना | सुखनी | दुर्भगा | सुपुत्रा | रोगणी | पति प्रि० | दुखार्ता | सुखिनी | धन्या | गुणिना | हीनागी |
| भौमः | दुःखार्ता | वन्ध्या | अभ्रातु | दुखिनि | सुबुद्धि | नीरोग | विधवा | कुलटा | दुःखिनी | कुपुत्रा | सधना | दुष्टा |
| बुधः | सुभगः | धनाढ्य | सुखिनी | सुमूहा | आध्वी | सक्रोधा | सती | कृतघ्ना | सुधर्मा | सुधर्मा | सुलाभा | कृशांगी |
| गुरु | सती | सधना | भ्रातृम० | सुखिनी | सुसुता | साषादा | सुकुर्ति | रोगणी | पुत्राढ्य | सुभागा | सुरूपा | सद्व्यय |
| शुक्रः | सुखिनी | सहर्षा | धनाढ्य | सुकीर्ति | अपुत्रा | दरीद्र | पति प्रि० | प्रमत्ता | सुपुण्या | सुकर्मा | सुपुत्रां | सद्व्यय |
| शनिः | वन्ध्या | निर्धना | दक्षा | हृदरोगा | अपुत्रा | सुगणा | विधवा | देखाना | वन्धया | पापी | सुलाभा | मूढ़ा |
| राहुः | अपुत्रा | दरिद्रा | धनाढ्य | रोगार्ता | अपुत्रा | धनाढ्य | दुःखार्ता | क्लेशिनी | वन्ध्या | कुर्कमी | सुभगा | खला |
| केतुः | दुःखाती | शोकार्ता | रोगाढ्या | मातृहीना | विपुत्रा | धनाढ्य | विधवा | सदुःखा | शौकार्त्त | पापी | सुभगा | सरोगा |

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# देहाती पुस्तक भण्डार वर्ष फल बनाने की रीति चावड़ी बाजार दिल्ली

| वर्ष | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०८ | ०९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | ०१ | ०२ | ०३ | ०५ | ०६ | ०७ | ०१ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०६ | ०७ | ०१ | ०२ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०७ | ०१ | ०२ |
| घड़ी | १५ | ३१ | ४६ | ०२ | १७ | ३३ | ४८ | ०४ | १९ | ३५ | ५० | ०६ | २१ | ३७ | ५२ | ०८ | २३ | ३९ | ५४ | १० | २६ | ४१ | ५७ | १२ | २८ | ४३ | ५९ | १४ | ३० | ४५ |
| पल | ३१ | ०३ | ३४ | ०६ | ३७ | ०९ | ४० | १२ | ४३ | १५ | ४६ | १८ | ४९ | २१ | ५२ | २४ | ५५ | २७ | ५८ | ३० | ०१ | ३३ | ०४ | ३६ | ०७ | ३९ | १० | ४२ | १३ | ४५ |
| विपल | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ६० | ०० |

| वर्ष | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०७ | ०१ | ०२ | ०३ | ०५ | ०६ | ०७ | ०१ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०६ | ०७ | ०१ | ०३ | ०४ | ०५ |
| घड़ी | ०१ | १६ | ३२ | ४७ | ०३ | १८ | ३४ | ४९ | ०५ | २१ | ३६ | ५२ | ०७ | २३ | ३८ | ५४ | ०९ | २५ | ४० | ५६ | ११ | २७ | ४२ | ५८ | १३ | २९ | ४४ | ०० | १५ | ३१ |
| पल | १६ | ४८ | १९ | ५१ | २२ | ५४ | २५ | ५७ | २८ | ०० | ३१ | ०३ | ३४ | ०६ | ३७ | ०९ | ४० | १२ | ४३ | १५ | ४६ | १८ | ४९ | २१ | ५२ | २४ | ५५ | २७ | ५८ | ३० |
| विपल | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० |

| वर्ष | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | ०६ | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०६ | ०७ | ०१ | ०२ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०७ | ०१ | ०२ | ०३ | ०५ | ०६ | ०७ | ०१ | ०३ | ०४ | ०५ | ०७ | ०१ |
| घड़ी | ४७ | ०२ | १८ | ३३ | ४९ | ०४ | २० | ३५ | ५१ | ०६ | २२ | ३७ | ५३ | ०८ | २४ | ३९ | ५५ | १० | २६ | ४२ | ५७ | १३ | २८ | ४४ | ५९ | १५ | ३० | ४६ | ०१ | १७ |
| पल | ०१ | ३३ | ०४ | ३६ | ०७ | ३९ | १० | ४२ | १३ | ४५ | १६ | ४८ | १९ | ५१ | २२ | ५४ | २५ | ५७ | २८ | ०० | ३१ | ०३ | ३४ | ०६ | ३९ | ०९ | ४० | १२ | ४३ | १५ |
| विपल | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०२ | ३० | ०० | ३० | ०० | ६० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० |

## वर्षफल बनाने की रीति

जिस वर्ष का वर्षफल बनाना हो उस वर्ष से जन्म सम्वत् को कम करे जो शेष रहे उन अंकोंके उपर सारणी से देखकर उसमें जन्म के वार इष्ट घड़ी पल में जोड़देने से उस वर्ष का वार इष्ट घड़ी पल बन जाएगा फिर लग्नसारणी से लग्न देख लेवें।

मुन्था—गत वर्षों में जन्म लग्न को युक्त करके १२ से भाग देवें जो शेष रहे उस राशी में मुन्था लगा देवें।

फलम :—मुन्था यदि लग्न से ५,१०,११वें स्थान में हो तो वह वर्ष लाभदायक हो यदि २,३,५ वें स्थान में हो तो मध्यम और यदि ४।६।७।८ या १२ वें स्थान में पड़े तो वह वर्ष अति अशुभ जानना चाहिए, इस के अतिरिक्त यदि मुन्था शुभ ग्रह के साथ हो या शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो शुभ और यदि इससे विपरित हो तो अशुभ फल देता है।

अर्थ त्रिप्ताकि चक्रम:—तीन सीधी और तीन तिरछी रेखाएँ खेंचकर तीनों को परस्पर मिला देवें और फिर मध्य रेखा के ऊपर वाले कोने पर वर्ष लग्न लगाकर शेष राशिएं नम्बर वार दर्ज कर देवें ग्रह स्थापन करने की विधि यह है कि गत वर्षों को नौ का भाग दे शेष जो बचे जन्म राशि से उतने घर में चन्द्रमा लगा देवें शेष ग्रहों का ४ पर भाग देवे जो शेश रहे जन्म ग्रहों से उतनी संख्या पर शेष ग्रहों को लगा देवें परन्तु राहु वा केतु का संस्कार इसके विपरित करे। यदि जन्म लग्न वर्ष लग्न से आठवे स्थान में आवे तो वर्ष कष्टदायक हो। जिस स्थान में जो कोई ग्रह होगा उसी के अनुसार अपना प्रभाव डालेगा।

फलम:—यदि शुभग्रह का राहु से वेध होतो उस वर्ष शरीर में रोग, सूर्य से हो तो कफवायु रोग, मंगल से हो तो रक्त विकार और शरीर में पीड़ा और यदि शनि से हो तो वह वर्ष अतिकष्टकारी और धनादि का खर्च अधिक होता है।

दशा:—जन्म नक्षत्र को अश्विनी नक्षत्र से गिन कर लब्ध को गत वर्षों में जमा करके २ हीन कर देवें जो शेष बचे उसको ९ पर भाग देवे यदि शेष १ बचे तो सूर्य दो रहें तो चन्द्रमा ३ रहें तो मंगल ४ रहे तो राहु ५ रहें तो बृहस्पति ६ रहें तो शनि ७ रहें तो बुध ८ रहे हो तो केतु और यदि शून्य (९) शेष बचे तो शुक्र की दशा शुरू में होगी।

अथ दशा दिनानी :—सूर्य १८ दिन, चन्द्रमा ३० दिन मंगल २१ दिन राहु ५४ दिन बृहस्पति ४८ दिन शनि ५७ दिन बुध ५१ दिन केतु २१ दिन और शुक्र की दशा के ६० दिन होते हैं। इस प्रकार से दशा लगा लिया करें।

फलम :—सूर्य मंगल राहु केतु ३,६,१०,११ वें स्थान में जन्म या वर्ष लग्न में पड़ें हों तो शुभ फल देते हैं और शुभ ग्रह चन्द्रमा बुध, गुरु शुक्र, ४५,७,९,१०११ वें स्थान में शुभ फल देते हैं ८,१२ वें स्थान में सब ग्रह नेष्ट फल देते हैं।

## वर्ष कुन्डली में अरिष्ट योग

जन्म लग्न हो वर्ष लग्न हो वर्ष लग्न हो तो दो जन्मा वर्ष होता है जो शुभदायक नहीं है। यदि दो जन्मा लग्न में गुरु और चन्द्रमा शुभ स्थान में बैठे हों तो वह वर्ष अशुभ फलदायक नहीं होता यदि छटे गुरु और चन्द्रमा हों तो वह वर्ष अरिष्ट फलदायक होता है। यदि जन्म लग्न वर्ष लग्न एक हो और गुरु आठवें हों और चन्द्रमा छटे हो तो मृत्यु तूल्य कष्ट होता है

## सन्तान योग

वर्ष कुंडली में लग्नेश पांचवें या सातवें में पड़ा हो और पंचमेश वा सप्तमेश लग्न में पड़ा हो तो उस वर्ष गर्भयोग होता है। शुभ ग्रह पांचवे हों और पांचमेश देखता हो तो गर्भ होता है गुरु की राशि में चन्द्रमा हो मंगल शुभ राशि में हो या शुक्र की राशि में बैठा हो तो गर्भ योग होता है।

## तरक्की व तबदीली के योग

वर्ष लग्न में लग्नेश वा तृतीयेश, चतुथेश, नवमेश एक घर में हों या एक दूसरे को मित्र दृष्टि से देखते हो तो तबदीली होगी।

द्विजन्मा वर्ष :—यदि जन्म लग्न और वर्ष एक ही हों तो वर्ष एक ही हों तो वर्ष अशुभ वा कष्ट दायक होता है।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## मूकगुप्त प्रश्नावली अथवा चमत्कार ज्योतिष

लेखक-रतीराम ज्योतिषी

पास, फेल, विवाह, शादी, भाग्य उदय कब होगा, माता-पिता सुख कैसा, कितने विवाह होंगे नौकरी कब मिलेगी, मुकदमे में हार होगी या जीत, मकान बनेगा या नहीं, चोरी गई वस्तु मिलेगी या नहीं, खोया हुआ आदमी मिलेगा या नहीं दंगल की हार-जीत इत्यादि ३१ प्रश्न ऐसे हैं जिनकी रोजाना जरूरत रहती है। मूल्य 5-00

## विवाह विषयक जानने योग्य उपयोगी बातें

एक ही तागे में पति तथा पत्नी का मन गुँथा हुआ नहीं होने से दाम्पत्य जीवन अशान्तिपूर्ण अथवा नीरस हो जाता है। पुरुष-स्त्री के जन्म-मास के अनुसार विवाह होने पर ही दोनों का जीवन सुखपूर्वक व्यतीत हो सकता है। भिन्न-भिन्न ग्रहों के प्रभाव से भिन्न-भिन्न मास में मनुष्य जन्म ग्रहण करते हैं। इसलिये परस्पर अनुकूल ग्रहों का होना जरूरी है। किस मास में उत्पन्न हुये मनुष्य से किस मास में जन्म लेनेवाली कन्या का विवाह होना चाहिये, यह नीचे लिख रहे हैं।

(१) वैशाख मास में उत्पन्न हुये बालक का विवाह भादों, कार्तिक या पौष मास में जन्म लेनेवाली कन्या के साथ शुभ होगा। प्रेम रहेगा एवं जीवन शान्तिपूर्वक व्यतीत होगा।

(२) ज्येष्ठ मास में उत्पन्न हुये पुरुष के साथ आश्विन, मार्गशीर्ष, माघवाली कन्या के साथ शुभ होगा।

(३) आषाढ़ मास के पुरुष के साथ कार्तिक, पौष, फाल्गुन वाली जन्मी कन्या के साथ ब्याह करना शुभ होगा।

(४) श्रावण मास के पुरुष के साथ मार्गशीर्ष, माघ, चैत्र के मास में जन्मी कन्या के साथ विवाह शुभ फलदायक होगा।

(५) भाद्रपद मास के पुरुष के साथ पौष, फाल्गुन, वैशाख में जन्म लेनेवाली कन्या के साथ विवाह करने से जीवन सुख-शान्ति से गुजरता है।

(६) आश्विन के जन्मे पुरुष के साथ माघ, चैत्र, ज्येष्ठ की जन्मी कन्या के साथ ब्याह करना शुभ होगा।

(७) कार्तिक के जन्मे पुरुष का वैशाख, आषाढ़, फाल्गुन की जन्मी कन्या के साथ विवाह शुभ होगा।

(८) मार्गशीर्ष के जन्मे पुरुष का ज्येष्ठ, श्रावण, चैत्र की जन्मी कन्या के साथ विवाह शुभ फलदायक होगा।

(९) पौष मास के जन्मे पुरुष का ब्याह वैशाख, आषाढ़, तथा भाद्रपद की कन्या के साथ जीवन सुखदायी होता है।

(१०) माघ के जन्मे पुरुष का ब्याह ज्येष्ठ, श्रावण तथा आश्विन की जन्मी कन्या के साथ शुभ होगा।

(११) फाल्गुन के जन्मे पुरुष का ब्याह आषाढ़, भाद्रपद, कार्तिक की जन्मी हुई कन्या के साथ ब्याह करने से जीवन शान्तिपूर्वक व्यतीत होगा।

(१२) चैत्र मास के जन्मे पुरुष का ब्याह श्रावण, आश्विन, अगहन मास की जन्मी कन्या के साथ विवाह करने से दोनों प्राणियों का जीवन प्रेमपूर्वक व्यतीत होगा। इसके विपरीत ब्याह होने से कलह-रंज से जीवन व्यतीत होगा।

**ओ रुपिये के लिये देश और जाति से द्रोह करने वाले इन्सान! ओ रुपिये के लिये लड़के, और लड़कियों को बेचनेवाले इन्सान! याद रख ले रुपिये से —**

| | |
|---|---|
| लड़का मिल सकता है | पुत्र नहीं मिल सकता |
| औरत मिल सकती है | धर्मपत्नी नहीं मिल सकती |
| नौकर मिल सकता है | सेवक नहीं मिल सकता |
| रोटियाँ मिल सकती हैं | भूख नहीं मिट सकती |
| पलंग मिल सकता है | नींद नहीं मिल सकती |
| ऐनक मिल सकती है | आँखे नहीं मिल सकतीं |
| मास्टर मिल सकता है | विद्या नहीं मिल सकती |
| पुस्तकें मिल सकती हैं | बुद्धि नहीं मिल सकती है |
| गीता मिल सकती है | ज्ञान नहीं मिल सकता |
| मूर्तियाँ मिल सकती हैं | भगवान नहीं मिल सकते |
| आराम मिल सकता है | राम नहीं मिल सकता |
| सुख मिल सकता है | शान्ति नहीं मिल सकती |
| साधन मिल सकते हैं | साधना नहीं मिल सकती |
| शान मिल सकती है | सम्मान नहीं मिल सकता |
| बादाम मिल सकते हैं | ताकत नहीं मिल सकती है |
| पिस्तौल मिल सकता है | हिम्मत नहीं मिल सकती है |
| डॉक्टर मिल सकता है | स्वास्थ्य नहीं मिल सकता है |
| औषधि मिल सकती है | आयु नहीं मिल सकती है |
| विष मिल सकता है | अमृत नहीं मिल सकता |
| साथी मिल सकता है | मित्र नहीं मिल सकता |
| शोहरत मिल सकती है | इज्जत नहीं मिल सकती |
| कमल मिल सकती है | लेख नहीं मिल सकता |
| हारमोनियम मिल सकता | स्वर नहीं मिल सकता है |
| शरीर मिल सकता है | आत्मा नहीं मिल सकती |
| मानव मिल सकता है | मानवता नहीं मिल सकती है |

## उत्तम शिक्षायें

(१) किसी को उसके मुख पर ही बेवकूफ बनाने की चेष्टा न करो।

(२) जोर से हँसने की आदत से बचते रहो।

(३) जल्दी-जल्दी बोलने की आदत न डालो।

(४) अपने स्वार्थ के लिये औरों को मजबूर न करो।

(५) उधार माँगने की आदत से बचते रहो।

(६) बोलचाल में हे हे खे खे आदि अशुद्ध प्रयोग न करो।

(७) अपने कार्य को उत्साह पूर्वक करो।

(८) राजनीति में नर्म दल ही का अनुसरण करो।

(९) अपनी कठिनाइयों को अपने ही तक रक्खो।

(१०) सदैव चापलूसी से दूर रहो।

(११) प्रसन्नतापूर्वक अपना काम छोड़कर दूसरोंको सहयोगदो

(१२) पीठ पीछे किसी की हँसी उड़ाने की चेष्टा न करो।

(१३) ऐसी दिल्लगी से सदा सावधान रहो जो सुनने वालों को अहितकर हो।

(१४) नेकी करने वाला सदैव किसी खराबी में नहीं फँसता।

(१५) यह भारी मुसीबत है (कौन) बाल बच्चों की अधिकता

(१६) आप को ऐसे बड़े दरबार में जाना है जहाँ धनी, निर्धन बराबर हैं। अतः कभी घमंड न करो।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## वर-कन्या गुणमेलापक कोष्टक (आमूल परिशोधित)

| वर राशि, नक्षत्र / कन्या राशि, नक्षत्र | मेष ♈ | | | वृष ♉ | | | मिथुन ♊ | | | कर्क ♋ | | | सिंह ♌ | | | कन्या ♍ | | | तुला ♎ | | | वृश्चिक ♏ | | | धनु ♐ | | | मकर ♑ | | | कुम्भ ♒ | | | मीन ♓ | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | अश्वि. | भरणी | कृ. | कृ. | रोहिणी | मृ. | मृ. | आर्द्रा | पु. | पु. | पुष्य | आश्ले. | मघा | पू.फा. | उ. | उ. | हस्त | चि. | चि. | स्वाती | वि. | वि. | अनु. | ज्ये. | मूला | पू. | पू. | उ. | उ. | श्र. | श्र. | ध. | ध. | शत. | पू. | पू. | रेवती |
| अ. | २८ | ३३ | २७॥ | १८॥ | २१॥ | २२॥ | २५ | १७ | १८ | २२॥ | ३०॥ | २७ | २७ | ३१ | २२॥ | १२ | ९ | १३ | २२॥ | २५॥ | २१॥ | २४॥ | ३२॥ | २१ | २० | ३२ | ३३ | ३१॥ | २६॥ | २७॥ | २६ | १९ | १९ | १५ | १५ | २०॥ | ३१॥ | ३३ |
| म. | ३४ | २८ | २८ | १९ | २२॥ | १४॥ | १७ | २६ | २६ | ३०॥ | २२॥ | २४॥ | २६ | २४ | ३२ | २०॥ | २१ | ४ | १३॥ | २९॥ | २०॥ | २३॥ | २३॥ | २५॥ | २७ | २५ | २६ | ३४ | ८ | २७ | २६ | ९॥ | ९ | २० | २३ | २८॥ | २३॥ | ३३॥ |
| कृ. १ | २६॥ | २८ | २८ | १८ | १० | १६॥ | १९ | २० | २० | २४॥ | २६॥ | २२॥ | २२॥ | २६ | २७ | १६॥ | १६॥ | १८ | २७॥ | १५॥ | १९॥ | २२॥ | २५॥ | ३१॥ | ३१॥ | २४ | २५ | २० | १४ | १२ | १११॥ | २४ | २४ | २६ | १८ | २३॥ | २६॥ | ३७॥ |
| कृ. ३ | १७॥ | १९ | १९ | २८ | १९ | २५॥ | २३॥ | २४॥ | २४॥ | २१ | २३ | १९ | १७॥ | २१ | २२ | २८ | २८ | ३०॥ | २९॥ | १७॥ | २१॥ | २०॥ | २३॥ | २०॥ | २० | १३॥ | १४॥ | ८॥ | २०॥ | १८ | १७ | २९॥ | २८॥ | ३०॥ | २२॥ | १९ | २१ | १६ |
| रो. | २२॥ | २२॥ | १० | १८ | २८ | ३६ | ३४ | २९॥ | ३९॥ | २६ | २६ | १२ | १०॥ | २४॥ | २६ | ३२ | ३२ | २७ | २६ | २१॥ | १६॥ | १५॥ | २०॥ | २३॥ | १३ | २० | २१ | १२॥ | २४ | २६ | २५ | २७॥ | २६ | २२॥ | ३०॥ | २७ | २५ | १७ |
| मृ. २ | २२॥ | १३॥ | १७॥ | २५॥ | ३५ | २८ | २४ | ३०॥ | २९॥ | २६ | १८ | २१ | १९॥ | १५॥ | २३॥ | २९॥ | ३२ | २० | २९ | ३१ | २५॥ | २४॥ | २१॥ | २४॥ | १४ | ११ | १२ | १८ | २९ | ३४ | ३३ | २७ | १९ | २५ | २९॥ | २६ | १९ | २५ |
| मृ. २ | २५ | १६ | २० | २४॥ | ३४ | २५ | २८ | ३२ | ३१॥ | २० | १२ | १५ | २३॥ | १९॥ | २७॥ | ३०॥ | ३३ | २१ | २१ | ३३ | २७॥ | १५ | १२ | १५ | २१ | १९ | १८ | २३ | २४॥ | ३२ | ३१॥ | १८॥ | १३ | २० | २३॥ | २५॥ | १॥ | २१॥ |
| आ. | १९ | २७ | २१ | २५॥ | २९॥ | ३१ | ३२ | २८ | २५ | १३॥ | २१ | १४ | २२॥ | २८॥ | २१॥ | २४॥ | २४॥ | २७ | २७ | ३४ | २७ | १४॥ | १८ | ४ | १६ | २८ | २७ | २७ | ३०॥ | ३०॥ | ३० | २३॥ | १९ | १२ | १७ | १९ | २॥ | २१॥ |
| पु. ३ | १९ | २६ | २२ | २६॥ | २८॥ | २९॥ | ३०॥ | २३ | २८ | १५॥ | २२॥ | २१ | २२॥ | २६॥ | २०॥ | २३॥ | २४॥ | २६॥ | २६॥ | ३४ | २८ | १५॥ | २१॥ | ७ | १४ | २७ | २६ | २६ | २९॥ | ३०॥ | ३० | २४ | १८॥ | १३ | १६ | १८ | २० | २१॥ |
| पु. १ | २१॥ | २८॥ | २४॥ | २१ | २३ | २४ | १८ | १०॥ | १४॥ | २८ | ३४ | २९॥ | २३॥ | २७॥ | २१॥ | १७ | १८ | २० | १९॥ | २७ | २१ | २० | २६ | ११॥ | १५ | २८ | २८॥ | २८॥ | २५ | २६ | २७ | २० | १२॥ | ७ | १० | १६ | २४ | २१॥ |
| पुष्य | २९॥ | २०॥ | २६॥ | २३ | २३ | १६ | १० | १८ | २०॥ | ३४ | २८ | २९ | २५॥ | २१॥ | ३०॥ | २६ | २७ | १२ | १११॥ | २६॥ | २१ | २० | १८ | २१ | २४ | १८ | १८॥ | २८॥ | २५ | २३ | २४ | १२ | ४॥ | १३॥ | १८ | २४ | १८ | २१३ |
| आ. | २५ | २३॥ | २१॥ | १८ | १० | १८ | १२ | १२ | १६ | २८॥ | २८ | २८ | २२ | २२॥ | २४॥ | २० | २० | २५ | २४॥ | ११॥ | १६॥ | १५॥ | २० | २६ | २०॥ | २३ | २३॥ | १५॥ | १२ | १२ | १३ | २६ | १७॥ | १८॥ | १११॥ | १७॥ | २८ | ११२ |
| म. | २६ | २६ | २२॥ | १६॥ | ८॥ | १६॥ | २०॥ | २०॥ | १९॥ | २२॥ | २५॥ | २२ | २८ | ३० | २६॥ | २२॥ | २२॥ | २८॥ | २४॥ | १०॥ | १६॥ | २२॥ | २४॥ | ३२ | ३१ | २६ | २६ | १५॥ | ३॥ | ४॥ | ५॥ | १९॥ | २४॥ | २४॥ | १८॥ | २५॥ | २५॥ | १९ |
| पू. फा. | ३२ | २४ | २६ | २० | २२॥ | १४॥ | १८॥ | २६॥ | २५॥ | २८॥ | २३॥ | २२॥ | ३० | २८ | ३४ | ३० | २८॥ | १४॥ | १०॥ | २४॥ | १८॥ | २४॥ | २२॥ | २४॥ | २५ | २४ | २४ | ३१ | १९ | १८॥ | १९॥ | ५॥ | १०॥ | १८॥ | २४॥ | ३१॥ | २३॥ | ३१॥ |
| उ. फा. १ | २३॥ | ३२ | २७ | २१ | २४ | २२॥ | २६॥ | २०॥ | २०॥ | २३॥ | ३२॥ | २५॥ | २६॥ | ३४ | २८ | २२ | २३ | २०॥ | १६॥ | २५॥ | १६॥ | २२॥ | ३०॥ | १६॥ | १६॥ | ३२ | ३२ | ३२ | २० | २० | २१ | १२॥ | १७॥ | ११॥ | १५॥ | २२॥ | ३३॥ | ३१॥ |
| उ. फा. २ | १४ | २१॥ | १७॥ | २८ | ३१ | २०॥ | २९॥ | २३॥ | २३॥ | १९ | २८ | २१ | २३॥ | ३१ | २३ | २८ | २७ | २४॥ | २३॥ | ३२॥ | २३॥ | १८ | २६ | १२ | १४ | २०॥ | २८॥ | २८॥ | २४॥ | २६ | २५॥ | १७ | २३॥ | १७॥ | २१॥ | १७॥ | २८॥ | २६॥ |
| ह. | १० | २१ | १८॥ | २९ | ३० | ३१ | ३१ | २२॥ | २३॥ | १९ | २८ | २२ | २४॥ | २८॥ | २३ | २६ | २८ | २८ | २७ | ३३॥ | २४॥ | २० | २६ | १३ | १५ | २७ | २६ | २७॥ | २५ | २६ | २५॥ | १९॥ | २६ | १५॥ | २०॥ | १६॥ | २६॥ | ४७॥ |
| चि. २ | १३ | ५ | १९ | २९॥ | २७ | १९ | १९ | २५ | २३॥ | १९ | ११ | २५ | २९॥ | १५॥ | २०॥ | २३॥ | २६ | २८ | २५ | २६ | ३३॥ | २८ | ११ | २५ | २७ | १३ | १२ | २१ | १८ | १९ | १८॥ | १६॥ | २३ | ३१ | २३॥ | १९॥ | १९॥ | १९॥ |
| चि. २ | २१॥ | १३॥ | २७॥ | २९॥ | २७ | १९ | २० | २६ | २४॥ | १८॥ | १०॥ | २४॥ | २५॥ | १११॥ | १६॥ | २३॥ | २६ | २६ | २८ | २७ | ३४॥ | २४॥ | ६॥ | २०॥ | २७ | १३ | १२ | २१ | २५॥ | २६ | २५॥ | २३॥ | २५ | ३३ | २५ | १३ | ४॥ | १३॥ |
| स्वा. | २७॥ | २९॥ | १७॥ | १९॥ | २० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४॥ | २८ | २७॥ | १३॥ | १२॥ | २४॥ | २५॥ | ३२॥ | ३४॥ | २७ | २७ | २८ | २० | १० | २२॥ | १७॥ | २३ | २७ | २६ | १८ | २२॥ | २३॥ | २३ | २६॥ | २८ | २७ | ३२ | २० | २३॥ | १६॥ |
| वि. ३ | २२॥ | २२॥ | २०॥ | २२॥ | १७॥ | २५॥ | २६॥ | २६ | २६॥ | २० | २० | १६॥ | १७॥ | १९॥ | १६॥ | २३॥ | २४॥ | ३४॥ | ३४ | १८ | २८ | १७ | १७ | २१॥ | २७ | २१ | २० | १३ | १७॥ | १६॥ | १६ | ३० | ३१॥ | ३३ | २७॥ | १५॥ | १४ | ४॥ |
| वि. १ | २३॥ | २३॥ | २०॥ | १८॥ | १४॥ | २२॥ | १२ | १२॥ | १२॥ | १८ | १८ | १४ | २१॥ | २३॥ | २०॥ | १६ | १७ | २७ | २३॥ | ७ | १६ | २८ | २७ | ३१॥ | २८॥ | २२॥ | २३॥ | १६॥ | १२ | ११ | ११ | २५ | २४ | २५॥ | १९॥ | २६ | २५ | १६॥ |
| अ. | ३१॥ | २१॥ | २५॥ | २३॥ | २७॥ | २०॥ | १० | १५ | १९॥ | २५ | १७ | २० | २४॥ | २०॥ | २८॥ | २४ | २५ | १० | ६॥ | २०॥ | १६ | २७ | २८ | ३१ | २२॥ | २०॥ | २१॥ | २९॥ | २५ | २६ | २६ | १२ | ११ | २१ | २४॥ | ३१ | १४ | ३३ |
| ज्ये. | १९ | २४॥ | ३०॥ | २८॥ | २२॥ | २२॥ | १२ | २ | ४ | ९॥ | १९ | २५ | ३१ | २३॥ | १५॥ | ११ | ११ | २३ | १९॥ | १४॥ | १९॥ | ३०॥ | ३० | २८ | २१ | २३॥ | २४॥ | २४॥ | २० | २० | २० | २५ | २४ | १८ | १० | १६॥ | २७ | २७ |
| मू. | १९ | २७ | ३१॥ | २० | १३ | १३ | २० | १५ | ११ | १४ | २४ | २९॥ | ३० | २४ | १६॥ | १३ | १३ | २५ | २५ | २१ | २५ | २८॥ | २१॥ | २१ | २८ | २८ | २७ | २५॥ | १६ | १६॥ | १६ | २१ | २८॥ | २१॥ | १४॥ | १६ | २५ | २६॥ |
| पू. षा. १ | ३३ | २५ | २५ | १३॥ | २० | १२ | १९ | २७ | २७ | ३० | १९ | २४ | २६ | २४ | ३२ | २८॥ | २७ | ११ | ११ | २७ | १९ | २२॥ | २२॥ | २४॥ | २८ | २८ | २७ | ३३ | २४ | २७॥ | २७ | ७ | १४॥ | २३॥ | २८॥ | ३० | २३ | ३१ |
| पू. षा. २ | ३४ | २६ | २६ | १४॥ | २१ | १३ | १८ | २६ | २६ | ३०॥ | १९॥ | २४॥ | २६ | २४ | ३२ | २७॥ | २६ | १० | १० | २६ | १८ | २३॥ | २३॥ | २५॥ | २७ | २७ | २८ | ३४ | २५ | २८॥ | २७॥ | ७॥ | १३॥ | २२॥ | २७॥ | ३०॥ | २३॥ | ३१॥ |
| उ. षा. १ | ३२॥ | ३४ | २० | ८॥ | १२॥ | १९ | २४ | २६ | २६ | ३०॥ | ३०॥ | १६॥ | १४॥ | ३० | ३२ | २७॥ | २७॥ | २० | २० | १८ | १२ | १७॥ | ३१॥ | २५॥ | २५॥ | ३३ | ३४ | २८ | १८ | १७ | १५ | १६॥ | २२॥ | २२॥ | २८॥ | ३१॥ | ३१॥ | २३॥ |
| उ. षा. २ | २८ | २९॥ | १५॥ | २० | २४ | ३०॥ | २७॥ | २९ | २९॥ | २७ | २७ | १३ | ३॥ | १९ | २० | २५ | २५ | १७॥ | २४॥ | २२॥ | १६॥ | १३ | २७ | २१ | १६॥ | २४ | २५ | १९ | २८ | २६ | २५ | २५॥ | २४ | २४॥ | ३०॥ | २९॥ | २५॥ | २१॥ |
| श्र. १ | २८ | २७ | १४॥ | १९ | २५ | ३४ | ३१ | २८ | २९॥ | २७ | २५ | १४ | ५॥ | १७॥ | १९ | २४ | २५ | १९ | २५ | २२॥ | १५॥ | १२ | २७ | २२ | १७॥ | २४॥ | २५॥ | १६ | २५ | २८ | २७ | २७ | २६ | २५॥ | २७॥ | २८॥ | २७॥ | २१॥ |
| श्र. २ | २७ | २६ | १३॥ | १८ | २४ | ३३ | ३०॥ | २८ | २९ | २८ | २६ | १६ | ६॥ | १८॥ | २० | २३॥ | २४॥ | १८॥ | २४॥ | २२ | १५ | १२ | २७ | २२ | १७ | २४ | २४॥ | १५ | २४ | २७ | २८ | २८ | २५॥ | २५ | २८ | २९॥ | २२॥ |
| ध. २ | २० | ११ | २६ | ३०॥ | २७ | १९ | १६॥ | २३॥ | २२ | २१ | १३ | २७ | १७॥ | ५॥ | १२॥ | १६ | १७॥ | १५॥ | २१॥ | २३॥ | २८ | २५ | ११ | २५ | २१ | ७ | ७॥ | १६॥ | २५॥ | २५ | २६ | २८ | २३॥ | ३०॥ | २६ | २६॥ | १५॥ | २२॥ |
| ध. २ | २० | ११ | २६ | ३०॥ | २७ | १९ | १३ | २० | १८॥ | १३॥ | ५॥ | १९॥ | २५॥ | १११॥ | १७॥ | २३॥ | २५ | २३ | २४ | २६ | ३०॥ | २४ | १० | २४ | २८॥ | १४॥ | १३॥ | २३॥ | २५॥ | २५ | २४ | २४॥ | २८ | ३३ | २८॥ | २२ | ८ | १५ |
| शततारा | १५ | २१ | २७ | ३१॥ | २४॥ | २६ | २० | १३ | १३ | ८ | १४॥ | २०॥ | २५॥ | १९॥ | १२॥ | १८॥ | १४॥ | ३१ | ३२ | २५ | ३२ | २५॥ | २१ | १९ | २२॥ | २४॥ | २३॥ | २३॥ | २५॥ | २५॥ | २५ | ३०॥ | ३२ | २८ | १९ | ९॥ | २१ | १७ |
| पू. भा. २ | १८ | २५ | २० | २४॥ | ३१॥ | ३१॥ | २५॥ | १८ | १८ | १३ | २१ | १३॥ | १०॥ | २५॥ | १५॥ | २१॥ | २१॥ | २३॥ | २४॥ | ३२ | २६ | १९॥ | २५॥ | १० | १४॥ | २८॥ | २७॥ | २९॥ | २१॥ | २९॥ | २९॥ | २७ | २८॥ | १८. | २८ | १७॥ | २३॥ | २१ |
| पू. भा. १ | २१॥ | २८॥ | २३॥ | १९ | २६ | २६ | २५॥ | १८ | १८ | १८ | २६ | १८॥ | २४॥ | ३०॥ | २०॥ | १५॥ | १५॥ | १७॥ | ११॥ | १९ | १३ | २५ | ३१ | १५॥ | १४ | २८ | २८॥ | ३०॥ | २८॥ | २८॥ | २९॥ | १३॥ | ६ | १७ | २१॥ | ३२ | २८ | ३४ |
| उ. भा. | ३१॥ | २२॥ | २५॥ | २१ | २५ | १७ | १६॥ | २५॥ | २७ | २७ | २३ | २१ | २४॥ | २२॥ | ३३॥ | २७॥ | २६॥ | ८॥ | ३॥ | २०॥ | १२ | २४ | २५ | २७ | २४ | २२ | २२॥ | ३०॥ | २८॥ | २८॥ | २९॥ | १९॥ | २०॥ | २१॥ | २१॥ | १४ | १६॥ | १८ | २८ | ३३ | २८ |
| रेवती | ३२ | ३१॥ | १७॥ | १३ | १६ | २५ | २४॥ | २४॥ | २५॥ | २५॥ | २७ | १४ | १९ | २९॥ | २९॥ | २४॥ | २६॥ | १८॥ | १२॥ | १२॥ | ४॥ | १६॥ | ३३ | २८ | २६॥ | २९ | २९॥ | २१॥ | १९॥ | २०॥ | २१॥ | २१॥ | १४ | १६॥ | १८ | २८ | ३३ | २८ |

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## भारत के प्रसिद्ध नगरों का मध्य रेखा का वलान्तर

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जोनपुर | ० | भागलपुर | +१८ | त्रिविन्दम | २२ | पेशावर | —४४ |
| आजमगढ़ | +१ | भोपाल | —२० | देहली | —२१ | भावनगर | —४१ |
| अयोध्या | —१ | मथुरा | —१९ | नाभा | —२५ | पोरबन्दर | —५२ |
| बलरामपुर | —१ | झांसी | —१६ | पटियाला | —२४ | द्वारिका | —५४ |
| काशी | +२ | तंजावर | —१४ | पंढरपुर | —२८ | छोटी सावड़ी | —३१ |
| गोरखपुर | +३ | दरभंगा | +१४ | नीमच | —३० | भीलवाड़ा | —३१ |
| प्रयाग | —३ | धौलपुर | —१८ | किशनगढ़ (रा) | -३० | सीतामऊ | —२८ |
| गाजीपुर | +४ | नागपुर | —१३ | काश्मीर | —३१ | आसाम | +३२ |
| अमेठी | —४ | नैनीताल | —१२ | कोल्हापुर | —३३ | रतलाम | —३० |
| बहराईच | —४ | पटना | +११ | जम्मू | —३१ | जावरा | —३० |
| चित्रकूट | —७ | पूर्णियां | +२० | जोधपुर | —३८ | नागौर | ३५ |
| कानपुर | —९ | कुरुक्षेत्र | —२६ | अजमेर | —३१ | नसीराबाद | —३१ |
| बांदा | —९ | कोचीन | —२५ | अमृतसर | —३१ | भीन्डर | —३३ |
| गया | +१० | कोटा | —२७ | अहमदनगर | —३१ | श्री माधोपुर | —२९ |
| जबलपुर | —१० | जयपुर | —२७ | आबू | ...३९ | शोलापुर | —२७ |
| काठमांडूनेपाल | +११ | जींद | —२४ | उदयपुर | —३५ | होशंगाबाद | —१९ |
| ग्वालियर | —१७ | अलवर | —२३ | कांकरोली | —३४ | हैदराबाददक्षिण | —१६ |
| जगन्नाथपुरी | +१३ | इन्दौर | —२७ | प्रतापगढ़(रा) | —३१ | हातरस | —१८ |
| अमरावती | —१९ | उज्जैन | —२७ | फरीदकोट | —३१ | सोजत मारवाड़ | —३५ |
| अलीगढ़ | —१९ | औरंगाबाद | —२८ | बड़ौदा | —३७ | सूरत | —३९ |
| अल्मोड़ा | —११ | कपूरथला | +२८ | बम्बई | —३८ | सिरोही | —३८ |
| आगरा | —१८ | कलकत्ता | +२३ | बांसवाड़ा | —३२ | सागर | —१५ |
| इटावा | —१५ | बर्दवान | +२२ | बीकानेर | —३६ | रायपुर (M.P.) | -३ |
| कटक | +१३ | बूंदी | —२७ | नाथद्वारा | —३४ | फतेपुर (राज) | —३० |
| कांची | —१९ | मंडी | —२२ | नासिक | —३५ | धूलिया | —३१ |
| फरूकाबाद | —१२ | मालरापाटन | —२६ | पूना | —३४ | जैसलमेर | —४६ |
| बरेली | —१२ | टौंक | —२७ | अहमदाबाद | —४० | चित्तौड़गढ़ | —३१ |
| मुरसपुर | —२० | टौंका | —२५ | जामनगर | —५० | खण्डवा | —२५ |
| | | | | | | कच्छभुज | —५१ |

कई स्थलों का समय जैसे अमेरिका वा रूस अन्तर्गत देशों का टाईम ग्रीष्म ऋतु का है जिसमें करीबन एक घन्टा का विशेष फर्क रहता है।

## भारत के स्टेन्डर्ड टाईम् से विदेशों का स्टेन्डर्ड टाईम विवरण

नोट—भारत तथा विदेशी स्टेन्डर्ड टाईम का ऋण — व धन + संकेत अनुसार जोड़ने व घटाने से, उपयुक्त टाईम सही बैठता है। देश घ० मि०

| देश | घ० मि० | | |
|---|---|---|---|
| चीन | + २-३१ | ढाका (पाकिस्तान) | — ०-३२ |
| चेकोस्लाविया | — ४-३२ | बंगलादेश | + ०-३१ |
| आस्ट्रेलिया | — ४-२९ | फिलापाईन | + २-३२ |
| बेल्जीयम् | — ४-३० | रोडेशिया | — ३-३० |
| बर्मा | + १-०१ | रोमानिया | — ३-३१ |
| कोलम्बिया | —१०-३० | जैदा | — २-३० |
| क्यूबा | —१०-३० | तेहरान | — १-३२ |
| डेनमार्क | — ४-३० | सिंगापुर | + २-१० |
| इथोपिया | — २-२८ | सोमाली | — २-३० |
| फिन्लेण्ड | — ३-३० | साउथ अफ्रीका | — ३-३२ |
| घाना | — ५-३० | स्पेन | — ४-३० |
| ग्रीस | — ३-३० | सूडान | — ३-३० |
| हांगकांग | + २-३० | स्वीडन | — ४-३२ |
| हंगरी | — ४-३० | स्वीजरलेण्ड | — ४-३० |
| मास्को | — २-३२ | टांगानिका | — २-३० |
| इर्कस्तत | + २-३० | थाईलेण्ड | + १-३० |
| जर्मनी | — ४-३० | टर्की | — ३-३० |
| फ्रांस | — ४-३० | युगान्डा | — २-३० |
| ईरान | — २-१० | अदन | — २-३० |
| ईराक | — २-३० | अफगानिस्तान | — १-१० |
| इटली | — ४-३० | अर्जेन्टाईना | — ८-३२ |
| जापान | + ३-३० | न्यू साउथ वेल्स | + ४-३० |
| जोर्डन | — ३-३० | नार्दन टेरीटरी | + ४-१० |
| कोरिया | + २-३० | वेनेजूएला | — ९-३२ |
| कुवेत | — २-३० | पश्चिम अफ्रीका | — ५-३२ |
| मलाया | + २-१० | युगोस्लाविया | — ४-३१ |
| सारवक | + २-३० | हालेन्ड | — ५-१० |
| | | आईसलेन्ड | — ६ ३० |

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

**सन्तान प्राप्ति योग**—लग्नेश, सप्तमेश, पंचमेश वा गुरु पंचम भाव को देखते हो, उस समय, इन ग्रहों की दशांतर्दशा में पुत्र प्राप्ति का योग बनता है जब गोचर काल में लग्न का पति पञ्चमेश के साथ दृष्टि सम्बन्ध करे तो पुत्र प्राप्ति होती है। पंचम का पति वा उस स्थान की राशि का पति नवांशक में बली वा राशिपति पंचम स्थान का एवं पञ्चमेश ग्रह दोनों गोचर में आपस में दृष्टि सम्बन्ध करे तब भी पुत्र प्राप्ति हो जावे।

**सन्तान न हो तो क्या कारण**—यदि सूर्य ग्रह सन्तान विषय में बाधा करता हो तो शिव मूर्ति का पूर्व जन्म में खण्डन किया हैं। वा पितृजों का अपमान किया है। इसके दोष से स्त्री के पेट में गाँठ पड़ जाती है वा कृश हो जाती है चन्द्रमा यदि बाधक हो तो भगवती उमा की मूर्ति का खण्डन, वा किसी समय पूर्व जन्म में गुरुजन व माता पिता का वृहद अपमान किया हो, या मित्र के साथ धोखा किया हो. इस कारण सन्तानोत्पत्ति नहीं होती है। इस ग्रह से स्त्री का गर्भ धारण गृह सूजन प्राप्त करता है।

यदि मंगल ग्रह सन्तान में बाधा उत्पन्न करता हो तो पूर्व जन्म में ग्राम देवता का अपमान, स्वामी कार्तिकेय का अपमान किया। इस कारण सन्तान प्राप्ति नहीं होती, इन दोषों से कोई शत्रु गर्भ योनि मंत्र तंत्र से बन्द कर देता है। यदि बुध ग्रह के कारण सन्तान प्राप्ति न हो तो, पूर्व जन्म में किसी बिल्ली वा बिलाव का वध किया, या किसी बच्चे को अधिक पीटने से उसके श्राप से सन्तान प्राप्ति नहीं होती, इसमें स्त्री के गर्भ यन्त्र में प्रजनन शक्ति नहीं रहती है। यदि गुरु ग्रह बाधक हो तो, इष्ट देवता का अपमान ब्राह्मण का श्राप, फल युक्त वृक्ष काटने से सन्तान उत्पन्न नहीं होती, इसमें गर्भ यन्त्र में मांस वृद्धि हो जाती है। शुक्र यदि सन्तान बाधक हो तो किसी सती माता का अपमान, वा बैल गाय के वध के कारण सन्तान प्राप्ति नहीं होती, इसमें गर्भ धारण यन्त्र कुम्हला जाता है। वा पुरुष को वीर्य सम्बन्धी बिमारी होती है। शनि ग्रह बाधक हो तो, पीपल के काटने से, वा भूत प्रेतादिक बाधा से अथवा यम दोष से सन्तान नहीं होती, इससे पुरुष नपुंसक होता है। एवं स्त्री प्रजनन युक्त नहीं होती है। राहु वा केतु हो तो सर्प के मारने वा ब्राह्मण को जहर देने के दोष से सन्तान प्राप्ति नहीं होती इससे गर्भ यन्त्र पर चर्बी चढ़ जाती है।

**विशेष नोट**—इन दोषों की शान्ति कैसे हो, इसका किस कारण से दोष दूर हो, व सन्तान प्राप्ति हो इसकी विशेष जानकारी कार्यालय द्वारा करें एवं सन्तान प्राप्ति के वास्ते विशेष कर प्रजापति देवता का आराधन विधिवत् करें।

**स्त्री प्राप्तियोग**—जिसकी जन्म कुण्डली में द्वितीय, व्यय, सप्तम वा नवम, का पति वा इन राशियों का पति त्रिकोण, मूल उच्च में गुरु दृष्टि युक्त हो. अथवा गोचर में यह मूल त्रिकोण में आ जाय उस समय स्त्री प्राप्ति होती है। शुक्र दृष्टि से युक्त यह ग्रह हो तो सौभाग्यवती सुन्दर पुत्र युक्ता, यदि बुध दृष्टि युक्त हो तो लड़ाकू चरित्रहीन सन्तानहीन स्त्री प्राप्त होती है।

**भार्या लाभ किस दिशा से**—सप्तमेश ग्रह वा राशि की दिशा, सप्तमेश जिस राशि में हो, उसकी दिशा, शुक्र जिस राशि में हो उस की दिशा में स्त्री लाभ वा गुरु यदि सप्तम में हो तो उसमें पंचम ग्रह की दिशा में भी स्त्री लाभ होता है।

**स्त्री न हो ऐसे योग**—यदि सप्तम भाव में अष्टम राशि का शुक्र सप्तम में वृष राशि का बुध, वा नीच का गुरु. शनि मंगल कर्क में, ऐसे ग्रह दशम वा चतुर्थ स्थान के राशिपति ग्रह से दृष्टि सम्बन्ध करते हों तो स्त्री लाभ नही होता।

**नपुंसक योग**—शनि युक्त शुक्र दशम स्थान में वा आठवें या शनि छठवें वा व्यय में नीच का विषम राशि का सूर्य सम राशि का चन्द्रमा विषम राशि सूर्य सम का मंगल विषम राशि गत चन्द्रमा सम राशि गत बुध यह नपुंसक योग करता है।

**पिता के मृत्यु समय का ज्ञान**—नवम स्थान में सूर्य वा भौम हो, नवमेश द्विस्वभाव राशिगत हो, वा दो पाप ग्रहों के साथ हो, या गोचर में इन्हीं राशियों में राजयोग कर्त्ता ग्रह हो तो पिता का मारक कहे।

**स्त्री नपुंसक योग**—यदि नवम स्थान में शत्रु क्षेत्री शुक्र वा द्वितिय स्थान में उच्च का शनि वा पंचम स्थान में शत्रु क्षेत्री बुध हो तो स्त्री नपुंसक होती है। (भ्रातृकष्ट योग) तृतिय स्थान में नीच व शत्रु क्षेत्री ग्रह वा तृतीय स्थान से पंचम वा नवम स्थान में शुक्र शत्रु क्षेत्री हो तो भ्रातृ नाश वा कष्ट होता है।

**कार्यप्राप्ति वा नौकरी प्राप्ति योग**—लग्नेश पंचमेश भाग्येश, राज्येश एवं लाभेश का कहीं भी किसी भी स्थान पर सहदृष्टि सम्बन्ध हो, उसकी दशान्तर्दशा वा गोचर में त्रिकोण भ्रमण समय नौकरी, वा व्यापार योग होता है।

**हवाईयान वा सेना में नौकरी योग**—षष्ठेश मंगल वा शनि उच्च का हो तो सेना में अच्छा पद प्राप्त कर सकता है कमाण्डर चीफ का यदि षष्ठेश मे और सोम्य ग्रह उच्च के वा स्वक्षेत्री हो तो हवाईयान नौकरी प्राप्त करता है।

**डाक्टर वैद्य, ज्योतिषी योग**—गुरु से चतुर्थ, वा लग्न से चतुर्थ, स्थान में सूर्य बुध योग कर्क राशि में हो. वा चन्द्रमा से अष्टम स्थान में ऐसा योग हो तो, उपरोक्त पदवी प्राप्त होती है।

**यश प्राप्ति योग**—राज्येश का मालिक, मूल, त्रिकोण, स्वक्षेत्री होकर, व्यय भाव में पड़े तो, देश,देशान्तर में यश प्राप्ति होती है।

**"महादरिद्र योग"** लग्न से चौथे कोई ग्रह न हो, शुक्र से दशवें कोई ग्रह न हो, एवं चन्द्रमा से अष्टम में कोई ग्रह न हो, ऐसा जातक जन्म २ तक दरिद्रता प्राप्त करता है।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## पुरुष जातक कोष्ठक ग्रह फलम्

| स्थान | रवि | चन्द्रमा | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि राहु केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | शरीर पीड़ा | शरीर पीड़ा | रक्तकोप | कान्ति | कान्ति | कीर्तिमान | बहु दुःख |
| द्वितीय | अति दुःख | बहुत दुख | दुःख | धन प्राप्ति | बहु धन | धनवान | दुःख |
| तृतीय | निरोगी | कीर्तिवंत | बुद्धिहीन | धनवान | उत्तम बुद्धि | बहु रूपिया | स्त्री प्रिय |
| चतुर्थ | शरीर दुःख | सं भोगी | शरीर दुःख | संभोगी | सुख युक्त | बुद्धिवान | शरीर पीड़ा |
| पंचम | बहुत क्रोधी | बहु पुत्र | सन्तान नाश | संतान थोड़ी | बहु प्रजा | बहुत सुख | सन्तान नाश |
| षष्ठम् | शत्रु नाश | आत्म जीवी | शत्रु नाश | बुद्धि वान | शरीर पीड़ा | रोगी | शत्रु पूज्य |
| सप्तम | दुष्ट कर्मी | स्त्री रूपवान | स्त्री नाश | रोगी | पुत्र वरन | स्वभा | स्त्री दुष्ट कर्म |
| अष्टम | मृत्युनाश | महा अरिष्ट | महाभय | अरिष्ट | शस्त्र घात | बीमार | रोगी |
| नवम | अधर्मी | धर्म बुद्धि | महादुष्ट | धर्मात्मा | धार्मिक बुद्धि | धार्मिक | धर्महीन |
| दशम | अमल दुख | कीर्तिवान | कुपुत्र | उत्तम कांति | शुभ कर्म | सम्पति वान | दुष्ट बुद्धि |
| एकादश | राज मैत्री | धनवान | राज सेवा | विचारवान | आयु वृद्धि | गुणवान | कीर्तिमान |
| द्वादश | दुष्ट स्वभाव | कामी | पाप कर्म | दरिद्री | कृशाङ्ग | रोगी | निरंकुश |

## स्त्री जातक कोष्ठक ग्रह फलम्

| स्थान | रवि | चन्द्रमा | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनिराहु केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | वधवा | अल्पायु | विधवा | पतिव्रता | पतिव्रता | सौभाग्य | ,, |
| द्वितीय | दरिद्री | बहुपुत्र | दौर्भाग्य | सौभाग्य | सौभाग्य | लाभ | ,, |
| तृतीय | पुत्रवती | धनवती | धनयुक्त | धन युक्त | धन | धन | ,, |
| चतुर्थ | दरिद्री | दुष्ट भाव | अल्प संख्यक | बहु सौभाग्य | बहुसौभा | सौभाग्य | ,, |
| पंचम | पुत्रनाश | बहुपुत्र | पुत्र नाश | उत्तम | बहुत धन | धनवती | ,, |
| षष्ठम | धनवान | विधवा | धन युक्त | कलहा | बहुफल | मृत्यु | ,, |
| सप्तम | जाया | प्रवासी | विधवा | नाश | वैश्या | वैश्या | ,, |
| अष्टम | विधवा | वियोग | धनयुक्त | स्वर्गीय | मृत्यु | दौर्भाग्य | ,, |
| नवम | धर्म बुद्धि | पुत्रयुक्त | धर्मव | उत्तम भोग | भय | सुख | ,, |
| दशम | कर्म | पापयुक्त | मृत्यु | धनवती | लाभ | लाभ | ,, |
| एकादश | आय | धनयुक्त | बहुपुत्र | सुखी | सुखी | भय | ,, |
| द्वादश | व्यय | दिवान्ध | दुष्ट कर्म | सुपुत्र | कुलटा | लाभ | ,, |

**ताराबल विचार**—सभी शुभ कार्यों में ताराबल विचार अवश्यमेव करे जन्म नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक गिनकर शुभ वा अशुभ विचार करें।

| १-१०-१९ | २.११ २० | ३ १२-२१ | ५-१४-२३ | ७-१६ २५ | ६-१५-२४ | ४-१३-२२ | ८-१७-२६ | ९-१८-२७ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जन्मभे | सम्पत | दुःखम् | अवतरी | मृत्यु | साधन | कुशलं | मित्रादि | अतिमित्रादि |
| शुभम् | शुभम् | अशुभम् | अशुभम् | अशुभम् | शुभम् | शुभम् | शुभम् | शुभम् |

## ग्रह प्रकरण

**विंशोतरी दशा प्रकार**—अश्विनि से जन्म नक्षत्र तक गिनती करे, २ घटाकर ९ का भाग देवे शेष १ बचे तो सूर्य दशा २ में चन्द्र दशा ३ में भौमदशा ४ में राहु की दशा ५ शेष में गुरु की दशा ६ शेष में शनि दशा ७ शेष में बुध दशा ८ शेष में केतु दशा ० में शुक्र दशा जाने। सूर्य की ६ वर्ष चन्द्र की १०, भौम ७, राहु १८, गुरु १६, शनि १९, बुध १७, केतु ७, शुक्र २० वर्ष के क्रम से दशा होती है।

**योगिनी दशा**—मंगला, पींगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा, संकटा यह आठ होती हैं। इनके क्रम से स्वामी, चन्द्रमा, सूर्य, मंगल, बुध, शनि, शुक्र, राहु, केतु होते है। अश्विनि से जन्म नक्षत्र तक गिने तीन और मिला कर आठ का भाग देवे, शेष बचे वह क्रम से मंगला पींगला से गिनती करके होती है। उदाहरण, जैसे जन्म नक्षत्र पुष्य है। अश्विनि से गिनती किया, ८ हुए ३ और जोड़े ११ हुए ८ का भाग दिया शेष तीन बचे, तो क्रम से धान्या की दशा हुई।

## ग्रह फल कब देते हैं

सूर्यादि नवग्रह १२ राशियों में गोचर भ्रमण करते है। जिनका फल आदि मध्यान्त होता है। क्रम इस प्रकार है। सूर्य एक राशि १ महिने में भोग करता है। सो प्रथम ५ दिन फल देता है। चन्द्रमा एक राशि को सवा दो दिन भोगता है। सो अन्त की ३ घड़ी फल देता है। मंगल एक राशि को डेढ़ महिना भोगता है। सो पहले आठ दिन फल देता है। बुध एक राशि को एक मास भोगता है। सो अन्त के चार दिन फल देता है। गुरु १ राशि को तेरह मास भोगता है। यह बीच में चार मास फल दाता होता है। शुक्र एक राशि को १ मास भोगता है। सो मध्य के सात दिन फल देता है शनि एक राशि को तीस मास भोगता है। सो अन्त के सात मास फल देता है। राहु व केतु एक राशि पर अठारह मास तथा मुंथा एक राशि पर एक मास रहता है सो क्रम से अन्त के दो मास व दो दिन फलदायक होते हैं।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji). Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

**समान गोत्र प्रवर में विवाह निषेध**—भारतीय धर्मशास्त्रकारों ने समान गोत्रप्रवर के वर-वधू में विवाह होना महापातक बतलाया है। आपस्तम्ब का कथन है कि समान गोत्रप्रवर विवाह से उत्पन्न सन्तान चाण्डाल होता है। तथा वर-वधू ब्राह्मणत्व से च्युत हो जाते हैं। अन्य धर्मशास्त्रकारों ने भी कहा है कि तुल्य मातृ-गोत्र या तुल्य पितृगोत्र का सम्बन्ध भाई-बहन का सा होता है अतएव इनमें विवाह नहीं करना चाहिए। ऐसे वर-वधू से उत्पन्न सन्तान को चाण्डाल कहा गया है। इसी से सगोत्र विवाह का निषेध किया गया है।

नाडीपरिहारः ॥ द्वयर्के शाम्रसुवर्णमष्टरिपुके गोधुग्ममर्माहके । ० अथ होराचक्रं वरकन्यानक्षत्रमेलापकविचारोपयोगिकम् । ० तीर्थं कांस्यमजिनाद्रिगुणिगोस्वर्णादि रत्नौदनं ॥

| मासा वर्णाः | चै. वै. | ज्ये. आ. | आ. पु. | पु. पु. | पु. आ. | आ. पु. | पु. आ. | आ. पु. | पु. आ. | आ. पु. | पु. आ. | आ. पु. | पु. आ. | आ. पु. | पु. आ. | आ. पु. | पु. आ. | आ. पु. | पु. आ. | आ. पु. | पु. आ. | आ. पु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्रं | अश्वि. | भरणी | कृत्ति. | रोहि. | मृग. | आर्द्रा | पुनर्वसु | पुष्य | आश्ले. | मघा | पू. फा. | उ. फा. | हस्त | चित्रा | स्वाती | विशा. | अनु. | ज्येष्ठा | मूल | पू. षा. | उ. षा. | श्रवण |
| राशिः | मेष | मेष | मेष १ वृष १ | वृष | वृष २ मिथु. १ | मिथुन | मिथु. २ कर्क १ | कर्क | कर्क | सिंह | सिंह | सिंह १ कन्या १ | कन्या | कन्या २ तुला २ | तुला | तुला २ वृश्चि. १ | वृश्चिक | वृश्चिक | धन | धन | धन. मकर २ | मकर |
| वर्णाः | क्षत्रिय | क्षत्रिय | क्षत्रि १ वैश्य १ | वैश्य | वैश्य २ शूद्र २ | शूद्र | शूद्र २ विप्र १ | विप्र | विप्र | क्षत्रिय | क्षत्रिय | क्षत्रि १ वैश्य १ | वैश्य | वैश्य २ शूद्र २ | शूद्र | शूद्र २ विप्र १ | विप्र | विप्र | क्षत्रिय | क्षत्रिय | क्षत्रि १ वैश्य २ | शूद्र |
| वश्यः | चतुष्प. | चतुष्प. | चतुष्प. | चतुष्प. | चतु. २ मान. २ | मानव | मान. १ जल. २ | जलचर | जलचर | चतुष्प. | चतुष्प. | चतु. १ मान. १ | मानव | मानव | मानव | मान. २ कीट १ | कीट | कीट | मानव | मान. ॥ चतु २ ॥ | चतुष्प. | चतु १ ॥ जल २ ॥ |
| योनिः | अश्व. | गज | मेष | सर्प | सर्प | श्वान | मार्जार | मेष | मार्जार | मूषक | मूषक | गौ | महिष | व्याघ्र | महिष | व्याघ्र | मृग | मृग | श्वान | वानर | नकुल | वानर |
| प्रो. वै. | महिष | सिंह | वानर | नकुल | नकुल | मृग | मूषक | वानर | मूषक | मार्जार | मार्जार | व्याघ्र | अश्व | गौ | अश्व | गौ | श्वान | श्वान | मृग | मेष | सर्प | मेष |
| राशीशाः | भौमः | भौमः | भौमः १ शुक्रः २ | शुक्रः | शुक्रः २ बुधः २ | बुधः | बुधः २ चन्द्रः १ | चन्द्रः | चन्द्रः | सूर्यः | सूर्यः | सूर्यः १ बुधः २ | बुधः | बुधः २ शुक्रः २ | शुक्रः | शुक्रः २ भौमः १ | भौमः | भौमः | गुरुः | गुरुः | गुरुः १ शनिः २ | शनिः |
| गणः | देव | मनुष्य | राक्षस | मनुष्य | देव | मनुष्य | देव | देव | राक्षस | राक्षस | मनुष्य | मनुष्य | देव | आदि | देव | राक्षस | राक्षस | देव | राक्षस | राक्षस | मनुष्य | मनुष्य |
| नाडी | आदि | मध्य | अन्त्य | अन्त्य | मध्य | आदि | आदि | मध्य | अन्त्य | अन्त्य | मध्य | आदि | मध्य | अन्त्य | अन्त्य | अन्त्य | मध्य | आदि | आदि | मध्य | अन्त्य | अन्त्य |

गुणैक्यस्वल्पविचारः । कन्यादिरत्नान्तरं । स्वोच्चर्क्षे न गुणक्यं ॥ क्रमात्स्वोच्चाद्दशस्वपि । स्वस्वस्थानगतैक्यस्य विस्तरोक्तिः ।

१ वर्णस्य गुणाः ॥ वरस्य

| वर्णाः | वि. | अ. | वै. | शू. |
|---|---|---|---|---|
| विप्र | १ | ० | ० | ० |
| क्षत्रिय | १ | १ | ० | ० |
| वैश्य | १ | १ | १ | ० |
| शूद्र | १ | १ | १ | १ |

२ वश्यगुणाः ॥ वरस्य

| वश्याः | च. | मा. | ज. | व. | की. |
|---|---|---|---|---|---|
| चतु. | २ | १ | १ | ० | १ |
| मानव | १ | २ | ॥ | ० | १ |
| जलचर | १ ॥ | २ | १ | १ | १ |
| वनचर | ० | ० | १ | २ | ० |
| कीट | १ | १ | १ | ० | २ |

३ तारायाः गुणाः ॥ वरस्य

| कन्यायाः | ता. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |
| | २ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |
| | ३ | १॥ | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | १॥ |
| | ४ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |
| | ५ | १॥ | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | १॥ |
| | ६ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |
| | ७ | १॥ | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | १॥ |
| | ८ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |
| | ९ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |

४ योनिकूटस्य गुणाः ॥ वरस्य

| कन्यायाः / योनयः | अश्व | गज | मेष | सर्प | श्वान | मार्जार | मूषक | गौ | महिष | व्याघ्र | मृग | वानर | नकुल | सिंह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अश्व | ४ | २ | ३ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | १ | १ | ३ | ३ | १ |
| गज | २ | ४ | ३ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ | ० |
| मेष | ३ | ३ | ४ | ३ | २ | ३ | १ | ३ | ३ | १ | ३ | ० | ३ | १ |
| सर्प | २ | २ | ३ | ४ | २ | २ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | ० | २ |
| श्वान | २ | २ | २ | २ | ४ | १ | १ | २ | २ | १ | ० | २ | २ | १ |
| मार्जार | २ | २ | ३ | २ | १ | ४ | ० | २ | २ | १ | २ | २ | २ | २ |
| मूषक | २ | २ | २ | १ | १ | ० | ४ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | १ |
| गौ | ३ | २ | ३ | १ | २ | २ | २ | ४ | ३ | ० | ३ | ३ | ३ | १ |
| महिष | १ | ३ | ३ | २ | २ | १ | १ | २ | ४ | १ | ३ | २ | ३ | २ |
| व्याघ्र | १ | २ | १ | २ | १ | १ | २ | ० | १ | ४ | २ | १ | २ | २ |
| मृग | ३ | २ | ३ | २ | ० | २ | २ | ३ | ३ | १ | ४ | २ | ३ | ३ |
| वानर | २ | ३ | ० | २ | २ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | ४ | ३ | ३ |
| नकुल | २ | २ | ३ | ० | २ | २ | ३ | ३ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | २ |
| सिंह | १ | ० | १ | २ | १ | २ | १ | १ | ३ | २ | २ | २ | २ | ४ |

५ ग्रहमैत्रकस्य गुणाः ॥ । रस्य

| कन्यायाः | ग्रहाः | सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | सू. | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ० | ० |
| | चं. | ५ | ५ | ४ | १ | ४ | ॥ | ॥ |
| | मं. | ५ | ४ | ५ | ॥ | ५ | ३ | ॥ |
| | बु. | ४ | १ | ॥ | ५ | ॥ | ५ | ४ |
| | गु. | ५ | ४ | ५ | ॥ | ५ | ॥ | ३ |
| | शु. | ० | ॥ | ३ | ५ | ॥ | ५ | ५ |
| | श. | ० | ॥ | ॥ | ४ | ३ | ५ | ५ |

६ गणगुणाः ।

| कन्यायाः | दे. | म. | रा. |
|---|---|---|---|
| दे. | ६ | ६ | १ |
| म. | ६ | ६ | ० |
| रा. | ० | १ | ६ |

८ नाडीगुणाः ।

| कन्यायाः | ना. | आ. | म. | अं. |
|---|---|---|---|---|
| आ. | ० | ८ | ८ | ८ |
| म. | ८ | ० | ८ | ८ |
| अं. | ८ | ८ | ० | ८ |

अष्टौ वर्गास्तदीशाश्च

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ट ५ | च. ५ | ड. ५ | त. ० |
| श्वान | सिंह | मार्जार | गज |
| ता. ४ | प. ४ | प. ५ | ज. ५ |
| अश्वि | मृग | मूषक | सर्प |

७ राशिकूटस्य गुणाः ॥ वरस्य ॥

| कन्यायाः / राशयः | मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | कं. | तु. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ७ |
| वृष | ० | ७ | ७ | ७ | ७ | ० | ० | ० | ० | ७ | ७ | ० |
| मिथुन | ७ | ७ | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ |
| कर्क | ० | ७ | ७ | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ० | ० | ० | ० |
| सिंह | ० | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ० | ० | ० |
| कन्या | ० | ० | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ० | ० | ० | ० | ० |
| तुला | ७ | ० | ० | ० | ० | ७ | ७ | ७ | ० | ० | ० | ० |
| वृश्चिक | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ७ | ७ | ० | ० | ० |
| धन | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ७ | ७ | ० | ० |
| मकर | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ७ | ७ | ० |
| कुम्भ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ७ | ७ |
| मीन | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ७ |

नैसर्गिकग्रहमैत्रीचक्रमिदम् ।

| सूर्यः | चन्द्रः | मङ्गलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | ग्रहाः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चं. मं. गु. | सू. बु. | सू. चं. गु. | सूर्यः शुक्रः | सूर्यः मं. चं. | बुधः शनिः | बुधः शुक्रः | मित्राणि |
| बुधः | मं. गु. शु. श. | शुक्रः शनिः | मं. गु. शनिः | शनिः | भौमः शुक्र. | गुरुः | समाः |
| शुक्रः शनिः | • | बुधः | चन्द्रः | बुधः शुक्रः | सूर्यः चन्द्रः | सूर्यः मं. चं. | शत्रवः |

| विवाहेरविचन्द्रगरुद्धिचक्रम् । | | | |
|---|---|---|---|
| रविः | चन्द्रः | गुरुः | ग्रहाः |
| ३।६ १०।११ | २।६।७ १०।११ | २।५।७ ९।११ | शुभ-स्थानानि |
| १।२।५।७ ९ | १।२ ५।९ | १।३ १०।६ | पूज्य-स्थानानि |
| ४ ८।१२ | ४ ८।१२ | ४ ८।१२ | निन्दित-स्थानानि |

ग्रहों के लिये होम समिधा—सूर्य के लिए आक (अकवन), चन्द्रमा के लिए पलाश, मंगल के लिए खैर, बुध के लिए अपामार्ग (चिचड़ी), गुरु के लिए पीपल, शुक्र के लिए गूलर, शनि के लिए शमी, राहु के लिए दूर्वा तथा केतु के लिए कुशा से होम करना चाहिए। मधु तथा घी लगाकर उपरोक्त समीधाओं से प्रत्येक ग्रह के लिए १०८या २८हवन तद्वद् मन्त्रों से करना चाहिए। यदि हवन सामग्री अधिक हो तो १००८ हवन प्रत्येक ग्रह के लिए करना चाहिए।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार, दिल्ली ६

# अवकहडाचक्रम्

देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार, दिल्ली ६

| नक्षत्र | अश्विनी | भरणी | कृत्तिका | रोहिणी | मृगशीर्ष | आर्द्रा | पुनर्वसु | पुष्य | आश्लेषा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नाडी | आद्यनाडी | मध्यनाडी | अंत्यनाडी | अंत्यनाडी | मध्यनाडी | आद्यनाडी | आद्यनाडी | मध्यनाडी | अंत्यनाडी |
| योनि | अश्वयोनि | गजयोनि | मेषयोनि | सर्पयोनि | सर्पयोनी | श्वानयोनि | मार्जारयोनि | मेषयोनि | मार्जारयोनि |
| गण | देवगण | मनुष्यगण | राक्षसगण | मनुष्यगण | देवगण | मनुष्यगण | देवगण | देवगण | राक्षसगण |
| आराध्यवृक्ष | कुचलावृक्ष | आंवला | गूलर | जामून | खैर | कृष्णागरु | बमूर | पिंपल | नागचंपा, |
| पीडापरिहारार्थ दान | अन्नदान | श्वेतवस्त्र | सुवर्ण | वृष | खीर (क्षिप्रा) | काली गाय | उडीद, तिल | रक्तवस्त्र | तिलधेनु |
| नक्षत्रदेवता व तारा | अश्विनीकुमार ३ | यम (३) | अग्नि (६) | ब्रह्मा (५) | चंद्र (३) | शंकर (१) | अदिति (४) | बृहस्पति (३) | सर्प (५) |
| चरणपरसे पीडा दिवस | ९ १० ३ ७ | १० ० ९ २१ | ९ १० ७ २१ | ७ ९ २० २८ | २० १५ ७ २१ | ० १५ ७ ७ | ७ २१ २० २२ | ७ ७ १० २० | ० १ ० ६० |
| चरणांक | १ २ ३ ४ | १ २ ३ ४ | १ २ ३ ४ | १ २ ३ ४ | १ २ ३ ४ | १ २ ३ ४ | १ २ ३ ४ | १ २ ३ ४ | १ २ ३ ४ |
| चरणाक्षर | चू चे चो ला | ली लू ले लो | आ ई ऊ ए | ओ वा वी वू | वे वो का की | कू घ ङ छ | के को हा ही | हु हे हो डा | डी डू डे डो |
| नक्षत्रचरणके स्वामी | मं शु बु चं | र बु शु मं | गु श श गु | मं शु बु चं | र बु शु मं | गु श श गु | मं शु बु चं | र बु शु मं | गु श श गु |

| राशी | उदयकाल १ घं ४८ मि — मेष | उदयकाल १ घं ५६ मि — वृषभ | उदयकाल २ घं २० मि — मिथुन | उदयकाल २ घं ३२ मि — कर्क |
|---|---|---|---|---|
| राश्यधिपति | मंगल आ ला इ | शुक्र वा वा | बुध काछा | चंद्र डा ह्रा |
| वर्ण | क्षत्रियवर्ण | वैश्यवर्ण | शूद्रवर्ण | विप्रवर्ण |
| वश्य | चतुष्पाद | चतुष्पाद | मानव | जलचर |

| नक्षत्र | मघा | पूर्वाफा | उत्तराफा | हस्त | चित्रा | स्वाती | विशाखा | अनुराधा | ज्येष्ठा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नाडी | अंत्यनाडी | मध्यनाडी | आद्यनाडी | आद्यनाडी | मध्यनाडी | अंत्यनाडी | अंत्यनाडी | मध्यनाडी | आद्यनाडी |
| योनि | मूषकयोनि | मूषकयोनि | गोयोनि | महिषीयोनि | व्याघ्रयोनि | महिषीयोनि | व्याघ्रयोनि | मृगयोनि | मृगयोनि |
| गण | राक्षसगण | मनुष्यगण | मनुष्यगण | देवगण | राक्षसगण | देवगण | राक्षसगण | देवगण | राक्षसगण |
| आराध्यवृक्ष | वटवृक्ष | छोला | पायरी वृक्ष | जुही | वेलवृक्ष | अर्जुनवृक्ष | नागकेशर | नागकेशर | सांवरवृक्ष |
| पीडापरिहारार्थ दान | गुड, नमक | अन्नदान | मोतीदान | अन्नदान | पीतवस्त्र | लाल गाय | ताम्रदान | शय्यादान | उपानह [ जूता ] |
| नक्षत्रदेवता व तारा | पितर (५) | भग (२) | अर्यमा (२) | सूर्य (५) | त्वष्टा (१) | वायु (१) | इंद्राग्नि (४) | मित्र (४) | इंद्र (३) |
| चरणपरसे पीडा दिवस | २० ० १७ २० | २० १५ १२ ३० | ३७ ३७ ७ ५ | १५ ५ ५ ५२ | १० ० ५ ५६ | ० १७ २१ ० | १५ १८ ५ १३ | ३ ७ ३५ २४ | ० ५ २६ ५५ |
| चरणांक | १ २ ३ ४ | १ २ ३ ४ | १ २ ३ ४ | १ २ ३ ४ | १ २ ३ ४ | १ २ ३ ४ | १ २ ३ ४ | १ २ ३ ४ | १ २ ३ ४ |
| चरणाक्षर | मा मी मू मे | मो टा टी टू | टे टो पा पी | पू षा णा ठा | पे पो रा री | रु रे रो ता | ती तू ते तो | ना नी नू ने | नो या यी यू |
| नक्षत्रचरणके स्वामी | मं शु बु चं | र बु शु मं | गु श श गु | मं शु बु चं | र बु शु मं | गु श श गु | मं शु बु चं | र बु शु म | गु श श गु |

| राशी | उदयकाल २ घं २८ मि — सिंह | उदयकाल २ घं ३६ मि — कन्या | उदयकाल २ घं २० मि — तुला | उदयकाल २ घं ३२ मि — वृश्चिक |
|---|---|---|---|---|
| राश्यधिपति | सूर्य मा टा | बुध | शुक्र रा ता | मंगल ना या |
| वर्ण | क्षत्रियवर्ण | वैश्यवर्ण पा ठा | शूद्रवर्ण | विप्रवर्ण |
| वश्य | वनचर | मानव | मानव | कीटक |

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## दिन की चौघड़िया

| | रवि | सोम | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पहली चौघ. | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर | काल |
| दूसरी चौघ. | चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ |
| तीसरी चौघ. | लाभ | शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग |
| चौथी चौघ. | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर | काल | उद्वेग |
| पांचवीं चौघ. | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर |
| छठवीं चौघ. | शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ |
| सातवीं चौघ. | रोग | लाभ | शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत |
| आठवीं चौघ. | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर | काल |

## रात की चौघड़िया

| | रवि | सोम | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पहली चौघ. | शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ |
| दूसरी चौघ. | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर | काल | उद्वेग |
| तीसरी चौघ. | चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ |
| चौथी चौघ. | रोग | लाभ | शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत |
| पांचवीं चौघ. | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर |
| छठवीं चौघ. | लाभ | शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग |
| सातवीं चौघ. | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर | काल |
| आठवीं चौघ. | शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ |

शीघ्रता में कोई भी यात्रा-मुहूर्त न बनता हो या यकायक यात्रा करने का मौका आ पड़े तो उस अवसर के लिए विशेष रूप से चौघड़िया-मुहूर्त का उपयोग है; लेकिन अब तो प्रायः हर आवश्यकीय शुभ कार्यारम्भ के लिए चौघड़िया-मुहूर्त ने जनता के हृदय पर अपना सिक्का जमा लिया है।

दिन और रात के आठ-आठ बराबर हिस्से का एक-एक चौघड़िया मुहूर्त होता है। जब दिन और रात बराबर यानी 12 घण्टे का दिन और 12 घण्टे की रात होती है तब एक चौघड़िया-मुहूर्त १॥ घंटा यानी पौने चार घडी का होता है, इसलिए इसका नाम चौघड़िया मुहूर्त पड़ा। रविवार, सोमवार आदि प्रत्येक वार सूर्योदय से शुरू होकर अगले सूर्योदय पर समाप्त होता है, एवं उसी समय से अगला 'वार' आरम्भ हो जाता है। प्रत्येक वार के सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय उस वार का 'दिनमान' और सूर्यास्त से अग्रिम सूर्योदय तक का समय 'रात्रिमान' होता है। दिनमान और रात्रिमा न्यूनाधि एक भी (यानी दिन-रात छोटे-बड़े) हुआ करते हैं; पर 'वार' हमेशा २४ घंटा यानी ६० घड़ी का होता है अर्थात् दिनमान और रात्रिमान का योग हमेशा ६० घड़ी का होता है। जंत्री में हर रोज का 'दिनमान' दिया रहता है; अतः जिस रोज का रात्रिमान जानना हो, उस रोज के दिनमान की ६० घड़ी में से घटा देने पर रात्रिमान निकल आयेगा। अब जिस रोज दिन में यात्रा करनी हो तो उस रोज के दिनमान ५ अष्टमांश घटी-पल का घंटा-मिनट बनाकर उस रोज के सूर्योदय समय में जोड़ने जायें तो क्रमशः उस दिन की आठों चौघड़िया के समय ज्ञात होते जायेंगे। उन आठों चौघड़ियों में से कौन-सा ग्राह्य और त्याज्य है, यह ऊपर 'दिन' की चौघड़िया के चक्र में उस दिन के 'वार' के सामने खाने में देख कर जान लें। इसी प्रकार जिस रोज रात्रि में यात्रा करनी हो तो उस रोज के रात्रिमान के अष्टमांश घटी-पल का घंटा-मिनट बनाकर सूर्यास्त समय में जोड़ते जाने से क्रमशः रात की प्रत्येक चौघड़िया का समय ज्ञात हो जायेगा और उनका शुभाशुभत्व उपर्युक्त रात की चौघड़ियों के चक्र में उस रोज के 'वार' के सामने के खाने में क कर जान लें। श्रेष्ठ समय शुभ, चर, अमृत और लाभ देखा चौघड़िया का है। अशुभ समय उद्वेग, रोग और कालकी होता है, इनको त्याग देना चाहिये। २॥ घड़ी का १ घंटा तथा २॥ पल का एक मिनट होता है। अतः घटी-पल का घंटा-मिनट बनाने के लिए उनमें ५ का भाग देकर लब्धि को दूना कर लें।

टिप्पणी—प्रत्येक चौघड़िया के स्वामी-ग्रह क्रमशः ये हैं—उद्वेग का रवि, चर का शुक्र, लाभ का बुध, अमृत का चन्द्र, काय का शनि, शुभ का गुरु और रोग चौघड़िया का स्वामी भौम है। ऊपर जो शुभ, चर, अमृत और लाभ की चौघड़िया का समय श्रेष्ठ कहा गया है, वह इसी लिए कि उन सबके स्वामी क्रमशः शुभ ग्रह गुरु, शुक्र, चन्द्र और बुध हैं। अतः इन सबके श्रेष्ठ चौघड़िया मुहूर्त में प्रत्येक शुभ कार्य किये जा सकते हैं; किन्तु यात्रा में इनके स्वामी का सूक्ष्म विचार कर लेना अत्यावश्यक है। प्रायः सभी लोग उक्त चारों श्रेष्ठ चौघड़िया में से किसी चौघड़िया में किसी भी दिशा की यात्रा कर लेते हैं; किन्तु फल कभी-कभी उल्टा यानी शुभ की जगह अशुभ और हानिकर हो जाता है। जैसे यदि किसी को पूर्व में जाना है और उपर्युक्त चारों श्रेष्ठ चौघड़ियों में से "अमृत" चौघड़िया के समय में वह चला गया तो उस चौघड़िया का स्वामी चन्द्र होने के कारण दिशा के लिए वह चन्द्र दिशाशूलकारक होगा—"सोम,पूर्वशनीचर पूरब न चालू", जिससे शुभ फल के बजाय अशुभ होना निश्चित-प्राय है। अतः चारों श्रेष्ठ चौघड़ियों में से भी जिस चौघड़िया का स्वामी अपनी यात्रा के लिए दिशाशूलकारक हो, उस चौघड़िया को यत्नपूर्वक वर्जित करना चाहिए।

मेलापक चक्र विचार—यदि भकूट शुद्ध हो तो १६ से कम निन्दित, २० तक मध्यम, इसके बाद उत्तम है। दुष्ट भकूट में २० गुण से कम निन्दित, २५ गुण तक मध्यम, ३६ गुण तक उत्तम होता है। जिसका जन्म-नक्षत्र ज्ञात न हो, उसका नाम-नक्षत्र से मेलापक देखना चाहिये। यदि जन्म-नक्षत्र से विचार करना हो तो वर-वधू दोनों के जन्म नक्षत्र से विचार करना चाहिये। एक का जन्म नक्षत्र तथा दूसरे का नाम-नक्षत्र ऐसा नहीं करना चाहिए। ग्रह मेलापक के लिए यदि वर की जन्म-कुण्डली में लग्न अथवा चन्द्रमा से १, ४, ७, तथा १२ स्थान में मंगल या पापग्रह हों तो कन्या के लिए हानिकारक है। यदि इसी प्रकार के ग्रह कन्या की भी कुण्डली में हों तो मंगल का दोष नहीं लगता। जन्म-लग्न अथवा चन्द्रमा से कोई शुभ ग्रह अथवा सप्तमभाव में स्थित हो तो मंगल का दोष नष्ट हो जाता है।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# जातक चिन्ह

लग्न में मंगल, सातवें बृहस्पति या शुक्र हो—तो उसके सिर में चोट या (व्रण) आदि का चिन्ह हो। लग्न सिर में शुक्र चन्द्रमा के साथ होने से दूसरे या छठे वर्ष सिर में चिन्ह होता है। मंगल व्रणादि, चन्द्र शुक्र से तिल (मशक) लहसन जानें। सातवें घर में गुरु या लग्न में राहु के साथ गुरु हो, आठवें घर में पापी ग्रह हों या लग्न में शुक्र या सातवें राहु हो तो माथे में या बायें कान में चिन्ह हो। लग्न से ३, ६, ११ वें स्थान में मंगल या बारहवें घर में मंगल शुक्र एक साथ हों तो बायें बगल की ओर व्रण का चिन्ह हो। लग्न में मंगल हो और त्रिकोण ५।९ में शनि हो इसको शुक्र देखे तो गुदा (मलद्वार) या लिंग के समीप तिल का चिन्ह होगा। लग्न में ५।९वें शुक्र, आठवें बुध-गुरु लग्न में या चतुर्थ घर में शनि हो तो पेट पर चिन्ह होता है। दूसरे घर शुक्र, तीसरे मंगल शनि हो व लग्न में आठवें सूर्य हो तो कमर में चिन्ह होगा। चतुर्थ घर में शुक्र-राहु हो, लग्न में मंगल या शनि हो, तो पादमूल में व बायें पैर में चिन्ह होगा। बारहवें गुरु ९वें चन्द्रमा ३।३।११वें बुध होने से गुदा के समीप चिन्ह या व्रणादि होते हैं। छठे घर का स्वामी पापी ग्रह के साथ लग्न सातवें घर में हो तो शरीर में व्रणादि चिन्ह होते हैं। योगकर्ता सूर्य हो तो शिर में, चन्द्रमा से मुख में, मंगल से गले में, बुध से हृदय में, बृहस्पति से नाभि में, शुक्र से आँख या पीठ पर और राहु शनि केतु से पैर या अधर (होठ पर) या दाँतों पर चिन्ह जानने चाहिए।

● **नालवेष्टित अंग ज्ञान**—यदि सूर्य चतुष्पद राशि में हो शेष ग्रह बलवान होकर द्विस्वभाव राशिगत हों तो बालक, एक जरायु से वेष्टित उत्पन्न होते हैं। यदि मेष, सिंह लग्न में शनि व मंगल स्थिति हो तो लग्न का जो नवांश उदय होता है वह राशि काल पुरुष के जिस अंग में हो तो उस अंग के नालवेष्टित बालक उत्पन्न होता है।

● **काल पुरुष**—काल पुरुष के सिर में मेष राशि, मुख मे वृष, वक्षस्थल में मिथुन, हृदय, कर्क, उदर में सिंह, कटि में कन्या, वस्ति में तुला, गुप्तेन्द्रिय में वृश्चिक, उर में धन, जानु में मकर, जांघों में कुम्भ, दोनों पादों में तीन राशि काल-पुरुष के शरीर की राशि जानें। जिस लग्न में बालक जन्म ले वह शिर जानें। अन्य सब राशिक्रम के अंग होते हैं।

● **उपसूतिकाज्ञानम्**—लग्न अथवा लग्नेश्वरके साथ और इनके दूसरे तथा बारहवें स्थान में जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिका कहना। अन्य प्रकार—लग्न और चन्द्रमा के मध्य जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिका जानना।

यदि चतुर्थ-दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो सुख से प्रसव होता है। यदि नवम पंचम सप्तम में पाप ग्रह हो तो माता को प्रसव-काल में बहुत कष्ट होता है।

**भूषण बनवाने का मुहूर्त**—नक्षत्र स्वा,० पुन० पुष्य श्र० ध० श० ह० अ० रो० उ० ३, तिथि २, ३, ५, ७, १०, ११ १३, वार रवि चं० बुध० गुरु० भृगु० हो।

● **दिशा ज्ञानम्**—पूर्व द्वितीय तृतीय ईशान चतुर्थ उत्तर पंचम षष्ठ दक्षिण वायव्य। सप्तम पश्चिम। अष्टम नैऋत नवम दशम दक्षिण एकादश द्वादशभाव को आग्नेय जाने।

● **प्रसूति स्थान से पाकशालादि विचार**—जन्मकुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हों वहाँ अग्नि स्थान (पाकगृह) जानना। चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ (मैला) स्थान जानना चाहिए।

● **आकृति ज्ञानम्**—जन्म लग्न का जो नवांश हो उनका जो स्वामी हो उसके सदृश शरीर की आकृति होती है। चन्द्र राशि के नवांश के स्वामी के समान वर्ण होता है।

● **शिरपादजातज्ञानम्**—शीर्षोदय राशि ३।५।६।७।८ जन्म समय इन राशियों का नवांश लग्न में हो सिर में पृष्ठोदय राशि १।२।४।९।१० इन राशियों का नवांश जन्म समय में हो तो पाद में जन्म जानना। यदि मीन का नवांश हो तो हाथ में जानना। लग्नेश दशम में राहु जन्म में हो तो बालक पैरों से उत्पन्न हो।

● **सूतिका-गृहद्वार ज्ञानम्**—केन्द्र में स्थित ग्रह की दिशा में सूतिकागृह का द्वार जानना। यदि केन्द्र में बहुत ग्रह पड़े हों तो उनमें जो अधिक बली (स्वराशि, मित्रोच्च या मूल राशि का) हो उसकी दिशा में सूतिकागृह का द्वार कहना। यदि केन्द्र में कोई ग्रह न हो तो लग्न की दिशा में ग्रह का द्वार कहना।

● **ग्रहों की दिशा**—सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैऋत।

● **खट्वा विचार**—लग्न और द्वितीय राशि से तीसरी राशि दक्षिण पाया चतुर्थ, पंचम दक्षिण वाहि छटा दक्षिण पाया, सप्तम अष्टम वाम सेरू, नवम वाम पाया दशम एकादश वाम लाहि द्वादश वाम पाया होता है। (फल) जिस अंग से पाप ग्रह अथवा द्विस्वभाव राशि हो वहाँ से फटा होता है अथवा केतु ग्रह की दृष्टि हो तो भी फटा हुआ हो। अर्थात् शनि हो तो लोहे से युक्त, मंगल हो तो फटा हुआ जानना। यदि उसको स्वामी या शुभ ग्रह देखे तो फटा नहीं होता।

● **दीपकादि ज्ञानम्**—यदि जन्म के काल में चन्द्रमा १८ अंश तक हो तो दीपक तेल से पूर्ण हो, १० से २० अंश तक हो तो आधा, २० से ३० अंश तक हो तो तेल बहुत थोड़ा हो, बत्ती लग्न से होती है जितना लग्न मुक्त हो गया हो उतनी दग्ध जानना। यदि सूर्य जन्म काल में चर राशि में हो तो दीपक इधर-उधर ले जाया गया हो तो स्थिर राशि में स्थिति और द्विस्वभाव राशि में एक स्थान से उठाये दूसरे स्थान पर स्थिर होता है। कई आचार्यों का मत है कि जिस राशि में सूर्य हो उसी राशि की दिशा में दीपक कहें।

मंगाने का पता वेहाती पुस्तक भंडार चावड़ी बाजार, दिल्ली 6 फोन 261030

CC-0. Swami Atmanand Puri (Haridwar). Digitized by eGangotri

**जन्म स्थान विचार**— जन्म लग्न और चन्द्रमा जलचर राशि में हो अथवा पूर्ण चन्द्रमा लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखे अथवा चन्द्रमा जलचर राशि दसवें चौथे और लग्न में हो तो बालक का जन्म जल के ऊपर अथवा जल के समीप स्थान में हुआ जानना। पूर्ण चन्द्रमा कर्क राशि में हो, बुध लग्न में हो, गुरु चतुर्थ स्थान में हो अथवा लग्न जलचर राशि में हो, चन्द्रमा सातवें हो तो बालक का जन्म नौका में, जहाज में अथवा नदी के सान्निध्य में हुआ ऐसा जानना। लग्न और चन्द्रमा से १२वें स्थान में शनि हो उसे पापी ग्रह देखते हों तो बालक का जन्म कारागार में व एकान्त में हुआ जानना। चर राशि गत शनि लग्न में हो और शुक्र चन्द्रमा देखते हों तो सुन्दर घर में जन्म कहना।

## बालक के जन्म समय मृत्यु-योग

लग्न में व सप्तम में पापी ग्रह हों और चन्द्रमा पापी ग्रहों के साथ वहाँ स्थित हो, उस चन्द्रमा को सौम्य ग्रह न देखते हों तो उत्पन्न हुआ बालक शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होता है।

चन्द्रमा पापी ग्रह से युक्त हुआ लग्न, द्वादश, सप्तम अष्टम इनमें से किसी स्थान में हो, शुभ ग्रह केन्द्रों में न हों, चन्द्रमा भी शुभ ग्रहों की दृष्टि से वर्जित हो तो जन्म लेने वाले को मृत्यु को देने वाला होता है। क्षीण चन्द्रमा लग्न में हो, केन्द्रों में आठवें चर पापी ग्रह हों, इस योग में उत्पन्न हुआ बालक मृत्यु को प्राप्त होता है। इसी तरह पापी ग्रहों के मध्य चन्द्रमा शुभ लग्न में हो और सातवें आठवें पापी ग्रह हों, यदि बलवान शुभग्रह से चन्द्रमा दृष्ट न हो तो बालक माता-पिता के साथ मृत्यु को प्राप्त होता है। यदि बलवान शुभ ग्रहों करके चन्द्रमा देखा जाता है तो माता-पिता की मृत्यु नहीं होती। द्वादश स्थान में शनि हो, सूर्य नवम हो, चन्द्रमा लग्न में, मंगल अष्टम स्थान में हो यह सब ग्रह यदि बलवान गुरु से दृष्ट न हों तो उत्पन्न बालक की शीघ्र मृत्यु हो जाती है। यदि बलवान गुरु किसी को न देखे व बलहीन गुरु सबको देखे तो शीघ्र मृत्यु नहीं होती। यदि गुरु सबको देखता हो तो वह फल नहीं होता। पापी ग्रह से युक्त चन्द्रमा पंचम सप्तम नवम, द्वादश, लग्न और अष्टम स्थानों में हो, नवांश बुध, गुरु और शुक्र इनमें से किसी एक से भी युक्त-दृष्ट न हो तो यह योग नहीं होता।

चन्द्रमा जन्म लग्न से आठवें स्थान में हो और पापी ग्रहों से दृष्ट हो तो शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है। इस चन्द्रमा को पापी ग्रह न देखते हों और शुभ ग्रह देखते हों, तो आठ वर्ष तक जीवित रहता है। पापी ग्रह और शुभ ग्रह दोनों देखते हों तो चार वर्ष जीता रहता है। शुभ या पापी ग्रह कोई नहीं देखता हो तो यह योग नहीं होता। शुभ ग्रह से युक्त और शुभ क्षेत्र से छठे स्थान में चन्द्रमा हो तो मृत्यु को नहीं देता। कृष्ण पक्ष में जिनका जन्म हो, शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो और छठे आठवें स्थान में शुभ व पापी ग्रह से दृष्ट हो तो शुभ ग्रह का देने वाला नहीं होता। छठे आठवें स्थान में भी मृत्यु हो इनका बलवान पापी ग्रह देखते हों तो उत्पन्न हुआ बालक महीना-भर जीता है।

## माता-पिता का अरिष्ट योग

पिता के लिए सूर्य तथा दशम स्थान से और माता के लिए चन्द्रमा तथा चतुर्थ स्थान से विचार करना चाहिए। यदि बालक की जन्म कुण्डली में सूर्य के साथ अथवा दशम स्थान में पापी ग्रह बैठे हों या देखते हों या सूर्य पाप ग्रहों के मध्य में पड़ा हो तो उस बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिए। यदि सूर्य से ४।६।८ स्थान में पापी ग्रह हों, शुभ कोई भी न हो, शुभ नवांश में स्थित शुभ ग्रहों करके देखे जा सकते हों, तो भी पिता को कष्ट जानें।

इसी प्रकार चन्द्रमा तथा चतुर्थ भाव से माता का विचार करें। चन्द्रमा के साथ २।१२वें स्थान व ४।६।८ स्थान में पापी ग्रह हों, शुभ न हो तो माता को कष्ट जानें।

● **अरिष्ट भंग योग**—यदि बलवान गुरु लग्न में विराजमान हुआ अनेक प्रकार के अरिष्टों को दूर करता है। लग्नपति अति बलवान केन्द्र स्थित शुभ ग्रहों करके देखा हुआ दीर्घ आयु देता है। ग्रहों की वर्गों में स्थिति हो तो वे अरिष्टों को दूर करते हैं।

● **नेत्र विकार योग**—तनु १ धन २ व्यय १२ पति युत भृगु आइ बसे त्रिक ३।८।१२ धाम। राशीश धन २ रवि युत होहि नेत्र की हानि॥ शुक्र सूर्य तनुनाथ युत जाइ बसे त्रिकधाम। जन्म अन्ध का योग है भाषत बुध गुण ग्राम॥ मात, तात, भ्रात, पुत्र वामि नारि ग्रह नाथ। सूर्य युत शुक्रत्रिक धाम बसे तिन के नेत्र नहीं माथ॥ चन्द्र भौम जो द्वादश वाम नेत्र की हानि। भौम राहु दाहिनी नयन बुधजन कहत बखान॥

● **मूक योग**—छठे घर का स्वामी बुध के साथ लग्न में बैठा हो तो जबान तोतली या गूंगा होता है। चन्द्रमा लग्न में हो और छठे घर का राशि मिथुन या कन्या हो अथवा दूसरे घर का स्वामी बृहस्पति के साथ ६।८वें या १२वें घर में हो, अथवा शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा मंगल के साथ लग्न में हो, तो तोतली जबान और गूंगा होता है।

● **ऋणी मनुष्य का योग**—धन स्थान में पापी ग्रह हो, लग्नेश द्वादश स्थान में स्थित हो और नवमेश लाभेश से दृष्ट व युक्त हो तो जातक ऋणी होता है।

● धनेश अन्तर्गत नीच राशि गत हो, धन व अष्टम भाव पापयुक्त रहे तो जातक ऋण से दबा रहे।

● लाभेश की राशि जिस नवांशक में हो उसका स्वामी दुष्ट भाव में पापयुक्त हो तथा क्रूर षष्ठांग में हो तो मनुष्य ऋणग्रस्त होता है।

● **सन्यास योग**—लग्नेश पर केवल शनि की दृष्टि हो अन्य की नहीं, अथवा शनि को लग्नेश देखे और लग्नेश शनि देखें, बल रहित हो तो संन्यास योग होता है।

**बालारिष्ट योग**—जन्म लग्न से ६-८-१२ स्थान में स्थिर चन्द्रमा को यदि क्रूर ग्रह देखते हों तो वह बालक अल्पायु जानना। यदि पूर्वोक्त चन्द्रमा को शुभ ग्रह देखते हों तो बालक की आयु ८ वर्ष की जानना। शनि अथवा शुभ ग्रह ६-८-१२ इन स्थानों में हों वह वक्री तथा क्रूर ग्रहों से देखे भी जाते हों व लग्न में कोई शुभ ग्रह नहीं हो,

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

तो बालक की आयु एक मास का जानो। जिसके लग्न से पाँचवें स्थान में सूर्य, मंगल और शनि ग्रह तीनों पड़े हों तो उस बालक की माता सहित मृत्यु जानना तथा भाई को हानि हो। जिनके सप्तम स्थान में शनि छठें चन्द्रमा और सातवें स्थान में मंगल हो उस बालक की माता सहित मृत्यु जानना। जिसके लग्न में शनि हो चन्द्रमा आठवें हों, बृहस्पति तीसरे हों उस बालक की शीघ्र मृत्यु जानना। जन्म लग्न का बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह शुभ फल करने वाला नहीं होता परन्तु सूर्य चन्द्रमा शुक्र और राहु यह विशेष करके कष्ट कारक जानने तथा इनकी दृष्टि भी शुभ नहीं है। जिसके जन्म लग्न से बारहवें, आठवें तथा दूसरे क्रूर ग्रह पड़े हों तथा लग्न क्रूर ग्रहों के बीच में हो तो बालक की शीघ्र ही मृत्यु जानना।

छठे, आठवें तथा जन्म लग्न में बुध हो तो चौथे वर्ष बालक की मृत्यु हो। मंगल के घर में बृहस्पति और छटे आठवें चन्द्रमा हो तो आठवें वर्ष बालक की मृत्यु हो, जन्म लग्न के दशवें राहु तथा जन्म में राहु हो तो सोलहवें वर्ष में बालक की मृत्यु हो, जिसके लग्न या अष्टम स्थान में चन्द्रमा सहित राहु हो तो उस बालक की दस दिन में मृत्यु होती है।

● **अरिष्ट भंग योग**—बुध, बृहस्पति, शुक्र इनमें से एक भी ग्रह केन्द्र (१।४।७।१०) में हो, बलवान होकर केवल यदि बृहस्पति ही लग्न में हो। बली होकर बैठा हो लग्न का स्वामी यदि केन्द्र में हो। शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो तथा लग्न शुभ ग्रहों से देखा जाता हो, इसी प्रकार कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और पूर्ववत् लग्न शुभ ग्रहों से दृष्ट हो इन पाँच योगों में से एक भी योग पड़ जावे तो ऊपर दिये हुये अरिष्टों को भंग करने वाला योग जानना।

● **माता-पिता अरिष्टम्**—हर एक पुरुष के लिए सूर्य से पिता का विचार और चन्द्रमा से माता का विचार करना चाहिये। अतएव जिस बालक की जन्म कुण्डली में सूर्य के साथ पापी ग्रह बैठे हों अथवा देखते हों या सूर्य पापी ग्रहों के बीच में पड़ा हो तो उस बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिये। इसी प्रकार सूर्य से ४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हो तो भी पिता को कष्ट जानना। इसी प्रकार चन्द्रमा के साथ २।४।२ स्थान में शुभ न हो तो माता को कष्ट जानना।

● **त्रिखलजन्मफलम्**—तीन पुत्रों के बाद कन्या हो या तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्र हो तो त्रिखल नामक दोष होता है। इससे माता को अरिष्ट, महाभय, धन-हानि आदि होवे। शांत अर्थ त्रिखल शांति करे।

● **पितृपरोक्षज्ञानम्**—बालक के जन्म समय पिता घर में था कि नहीं? इसका विचार इस प्रकार से करना चाहिये कि जन्म कुण्डली में लग्न को यदि चन्द्रमा नहीं देखता हो तो बालक के जन्म के समय उसका पिता घर में नहीं था, ऐसा कहना। इसमें इतना कथन विशेष है कि यदि सूर्य जन्म लग्न में अष्टम, नवम, एकादश तथा द्वादश स्थान में चन्द्रमा राशि का होकर पड़ा हो तो पिता बालक के जन्म के समय दूसरे देश में था, परन्तु घर में नहीं था। इसी प्रकार सूर्य के द्विस्वभाव में होने पर मार्ग में कहे। परन्तु इन सब योगों में लग्न को चन्द्रमा देखता हो तो पिता घर में ही था, ऐसा जानना चाहिये। जन्म समय शनि लग्न का हो अथवा मंगल सातवें स्थान में हो और दूसरा द्वितीय स्थान में पड़ा हो, तो भी पिता के परोक्ष में बालक जन्म जानना, परन्तु यह चन्द्रमा का बुध शुक्र के बीच में दोनों अंशों का योग भी जान लेना जैसे बुध की स्पष्टी पाँच अंश हो, चन्द्रमा की दश अंश की शुक्र की पन्द्रह अंश हो, और तीनों एक ही राशि में बैठे हों तो पूर्वोक्त योग जानना।

● **मूक योग**—तीसरे स्थान में शुक्र हो, सिंह या मेष के गुरु हों १० वें सूर्य या मंगल हो तो वह बालक मूक होता है।

● **वर-कन्या मिलाप**—कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक गिनें, वैसे ही वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनें। जोड़कर ९ का भाग देवें। जो ३-५-७ आवें तो अवश्य है बाकी शत्रु जानें।

● **स्त्री जातक विचार**—जिस स्त्री के लग्न या सातवें स्थान में पाप ग्रह हों तो उस स्त्री का पति सात वर्ष में मर जावे और चन्द्रमा छठे आठवें हो तो आठ वर्ष में मरे। लग्न से पाँचवें सूर्य हो तो उस स्त्री के एक ही बालक हो और मंगल पाँचवें हो तो तीन पुत्र हों और बृहस्पति पाँचवें हो तो पाँच पुत्र हों। जिस स्त्री के पाँचवे चन्द्रमा हो तो २ कन्या हों और बुध पाँचवें हो तो चार कन्या हों तथा शुक्र पाँचवें हो तो सात कन्या हो। जिस स्त्री के नवें शुक्र हो तो छः कन्यायें तथा सातवें राहु हो तो एक पुत्र हो। गुरु या शुक्र छठे आठवें हों तो उसके बालक न जियें। मंगल छठे आठवें स्थान में हो तो गर्भ में ही बालक नष्ट हो जाये। जिस कन्या के लग्न में पाप ग्रहों के बीच में चन्द्रमा हो तो वह कन्या पिता और ससुर दोनों के कुलों का नाश करे। सातवें शुक्र हो तो कुल दोष करने वाली हो तथा कर्क राशि में मंगल हो तो इच्छापूर्वक घर वर में घमे।

जिस कन्या का कर्क लग्न में जन्म हो, सातवें सूरज हो और लग्न पर बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि हो तो वह स्त्री विद्यावती हो तथा रानी हो, पुत्र-पौत्र बहुत हों।

स्त्री के सप्तम भाव में किसी ग्रह की दृष्टि या कोई ग्रह नहीं हो तो उसका पति उसका (अकिंचन) होता है। यदि बुध वा शनि को राशि सप्तम भाव हो तो उसका पति नपुन्सक होता है। यदि सप्तम द्विस्वभाव राशि हो तो उसका पति विदेश वासी होता है। यदि द्विस्वभाव राशि हो तो घर और विदेश दोनों स्थान में रहने वाला अर्थात् स्थिर राशि, सप्तम भाव हो तो उसका पति सदा पास में रहता है।

● **राज योग**—नवे स्थान का स्वामी दसवें हो और दसवें स्थान का स्वामी नवें हो तो राज योग होता है।

● **नेत्र नाश योग**—(१) शनि, मंगल, सूर्य, चन्द्रमा ८।६।२ अथवा १२वें हों तो अन्ध योग जानना। (२) पापयुक्त मंगल लग्न में होने से भी अन्ध योग होता है। (३) मंगल व चन्द्रमा १२वें हों तो बायां नेत्र और यदि सूर्य व राहु १२वें हों तो दाएं नेत्र का विनाश हो।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

● पितृ-नाश योग—(१) यदि सूर्य के दसवें पापी ग्रह हों या दशमेश पापयुक्त हो तो बालक का पिता महान कष्ट पावे अथवा मर जावे। (२) सूर्य से ७वें मंगल या शनि हो तो पिता को कष्ट हो। (३) मंगल व शनि के मध्य में सूर्य हो यानी लग्न में चन्द्रमा ६वें और मंगल ७वें हो तो बालक का पिता न जीवे। (४) चौथा व दसवां स्थान पाप ग्रहों से युक्त हो तो पिता का अनिष्ट हो। (५) दसवें मंगल शत्रु राशि का हो तो पिता की मृत्यु हो जावे, शत्रु स्थिर राहु व गुरु हो अथवा १, २ हों तो 23वें वर्ष में पिता का नाश हो। (६) लग्न में शनि, सातवें मंगल हो और चन्द्रमा बुध व शुक्र के मध्य होकर लग्न को न देखे तो जन्म से पूर्व ही पिता की मृत्यु हो जावे।

● मातृ-नाश योग—(१) चन्द्रमा से सातवें मंगल या शनि हो तो माता रोग से पीड़ित हो (२) मंगल व शनि के मध्य में चन्द्रमा हो तो माता की मृत्यु हो, (३) छठे या बारहवें पापग्रह हो तो माता का अरिष्ट हो, (४) क्षीणता बलहीन चन्द्रमा से ४ या ११वें पाप ग्रह हो तो माता की मृत्यु हो जावे।

● गर्भ योग—वर्ष कुण्डली में लग्नेश पाँचवें या सातवें पड़ा हो और पंचमेश या सप्तमेश लग्न में पड़ा हो तो उस वर्ष गर्भ योग होता है। शुभ ग्रह पाँचवें हो और पंचमेश देखता हो तो गर्भ योग होता है। गुरु की राशि में चन्द्रमा हो और मंगल शुभ राशि में हो या शुक्र की राशि में स्थित हो और शुक्र अपनी राशि में बैठा हो तो भी गर्भ योग होता है।

● मामा नाश योग—बुध से छठे पाप ग्रह, पापांतस्थ व पाप युक्त तथा बलहीन नीच राशि देवांश के में हो तो मामा का नाश हो।

● भ्रष्ट नाश योग—(१) तीसरे स्थान में सूर्य बड़े भाई को, शनि छोटे भाई को और मंगल छोटे बालकों का नाश करता है (२) मंगल और तीसरे पापी ग्रह हों तो भाइयों का सुख दूर हो।

● उच्च योग—शुक्र बुध मूर्ति में बृहस्पति १।४।७।१०वें हों तथा जिसके दसवें मंगल हो तो उच्च योग जानना (२) मंगल, सिंह राशि में चन्द्रमा ५वें और राहु १२वें हो तो बालक दीपक समान जानना, (३) लग्न से या ७वें मंगल, ५वें सूर्य और बारहवें राहु हो तो बालक बहुत प्रसिद्ध हो, (४) तीन ग्रह उच्च के हों तो राजा, अपने घर के हों तो मन्त्री जरूर हो।

● नीच योग—(१) जन्म लग्न से ४वें और ७वें शनि हो तो बालक म्लेच्छ हो, (२) जिसके जन्म काल में शुक्र व बुध न हो, केन्द्र में गुरु न हो, १०वें मंगल न हो तो इस बालक का जीना निरर्थक जानना, (३) जो जन्म-पत्र में तीन ग्रह नीच के हों तो दास, तीन अस्त के हों तो मूर्ख हो, (४) सूर्य और चन्द्रमा ७वें शनि से दृष्ट हो तो नीच काम करे।

## ● यात्रा समय शकुन विचार ●

स्वान दाहिने पाँव से, खने खाज निज शीस।
राज्य लाभ अरु उदरसुख, कण्ठ गुदा धन दीस॥
हृदय कण्ठ आदर अधिक, नाम महा सुखकार।
पीठ सुहावन लाभ है, ठोड़ी सुयश अपार॥
जो इन अंगन स्वान, खने अंग पद बाम सौं।
तो फल अशुभ बखान, काज न कीजै अपशकुन॥
गवन समय जो स्वान निज, फरफराय दे कान।
महाअशुभ हो कार्य को, शकुन शास्त्र परिमान॥
स्वान धुने जो अंग, अथवा लोटे भूमि पर।
तो निज कारजभंग, अति ही कुशकुन जानिये॥
रासभ महिषी रन चढ़यो, मिलै लड़त्त कंजार।
स्वान महिषि मानव लड़े, एव अशुभ विचार॥
एक शूद्र दो वैश्य असारा, तीन विप्र अरु क्षत्री चारा।
नौ नारी जो सनमुख आवै, तो मति चलिये शकुन बतावै॥
जो कहूँ नकुन दरशसा पावै, होय काज संपति मिल जावै।
सब विधि कुशल आव घर नीके, सबै मनोरथ पूजै जीके॥
वाम मार्ग से चकवा चारी, सब शकुनत ते है यह भारी।
औरहु शकुन कहौं सुखकारी, चित दै सुनहु बुद्धि बरबारी॥
गमन समय जो दाहिने, देख परै कहुँ काग।
धन गण की रति बहु मिले, बड़े बहुत सी साख॥
क्षेमकरो जो बोलई, चलती बार सुबोल।
तो शुभ जानों ही पिया, होती काज अमोल॥
गमन समय को औरहु भ्राता, शकुन सुहावन है सुखदाता।
सहज वायु सुखन की मूला, बहै त्रिविध सब विधि अनुकूला॥
लिए सुहागिन सुवन उछंगा, कै घट भरै होय जल गंगा।
यहि विधि मिलै सो आवत आगे, मनहु मनोरथ सोवत जागे॥
कोकिल दीखे शुभ तरु बैठे, मानहु काज भयो घर बैठे।
दधि मछली जो आगे आवै, इन शकुनन कोई न पावै॥
पोथी लिए विप्र दो मिल हों, तो मन कारज भयो जानहीं।
औरहु शकुन सुनहु शुभकारी, दर्शन लवा होत शुभ भारी॥
सनमुख धेनु पिलावे बाछा, यहि ते शकुन कहो का आछा।
मृगमाला गह दाहिने, होकर कढ़े तुरन्त।
धन गण भूमि बहु मिले आदर करै महन्त॥
इक बकरी पुनि इक वृषभ, पाँच भैंस षट् स्वान।
तीन धेनु गज चार तजु करहि निर्पध पयान॥

अगर यात्रा के समय में ठोकर लग जावे, कपड़ा पीछे से किवाड़ आदि मे फँस जावे तो यात्रा न करे।

● दुःख शकुन परिहार—पहले कोई दुःशकुन हो तो स्थिर होकर ११ साँस लेकर चले। दूसरी बार फिर दुःशकुन हो तो सोलह साँसें लेकर चले तीसरी बार दुःशकुन हो तो कभी यात्रा न करे, लौट आये।

● वेदान्ती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार दिल्ली-6 ●

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# नष्ट जन्म-पत्रिका शुद्धि

प्राय: देखने में आता है कि जन्मपत्रिकायें उपर से खण्डित हो जाती हैं। ऐसी अवस्था में जन्म-पत्रिका का सम्वत्, मास, तिथि, वार, नक्षत्र आदि तथा जन्म समय का पता नहीं चल पाता। जिसके अभाव में फलादेश के वर्णन में बड़ी कठिनाई होती है। इस प्रकार की नष्ट जन्म पत्रिका का पुनरुद्धार करने के लिये यहाँ कुछ रीतियाँ दी जा रही हैं। जो प्रत्येक ज्योतिषी, विद्वान एवं ज्योतिष में रुचि रखने वाले व्यक्ति के लिये लाभकारी सिद्ध होंगी, ऐसी आशा है।

**1. जन्म-कुण्डली का संवत् जानना—**

जन्मांक चैक स्थित मंद राशेः,
संप्राप्त सम्वत्सर मंद राशिम्।
गणयेच्च सार्धद्वयं वत्सरे च,
गुण्यात्तदंकं गतवत्सरं स्यात् ॥1॥

भावार्थ—जन्म कुण्डली में जिस राशि का शनि हो उससे वर्तमान शनि जिस राशि पर हो, उस तक गिने। जो संख्या आवे उसे अढ़ाई गुणा करके जो संख्या आवे, वह गत वर्ष होंगे। सम्वत् में से घटाने पर जन्म सम्वत् प्राप्त होगा।

**2. कुण्डली का मास-जानना—**

वैशाख स्याद् प्रथमे मेषे, यावद्भानुश्च गण्यते।
तावन्मासे भवेज्जन्म, गर्गस्य वचनं यथा ॥2॥

भावार्थ—मेष का सूर्य हो तो वैशाख मास का जन्म। वृष का सूर्य हो तो ज्येष्ठ का, मिथुन के सूर्य में आषाढ़ मास समझें। इसी क्रम से जिस राशि का सूर्य हो, वैशाख आदि क्रम से जन्म का मास समझें।

**3. कुण्डली का पक्ष जानना**

तथैव सूर्याद् गण्येच्च चन्द्रम्, चेज्जायते सप्तमराशिवर्ती।
तदा भवेज्जन्मनि शुक्ल पक्षे, ह्यत: परस्तात्प्रवदेच्च कृष्णम्3

भावार्थ—जिस राशि पर सूर्य हो यदि उससे 7 राशियों के अन्तर्गत चन्द्रमा हो तो शुक्ल पक्ष का जन्म होता है। यदि चन्द्रमा सात से 12 राशि के अन्तर्गत हो तो जन्म कृष्ण पक्ष का समझ।

**4. जन्म-कुण्डली की तिथि का ज्ञान—**

यत्र भानु स्थितस्तत्र चन्द्रो यावच्च गण्यते।
सार्द्धद्वयसमाख्यातं, तिथिज्ञानं मनीषिभिः ॥4॥

भावार्थ—जिस राशि मे सूर्य हो वहाँ से चन्द्र राशि तक गिने जितने स्थान हों उसे अढाई गुणा करने पर तिथि प्राप्त होगी।

**5. कुण्डली में दिन और रात्रि का ज्ञान—**

कुण्डली में सूर्य से छः राशि पर्यन्त लग्न हो तो दिन का जन्म, सप्तम राशि लग्न हो तो सायंकाल, सात से 12 राशि के अन्तर्गत लग्न हो तो रात्रि का जन्म समझें। दसवें राशिगत लग्न हो तो अर्धरात्रि का जन्म होता है।

**6. कुण्डली के वार का ज्ञान—**

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से मास गिन कर बीते पक्ष के दिन गिन कर जोड़ें। सात का भाग दें। जो शेष बचे उसे राजा से गिन कर वार जानें।

**7. कुण्डली के योग का ज्ञान—**

पुष्य नक्षत्र से सूर्य के नक्षत्र तक गिनें। श्रवण से दिन के नक्षत्र तक गिनें। दोनों को जोड़कर 27 का भाग दें। जो शेष बचे उसे विष्कुम्भादि से योग प्राप्त कर लें।

**8. जन्मपत्री स्त्री की है या पुरुष की ?**

जन्म-कुण्डली में लग्न को छोड़कर विषम स्थान पर शनि बैठा हो एवं पुरुष ग्रह बलवान हों तो पुरुष की कुण्डली समझें। विपरीत अवस्था में स्त्री की कुण्डली समझें।


## घर बैठे अनपसन्द पुस्तकें वी० पी० पी० द्वारा मंगायें

● **ज्योतिष विज्ञान** (ले०—विशुद्धानन्द) मूल्य 24.00

ज्योतिष विज्ञान के सम्बन्ध में हर प्रकार की जानकारी देने वाली अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है। इसके अध्ययन द्वारा आप घर बैठे ही ज्योतिषी बन सकते हैं।

● **आपका भविष्य** (ले०—राजेश दीक्षित) मूल्य 24-00

अंग्रेजी जन्म तिथि अथवा जन्म-करण और भारतीय राशियों के आधार पर प्रत्येक स्त्री-पुरुष के जीवन-भर में समय-समय पर घटने वाली घटनायें तथा उनका भाव, चरित्र, स्वभाव, रुचि, अन्य राशि वाले स्त्री-पुरुषों के साथ शत्रुता या मित्रता, विवाह भाग्योदय, बीमारी आदि का विस्तृत वर्णन इस पुस्तक में पढ़ें।

● **सरल ज्योतिष शास्त्र** (ले०—राजेश दीक्षित) मू० 15.00

ज्योतिष विद्या का घर बैठे सरलतापूर्वक ज्ञान कराने वाली यह उपयोगी पुस्तक घर में रहने योग्य है। इसे पढ़कर आप सफल ज्योतिषी बन सकते हैं।

● **शकुन ज्योतिष शास्त्र** (ले०—राजेश दीक्षित) मू० 24-00

यात्रा अथवा अन्य अवसरों पर घटनेवाले शुभ-अशुभ शकुन मानव-जीवन पर किस प्रकार अपना भला-बुरा प्रभाव डालते हैं, यह विस्तृत जानकारी इस पुस्तक में दी गई है। यह हिन्दी में अपने विषय का सर्वोत्तम ग्रन्थ है।

## आयु-निर्णय

पति-पत्नी व कुटुम्ब में किस की कितनी आयु होगी, इसका उत्तर जन्म-कुण्डली के आधार पर निर्णय करने के लिए इस पुस्तक को अवश्य पढ़िये। मूल्य 24-00

**देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6**

## पुस्तक सिद्ध बीसा यन्त्र

प्रत्येक व्यापारी तथा गृहस्थी को इस पुस्तक का अध्ययन अवश्य करना चाहिए तथा पुस्तक में लिखी विधि से इस यन्त्र को अपने घर तथा दुकान में काढ़ कर यथेष्ट लाभ उठाना चाहिए। इस पुस्तक में बीसा यन्त्र के अतिरिक्त बिच्छू, सर्प आदि के विषनाशक यन्त्र, पन्द्रह के यन्त्र तथा अन्य अनेक चमत्कारी यन्त्रों का भी वर्णन किया गया है। मू० 21 रुपये (पं० जवलाल)


CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

# ज्योतिषियों के लिए ज्ञातव्य

## स्त्री पुरुष में किसकी कुण्डली है

स्त्री और पुरुष में से किस की कुण्डली है—यह जानने के लिए निम्नलिखित नियम हैं—

※ यदि लग्न से सम में शनि हो तो स्त्री की और विषम शनि हो तो पुरुष की कुण्डली समझनी चाहिए।

※ यदि लग्न का अंक तथा सूर्य, मंगल और राहु जिस राशि में हों—इन तीनों अंक जोड़कर तथा जोड़ में से 1 घटाकर 3 का भाग दें। यदि 2 शेष बचे तो स्त्री की जन्म पत्र हैं और यदि 1 अथवा 0 (शून्य) शेष बचे तो पुरुष की जन्म पत्र है—यह समझना चाहिए।

※ यदि लग्न गुरु, चन्द्रमा और सूर्य विषम राशि के विषम नवांश मेंहों तो पुरुष की कुण्डली है और यदि सम राशि के सम नवांश में हों तो स्त्री की कुण्डली समझनी चाहिए।

## मूल तथा अश्लेषा नक्षत्र के जन्म पाद का फल

※ यदि मूल नक्षत्र के प्रथम चरण में पुत्र का जन्म हो तो वह पिता का, दूसरे चरण में हो तो माता का तथा तीसरे चरण में हो तो धन का नाश करता है। चौथे चरण में हो तो शान्ति करने से शुभ होता है।

※ यदि आश्विनी तथा मघा नक्षत्र में जन्म हो तो भी उक्त फल ही समझना चाहिए।

※ अश्लेषा के चौथे चरण में जन्म हो तो पिता का, तीसरे में हो तो माता का तथा दूसरे में हो तो धन का नाश होता है। प्रथम चरण में जन्म होने पर, शान्ति कराने से शुभ फल होता हैं।

※ रेवती तथा ज्येष्ठ नक्षत्र में जन्म हो तो भी उक्त नियम ही लागू होगा।

※ कन्या का जन्म होने पर, उक्त फल कन्या की ससुराल पर इसी क्रम से लागू होता है। अर्थात् कन्या के लिये पिता के स्थान पर स्वसुर तथा माता के स्थान पर सास समझनी चाहिए।

## वैधक योग

जन्म कुण्डली में यदि—1-लग्न अथवा चन्द्र मा से लग्न, सप्तम अथवा अष्टम भाव में मंगल, शनि, राहु अथवा सूर्य हों तो वैधक योग होता है

2-मंगल से अष्ठम अथवा द्वादश भाव में सूर्य पाप ग्रह से युक्त मंगल हो तो वैधक योग होता है।

3-लग्न से सप्तम, द्वितीय अथवा अष्टम भाव में पाप ग्रह से युक्त मंगल हो तो वैधक योग माना गया है।

# देव प्रतिमा के सम्बन्ध में ज्ञातव्य

## शिव-निर्माल्य के सम्बन्ध में विचार

शिवजी पर चढ़ाये गये द्रव्य, अन्न, फल, जल आदि का स्पर्श भी नहीं करना चाहिए। शिव-निर्माल्य को लांघने से पाप होता है। उसे किसी कुएंमें डाल देना अच्छा है। जो व्यक्ति लोभ अथवा मोह के वशीभूत होकर एक कण भर भी शिव-निर्माल्य को ग्रहण करता है, वह कल्पान्त तक नरकवास करता है। केवल वाणलिंग (नर्मदेश्वर शिव-लिंग) का पर चढ़ाये गये जल, अन्न आदि को प्रसाद के रूप में ग्रहण किया जाता है। उसे ग्रहण करने में कोई दोष नहीं होता।

## देव-स्पर्श का अधिकार

1-स्त्रियों को स्पर्श, 2-जिसका यज्ञोपवीत न हुआ हो उन्हें तथा 3-शूद्रों को विष्णु अथवा शिव की मूर्ति का स्पर्श करने से नरक मिलता है। देवी तथा गणेश आदि देवताओं को स्पर्श करने में किसी को दोष नहीं लगता।

### गृहस्थों के लिए देव-प्रतिमा सम्बन्धी विचार

गृहस्थों को स्वर्ण, रौप्य (चांदी), ताम्र (तांबा), रत्न, शिला (पत्थर), काष्ठ (लकड़ी) अथवा पंचधातु निर्मित देव-प्रतिमा एक अंगुल से एक बलिश्त (पितस्ति) तक के आकार की ही बनवानी चाहिए। इससे अधिक बड़े आकार की मूर्ति गृहस्थों को घर में रखनी शुभ नहीं होती।

## घर बैठे विभिन्न भाषाएँ लिखिए

निम्नलिखित पुस्तकों की सहायता से आप तथा आपके बच्चे घर बैठे ही विभिन्न भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं—

1-माडर्न प्रेक्टीकल हिन्दी इंगलिस टीचर 25/रु०
2-कम्पलीट हिन्दी इंगलिश टीचर 10.00रु०
3-लेटेस्ट स्टैण्डर्ड हिन्दी इंगलिश टीचर 12.50 रु०
5-लेटेस्ट हिन्दी इंगलिश लेटर राइटिंग 10 रु०
6-हिन्दी मराठी टीचर 10-00रु०
7-हिन्दी बंगला टीचर 10.00रु०
8-हिन्दी गुजराती टीचर 10.00रु०
9-हिन्दी उर्दू टीचर 6.00 रु०
10-महाजनी सार 5-00 रु०


CC-0 Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# गृहस्थों के जानने योग्य आवश्यक धार्मिक विषय

निम्नलिखित विषयों की जानकारी प्रत्येक सनातन मतावलम्बी हिन्दू के होनी आवश्यक है—

## पूजन सम्बन्धी

✱ एक ही घर में दो शिवलिंग, दो शालिग्राम दो सूर्य, दो चक्र, दो शंख, तीन गणेश तथा तीन शक्ति की पूजा चक्र साथ नहीं करनी चाहिए।

✱ शलिग्राम यदि दो से अधिक सम संख्या जैसे— 4, 6, 8, 10, 12 हों तो उनका पूजन किया जा सकता है। परन्तु विषय संख्या में हो तो पूजन निषिद्ध है।

✱ शिव-निर्माल्य का सेवन निषिद्ध है, परन्तु नर्मदेश्वर, ज्योतिर्लिंग, रसलिंग, रत्नलिंग सिद्ध प्रतिष्ठित लिंग तथा स्वयम्भू शिवलिंग का निर्माल्य ग्रहण किया जा सकता है। शिव-पंचायतन (शिव, पार्वती, गणेश, स्वामीकार्तिकेय एवं नन्दी) पूजा में भी प्रसाद ग्रहण किया जाता है।

✱ षष्ठी-पूजा में अशौच नहीं होता।

## मूर्ति खन्डित होने पर

यदि मूर्तिखण्डित हो जाय तो नियमानुसार कार्य करना चाहिए —

1-खण्डित मूर्ति यदि काष्टकी हो तो उसे अग्नि में समर्पित करदें, 2-यदि पत्थर की हो तो जल में प्रवाह करें और 3-यदि रत्न अथवा धातु की हो तो उसे अगाध जल में डुबा देना चाहिए।

जो मूर्ति खण्डित हो गई हो, उन खण्डित अंग को वस्त्र आदि से ढककर, मूर्तिको सवारी पर रखें। तत्पश्चात् उसे बाजे गाजे के साथ किसी शुद्ध जल वाले जलाशय तक ले जाकर जल में डुबा दें तथा अपने गुरु को दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करें।

जिस परिमाण की मूर्ति खण्डित हुई हो, उसी परिमाण की दूसरी मूर्ति तैयार करके, पहली मूर्ति वाले खाली स्थान पर यथा विधि प्रतिष्ठित करनी चाहिए।

## गायत्री अनुष्ठान

पुरातन काल में गायत्री मन्त्र का एक लाख की संख्या में नियम पूर्वक जप करने से ही द्विजमात्र को अपूर्व शक्ति का लाभ होता था, परन्तु कलि-युग में पुरश्चरण के लिए चार लाख की संख्या में मन्त्र-जप करना आवश्यक है। गायत्री को एक बार ब्रह्मा ने, दूसरी वशिष्ठ ने तथा तीसरी बार विश्वा-मित्र ने श्राप भी दिया है, अतः इन तीनों के श्राप विमोचनार्थ तीन लाख की संख्या में अतिरिक्त जप कराना भी आवश्यक है। इसी प्रकार कुल मिलाकर सात लाख की संख्या में गायत्री मन्त्र का जप करने के बाद ही पुरश्चरण सिद्ध होता है।

## गया-श्राद्ध में विचार

✱ यदि पिता जीवित हो तो कोई श्राद्ध करने का अधिकार नहीं है। यदि पिता जीवित रहते हुए पुत्र गया-क्षेत्र में पहुंचा हो तो वह मातृ-तर्पण कर सकता है।

✱ गया-श्राद्ध करने के लिए स्व-ग्राम की उपस्थिति ही आवश्यक नहीं है। वह विदेश से भी हो सकता है।

✱ विभक्ति अथवा अविभक्त सम्पत्ति में बड़े भाई द्वारा गया श्राद्ध करने पर भी उसके छोटे भाईयों को गया-श्राद्ध करने का अधिकार है। मंझला भाई भी गया-श्राद्ध स्वं तर्पण आदि करता है।

## श्राद्ध सम्बन्धी अन्य नियम

✱ श्राद्ध के दिन नित्य तर्पण तथा तिल त्याज्य है। श्राद्धांग तर्पण ही करना चाहिए।

✱ लौहपात्र में श्राद्धदान वर्जित है।

✱ औरस पुत्र, पौत्र, पौत्र का पुत्र, दत्तक पुत्र, नप्ता, भाई, भतीजा, पिता, माता, बहिन, भानजा, तथा सपिण्ड सोदक—ये सब क्रमशः श्राद्ध के अधिकारी हैं।

✱ मलमास में भी तीर्थ श्राद्ध होता है।

✱ सलामी का श्राद्ध द्वादशी तिथि को होता है।

✱ श्राद्ध सम्बन्धी भोजन एकादशी तिथि को करना निषिद्ध नहीं है।

✱ श्राद्ध करने वाले को ताम्बुल का सेवन नहीं करना चाहिए।

✱ श्राद्ध के लिए पिण्ड का निर्माण श्राद्धकर्ता की पत्नी को करना चाहिए।

✱ जिसका कर्णवेध न हुआ हो, उसे श्राद्ध का अधिकारी नहीं माना गया है।

✱ भाद्रपद मास की पूर्णिमा के अतिरिक्त शेष सभी पूर्णिमाओं में श्राद्ध करना निषिद्ध है।

✱ गर्भिणी स्त्री के पति को मुण्डन, पिण्डदान, प्रेतकर्म, समुद्र-स्नान, नख-केश-कर्तन, उपनयन, नौका रोहण, शवानुगमन तथा अतिदूर गमन—ये सभी त्याज्य कहे हैं।

✱ जिसकी श्राद्ध तिथि का ठीक पता न हो, उसका श्राद्ध श्राद्ध-पक्ष की अमावस्या को किया जा सकता है।

देहाती पुस्तक भंडार (REGD.) चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006. फोन : 261030

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# योग तथा करण और उनसे सम्बन्धित विषय

## योगों के विषय में ज्ञातव्य

प्रत्येक पंचांग में किस तिथि को कौन सा योग कितने घड़ी-पल तक रहेगा, इसका उल्लेख रहता है। इस जंत्री में भी योगों का उल्लेख है। जंत्री तथा पंचांग में योगों के नाम 'आदि' अक्षर मात्र दिया रहता है। उनके पूरे नामों की जानकारी नियमानुसार प्राप्त कर लेनी चाहिए।

योगों की कुल संख्या 27 हैं, जिनकी क्रमशः पुनरावृत्ति होती रहती है।

1. विष्कम्भ।
2. प्रीति।
3. आयुष्मान्।
4. सौभाग्य।
5. शोभन।
6. अतिगण्ड।
7. सुकर्मा।
8. धृति।
9. शूल।
10. गण्ड।
11. वृद्धि।
12. ध्रुव।
13. व्याघात।
14. हर्षण।
15. वज्र।
16. सिद्धि।
17. कतीपात।
18. वरीयान।
19. परिघ।
20. शिव।
21. सिद्ध।
22. साध्य।
23. शुभ।
24. शुक्ल।
25. ब्रह्म।
26. ऐन्द्र।
27. वैधृति।

### योगों में त्याज्य काल

शुभ कार्यों में योगों के निम्नलिखित भाग त्याज्य है—

1. परिघ योग का पहला आधा भाग।
2. विष्कम्भ योग की पहली 5 घटी।
3. गण्ड तथा व्याघात योग की पहली 6 घटी।
4. हर्षण तथा वज्र योग की पहली 9 घटी।
5. वैधृति तथा कतीपात योग पूर्णरूपेण त्याज्य है।

मतान्तर से—विष्कम्भ के 3 दण्ड, शूल के 5 दण्ड, गण्ड तथा अतिगण्ड के 7 दण्ड तथा व्याघात एवं वज्र योग के 9 दण्ड त्याज्य है। एक दण्ड 1 घटी के बराबर होता है।

## करण के विषय में ज्ञातव्य

तिथि के आधे भाग को 'करण' कहते हैं, अतः प्रत्येक तिथि में दो करण होते हैं। करणों की कुल संख्या 11 है, जिनकी क्रमशः पुनरावृत्ति होती रहती है। करणों के नाम यह हैं—

1. बव।
2. बालव।
3. कौलव।
4. तैतिल।
5. गर।
6. वणिज।
7. विष्टि।
8. शकुति।
9. चतुष्पद।
10. नाग।
11. किंस्तुघ्न।

इनमें पहले 7 कारण 'चर' संज्ञक तथा अन्तिम चार करण 'स्थिर' संज्ञक माने गये हैं।

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के अन्तिम अर्द्ध भाग में 'शकुति' नामक करण रहता है। फिर अमावस्या के पहले अर्द्ध भाग में 'चतुष्पद' तथा दूसरे अर्द्ध भाग में 'नाग' नामक करण रहते हैं। फिर शुक्लपक्ष की प्रतिपदा के के पहले अर्द्ध भाग में 'किंस्तुघ्न' तथा उसके बाद क्रमशः बव आदि अन्य करण आते हैं।

'विष्टि' करण का ही दूसरा नाम 'भद्रा' है। कृष्ण-पक्ष की पंचमी, सप्तमी तथा चतुर्दशी तिथि के पूर्वार्द्ध में 'विष्टि' करण (भद्रा) होता है तथा शुक्लपक्ष में चतुर्थी एवं एकादशी के पूर्वार्द्ध में तथा अष्टमी एवं पूर्णिमा के पूर्वार्द्ध में 'विष्टि' करण (भद्रा) होता है।

प्रत्येक पंचाग, तथा जन्त्री में भद्रा के आरंभ होने तथा समाप्त होने का समय दिया रहता है। भद्रा में किसी भी प्रकार का शुभ कार्य करना वर्जित कहा गया है।

तार के जलने से रौशनी होती है। बढ़िया मेकअप आपके चेहरे को रौशन करता है।

आधुनिक महिलाओं के लिए आवश्यक रूप से पठनीय

**माडर्न लेडीज एण्ड जेन्ट्स मेक अप गाइड**

(लेखिका : विशेष लक्ष्मी एम. ए., एल. टी.)

इस पुस्तक में सौन्दर्य प्रसाधन, केश-विन्यास, वस्त्र-धारण, वेषभूषा तथा आकर्षक मेकअप से सम्बन्धित आधुनिकतम जानकारी, वस्तुओं के नाम, विधि तथा उपयोग सहित बड़े विस्तार साथ के दी गई है। सैकड़ों चित्रों से युक्त हिन्दी भाषा में अपने विषय की यह सर्वोत्तम पुस्तक है। मूल्य :-सजिल्द पुस्तक 36/- डाक खर्च अलग

पाश्चात्य नृत्य के शौकीनों के लिए हिन्दी भाषा में पहली बार प्रकाशित पुस्तक

**बालरूम डांसिंग**

इस पुस्तक में बालरूम डांस की अनेक विधियों का बड़े विस्तार के साथ सरल भाषा में वर्णन पांव रखने के ढंग तथा साथी-युगल के चित्रों सहित दिया गया है। इस विषय पर यह हिन्दी की पहली तथा उत्तम पुस्तक है। माडर्न सोसाइटी, क्लबों तथा डांसिंग हालों में जाने वाले युवक-युवतियों के लिए अनिवार्य रूप से पठनीय है।

सजिल्द एवं सचित्र पुस्तक का मूल्य 15 रु. (डाक खर्च अलग)

**देहाती पुस्तक भंडार,** चौक बड़शाह बुल्ला, चावड़ी बाजार, दिल्ली ६


CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

# वर्षा एवं वायु सम्बन्धी विचार

## वर्षा के नक्षत्र

मेष संक्रान्ति लगने के बाद अश्विनी से 10 नक्षत्रों तक पर विचार करें। अश्विनी से जितनी संख्या के नक्षत्र में बादल दिखाई दें, आर्द्रा से उतनी ही संख्या के नक्षत्रों में अच्छी वर्षा होगी - यह समझना चाहिए।

यदि सूर्य तथा चन्द्रमा के नक्षत्र पर रहे तथा चन्द्रमा सूर्य के नक्षत्रों पर जाय तो उस दिन वर्षा होगी- यह कहना चाहिए। यदि सूर्य तथा चन्द्रमा दोनों ही सूर्य के नक्षत्रों में रहें तो वर्षा नहीं होती, परन्तु यदि दोनों ही चन्द्रमा के नक्षत्रों में रहें तो सामान्य वर्षा होती है।

सूर्य तथा चन्द्रमा के कौन २ से नक्षत्र होते हैं, इसे नियमानुसार समझना चाहिये।

1-सूर्य नक्षत्र—रोहिणी, मृगशिरा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा ज्येष्ठा, शतभिषा तथा उत्तराभाद्रपदा।

चन्द्र नक्षत्र—आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूर्वाभाद्रपदा, रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, अभिजित् तथा धनिष्ठा।

## वर्षा-योग

वर्षा काल में यदि 1-शुक्र से सप्तम भाव में चन्द्रमा शुभग्रह से दृष्टि हो, 2-शनि से चन्द्रमा पंचम, सप्तम अथवा नवम भाव में हो और शुभ ग्रह से दृष्ट हो। 3-यदि बुध तथा शुक्र समीपस्थ हों, 4-सूर्य के पहले अथवा पीछे शुभ ग्रह हों, 5-ग्रहों का उदयास्त हो, 6-ग्रहों का राश्यान्तर गमन हो, 7-ग्रहों की युति हो, 8-बुध शुक्र का उदयास्त हो अथवा 9-भौम का राशि संचार हो तो वर्षा होती है।

यदि बुध शुक्र के बीच में सूर्य आ जाय तो वर्षा का नाश हो सकता है।

सप्तनाड़ी चक्र द्वारा भी वर्षा के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की जाती है। इसे आगे लिखे अनुसार समझ लें।

## वर्षा-ज्ञानार्थ सप्त नाड़ी चक्र

| संख्या | चण्डा | वात | पलि | सौम्प | नीरा | जन्म | अमृत |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नाम नक्षत्र | कृ. | रो. | मृ | आ. | पुन | पुष्प | ऽ श्ले |
| | वि | स्वा | चि | ह. | उफा | पूफा | म. |
| | अनु | ज्ये. | मू | पूष. | उषा. | अभि. | श्र. |
| | भ. | अ, | रे. | उमा, | पूभा. | श. | ध. |
| स्वामी | शनि | रवि | भौम | गुरु | शुक्र | बुध | चन्द्र |
| संख्या | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |

टिप्पणी—उपर्युक्त चक्र में 7 भाग हैं। यदि किसी भाग के नक्षत्र में रवि, चन्द्र भौम (मंगल) हो जाय तो उनकी उपस्थिति तक अत्याधिक वर्षा होती है। यदि बुध, शुक्र, गुरु एक नाड़ी में हों और उसी में सूर्य भी हो तो वर्षा होती है। यदि उसी में चन्द्रमा भी आ जाय तो उक्त समय तक अधिक वर्षा होती है।

## आषाढ़ में वायु-परीक्षा

आषाढ़ की पूर्णिमा में प्रदोष के समय वायु बहने का फल नी लिखे अनुसार समझना चाहिए—

1-पूर्व में-श्रेष्ठ धायोत्पत्ति, अच्छी वर्षा।
2-आग्नेय-अत्यल्प धान्य, अनावृष्टि।
3-दक्षिण-प्रजापीड़ा, अल्पवृष्टि, अल्पधान्य।
4-नैर्ऋत्य-अनावृष्टि, दुर्भिक्ष।
5-पश्चिम-उत्तम धान्योत्पत्ति, महावृष्टि।
6-वायव्य-मध्यम धान्य, वायु की तीव्रता।
7-उत्तर-जन सुख, अधिक धान्य, अतिवृष्टि।
8-ईशान-उत्तम धान्य, उत्तम वृष्टि।


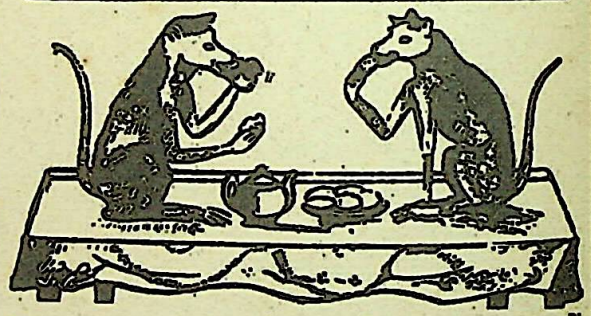

पाक-कला पर हमारे यहाँ से प्रकाशित अत्युत्तम पुस्तकें

1-वृहद पाक विज्ञान, मूल्य 18/-
2-कन्फैक्शनरी बनाना, मूल्य 10.00
3-बेकरी बहार, मूल्य 10.00 रु०
4-हलवाई मास्टर, मूल्य 10.00 रु०
5-कुकरी बुक, मूल्य 25.00 रु०
6-पाक भारती, मूल्य 24/- रु०
7-रसोई शिक्षा, मूल्य 10-00


CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# मन्त्रों द्वारा कामना सिद्धि



**1 पुत्र प्राप्ति के लिए—**

'ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा।' इस द्वादशाक्षर मंत्र का आम के वृक्ष पर बैठकर एकाग्र मन से जो एक वर्ष तक निरंतर जप करता है, उसको अवश्य ही पुत्र की प्राप्ति होती है, ऐसा भगवान् शंकर जी ने कहा है।

**2. पत्नी की प्राप्ति के लिये—**

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागस्य कुलोद्भवाम्॥ (दुर्गा सप्तशती)

इस मंत्र का सवा लाख जप स्वयं करने से शीघ्र पत्नी की प्राप्ति (विवाह) हो जाती है और 'पत्नी मनोरमां देहि०' इस मंत्र के सम्पुट से दुर्गा के 100 पाठ अर्थात् शतचण्डी कराने से शीघ्र विवाह हो जाता है।

स देवि नित्यं परितप्यमानस्त्वामेव सीतेत्यभिभाषमाणः।
दृढव्रतो राजसुतो महात्मा तवैव लाभाय कृतप्रयत्नः॥
(वाल्मीकीय रामायण, सुन्दरकाण्ड 36।46)

इस मंत्र का सवा लक्ष जप करने से और इसी मंत्र के सम्पुटित वाल्मीकीय रामायण के सुन्दरकाण्ड का कम से कम 9 पाठ स्वयं अथवा अन्य ब्राह्मण से कराने पर शीघ्र विवाह हो जाता है।

**3. वर प्राप्ति के लिये—**

'हे गौरि! शङ्करार्धाङ्गि! यथा त्वं शङ्करप्रिया।
तथा मां कुरु कल्याणि! कान्त कान्तां सुदुर्लभाम्॥'

भगवती पार्वतीजी का पूजन करके उपर्युक्त मंत्र का प्रतिदिन 5 माला जप करने से शीघ्र श्रेष्ठ पति की (वर को) प्राप्ति हो जाती है।

पार्वती जी का पूजन कर जो कन्या श्री रामचरित मानस के बालकाण्ड के 234 दोहे के बाद—'जय जय गिरिराज किशोरी' से 'मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे'—यहाँ तक 236 दोहे तक प्रतिदिन श्रद्धा-विश्वास पूर्वक पाठ करती है, उसका शीघ्र विवाह हो जाता है।

कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि।
नन्दगोपसुतं देवि पतिं मे कुरु ते नमः॥
(श्रीमद्भागवत 10।22।4)

कात्यायनि देवी अथवा पार्वती देवी की फोटो सामने रखकर जो कन्या उसका पूजन कर उपर्युक्त मंत्र का 1 माला जप प्रतिदिन करती है, उसका विवाह शीघ्र हो जाता है।

ॐ देवेन्द्राणि नमस्तुभ्यं देवेन्द्रप्रियभामिनि।
विवाहं भाग्यमारोग्यं शीघ्रलाभं च देहि मे॥

उपर्युक्त मंत्र का 108 बार कन्या को जप करना चाहिए। जप करने की विधि यह है कि—तुलसी के वृक्ष का पूजन करके उसके सामने तुलसी की माला पर 108 बार जप पूर्ण होने पर तुलसी के पेड़ की 12 बार परिक्रमा करनी चाहिए। प्रत्येक परिक्रमा में दुग्ध और जल से भगवान् सूर्यनारायण को अर्घ्य देते हुए 'ॐ देवेन्द्राणि नमस्तुभ्यम्' उपर्युक्त मंत्र को भी पढ़ना चाहिए। कन्या को चाहिए वह अपने दाहिने हाथ से दूध और बाएं हाथ से जल से अर्घ्य दे। दूध और जल से अर्घ्य एक साथ ही 12 बार देना चाहिए। जो कन्या उपर्युक्त विधि से जप और सूर्य को अर्घ्य प्रदान करती है, उसको बहुत शीघ्र वर की प्राप्ति हो जाती है।

ॐ शं शंकराय सफल जन्मार्जितपापविध्वंसनाय।
पुरुषार्थचतुष्टयलाभाय च पतिं मे देहि कुरु कुरु स्वाहा॥

उपर्युक्त मंत्र का जप तीन माला तुलसी की माला पर करने से कन्या का विवाह शीघ्र हो जाता है। जप की विधि यह है कि—भगवान् शंकर और अन्नपूर्णा की फोटो सामने रखकर उनका प्रतिदिन पूजन करके धूप बत्ती जलाकर जप करे। जप जहाँ किया जाय, वहाँ मिट्टी के गमले में अथवा टीन कनस्तर में केले के स्तम्भ को रखकर उसको मौली (नाला) से 9 अथवा 11 बार लपेट कर उस केले के वृक्ष की पूजा प्रतिदिन करनी चाहिए और जप के बाद केले के स्तम्भ की 4 बार अथवा 9 बार परिक्रमा करनी चाहिए। जो कन्या उपर्युक्त अनुष्ठान को प्रतिदिन करती है, उसका शीघ्र विवाह हो जाता है।

**4. ज्वर से मुक्त होने के लिए**

ॐ भस्मायुधाय विद्महे एकदंष्ट्राय धीमहि।
तन्नो ज्वरः प्रचोदयात्॥

इस मन्त्र का उत्पत्ति-संहारोत्पत्ति क्रम से 7 दिन तक जप स्वयं करने से अथवा 21 दिन तक दूसरे विद्वान् से जप कराने से सभी प्रकार का ज्वर ठीक हो जाता है।

दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि।
दिशो न जाने न लभे च शर्म प्रसीद देवेश जगन्निवास॥
(श्रीमद्भगवद्गीता 11/25)

सर्वप्रथम भगवान् श्रीकृष्ण का ध्यान और उनको नमस्कार करके जो मनुष्य उपर्युक्त मन्त्र का 108 बार जप करता है, यह ज्वर से मुक्त हो जाता है।

**5. लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए**

ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

इस मन्त्र से बाल्मीकीय रामायण के सुन्दरकाण्ड के प्रत्येक श्लोक से घी की आहुति अग्नि में देनी चाहिए। अनन्तर सर्ग की समाप्ति पर—

ॐ रामभद्र महेष्वास रघुवीर नृपोत्तम।
भो दशास्यान्तकास्माकं रक्षां देहि श्रियं च ते॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

इस मंत्र का पाठ करना चाहिए।

ॐ श्रीं श्रियै नमः मह्यं श्रियं देहि-देहि दापह-दापह स्वाहा।

इससे वाल्मीकि रामायण के सुन्दरकाण्ड के प्रत्येक श्लोक से घी की आहुति देनी चाहिए।

विधि—इस अनुष्ठान का प्रारम्भ दीपावली की रात्रि को दीपक जलाने के बाद करना चाहिए।

8 दिन तक प्रतिदिन सात सर्ग का और 9वें दिन बारह सर्ग का पाठ करके नौ दिन में पाठ पूरा करना चाहिए। अथवा प्रतिदिन सात, पाँच, तीन या एक सर्ग का पाठ करके अड़सठ दिनों में सुन्दर काण्ड का 7, 3 अथवा 1 पाठ पूर्ण करना चाहिए। ऐसा करने से लक्ष्मी की प्राप्ति और वृद्धि होती है।

### 6. भूत-प्रेत बाधा की निवृत्ति के लिए

स्थाने हृषिकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः
(भगवद्गीता 11।36)

इस मन्त्र को सवा लाख जप करके सर्वप्रथम सिद्ध करना आवश्यक है। पश्चात् उपर्युक्त मन्त्र काम करता है।

भूत-प्रेत का आवेश होने पर मिट्टी के किसी शुद्ध पात्र में गङ्गाजल अथवा कूप का जल लेकर 7 बार उपर्युक्त मन्त्र को बोलकर उसमें दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली को फिरा (घुमा) दें। फिर उस जल में से थोड़ा-सा रोगी को पिला देना चाहिए। बचा हुआ जल रोगी के समस्त अंगों पर छिड़क देना चाहिए। जब तक रोगी को भूत-प्रेत बाधा शान्त न हो, तब तक प्रतिदिन दो बार प्रातः और सायंकाल इस प्रयोग को करना चाहिए।

### 7. मस्तक पीड़ा की निवृत्ति के लिए

ॐ नमो आदेश गुरु को बाज में कपाल, कपाल में भेजी, भेजी में कीड़ा करे पीड़ा सोने का शाला का रूप का हथोड़ा ईश्वर गढ़े गौरिया तोड़े इनका श्राप श्री महादेव तोड़े शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्रो ईश्वरो वाचा।

अपने बाएँ हाथ में 7 बार थोड़ी-थोड़ी पवित्र राख (भस्म) को लेकर दाहिने हाथ से ढंककर उपर्युक्त मन्त्र को 7 बार पढ़कर दर्द वाले के मस्तक पर लगाने से दर्द दूर हो जाता है।

### 8. मित्रता के लिए

ॐ दमयन्तीनलाभ्यां च नमस्कारं करोम्यहम्।
अभिवादो भवेदत्र कलिदोष प्रशान्तिदः॥ 1॥
ऐकमत्यं भवेदेवां ब्राह्मणानां पृथग्धियाम्।
निर्वैरिता च जायेत संवादाग्ने प्रसीद मे॥ 2॥

उपर्युक्त दोनों मन्त्रों से अलग-अलग पायस (खीर) में घृत डालकर हवन करने से शत्रुता हटकर मित्रता हो जाती है। यह अनुष्ठान कम से कम 61 दिन का है।

### 9. शत्रुता कराने के लिए

ॐ महाभैरवाय श्मशान अमुको अमुका विद्वेषं कुरु फट्।

उपर्युक्त मन्त्र का 41 दिन तक 108 बार जप करने से प्रेमियों का प्रेम हटकर परस्पर शत्रुता हो जाती है।

मन्त्र में जिन जगहों पर अमुक-अमुक शब्द लिखा है, उस जगह पर प्रेमियों का नाम लिखना चाहिए जिसकी शत्रुता करानी हो।

### 10. शूल निवृत्ति के लिए

ॐ मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव।
परमे वृक्षऽआयुधं कृत्तिवसानऽआचर पिनाकं बिभ्रदागहि॥
(शुक्ल यजुर्वेद 16।51)

उपर्युक्त मन्त्र का पाठ अथवा जप करने से मनुष्य का दर्द दूर हो जाता है।

### 11. सुख से प्रसव होने के लिए

ॐ मुक्तापाशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः।
मुक्तसर्वभयाद् गर्भं ग्राह्यो हि मारीच स्वाहा॥

उपर्युक्त मन्त्र के द्वारा पवित्र जल को आठ बार अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को जल पिलाने से उसको सुख से प्रसव होगा।

### 12. पति को वश में करने के लिए

ॐ नमो महायक्षिणि पतिं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र को दीपावली अथवा ग्रहण के दिन 108 बार जप करके सिद्ध करले। पश्चात् 31 दिन 108 बार जप करने से स्त्री का पति उसके वश में हो जाता है।

### 13. जलती अग्नि शीतल हो

'ॐ नमो कोरा करावा जल सा भरिया, ले गौरा के शिर पर धरिया, ईश्वर ले गौरा नहाय, ई जलती अग्नि शीतल हो जाय। शब्द साँचा पिंड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।'

इस मन्त्र को ग्रहण या दीपावली में जगा लेवें।

विधि—कुएँ के सन्निकट से सात कंकड़ी लेकर प्रत्येक पर सात बार मन्त्र पढ़कर अग्नि की ओर फेंके।

### 14. नजर झाड़ने का मन्त्र

गरुर चरणे दिया मन, श्रीहरी मोक्ष कारन, देव दानव दैत्यानी लाई, नरसिंह वरा आसी सब उड़ाई, आलाली पालाली चोटी चोटी हुंकारे फुंकारे उड़ाय, माटी शलिकेर पांव देख, टुकरिया जाय अमुकार अंगे डाइनेर दृष्टि पलाय कार अक्षावीर नरसिंह आज्ञा॥

दीपावली में सिद्ध करके इस मन्त्र से झाड़ने का विधान है।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

### 15. सर्प विषनाशक मन्त्र-औषधि

गरुड़ास्त्र मन्त्र—ॐ सुपर्णोसि गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरेपक्षौ। सोम आत्माछन्दांस्यंगानि यजूंषि नाम। साम ते तनुर्वामदेव्यं यज्ञयज्ञियम्पुच्छ-न्विष्ठायाऽशम्या सुपर्णोसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत ॐ।'

इसे ग्रहण में सिद्ध कर नीम की टहनी या अपामार्ग से झारने का विधान है।

दधि-मधु-नवनीता, पीप्पली भृंगवेरं,
मिरचमपि कूटो प्रतिहन्ता सुकेशी।
यदि उसति सरोषो, तक्षको वासुकी वा,
यमसदनगतानां नास्ति मृत्युर्नराणाम्॥

गाय के ताजे दूध से निकाला ताजा मक्खन, गाय का दही, शहद, पीपल, अदरक, मिर्च और कूट बराबर मात्रा में मिलाकर सांप से डसे हुए व्यक्ति को पिला देने से विष उतर जाएगा।

### 16. चिन्ता निवारण लक्ष्मी प्राप्ति मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं कमले कमल वालेय प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।

(2) पुत्र कन्या के विवाह में यदि कठिनाई उपस्थित होती हो या विघ्न हो तो श्री कात्यायनी देवी का पूजन विधि से करावे।

### 17. स्थायीधन स्थिति मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः॥

### 18. प्रसवसमयेजल मन्त्र

आकाश टले पवन टले राम लक्ष्मण दुई लाचा सुन की कर कोका कोकी रिक्ता कुण्डली बसिया बाहिर हव असिया सिद्ध गुड़ कालिका चराडीर वरे शीघ्र करिया भूमे पड़ें।

विधि—ताजा शुद्ध जल को सात बार मन्त्र पढ़कर परोरने के पश्चात् पिलाने का विधान है।

### 19. मृत्युञ्जय मन्त्र

'ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः ह्रौं ॐ।'

पुराणोक्तमृत्युञ्जय मन्त्र—'मृत्युञ्जयाय रुद्राय नीलकण्ठाय शम्भवे। अमृतेशाय शर्वाय महादेवाय ते नमः।' 'ॐ ह्रौंजूंसः' मृत्युञ्जय मन्त्र है।

इनके विनियोग न्यास यथा विधि करें।

### 20. धनधान्य पूर्णकर-अन्नपूर्णा का मन्त्र

ॐ ह्री क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा क्लीं श्रीं ह्रीं 'ॐ

इस मन्त्र के प्रभाव से धन-धान्य पूर्ण रहता है। दो लक्ष जप, तिल, लाल धान की लाई, खीर, दाख गोघृत से हवन करना चाहिये। दो लक्ष का पुरश्चरण क्षेत्र के भीतर यंत्र या तावीज गाड़ देते हैं, उससे धान्य बढ़ता है।

### 21. आपदुद्धारक बटुक भैरव मंत्र

'ॐ नमो भगवते बटुकाय आपदुद्धारकाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं।

विधि—भात, घी, सरसों, चन्दन, चूरा आदि से हवन करना चाहिये।

### 22. सर्व सिद्धिप्रद हनुमानजी का अष्टादशाक्षर मन्त्र

'ॐ नमो भगवते आंजनेयाय महाबलाय स्वाहा।'

खीर, दाख उखरस, पलास, पीपल, खैर की लकड़ी से हवन। लक्ष का पुरश्चरण। भेद यह है कि कामना के अनुकूल हवन वस्तु होनी चाहिये।

### 23. बिच्छू झाड़ने का मन्त्र

'ॐ छः फट् स्वाहा।' जल अभिमंत्रित करके देना।

आदित्यरथ वेगेन विष्णुबाणबलेन च।
तार्क्ष्य पक्षनिपातेन भूम्यां गच्छ महाविष॥

विधि—राई से उतारना।

### 24. आंख झाड़ने का मन्त्र

शर्यातिञ्च सुकन्यांच च्यवनं शुक्रमश्विनौ।
संध्ययोः स्मरतां नित्यं तस्य चक्षुर्न नश्यति॥

मन्त्र पढ़कर जल से धुलवाये।

### 25. ज्वर झाड़ना

(1) ॐ नमो नरहरे रोगापहारिणे ज्वरं नाशय नाशय सुखमारोग्यं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र को सात बार पढ़कर झारे तो ज्वर न रहै।

(2) ॐ नमो अजैपालकी दुहाई जो ज्वर रहे तो महादेव को दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मन्त्र को दीपावली की रात्रि में सात बार पढ़कर तथा धूप दीप देकर सिद्धकर लेना चाहिये।

### 26. अन्तर तिजरा चौथिया का मन्त्र

ॐ लंकायाम् दक्षिणे तीरे कुमुदो नाम वानरः।
तस्य स्मरणमात्रेण ज्वरो याति दिशोदश॥

इसे पीपल के पत्ते पर लिखकर डोरा से बांध देवे।

### 27. सुखपूर्वक प्रसव होने का यंत्र मंत्र

यदि गर्भवती को क्लेश हो तो सुख से प्रसव के लिए चन्दन से चक्रव्यूह कांसे की थाली में बनावे फिर धोकर धर्मराज का स्मरण करके पिलावे।

मन्त्र—हिमवत्युत्तरे पार्श्वे शर्वरीनाम यक्षिणी।
तस्य नूपुरशब्देन विशल्या गर्भिणी भवेत्॥

विशेष—चिरचिरा (चिचिड़ी) मस्तक में बांधने से सुख से प्रसव होता है। इन सब मन्त्रों को 108 बार पढ़ना।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

**28. यात्रा में स्मरण करने का मन्त्र**

यः स्मरेत्तुलसी सीता रामं सौमित्रिणा सह ।
कार्यं कृत्वा रिपूञ्जित्वा क्षेमेणायाति वै नरः ॥

थोड़ी-सी दही खाकर यात्रा आरम्भ करे और चंदन तिलक से सदा पूर्ण रहे ।

**29. बीमारी दूर भगाने के लिए**

गांव में पशुओं की बीमारी न आवे इसके लिए गुरु पुष्य हस्तार्क अथवा उत्तम पर्व में मिट्टी के बड़े सकोरे (परई) के भीतर मंत्र लिखकर गोशाला में लटका दे तो बीमारी नहीं होगी ।

मन्त्र--अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः ।
बीभत्सुर्विजयो पार्थ सव्यसाची धनंजयः ।
कपिध्वजो गुडाकेशो गांडीवी कृष्णसारथिः ।
एतान्यर्जुननामानि गवां गोष्ठे च यो लिखेत् ।
न तत्र पशुरोगादि शुभं शीघ्रं प्रजायते ।

**30. यज्ञोपवीत धारण मन्त्र**

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

**31. यज्ञोपवीत उतारने का मन्त्र**

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितम् मया ।
जीर्णत्वात्त्वत्-परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम् ।

**32. सूर्यार्घ्य मन्त्र**

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर ॥

**33. औषधि खाने का मन्त्र**

अच्युतानन्त गोविन्द नामोच्चारणभेषजात् ।
नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥

**34. श्री अष्टाक्षर मन्त्र महिमा**

किं मन्त्रैर्बहुभिर्विनश्वरफलैरायाससाध्यैर्मखैः,
किंचिल्लोपविधानमात्रविफलैः संसारदुःखावहैः ।
एकः सन्नपि सर्वमन्त्रफलदो लोपादिदोषोज्झितः,
श्रीकृष्णः शरणं ममेति परमो मन्त्रोऽयमष्टाक्षरः ॥

श्रीमन्महाप्रभु श्रीमद्वल्लभाचार्यचरण ने अपने आश्रितजनों के कल्याण के लिए अष्टाक्षर महामन्त्र की दीक्षा देकर सदैव उसके जप करने के लिए आज्ञा की है। श्रीमत्प्रभुचरण श्रीगुसांई जी से प्रारम्भ कर अब तक हमारे आचार्य वंशज इस महामन्त्र की दीक्षा शरणागत दैवी जीवों को देने की कृपा कर रहे हैं। सम्प्रदाय का प्रधान-मन्त्र यह अष्टाक्षर महामन्त्र है। श्रीमहाप्रभु जी द्वारा प्राप्त इस अष्टाक्षर मन्त्र की वैष्णव दीक्षा लेते हैं तथा इस मन्त्र का नित्यप्रति जप भी करते हैं।

अष्टाक्षर महामन्त्र की महिमा श्रीवल्लभ सम्प्रदाय में सुप्रसिद्ध है। श्रीमत्प्रभुचरण श्रीविट्ठलनाथ जी श्रीगुसांई जी ने अपने 'अष्टाक्षरार्थ निरूपण' नामक ग्रन्थ में यह स्पष्ट किया है, श्रीगुसांई जी आज्ञा करते हैं कि—

श्रीकृष्णः कृष्ण कृष्णेति कृष्ण नाम सदा जपेत् ।
आनन्दः परमानन्दो वैकुण्ठं तस्य निश्चितम् ॥

जो प्राणी सदा श्रीकृष्ण भगवान् के नाम का स्मरण करता है, उसको इस लोक में आनन्द तथा परमानन्द की प्राप्ति होती है और अवश्य वैकुण्ठ धाम की प्राप्ति होती है। अष्टाक्षर में आठ अक्षर हैं। उनका फल श्रीगुसांई जी ने इस प्रकार लिखा है—

श्री सौभाग्य देता है, धनवान् और राजवल्लभ करता है।
कृ यह सब प्रकार के पापों का शोषण करता है।
ष्ण आधिभौतिक, आध्यात्मिक और आधिदैविक इन तीन प्रकार के दुःखों का हरण करता है।
श जन्म मरण का दुःख दूर करता है।
र प्रभु सम्बन्धी ज्ञान देता है।
णं प्रभु में दृढ़ भक्ति उत्पन्न करता है।
म भगवत्सेवा के उपदेशक अपने गुरुदेव में प्रीति कराता है।
म प्रभु में सायुज्य कराता है जिससे पुनः जन्म न लेना पड़े। श्रीमन्महाप्रभु जी अपने नवरत्न ग्रन्थ में आज्ञा करते हैं कि—

तस्मात्सर्वात्मना नित्य श्रीकृष्णः शरणं मम ।
वदद्भिरेव सततं स्थेयमित्येव मे मतिः ॥

सब प्रकार की चिन्ताओं से बचने के लिए सदैव सर्वात्मभाव सहित 'श्रीकृष्णः शरणं मम' कहते रहना अथवा सदैव अष्टाक्षर जप करने वाले भगवदीयों की संगति में रहना यह मेरी सम्मति है। संक्षेप में अष्टाक्षर मन्त्र के जप से सब कार्य सिद्ध होते हैं। आधिभौतिक, आध्यात्मिक, आधिदैविक इन विविध दुःखों में से किसी प्रकार का दुःख प्राप्त होने पर 'श्रीकृष्णः शरणं मम' इस महामन्त्र का जप-उच्चार करना चाहिए।

श्रीमन्महाप्रभु जी ने वेद, गीता, उपनिषद् एवं सभी शास्त्रों का सार-समन्वय करके तथा सभी प्रकार विचार करके दैवीजीवों के उद्धार के लिए भगवान् श्रीकृष्ण चन्द्र के शरणगमन पूर्वक आत्मनिवेदन करके उनकी सेवा स्मरण करते रहना यही निर्णय करके अपने अनुयायीजनों को सबसे प्रथम भगवान् की शरणागति की दृढ़ता के लिए अष्टाक्षर मन्त्र दीक्षा देकर उसके जप करने की आज्ञा दी है। इस आज्ञा का पालन करना अत्यावश्यक है।

आप अष्टाक्षर मन्त्र का स्वयं जप करें और अपने कुटुम्ब परिवार के तथा परिचय के वैष्णवों को प्रेरणा देकर जपानुष्ठान में सम्मिलित करने के लिए प्रबन्ध करें।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

अपनी प्वाइस की कोई भी इण्डस्ट्री लगाने से पूर्व इस पुस्तक को V.P. द्वारा मगाकर अवश्य पढ़

भारत में प्रथम बार देहाती पुस्तक भण्डार द्वारा प्रकाशित 541

# 1001 स्माल एण्ड टाइनी इण्डस्ट्रीज़

(A COMPREHENSIVE VOLUME ON SMALL SCALE INDUSTRIES)

□ पृष्ठ 1360, साइज 23 × 36/16 □ लेखक : V. K. अग्रवाल, □ मूल्य 10/- पोस्टेज 6/- पृथक

पुस्तक में प्रत्येक इण्डस्ट्री की उत्पादन मार्केट स्थिति, लागत, मुनाफा, बनाने की विधि, मशीनें तथा कच्चा माल प्राप्त करने के पत्ते आदि दिए है। पुस्तक के 17 चैप्टरों में 1001 इण्डस्ट्रीज की तालिका निम्नलिखित है--

1. प्लास्टिक उद्योग (47 इण्डस्ट्रीज)—प्लास्टिक नेम प्लेट, सीप बटन, PVC जूते, चप्पल, टाइल्स, बिजली के तारों व केबल्स पर PVC चढ़ाना, PVC फिल्म, चश्मे के फ्रेम, प्लास्टिक की थैलियां, फाउण्टेन पेन, प्लास्टिक हेलमेट, PVC दाना, फोम लैदर, D.E.P., D.B.P., बैके लाईट की वस्तुएँ, बाल पैन रिफिल एवं ड्रिंकिंग स्ट्रा।

2. सोप इण्डस्ट्री (डिटरजैन्ट एवं क्लीनर्स) 39 इण्डस्ट्रीज—कपड़े धोने का साबुन, नहाने का साबुन, एसिड स्लरी, डिटरजैण्ट पेस्ट व तरल, क्लीनिंग पाउडर, फिनायल, मच्छरों से बचाने वाली क्रीम, शैम्पू आदि।

3. डाईज एवं डाई इण्टरमीजिएट्स (32 इण्डस्ट्रीज)—रोडामिन बीटा, मिथाइल, बीटा-नैप्थॉल, B.O.N. एसिड, C.P.C. ब्लू, ईओसीन, गामा एसिड, जी-एसिड, एच-एसिड, इण्डीगो ब्लू, जे-एसिड, मैटानिलिक एसिड, एम-डाई-नाइट्रो बैन्जीन, M.P.D., M.P.D.S., नैफथोल, रीएक्टिव डाइज, सल्फर ब्लैक-टी आदि।

4. लुब्रीकैन्ट, ग्रीस तथा सम्बन्धित प्रोडक्ट्स (16 इण्डस्ट्रीज)—कटिंग आयल, ट्रांसफार्मर आयल, व्हाइट आयल, लुब्रीकेटिंग ग्रीस, क्वीचिंग आयल, पैट्रोलियम जैली, इस्तेमाल शुदा इंजन आयल को दोबारा उपयोग योग्य बनाना, स्लैक वैक्स से पैराफीन वैक्स, बेरियम स्टीयरेट, लैड स्टीयरेट, ब्रेक आयल, लुब्रीकेटिंग ग्रीस के सूत्र आदि।

5. कार्बनिक एवं अकार्बनिक कैमीकल्स (246 इण्डस्ट्रीज)—एल्यूमीनियम क्लोराइड एनहाइड्रस, अमोनियम क्लोराइड, एण्टीमनी एसीटेट, आरसेनिक एसीटेट, बेरियम एसीटेट, कैडमियम एसीटेट, कैल्शियम एसीटेट, क्रोमिक एसिड, कोबाल्ट ब्रोमाइड, कापर कार्बोनेट, क्यूपरस, ब्रोमाइड, फैरिक एसीटेट, हाइड्रोफ्लोरिक एसिड, लैड एसीटेट, लिथियन कार्बोनेट, मैग्नीशियम एसीटेट, मैंगनीज एसीटेट, मरक्यूरिक एसीटेट, निकेल ब्रोमाइड आदि।

6. रबड़ प्रोडक्ट्स (21 इण्डस्ट्रीज)—रबड़ चढ़ा कपड़ा, रबड़ के खिलौने, साइकिल टायर-ट्यूब, हवाई चप्पल, गुब्बारे, ब्लोइंग एजेन्ट, ट्यूबिंग, धागे, हौज पाइप, गर्म पानी व बर्फ के थैले, लेटैस्ट रबड़ फोम प्रोडक्ट्स आदि।

7. फूड प्रोडक्ट्स (32 इण्डस्ट्रीज)— शीतल पेय, फल व सब्जी संरक्षण, मधुमक्खी, डेरीफार्म, कन्फेक्शनरी उद्योग, टॉफी, चावल मिल, मसलों की इण्डस्ट्री, फल-सब्जियों की डिब्बा बन्दी, कोल्ड स्टोरेज, क्रीम, बिस्कुट, मिल्कपाउडर, माल्ट फूड, मक्खन, बेकरी, आइस क्रीम, केसीन, ड्राई फ्रूट, पेटैंटो स्टार्च, दही-बड़े व चाट आदि।

8. इंजीनियरिंग आइटम्स (119 इण्डस्ट्रीज)— इंजीनियरिंग के काम आने वाले औजार व मशीनें।

9. पेपर एवं पेपर प्रोडक्ट्स (18 इण्डस्ट्रीज)— कागज, कागज से बनने वाली वस्तुएं, गम्ड पेपर टेप, टेलिटेप रोल, विटूमिनाइज्ड वाटर प्रूफ कागज, कार्बन पेपर, टाइपराइटर रिबन, कागज के लिफाफे, गत्ते के डिब्बे आदि।

10. इलैक्ट्रानिक एवं इलैक्ट्रिकल (66 इण्डस्ट्रीज)—इलैक्ट्रिकल सम्बन्धी सामान, कार रेडियो व टी.वी., टम्बलर के ताले, पीतल के बर्तन, साइकिल पैडल, फोटो फ्लैश बल्ब, लैम्पस, इलैक्ट्रिक हार्न, औद्योगिक हीटर आदि।

11. पेन्ट एवं वार्निश उद्योग (10 इण्डस्ट्रीज)—पेन्ट निर्माण उद्योग, पिगमेंट, ड्राइंग आयल्स, रैजिन्स, प्लास्टीसाइजर्स, ड्रायर्स, एल्यूमीनियम पेन्ट्स, पेन्ट्स के लिए अल्काइड रेजिन, डिस्टेम्पर्स आदि।

12. इंक इण्डस्ट्री (14 इण्डस्ट्रीज)—ब्लू ब्लैक इंक पाउडर, राइटिंग इंक, सभी प्रकार की फाउण्टेन पेन इंक, इंक टैबलेट, रैड इंक पाउडर, क्विक ड्राइंग इंक, स्टाम्प पैड इंक, बाल प्वाइंट पैन इंक, प्रिंटिंग इंक आदि।

13. धूप, अगरबत्ती एवं परफ्यूम (11 इण्डस्ट्रीज)—लैमन ग्रास आयल, इयूकेलिप्टस आयल, चन्दन का तेल, सुगन्धित तेल, अगरबत्ती, धूपबत्ती, हवन सामग्री, विभिन्न प्रकार की अगरबत्तियां व धूपबत्ती बनाने के फार्मूले, मच्छर भगाने वाली कुण्डलाकार अगरबत्ती, चावल के छिलके से तेल निकालने की मिल, मिन्थोल क्रिस्टल आदि।

14. होजरी उद्योग (7 इण्डस्ट्रीज)—धागे की रीलें, कम्बल, ऊनी शाल, जुराबें, टेलर होजरी लेबल्स।

15. कास्मैटिक्स उद्योग (12 इण्डस्ट्रीज)—लोमनाशक पाउडर व पेस्ट, नेल पालिश, बैनीसिंग क्रीम, रोज, टैल्कम पाउडर, फेस पाउडर, लिपस्टिक, कोल्डक्रीम, शेविंग क्रीम, आफ्टर शेव लोशंस, क्रीम आदि।

16. दवाइयां तथा नुस्खे (64 इण्डस्ट्रीज)—टैब्लेट् फार्मेसी सम्बन्धी पाउडर नुस्खों वाले पदार्थ।

17. अन्य उद्योग (विविध 247 इण्डस्ट्रीज)— नित्यप्रति मानव मात्र के काम आने, चुने हुए उद्योग।

1001 इण्डस्ट्रीज की कम्पलीट पुस्तक 10/- का M.O. आने पर रजिस्ट्री पैकिट द्वारा भेज दी जावेगी।

—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

अपनी मनचाही पुस्तकें V.P.P. से मंगाइये !

# ● अत्यन्त उपयोगी लेटेस्ट नये प्रकाशन

**सुन्दर व आकर्षक कैसे बनें ? (लेखिका : उषा)**

काली-कलूटी तथा बदरंग, जिनकी छवि अच्छी नहीं है वह भी इस वैज्ञानिक युग में रूपवान, ऐसा सौंदर्य जिससे आँखें चौंधिया जायें, प्राप्त कर सकती हैं। कील, मुँहासे, झाइयाँ, काले दाग़ शृंगार में बाधा डालते हैं। यदि आप चेहरे को गुलाब के फूल की मानिन्द, दुल्हन की तरह सौंदर्यवान बनाना चाहती हैं तो आज ही पुस्तक मंगायें। जूड़ा, चोटी, केश संवारने के मॉडर्न फैशन के सैकड़ों चित्र। पृष्ठ 192, मूल्य 10/- (दस रुपये)

**बेबीज़, लेडीज एण्ड जैन्ट्स हैल्थ गाइड लेखिका : वीणा**

गृहस्थ जीवन को सुखमय व्यतीत करने के लिए बच्चे-स्त्री-पुरुष तीनों का स्वस्थ, सुन्दर, सुडौल, आकर्षक तथा नीरोग होना नितान्त आवश्यक है। पति-पत्नी में से यदि एक रोगी, मोटा, ठिगना, कुरूप या अधिक पतला है तो जीवन में सच्चे आनन्द की अनुभूति नहीं हो सकती। आज के इस युग में कुछ भी असम्भव नहीं है। यदि नवीन वैज्ञानिक विधियों को अपनाया जाय तो बेबीज़, लेडीज एण्ड जैंट्स तीनों आकर्षक व्यक्तित्व सहज ही प्राप्त कर सकते हैं। पुस्तक में सैकड़ों आकर्षक चित्र भी दिये गये हैं। बड़ा साइज मूल्य 36/- (छत्तीस रुपये)

**कैरिज एण्ड वैगन गाइड (लेखक : श्रीराम धुपड़)**

इस पुस्तक में वॉक्स वैगन, आई. सी. एफ. एवं एम. ए. एन. बॉडियों के साथ-साथ ब्राडगेज, मीटरगेज तथा नैरोगेज का विवरण प्रश्नोत्तर सहित दिया गया है। यह पुस्तक स्किड पोर्टर, सफाई वाला, बेसिक, फिटर, मैकेनिक, कारपेण्टर, वैल्डर, ब्लैक स्मिथ तथा वर्कशाप स्टॉफ से लेकर ट्रेन एग्जामिनर तक अत्युपयोगी है। पुस्तक सचित्र है। मूल्य 24/- (चौबीस रुपये)

**मॉडर्न वर्कशाप कोर्स (लेखक : ओ. एन. टंडन)**

प्रस्तुत पुस्तक आई. टी. आई. के सिलेबसानुसार वर्कशाप तथा फिटर ट्रेड के लिए तैयार की गई है। इसमें वर्कशाप का प्रारम्भिक ज्ञान, माप-यन्त्र, सुरक्षा व सावधानियाँ, बैंच कार्य, ट्रांसमिशन आफ एनर्जी, फैरस मैटल्स, हीट ट्रीटमैंट, लैथ (खराद), सिंक्रीव कटिंग, ड्रिलिंग मशीन, बर्मे और ड्रिल का आकार, शैपर एण्ड प्लेनर मशीन, मिलिंग मशीन, मैटिल, ग्राइंडिंग मशीनें, कटिंग सेल्स, वैल्डिंग और एलाइड प्रासिस (टांका), ब्लैक स्मिथि (लुहारगीरी), जिग एण्ड फिक्सचर, बन्धक व अभिबन्दी युक्तियाँ, गोल व वर्ग स्टील छड़ों के विवरण के साथ-साथ पुस्तक के अन्त में आवश्यक शब्दावली भी दी गई है। ☐बड़ा साइज, ☐320 पृष्ठ, ☐मूल्य 36/- (छत्तीस रुपये)

**टैब्लेट्स एण्ड कैप्स्यूल्स गाइड**— इस पुस्तक में लगभग 500 प्रकार की चुनी हुई मशहूर एलोपैथिक, आयुर्वेदिक व यूनानी गोलियों तथा कैप्स्यूलों के फार्मूलों के साथ-साथ उन्हें बनाने की विधि, रोगों में आयु अनुसार दी जाने वाली मात्रा व गुणों का सविस्तार वर्णन दिया गया है। लेखक A.C. शुक्ल, मूल्य 36/- (छत्तीस रुपये)

**यूनानी तिब्बी गाइड**— ऐलोपैथिक चिकित्सा अत्यंत महँगी है, परन्तु देहात में पायी जाने वाली जड़ी-बूटियों से तैयार होने के कारण यूनानी तिब्बी चिकित्सा काफी सस्ती होती है। इस पुस्तक में अत्युत्तम चमत्कारी यूनानी नुस्खों का संग्रह है। ले. अमोलचन्द्र शुक्ल, मूल्य 36/- (छत्तीस रु.)

**डायबिटीज़ एण्ड ब्लड प्रेशर ट्रीटमेंट**— डायबिटीज तथा ब्लड प्रेशर जिन्हें हिन्दी में मधुमेह तथा रक्तचाप कहते हैं, आजकल इनके रोगियों से अस्पताल भरे पड़े हैं। इस पुस्तक में इन दोनों महारोगों के कारण, लक्षण, तथा चिकित्सा आदि पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। अतएव रोगों से छुटकारा पाने के लिए इस पुस्तक को अवश्य मंगायें। ले० A.C. शुक्ल, मू० 36/- (छत्तीस रु.)

**महापुरुषों के दृष्टान्त**— इस धार्मिक ग्रन्थ में प्रत्येक स्त्री-पुरुष को सद्मार्ग प्रदर्शित करने वाले, अत्यधिक मनोरंजक, सुरुचिपूर्ण तथा शिक्षाप्रद दृष्टान्तों का संकलन है। ये दृष्टान्त पाप-पुण्य, सत्-असत् और धर्म-अधर्म का ज्ञान कराने के साथ-साथ भगवद्शक्ति में श्रद्धा और लगन उत्पन्न कर जीवन सफल बनाने में सहायक सिद्ध होते हैं। ले० अमोलचन्द शुक्ल मू० 36/- (छत्तीस रुपये)

**केवल 10/-(दस रु० में) सौ वर्षीय जीवन-बीमा।**

● **आपकी हैल्थ**— प्रस्तुत पुस्तक में कौन-सा आसन्न, किस रोग के लिए उपयोगी है, ऐसे 100 से अधिक स्त्री-पुरुषों के विभिन्न आसन दिये गये हैं। प्राचीन भारतीय योगासन प्रणाली का नित्यप्रति केवल 5-10 मिनट अभ्यास करके प्रत्येक स्त्री-पुरुष पूरे एक सौ वर्ष तक उस परमपिता परमेश्वर के दिये हुए अमानती शरीर की रक्षा कर सकता है। योग, प्राणायाम, भोजन, आहार-विहार, दुग्ध, फल, दैनिक दिनचर्या तथा संयम आदि की क्रियाओं पर भी प्रकाश डाला गया है। मूल्य 10/- (दस रुपये)

**देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली फोन 261030**

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## कब्ज़, गैस, मोटापा, दमा, ब्लड प्रैशर, मधुमेह, जोड़ों का दर्द, सर दर्द, जुकाम इत्यादि से मुक्ति पाने तथा पूरे एक सौ वर्ष जीने एवं मानसिक शक्ति, आत्मिक शांति तथा अच्छा रोजगार पाने के लिए पढ़ें :

1. नीबू के गुण तथा उपयोग—नींबू द्वारा सिर से लेकर पैर तक होने वाले सभी रोगों का इलाज सुगमता से किया जा सकता है। मूल्य 4-50 (साढे चार रुपये)

2. नीम के गुण तथा उपयोग—शरीर के प्रायः सभी रोगों में नीम गुणकारी तथा जादुई प्रभाव दिखाने में समर्थ है। प्रस्तुत पुस्तक में नीम के गुण तथा विविध रोगों में उसके अनेक उपयोगी प्रयोग दिये गये हैं। मूल्य 4-50

3. तुलसी के गुण तथा उपयोग—शरीर में उत्पन्न होने वाले भयंकर से भयंकर रोगों का इलाज तुलसी द्वारा करने की शास्त्रीय एवं अनुभूत विधियाँ दी गई हैं। मूल्य 4-50 (साढे चार रुपये)

4. हींग के गुण तथा उपयोग—प्रत्येक परिवार में नित्यप्रति काम आने वाली हींग यदि सही ढंग से प्रयोग में लाई जाए, तो इसके द्वारा अनेक रोगों से छुटकारा आसानी से मिल जाता है। मूल्य 4-50 (साढे चार रुपये)

5. लहसुन के गुण तथा उपयोग—लहसुन में दुर्गन्ध के अलावा अनेकों ऐसे गुण विद्यमान हैं, जिनके कारण यह आयुर्वेद, यूनानी तथा ऐलोपैथिक दवाइयों में काम आता है। ऐसे अनेक योग संग्रहीत हैं। मूल्य 4-50

6. टोटका चिकित्सा (टोटका विज्ञान)—आसानी से प्राप्त हो सकने वाली आम वस्तुओं द्वारा छोटी-बड़ी सभी बीमारियों का इलाज जानने के लिए इस पुस्तक को अवश्य मंगाकर पढ़ें। मूल्य 4-50 (साढ़े चार रुपये)

अच्छी नौकरी के ख्वाहिश मन्द इस पुस्तक को अवश्य मंगायें

7. दाँतों का डाक्टर—दाँतों तथा मसूड़ों के रोगों के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी व चिकित्सा के साथ-साथ अनेक प्रकार के मंजन (काला मंजन, लाल मंजन आदि), मिस्सी गम, पैंट आदि के योग भी दिये गए हैं। मूल्य 18/- (अठारह रुपये)।

गाइडेंस फार जॉब-इन इण्डिया एण्ड अबरोड—आज भारत के मैकेनिक, कारीगर, राज-मिस्त्री आदि की विदेशों में विशेष मांग है। विदेश में जाकर भारत से कई गुना वेतन मिलने के कारण उनका जीवन स्तर काफी उन्नत हो गया है। यदि आप भी विदेश जाकर अच्छी-खासी कमाई करना चाहते हैं तो हमारी यह पुस्तक मंगा कर अवश्य पढ़ें। मूल्य 25/- (पच्चीस रुपये)

## कुछ अन्य पुस्तकें

| | | |
|---|---|---|
| 1. | स्पीडली इंगलिश स्पीकिंग कोर्स पृ० 548 | 21/- |
| 2. | परफैक्ट इंगलिश नालिज बुक | 24/- |
| 3. | एडवांस्ड इंगलिश स्पीकिंग कोर्स | 30/- |
| 4. | चाइल्ड स्पीडली इंगलिश स्पीकिंग कोर्स | 4.50 |
| 5. | मिनी स्पीडली इंगलिश स्पीकिंग कोर्स | 7/50 |
| 6. | स्पीडली इम्प्रूव फार इंगलिश (विद इलैस्ट्रिशंज) | 25/- |
| 7. | स्पीडली लैटर राइटिंग व ड्राफ्टिंग कोर्स | 24.00 |
| 8. | स्पीडली होम एण्ड कॉमर्शियल टेलरिंग कोर्स | 30/- |
| 9. | स्पीडली जनरल नालिज कोर्स | 12/- |
| 10. | परीक्षा में प्रथम श्रेणी कैसे प्राप्त करें ? | 12/- |
| 11. | देश-विदेश की 25 भाषाएँ सीखिए | 12/- |
| 12. | प्रकाश सेलरी रेकोरेकनर (पृष्ठ 496) | 12/- |
| 13. | गाइडेंस फार जॉब-इन इण्डिया एण्ड अबरोड | 25/- |

### नौकरी की चिन्ता छोड़कर अपने ही क्षेत्र में कोई भी नया रोजगार चालू करें

हमारे C.C.I. विभाग ने इण्डस्ट्रियल प्रोजेक्ट रिपोर्टों द्वारा लाखों नवयुवकों को रोजगार चालू करने में भरपूर सहायता की है। ये नवोदित इण्डस्ट्रियलिस्ट औद्योगिक तकनीकी जानकारी के साथ-साथ, रॉ-मैटीरियल (Raw Material) तथा भारत सरकार द्वारा लोन (Loan) प्राप्त करने की विधियाँ ज्ञात हो जाने से न केवल अपना कारोबार सही ढंग से चालू करके खुशहाल हो गये हैं, बल्कि देश की बेकारी कम करने में सहायक सिद्ध हुए हैं। यदि आप बेरोजगार हैं, अथवा कोई नया रोजगार खोलना चाहते हैं तो प्रारम्भिक जानकारी के लिए आज ही 1/50 रु० का M.O. भेजकर C.C.I. प्लाण्ट प्रोसिस नो हाऊ रिपोर्ट्स मंगाइए और देखिए कि यह विवरण-पत्रिका विभिन्न 1100 (ग्यारह सौ) प्रकार की इण्डस्ट्रीज लगाने में किस प्रकार आपका मार्गदर्शन करती है।

**C.C.I. कन्सल्टेंट्स कार्पोरेशन आफ इण्डस्ट्रीज**
113-B, इन साइड मुकटराय निवास, चौक बड़शाहबुला, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6 फोन 261030

मंगाने का पता—**देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार,** चौक बड़शाहबुला दिल्ली-110 006


CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

कहीं भी जाइए, यदि 'धारा-प्रवाह' फर्राटे से इंगलिश नहीं बोल सकते तो आप हीनता महसूस करेंगे।

164 The World Famous Book Of English Learning

# SPEEDILY ENGLISH SPEAKING COURSE

# स्पीडली इंगलिश स्पीकिंग कोर्स

**(The Best & Simplest Course to Speak Fluent English in only 30 Days at Home Through Hindi Medium)**

बिना अटके व बगैर झिझके केवल 30 दिन में फर्राटे से अंग्रेजी बोलना सिखाने वाला बिल्कुल नया कोर्स

● क्या आप अच्छी सर्विस की तलाश में हैं या आप बेहतरीन काम चाहते हैं ?

यदि हाँ, तो आपकी हर प्रकार की कठिनाई का समाधान यह पुस्तक करेगी। बहरहाल आप रिशेप्सनिस्ट (Receptionist), टाइपिस्ट (Typist), आफिस असिस्टेंट (Office Assistant), स्टेनो (Steno), सैक्रेट्री (Secretary), क्लर्क (Clerk), अकाउन्टैंट (Accountant), स्टोरकीपर (Store Keeper), फैक्टरी मजदूर (Factory Worker), मैकेनिक (Mechanic), ड्राइवर (Driver), सेल्समेन (Salesman), सेल्स व कालिज गर्ल (Sales & College Girls), चार्टिड एकाउन्टैंट (Chartered Accountant), कलाकार (Artist), मैनेजर (Manager), इंजिनीयर (Engineer), कम्पनी सेक्रेट्री (Company Secretary), डिप्लोमा होल्डर (Diploma Holder), पर्सनल या सिक्यूरिटी अफसर (Personal or Security Officer), कुक्स (Cooks), होटल कारीगर (Hotel Staff), ऐक्जिक्यूटिव अफसर (Executive Officer), मॉडल (Model) सेल्स तथा परचेज अफसर (Sales & Purchasel Officer), मानचित्रकार (Draftsman), टीचर (Teacher), प्रोफैशनल डिजाइनर (Professional Designer), प्रूफ रीडर (Proof Reader), कमर्शियल आर्टिस्ट (Commercial Artist), माली (Gardner), आया (Nursemaid), रैडियो टी० वी० मैकेनिक (Radio T. V. Mechanic), चेकर (Checkers), टरनर्स (Turners), फोरमेन (Foreman) टूलरूम इंसपैक्टर (ToolRoom Inspector), कंपोजिटर (Compositor), फिटर (Fitter), एयरकण्डीशनर, रेफ्रीजेटर मैकेनिक (Air Conditioner, Refrigerator Mechanic), चपरासी (Peon), कालिज गर्ल (College Girl) कारीगर या और किसी भी फील्ड में काम करने वाले हों, प्रतिदिन अखबारों में बड़ी-बड़ी इण्डस्ट्रियल कम्पनियों के विज्ञापन देखते होंगे, उन कम्पनियों के इण्टरव्यू में आप तभी सफल हो सकते हैं, जबकि फर्राटे से अंग्रेजी बोलें।

**We provide any kinds of job, may be a**

● अच्छी सर्विस के साथ-साथ क्या आप साथी मित्रों में आदर चाहते हैं ? ● क्या आप युवा लड़के-लड़कियों को अपनी ओर आकर्षित करना चाहते हैं ? ● क्या आप प्रेम या विवाह में सफलता चाहते हैं ? ● क्या आप एक्सपोर्ट इम्पोर्ट करना चाहते हैं ? ● क्या आप अपने व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाना चाहते हैं ? ● क्या आप अपनी प्रतिभा और आत्म-विश्वास से जीवन के हर क्षेत्र में औरों से आगे रहना चाहते हैं ? ● क्या आप जीवन की हर समस्या को सुलझाकर एक सम्मानित जीवन जीना चाहते हैं ? ● क्या आप कारोबार में दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति चाहते हैं ? तो विश्वास रखिए—यह पुस्तक आपकी कदम-कदम पर सहायता करेगी।

● देश के करोड़ों पाठक स्कूल व कालिजों में पठन-पाठन करते हैं उनके लिए तो यह पुस्तक लाभदायक है ही, परन्तु जो भाई-बहिन किन्हीं विशेष कारणोंवश स्कूल व कालिजों में रैगुलर नहीं जा सकते अथवा प्राइवेट कालेजों में ज्वाइन हैं, या जो महानुभाव, चाहे किसी भी आयु के हों, प्राइवेट कालेजों में नहीं जा पाते, वे हमारी पुस्तक का घर पर ही नियमित रूप से अध्ययन करके फटाफट धारावाही अंग्रेजी बोलना सीखकर किसी भी फंक्शन या सोसायटी में जाकर प्रसन्नता अनुभव करते हैं। □ बड़े साइज के 560 पृष्ठ, □ आकर्षक जिल्द, □ मूल्य 21/- डाक खर्च 4/-

**गारंटी :** 'स्पीडली इंगलिश स्पीकिंग कोर्स' नामक हमारी पूरी पुस्तक पढ़ने तथा याद करने से भी यदि 30 दिन में किसी तीव्र बुद्धि पाठक का इंगलिश बोलना इम्प्रूव (Improve) न हो, तो वह कैशमिमो, वी. पी. पी. का लेबल तथा सरकारी डाक्टर का मेडिकल सर्टिफिकेट प्रस्तुत करके 40 दिन के पीरियड में क्लेम (Claim) करके पूरे पैसे वापस ले सकता है।

## प्राचीन, दुर्लभ हस्तलिखित ग्रन्थ

1 असली प्राचीन हस्तलिखित भृगुसंहिता महाशास्त्र—इस ग्रन्थ की खोज में हजारों पंडित, तपस्वी तथा सर्वसाधारण जन लगे हुए थे। हमने अत्यन्त प्रयत्न करके इस हस्तलिखित ग्रन्थ को छापा है। न्यौछावर 501/-

Recommended and Approved—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार चौक बड़ाहिन्दू दिल्ली-110006

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# मनपसन्द पुस्तकें वी. पी. पी. द्वारा मंगाइए !

(1) अमृत सागर—अब से एक सौ वर्ष पूर्व लिखी गई हिकमत चिकित्सा की एक जिम्मेदार पुस्तक। मू 24-00

(2) आल राउण्डर गाइड—प्रस्तुत पुस्तक पढ़ने के बाद आप किसी भी क्षेत्र में पराजय का मुंह नहीं देखेंगे। नीति विषयक श्रेष्ठतम पुस्तक। मूल्य 15/- (पन्द्रह रुपये)

(3) हनुमान प्रसाद का दृष्टान्त सागर (संपूर्ण पांचों भाग)—प्रत्येक पैरेण्ट्स को अपने बच्चों को यह पुस्तक अवश्य पढ़ने को देनी चाहिए। इससे बच्चों में अच्छे विचार उत्पन्न होकर उनकी बुद्धि का विकास होता है। मू. 36/-

(4) सिलाई मशीन रिपेयरिंग—आज प्रत्येक घर में सिलाई मशीन का प्रयोग होता है, परन्तु उसकी रिपेयरिंग के लिए दूसरों का मुंह ताकना पड़ता है। इस पुस्तक की सहायता से आप घर पर ही सिलाई मशीन खोलकर ओवर-हालिंग कर सकते हैं। मूल्य 12/- (बारह रुपये)

(5) जल चिकित्सा—यदि आप हकीम, डाक्टरों व वैद्यों की दवाइयाँ खाते-खाते ऊब गये हों, मगर फिर भी रोग काबू में न आ रहा हो तो निराश होने की आवश्यकता नहीं है। आज ही 'जल चिकित्सा' नामक पुस्तक मंगाकर अपने भयंकर से भयंकर रोगों को दूर करें। मूल्य 4-50 (साढ़े चार रुपये) By : डाक्टर लुईकोने

(6) भारतीय मालिश—ब्रह्ममुहूर्त से लेकर सूर्योदय तक भारतीय मालिश करके अपने शरीर को हृष्ट-पुष्ट, सुडौल तथा सुन्दर बना सकते हैं। मू० 10/- (दस रुपये)

(7) नाड़ी ज्ञान तरंगिणी (अनुपान तरंगिणी सहित)—इस पुस्तकमें दी गई नाड़ी परीक्षा द्वारा आप प्रत्येक रोग की जानकारी आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। मूल्य 12/-

(8) अपने लान में सब्जी व तरकारी उगाइए—बिना किसी माली की सहायता के आप अपने लॉन को किचन गार्डन बनाइये और उसमें विविध प्रकार की शाक-भाजी व तरकारी उगाकर प्रयोग में लायें। मनोरंजन का मनोरंजन और सब्जियों का प्रयोग करके स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करें। मूल्य 10/- (दस रुपये)

(9) वायरलैस रेडियो गाइड—प्रत्येक रेडियो की तकनीकी जानकारी तथा रिपेयरिंग का ज्ञान प्राप्त करें। इसके लिए किसी के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। घर बैठे सीख सकते हैं। मूल्य 24/-(चौबीस रुपये)

(10) लेडीज गाइड—प्रस्तुत पुस्तक में सिलाई, कटाई, कढ़ाई तथा बुनाई सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारी चित्रों सहित दी गई है। मू० 10/- (दस रुपये)

(11) चम्पादेवी मारवाड़ी गीत संग्रह (भजन सागर)—हरियाणा, भिवानी, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, चिड़ावा तथा झुंझनू आदि जहाँ का मारवाड़ी वर्ग भारत ही नहीं वरन् विश्व में फैला हुआ है उन्हीं के लिए यह पुस्तक तैयार की गई है। मू० 10/- (दस रुपये)

(12) चम्पादेवी मारवाड़ी पारवा भजन प्रकाश—छपकर तैयार है। मूल्य 10-00

(13) एकमुखि-पंचमुखि हनुमत्कवच (भा० टी०)—पवनपुत्र, महावीर, हनुमान जी के श्रद्धालु भक्त इस पुस्तक को अवश्य मंगायें। मू० 3/- (तीन रुपये)

(14) रहवास रामायण—भक्त रविदास के अनुयायी लाखों की संख्या में हैं। भक्त रविदास जी का जीवन-चरित्र गद्य एवं पद्य दोनों में दिया गया है। मू० 12-00

(15) बालकराम का पूरण भक्त—स्यालकोट के राजा शालिवाहन के पुत्र पूरन भक्त का वृतान्त बड़ा रोचक व करुणामयी है। कासन(KASAN), जिला गुड़गावां (हरियाणा प्रदेश) में पूरन भक्त (बाबा चौरंगी नाथ) का मन्दिर आज भी जीती-जागती कला का परिचय देता है। भादों सुदी एकादशी से पूर्णिमा तथा माघ सुदी चौदस को भारत के प्रमुख नगरों से लाखों की संख्या में यात्री अपनी मन की मुरादें पाने के लिए पूरन भक्त के मन्दिर में आकर दर्शन करते हैं। यह पुस्तक 756 दोहे व चौबोलों में लिखी गई है। पृष्ठ 272, मोटा बम्बइया टाइप, मू० 12/-

(16) बालकराम का गोपीचन्द—छपकर तैयार है। पृष्ठ 326-मू० 12/- (बारह रुपये)

(17) ओलम्पिक कुश्ती—पुराने ढंग की कुश्तियों का चलन कम होकर ओलम्पिक ढंग की कुश्ती लड़ने वाले पहलवानों का मान-सम्मान ही नहीं, वरन् उन्हें इनाम भी अधिक मिलता है। प्रस्तुत पुस्तक एक ओलम्पिक दांव-पेचों के जानकार पहलवान द्वारा सचित्र रूप में लिखी गई है। मू० 15/- (पन्द्रह रुपये)

(18) हैण्ड-बुक आफ इलैक्ट्रिक इंजीनियरिंग—आई० टी० आई०, आई० आई० टी० के सिलेबसानुसार इलैक्ट्रिक ट्रेड पर एक जिम्मेदार पुस्तक। लेखक ओ० एन० टंडन। मू० 12/-

(19) हैण्ड-बुक आफ मैकेनिकल इंजीनियरिंग—मू० 12-00

(20) हैण्ड-बुक आफ सिविल इंजीनियरिंग—मू० 12/-

(21) स्पीडली जनरल नालिज कोर्स—स्कूल व कालिज की परीक्षाओं, इण्टरव्यू तथा नौकरियों के लिए लिखित परीक्षा आदि में सफलता प्राप्त करने में अनन्य सहायक, जनरल नालिज की अन्यान्य पुस्तकों से सर्वथा भिन्न, नवीनतम जानकारियों से परिपूर्ण, बेरोजगार तथा प्रोमोशन के इच्छुक युवकों के लिए अत्यन्त उपयोगी पुस्तक; जिसमें बिल्कुल नये ढंग का 30 दिन का कोर्स है। मू. 10/

प्राप्तिस्थान—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

**शकुन ज्योतिष शास्त्र** -यात्रा, परदेश अथवा अन्य अवसरों पर शकुन निकालना, जीवन पर शकुनों का अच्छा बुरा प्रभाव, पशु-पक्षी व अंग फड़कने आदि का फल। लेखक : राजेश दीक्षित। मूल्य 18/- (अठारह रु०)

2. **सुगम ज्योतिष शास्त्र (सरल सुगम ज्योतिष)**---इस ग्रंथ में ज्योतिष के सभी अंगों का विस्तृत वर्णन किया गया है। ज्योतिष प्रेमियों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रंथ है। लेखक : पं० जगन्नाथ। मूल्य 24/- (चौबीस रुपये)

3. **रमल ज्योतिष शास्त्र**---रमल ज्योतिष का सम्यक् ज्ञान देने वाली सर्वजनोपयोगी एकमात्र पुस्तक। लेखक : राजेश दीक्षित, मूल्य 24/- (चौबीस रुपये)

4. **स्वर ज्योतिष शास्त्र**—नाक के छिद्रों द्वारा श्वास वायु का आगमन निश्चित तिथि और समय के अनुसार न होने से शरीर पर उसका क्या प्रभाव पड़ता है इसका सही विवेचन। ले० : राजेश दीक्षित। मू० 18/-

5. **कैरलीय ज्योतिष शास्त्र**---इल्मे कैरल ज्योतिष पर एक सम्पूर्ण पुस्तक। लेखक : राजेश दीक्षित, मू० 18/- (अठारह रुपये)

6. **मुहूर्त ज्योतिष शास्त्र**—प्रत्येक गृहस्थी के लिए मुहूर्त निकालकर कोई भी शुभ कार्य करना अत्यन्त आवश्यक है। लेखक : राजेश दीक्षित मूल्य 18/- रुपये

7. **प्रश्न ज्योतिष शास्त्र (प्रश्न चमत्कार)**—प्रश्न मार्तण्ड कहिए, चाहे प्रश्न कौतुहल या प्रश्न भास्कर कहिए; बहरहाल जीवन से सम्बन्धित आवश्यक प्रश्नों का सही-सही उत्तर क्षणों में देने वाली उत्तम पुस्तक। लेखक : पं० जगन्नाथ। मूल्य 15-00

8. **सरल ज्योतिष शास्त्र**—ज्योतिष सम्बन्धी प्रारम्भिक विषयों की जानकारी देने वाली अत्युपयोगी पुस्तक। ले० राजेश दीक्षित। मूल्य 15/- (पन्द्रह रुपये)

9. **हस्त-सामुद्रिक शास्त्र**—आपकी आयु कितनी होगी, रोग से मुक्ति कब होगी ? मृत्यु किस परिस्थिति में होगी, आदि समस्त बातों का विवरण हस्त रेखाओं के फलादेशानुसार इस पुस्तक से प्राप्त करें। मूल्य 15.00

10. **फलित ज्योतिष मार्तण्ड**—1 मास में यदि फलित ज्योतिष में पूर्ण निपुणता प्राप्त करना चाहते हैं तो इस पुस्तक को मंगाकर अवश्य पढ़ें। मूल्य 12/- (बारह रुपये)

11. **स्वप्न ज्योतिष शास्त्र**—सातों प्रकार के स्वप्नों का अकारादि क्रम से शुभाशुभ फल, साथ ही साथ पुस्तक के अन्त में पढ़ें। पासे द्वारा प्रश्नों का फल। लेखक : राजेश दीक्षित। मूल्य 6/- (छः रुपये)

12. **स्वर ज्योतिष और भाग्य (स्वर सिद्धि और शकुन)**—प्रश्नोत्तर के रूप में लिखी गई स्वर ज्योतिष की अमूल्य सचित्र पुस्तक। मूल्य 3/- (तीन रुपये)

13. **बृहद् हस्त रेखा विज्ञान (भाग्य का कम्प्यूटर)** - पृष्ठ 432, चित्र 560, बड़ा साइज, पक्की जिल्द में हस्तरेखा पर सबसे जिम्मेदार पुस्तक। जिसमें सभी नर-नारी अपने हाथ की रेखाओं द्वारा भूत-भविष्य व वर्तमान की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। मूल्य 24/- डाक खर्च 4/- पृथक्।

14. **कुण्डली दर्पण**—मूल्य 15-00

15. **षोडश संस्कार विधि**—छपकर तैयार मू० 15/-

---

**36/- में घर बैठे ऐलोपैथिक डाक्टर बनकर देश व जाति का भला करें :**

भारत का प्रत्येक व्यक्ति इस बात से भलीभांति परिचित है कि जितनी रिसर्च ऐलोपैथी में हुई है, उतनी और किसी चिकित्सा पद्धति में नहीं हुई। अधिकांश ऐलोपैथिक डाक्टरों के पास घर की बिल्डिंग, टेलीविजन सैट, कार तथा लाखों रुपये का बैंक बैलेंस होता है। यह सब ऐलोपैथिक चिकित्सा की सफलता के कारण कुछ ही समय में प्राप्त किये जा सकते हैं, बशर्ते कि आप सफल डाक्टर बन सकें। यदि आप घर बैठे ऐलोपैथिक डाक्टर बनना चाहते हैं तो हमारी अत्यन्त रिसर्च पूर्ण पुस्तक :

## आधुनिक ऐलोपैथिक गाइड

☐ ले० : हरनारायण कोकचा, ☐ पृ. 784, मू० 36/- आज ही मंगाकर पढ़ें। इसकी सहायता से किसी भी शहर, कस्बा, देहात या गली-कूचे में ऐलोपैथिक चिकित्सा करके धन व यश के साथ-साथ देश व समाज का भला कर सकते हैं।

इस पुस्तक में कम्पाउण्डरी शिक्षा, होम नर्सिंग, मिडवाइफरी, फर्स्ट-एड, रोग परीक्षा पद्धति, इंजेक्शन लगाना व बनाना, नयी-नयी पेटेण्ट मेडीसन्स, रोगों के जानने के नये वैज्ञानिक उपाय, पैथालोजी, एनाटोमी, फिजियालोजी, बैक्टोलोजी, सर्जरी, रोजाना सताने वाले नये-पुराने रोगों की सफल ऐलोपैथिक चिकित्सा तथा ऐलोपैथी में अब तक हुए नये से नये आविष्कारों का सचित्र वर्णन किया गया है।

---

ज्योतिष, कर्मकाण्ड, पूजा-पाठ तथा चिकित्सा सम्बन्धी सभी प्रकार की पुस्तकें मंगाने का एकमात्र विश्वसनीय स्थान :

**देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार,**

चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006, फोन : 261030

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

—जो उसकी तरक्की में रुकावट पैदा करती हैं।

1. देशी तथा विदेशी भाषाओं पर पूरा अधिकार (Command) न होना, 2. छोटा कद, 3. बेडौल मोटापा, 4. शारीरिक दुर्बलता, 5. धन की आवश्यकता, 6. व्यक्तित्व और सौन्दर्य में निखार तथा आकर्षक न होना, 7. ऑल राउण्डर न होना, 8. निर्भयता व साहस न होना।

—अगर इनमें से कोई भी कमी आप में न रहे, तो इसमें कोई शक नहीं कि आप भी कामयाबी की नई ऊँचाइयों को छू सकते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि ये कमियाँ दूर कैसे हों ?

-- लीजिए, यह है आपकी इन समस्याओं का सरल उपाय।

आप—लड़का हैं या लड़की, मालिक हैं या नौकर, व्यापारी हैं या सेल्समैन, स्टूडेण्ट हैं या मिलिट्रीमैन, या किसी भी सरकारी अथवा गैर सरकारी ऑफिस में काम करते हैं।

निम्न 8 पुस्तकों के सैट में आपकी उक्त आठों समस्याओं का निश्चित और ठोस समाधान प्रस्तुत है।

● विश्व की 25 भाषाएँ कैसे सीखें ?

**1. देश-विदेश की 25 भाषाएँ सीखिए** — राजेश दीक्षित — मू० 10/-
(Learn 25 Indian and International Languages)

● कद बढ़ाने का 15 दिन का वैज्ञानिक कोर्स

**2. कद लम्बा कैसे करें ?** — एस० सी० शुक्ल — मू० 10/-
(How to Increase Your Height)

● लेडीज के लिए 15 दिन का स्लीमिंग कोर्स

**3. मोटापा कम कैसे करें ?** — राजेश दीक्षित — मू० 10/-
(How to Reduce Your Weight

● शरीर को स्वस्थ बनाएँ कैसे ?

**4. आपकी हैल्थ ?** — स्वामी शिवानन्द — मू० 10/-
(Your Health)

● थोड़ी पूँजी से चलने वाली सैकड़ों इण्डस्ट्रीज का वर्णन

**5. लेटेस्ट स्माल स्केल इण्डस्ट्रीज़** — बी० के० अग्रवाल — मू० 36/-
(New Small Scale Industries)

● विज्ञान की नई खोज

**6. सुन्दर व आकर्षक कैसे बनें ?** — ऊषा — मू० 10/-
(How to Improve Your Beauty)

● हर जगह सफलता आपके कदम चूमे

**7. आल राउण्डर्स गाइड** — ए० सी० शुक्ल — मू०15/
(All Rounders Guide)

● साहसी, निर्भय व आत्मविश्वासी बनने के लिए

**8. जूडो, कराटे, जुजुत्सु बाक्सिंग सहित** — सुरेन्द्र शर्मा — मू० 10/-

30/- की रियायत—10/- +10/- +10/- +10/-, +36/- + 10/- +10/- +10/- =106/- होता है और पोस्टेज 25/- मिलाकर मूल्य 131/- हुआ, मगर जो सज्जन 101/- रु० एडवान्स M.O. या बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेज देंगे, उन्हें इन्सान की गलतियों का (पूरा सैट 8 पुस्तकों का) रजि० पैकिट द्वारा भेज दिया जाएगा।

मंगाने का पता --देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006



CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# घण्टाकर्ण यंत्र

बीसवीं शताब्दी के परम विशिष्ट साधक योगीराज अनहदानन्द ने घण्टाकर्ण के बारे में कहा है, 'यह यन्त्र आश्चर्यचकित कर देने वाला है, असाध्य से असाध्य कार्यों को साधने वाला तथा त्वरित फल देने में अग्रणी है।' महाप्रभु विज्ञानानन्द ने घण्टाकर्ण यन्त्र पर वृहद् ग्रन्थ लिखा है। भूमिका में उन्होंने सारांशतः लिखा है कि जिस दिन दुनिया घण्टाकर्ण का रहस्य समझ लेगी, उस दिन वह भूखी-नंगी नहीं रहेगी। त्रिकालदर्शी साधक व्यासाचार्य ने कहा है, 'घण्टाकर्ण के भेदोपभेद असीम हैं, यह रक्षाकार्यों में गाण्डीववत् और धन-सम्पदा कार्यों में कुबेरवत् है।'

## घण्टाकर्ण यन्त्रस्वरूप

तेरह रेखाएँ सीधीं और बारह रेखाएँ तिरछी खींच कर बराबर 132 कोष्ठक बनाए जाते हैं और फिर चक्रवत् घण्टाकर्ण मन्त्र का प्रत्येक अक्षर एक-एक कोष्ठक में अंकित किया जाता है। इस प्रकार घण्टाकर्ण मन्त्र के 131 अक्षर उन कोष्ठकों में लिख दिए जाते हैं और मध्य के कोष्ठक में घण्टाकर्ण बीज कल्प अंकित किया जाता है। इस प्रकार पूरे 132 खण्ड (कोष्ठक) घण्टाकर्ण बीज कल्पयुक्त घण्टाकर्ण मन्त्र अंकित कर देते हैं। ये 132 खण्ड एक सौ बत्तीस सिद्धियों के आगार कहे जाते हैं।

## घण्टाकर्ण यन्त्र पूजन-समय

घण्टाकर्ण यन्त्र सिद्ध करने के लिए कार्तिक, मार्गशीर्ष, वैशाख तथा ज्येष्ठ मास शुभ कहे गए हैं, साथ ही शुक्ल पक्ष, पंचमी, दशमी, पूर्णिमा तिथि और चन्द्र, बुध, गुरुवार का संयोग लिया जा सके तो श्रेष्ठ रहता है। परम दैवज्ञ योगी 'छिन्ना स्वामी' के मतानुसार रविवार को हस्त, मूल या पुष्य नक्षत्र हो और उस दिन इसे सिद्ध किया जाए तो ज्यादा उचित रहता है। पश्चिम के प्रसिद्ध तांत्रिक श्राक्फ के अनुसार किसी भी अमावस्या की रात्रि को यह मन्त्र सिद्ध करना पूर्ण सफलतासूचक रहता है।

मेरे अनुभव के अनुसार दीपावली में पाँच दिन पूर्व और पाँच दिन बाद तक का समय इस कार्य के लिए सर्वोत्कृष्ट रहता है, इसके अलावा विजयदशमी, मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी, अमृत, सिद्धि, योग, आनन्द, श्री वत्स, छत्र इत्यादि योगों में सिद्ध किया यन्त्र पूर्ण फलदायक रहता है।

## यन्त्र भेद

वास्तव में देखा जाए तो इस यन्त्र को भली प्रकार से समझा ही नहीं गया है, यह यन्त्र असीम सिद्धियों से परिपूर्ण है। कहते हैं कि कुबेर ने अपने आपको सर्व ऐश्वर्य सम्पन्न बनाने के लिए भगवान पशुपतिनाथ से इस यन्त्र का रहस्य समझा था और प्रयोग किया था। शेष विश्व को इस यन्त्र की श्रेष्ठता तथा रहस्य कुबेर से ही ज्ञात हुए थे। कहा जाता है कि यदि कोई साधक या योगी इस यन्त्र के भेदोपभेद जानकर सिद्ध कर ले तो वह विश्व का श्रेष्ठ धनपति, यशपति और श्रीपति हो सकता है। इस पर भी इस यन्त्र की विशेषता यह है यह योगी तथा गृहस्थ दोनों के लिए सेवनीय तथा उपयोगी है।

इस यन्त्र में कुल 132 भेद हैं, एक सौ बत्तीस यन्त्र भेद हैं, एक सौ बत्तीस ही साधना-पद्धतियाँ हैं और एक सौ बत्तीस ही सिद्धियाँ हैं। जो इस यन्त्र के सभी भेद सिद्ध कर लेता है, वह विश्व का विरला व्यक्ति हो जाता है।

उच्छिष्ट, त्रैलोक्य, मोहन, शक्ति, सिद्धि, मृत्युञ्जय, दक्षिण, नवनिधि, घण्टाकर्ण, प्रयोग के वीरसाधन, शत्रुञ्जय आदि 60 प्रकार के भेद हैं।

## यन्त्र निर्माण

अलग-अलग कार्यों एवं कामना सिद्धि के लिए अलग-अलग प्रकार से यन्त्र निर्माण होता है। शत्रुस्तम्भन कार्यों के लिए ताम्रपत्र पर, वशीकरण के लिए कागज पर गोरोचन से, लक्ष्मी प्राप्ति के लिए रजत पर, समस्त प्रकार के ऐश्वर्य हेतु पंच धातु पर तथा कुबेरवत् सम्पदायुक्त अक्षय कीर्त्ति हेतु स्वर्ण पर यन्त्र निर्माण होता है।

यन्त्र उत्कीर्ण अत्यन्त सूक्ष्म एवं परिश्रमसाध्य कार्य है, अलग-अलग कार्यों के लिए अलग-अलग मुहूर्त में ही यन्त्र उत्कीर्ण किया जाता है। लक्ष्मी प्राप्ति, ऐश्वर्य, धन सम्पदा व अक्षय कीर्ति के लिए नित्य दोपहर बारह बज कर सात मिनट से बारह बज कर इकतीस मिनट तक विजय काल में ही यन्त्र उत्कीर्ण होना चाहिए, तभी वह पूर्ण प्रभावशाली एवं सिद्धिप्रद होता है।

योगीश्वर अग्रजानन्द स्वामी के अनुसार यदि अन्य धातु उपलब्ध न हो तो भोजपत्र पर अष्टगन्ध से यन्त्र उत्कीर्ण का प्रयोग किया जाए, तब भी सफलता सम्भव है।

## घंटाकर्ण मन्त्र

यन्त्र साधना से पूर्व छह क्रियाएँ आवश्यक होती हैं :

1. मन्त्रबीज, 2. मन्त्र-बहिर्न्यास एवं अन्तर्न्यास, 3. मन्त्र-उत्कीलन, 4. मन्त्रचैतन्य, 5. मन्त्रविनियोग और 6. मन्त्रप्रयोग। साधक को योग्य गुरु के चरणों में बैठ कर इन क्रियाओं की विधि और उनसे मन्त्रों का सम्यक् ज्ञान कर लेना चाहिए।

## घन्टाकर्ण बीज मन्त्र

पूरे मन्त्र के एक सौ बत्तीस मन्त्र हैं जो अलग-अलग कार्यों के लिए अलग-अलग हैं घन्टाकर्ण लक्ष्मी बीज मन्त्र है—

'॥ ओम ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः घन्टाकर्ण नमः ॥

इस सम्बन्ध में खोज करने पर काफी विवरण मिला है। कलकत्ता लाइब्रेरी में 'घन्टाकर्ण यन्त्र—गुह्यातिगुह्य यन्त्र' शीर्षक से हस्तलिखित प्रति है जिसमें इस बारे में विस्तृत विवरण है। पटना नेशनल लाइब्रेरी में 'घन्टाकर्ण कल्प' शीर्षक से हस्तलिखित बत्तीस पन्नों की पुस्तक है, जिसमें घन्टाकर्ण साधना विधि सही रूप में अनुभव गम्य लिखी हुई है। सेठ रघुनाथदास जालान लाइब्रेरी में पहली प्रामाणिक हस्तलिखित पोथी है जिसका नाम 'घन्टाकर्ण यन्त्र—यन्त्रसार' क्रमांक 12831 है। इस में विस्तार से घन्टाकर्ण यन्त्र साधना अनुष्ठान पद्धत्ति और एक सौ बत्तीस घन्टाकर्ण यन्त्रभेद चित्र हैं जो कि प्रामाणिक हैं जिसमें प्रत्येक साधना विधि, बाधाएँ-निराकरण और सम्बन्धित फल स्पष्ट किए हुए हैं। मूलजी पुस्तकालय बम्बई में घन्टाकर्ण के एक सौ बत्तीस भेदयन्त्र ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण हैं। श्रीलंका की प्रसिद्ध काली गुफाओं तथा नेपाल के रामगोडा मन्दिर में यह यन्त्र व इसके 132 यन्त्र भेद अंकित हैं। (साप्ताहिक हिन्दुस्तान से साभार)

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

असली प्राचीन हस्तलिखित | लोक-परलोक के लिए कल्याणकारी !! | शास्त्रीय ग्रन्थों का निचोड़ !!!

जो ग्रन्थ अब तक अप्राप्त थे और जिन्हें पाने के लिए विद्वान्, ज्योतिषी, तान्त्रिक, साधक, सिद्ध-स्नातें वर्षों से प्रयत्नशील थे, वे महाग्रन्थ अब तैयारी में हैं।

## वृहद् यन्त्र महार्णव

- मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, आकर्षण एवं शांतिकरण—इन षट्कर्मों से सम्बन्धित प्राचीन, प्रामाणिक एवं शास्त्रीय यन्त्रों का विशालतम संकलन।
- यन्त्र-लेखन, पूजन, साधन तथा धारणा सम्बन्धी शास्त्रीय विधियाँ।
- प्रेम, विवाह, नौकरी, यश, धन, मान-प्रतिष्ठा, विद्या, तीर्थ-यात्रा, विवाद-विजय आदि सभी मनोकामनाओं को सिद्ध करने वाले यन्त्र।
- शत्रु-विनाश, भूत-प्रेत पिशाचादि मुक्ति, देव-देवी तथा यक्ष, राक्षस, वैताल आदि को प्रसन्न एवं वशीभूत करने वाले यन्त्र।
- अद्भुत चमत्कार तथा प्रभाव प्रदर्शित करने वाले सहस्रों यन्त्र और उनसे सम्बन्धित सभी आवश्यक ज्ञातव्य विषय।

अपने विषय का अभूतपूर्व, सबसे विशाल महाग्रंथ मूल संस्कृत के साथ हिन्दी भाषा भाष्य एवं प्राचीन हस्तलिखित यन्त्र स्वरूप सहित :

### वृहद् यन्त्र महार्णव

सीमित संख्या में छप रहा है। यन्त्र साधकों एवं जिज्ञासुजन अपनी प्रति आज ही बुक करा लें, अन्यथा बाद में पछताना पड़ेगा; क्योंकि ऐसे महाग्रन्थ जल्दी-जल्दी प्रकाशित नहीं हो पाते।

- ☐ खुले पत्राकार बड़े साइज के 200 से अधिक पृष्ठ,
- ☐ नयनाभिराम शुद्ध मुद्रण, सैकड़ों यन्त्रों के चित्र
- ☐ दक्षिणा 151/-

## वृहद् तन्त्र महार्णव

- समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाले।
- प्रत्येक चिन्ता, कष्ट, दुःख, रोग एवं पीड़ा आदि से छुटकारा दिलाने वाले।
- धन, सम्पत्ति, वस्त्राभूषण, वाहन, सेवक, गृह, पत्नी, सन्तान आदि की रक्षा करने वाले।
- प्रेम-सम्बन्ध, मुकद्दमा, झगड़े-झंझट, विवाद, कलह-शत्रुता, मैत्री, सगाई, विवाह, यात्रा, व्यवसाय, नौकरी, पदोन्नति, चुनाव, पद, लाभ, नेतृत्व आदि सभी क्षेत्रों में अद्भुत सफलता दिलाने वाले।
- भूत एवं भविष्य का ज्ञान, चमत्कारी करतबों का प्रदर्शन तथा दर्शकों को चकित कर देने वाले।
- कामरूप, चीन, बंगाल, मिश्र तथा दक्षिण आदि देशों में प्रचलित इन्द्रजाल, जादू तथा हाथ की सफाई के करतबों का ज्ञान कराने वाले।

प्रामाणिक, शास्त्रीय तथा लोक-प्रचलित तन्त्रों का अभूतपूर्व, विशाल तथा अद्भुत प्राचीन हस्तलिखित महाग्रन्थ

### वृहद् तन्त्र महार्णव

सीमित संख्या में छप रहा है। अपनी प्रति सुरक्षित करने के लिए आज ही लिखें, अन्यथा बाद में पछताना पड़ेगा।

- ☐ बड़े खुले पत्राकार 250 से अधिक पृष्ठ,
- ☐ सैकड़ों चित्रों से युक्त,
- ☐ भेंट 131/- रुपये

## वृहद् मन्त्र महार्णव

- जो ग्रन्थ कुछ समय पूर्व तक कहीं ढूंढ़ने पर भी नहीं मिलता था।
- जो मन्त्र, यन्त्र एवं तन्त्र का महासागर है।
- जिसमें सभी देवी-देवताओं के स्तोत्र, कवच, हृदय, न्यास, सूक्त आदि का साङ्गोपाङ्ग वर्णन है।
- जिसमें यक्षिणी, भूत, प्रेत, पिशाच, वैताल, कूष्माण्ड, योगिनी, डाकिनी, शाकिनी, भैरव आदि की सिद्धि के गुप्त प्रयोग सम्मिलित हैं।
- जिसमें मारण, मोहन, उच्चाटन, सम्मोहन, आकर्षण, वशीकरण एवं शान्तिकरण सम्बन्धी सहस्रों प्राचीन एवं शास्त्रीय प्रयोग भरे पड़े हैं।
- जिसमें सैकड़ों आवर, फारसी तथा लोक-प्रचलित प्रभावशाली मन्त्र-प्रयोग संकलित हैं।

कलिकाल में प्रभावशाली, मन्त्र-साधकों का हृदय, परमार्थ-साधकों का मार्ग-दर्शक तथा तांत्रिकों का सर्वश्रेष्ठ, महाकाय, अद्भुत ग्रन्थ :

### वृहद् मन्त्र महार्णव

अब सीमित संख्या में छपरहा है है।

- हस्तलिखित, प्राचीन एवं प्रामाणिक ग्रन्थों का निचोड़ तथा इहलोक-परलोक साधन का यह चमत्कारी एवं लोक-कल्याणकारी महाग्रन्थ प्रत्यक्ष प्रभाव प्रदर्शित करने वाला है। मूल संस्कृत के साथ हिन्दी भाष्य इस ग्रन्थ की विशेषता है, जिसके कारण यह सर्व-साधारण के लिए अत्यन्त उपयोगी बन गया है।

- ☐ पत्राकार, बड़े साइज के 350 से अधिक पृष्ठ
- ☐ सर्वांग सुन्दर, शुद्ध तथा नयनाभिराम मुद्रण
- ☐ न्यौछावर 171/-

नोट—उपरोक्त तीनों ग्रन्थ एक साथ मँगाने पर (433/- रु० (151+171+131=453) रु० के बजाय 433/- रु० में भेजे जायेंगे। परन्तु 433/- रु० पेशगी भेजने वालों को ही ग्रन्थ भेजे जायेंगे। अर्थात् वी० पी० पी० नहीं की जायगी। (असली, प्राचीन, हस्तलिखित लंकेशपति रावण-संहिता भेंट 501/- रु० की छपने वाला है)

**देहाती पुस्तक भण्डार, (Regd.) चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुल्ला, दिल्ली टेलीफोन-261030**



CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# सिद्ध मन्त्रोपासना

● मंत्र-सिद्धि के लिए चार साधन आवश्यक है— 1. एकान्त स्थान, 2. परम शान्ति, 3. एकाग्रता, 4, दृढ़ निश्चय। इसके साथ-साथ मंत्रदाता गुरु में, मंत्र में तथा मंत्र के देवता में परिपूर्ण श्रद्धा, विश्वास, भक्ति, प्रेम तथा भाव आदि होना अनिवार्य है।

उपर्युक्त में कमी होने पर मंत्र सिद्धि सन्दिग्ध रहती है।

● मंत्र जाप तथा नियम पूर्ण होने के बाद दशांश आहुतियाँ, मंत्र के अन्त में 'स्वाहा' शब्द बोल कर आहुति देनी चाहिए। आहुतियों के लिए साधारणतः निम्नलिखित सामग्री साफ सुथरी तैयार करके रख लेनी चाहिए।

**● हवन की अष्टांग सामग्री**

तिल 1 किलो, चावल 500 ग्राम, यव (जौ) 125 ग्राम, खाण्ड 125 ग्राम, शुद्ध घी आवश्यकतानुसार, चन्दन बुरादा 25 ग्राम, अगर 10 ग्राम, तगर 10 ग्राम, कर्पूर 10 ग्राम, केशर 5 ग्राम, नागरमोथा 25 ग्राम, पंच मेवा 100 ग्राम, कमल पुष्प 100 ग्राम, बेलगिरि 250 ग्राम, गूगल 100 ग्राम, कमलगट्टा 50 ग्राम, समिधा (पलाश-ढाक, लाल चन्दन, सफेद चन्दन आदि) आवश्यकतानुसार।

## नौकरी प्रप्त्यर्थ एवं मनोरथ सिद्धि के लिए भुवनेश्वरी अम्बिकादेवी का मंत्र

**मंत्र**—"ॐ हरत्रिपुर हरभवानीवाला, राजा-प्रजा मोहिनी, सर्व शत्रु विध्वंसनी मम चिन्तितं फलं देहि-देहि भुवनेश्वरी स्वाहा।"

**विधि**—किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया से पूर्णिमा तक इस मंत्र का इक्कीस हजार जाप दिन-रात्रि में किसी भी समय (नियमित-संयमित रूप से) सुनिश्चित शांत पवित्र स्थान पर बैठ कर (रक्त पुष्प, प्रसाद, ज्योति-धूपादि युक्त) पूर्ण करना चाहिए। जाप पूर्ण होने पर इसी मंत्र द्वारा 'दो हजार एक सौ आठ' आहुतियाँ देनी चाहिए। हवन की पूर्णाहुति पर कम से कम एक ब्राह्मण, 3 कन्याएँ एवं बटुकनाथ (बालक) को प्रेमपूर्वक भोजन कराना चाहिए।

इसके पश्चात् नित्य प्रातः तथा रात्रि को उपर्युक्त मंत्र की 3 माला (108 मनके वाली 3 माला) जाप करना चाहिए। कुछ ही समय में इष्ट-सिद्धि का अनुभव होने लगेगा।

**टिप्पणी**—इष्ट-सिद्धि कराने वाले इस साधन (भजन जाप) को जितना गुप्त रखा जायगा उतना ही शीघ्र वह चेतनता को प्राप्त होगा।

## दरिद्रतानाशार्थ—'महालक्ष्मी मंत्र'

**मंत्र**—"ॐ कमल निवासिनी, सदा सुहासिनी मा चंचले! स्थिरां-स्थिरां ह्री-ह्री ॐ नमः कामाक्षायै ह्रीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा।"

**विधि**—शनिवार को अर्ध रात्रि से नित्य 1000 मंत्र जाप (धूप, दीप, नैवेद्य तथा पीले पुष्पादि युक्त) प्रारम्भ करना। इस प्रकार 22 दिन तक जप साधन करना चाहिए। तेईसवें दिन रात्रि को इसी मंत्र से विधिपूर्वक 2200 (22 माला) आहुतियाँ प्रदान कर, कम से कम एक ब्राह्मण, 3 कन्याएँ तथा एक बटुकनाथ (बालक) को श्रद्धापूर्वक भोजन कराना चाहिए। यहाँ अनुष्ठान पूर्ण हुआ। मगर बाद में भी नित्य प्रातः व रात्रि को एक-एक माला मंत्र-जाप करते रहना चाहिए। 365 दिन में आपको धन-लाभ का अनुभव होने लगेगा।

## बवासीर शमनार्थ सिद्ध सावर-मंत्र

**मंत्र**—"ईशम ईशो ईशाम, कंकर को न करो ललिशाम। आठों अच्छर जो नित जोय, मूल बवासीर होय न होय।"

**विधि**—शौच (आवदस्त) में बचे हुए पानी को सूचित मंत्र से 21 बार अभिमंत्रित करके, मस्सों का प्रक्षालन करें। यह क्रिया पाखाने (लिटरीन) में बैठे हुए ही करनी चाहिए। इस प्रकार 21 दिन तक यह क्रिया करें। खूनी या बादी बवासीर में इस मंत्र क्रिया का अद्भुत प्रभाव पड़ कर पर्याप्त लाभ होता है। ●

**उपवास**

यदि खूनी बवासीर हो और इसके कारण अधिक पीड़ा हो, तो दो या तीन दिन तक पूर्ण उपवास करना चाहिए। इससे रक्त बहना बन्द हो जायेगा तथा स्वास्थ्य में वृद्धि भी होगी।

ऊपर बताई गई चिकित्सा विधि के साथ-साथ सप्ताह में एक बार पूर्ण उपवास भी रखना लाभकारी होगा। □



CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

अपनी च्वाइस (Choice) की कोई भी इण्डस्ट्री स्टार्ट करने से पूर्व हमसे अवश्य परामर्श लें।

# Attention Please कृपया ध्यान दें !

## सी. सी. आई. प्लान्ट प्रोसैस नो हाउ रिपोर्ट
## (CCI Plant Process Know How Report)

☆ क्या आप नये उद्योग लगाने के इच्छुक हैं ? ☆ क्या आप अपने चालू (Running) उद्योग को किसी अन्य अधिक मुनाफेवाला उद्योग में परिवर्तित करना चाहते हैं ? ☆ क्या आपके चालू उद्योग में कोई रुकावट या क्षति हो रही है ?

तब आप CCI द्वारा बनाई गई प्लान्ट प्रोसैस नो हाऊ रिपोर्ट खरीद कर लाभान्वित हों। प्रत्येक रिपोर्ट CCI के विशेष इन्जीनियर तथा टैक्नालाजिस्ट द्वारा तैयार की जाती है, जोकि सत्यता (authenticity) की प्रतीक है।

चाहे, आपका कोई भी क्षेत्र हो जैसे, कार्बनिक या अकार्बनिक कैमीकल्स, रबड़, प्लास्टिक, फूड, डाई एवं डाई इन्टरमीडियट, फाइन कैमीकल्स, ड्रग्स एवं फार्मासिटिकल्स, सोप एवं डिटरजैन्ट, एग्रो वेस्ड प्रोडक्ट्स, लुब्रीकेन्ट, पेपर एवं पेपर प्रोडक्ट्स, आयल एवं फैट्स, एलाक्ट्रानिक, इलेक्ट्रिकल, मिकैनिकल, मैटालर्जिकल, पेन्ट एवं वार्निश, रैजिन एवं एमल्शन, पैस्टीसाइड्स इत्यादि।

CCI की प्लान्ट प्रोसैस नो हाऊ रिपोर्ट प्रत्येक कदम पर आपका पथ-प्रदर्शन करेगी। इन रिपोर्टों के अन्तर्गत निम्न मुख्य बातें होंगी :—

1. उत्पादक की रूपरेखा (Product Introduction)
2. उपयोग एवं प्रयोग (Uses & Applications)
3. गुण (Properties)
4. मार्कीट की स्थिति (Market Position)
5. बनाने की विधि, लेखा-चित्र के साथ (Manufacturing Process with Flow sheet)
6. मशीन व उपकरण का विवरण तथा मूल्य (List of plant and machineries with estimated cost)
7. कच्चे माल की आवश्यकता तथा कीमत (Requirement of raw materials and estimated cost)
8. लाभ व हानि (Profitability Analysis)
9. कच्चे माल के निर्माताओं के पते।
10. मशीनरी के निर्माताओं के पते।

उपर्युक्त रिपोर्ट हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध हैं, अतः आर्डर देते समय स्पष्ट लिखें कि प्रोजेक्ट रिपोर्ट हिन्दी में चाहिए या अंग्रेजी में।

कीमत = 200/- प्रति रिपोर्ट,

50% अग्रिम भेज कर प्रोजैक्ट रिपोर्ट का आर्डर बुक करायें। ☐ परामर्श फीस 50/- प्रति आइटम।

## समस्त इण्डस्ट्रियलिस्टों को आवाहन !
### (आपकी सभी समस्याओं का समाधान हम करेंगे)

प्रत्येक इण्डस्ट्रियलिस्ट को अपनी इण्डस्ट्री सुचारु रूप से चलाने के लिए अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कुछ समस्याएँ निम्नलिखित हो सकती हैं—

1. कितने रुपये से कौन-सी इण्डस्ट्री स्टार्ट होगी। 2. क्या इण्डस्ट्री फुल टाइम के लिए लगाना चाहते हैं अथवा पार्ट-टाइम के लिए। 3. स्माल स्केल पैमाने पर या होम (घरेलू) उद्योग।
4. इण्डस्ट्री चालू हो जाने पर किस कारण बन्द हुई ? या नुकसान में क्यों चल रही है ? जितना मुनाफा मिलना चाहिए, क्यों नहीं मिल रहा है। प्रोडक्शन कम क्यों हो रहा है ?

बहरहाल कोई भी परेशानी हो, आपको 1200 पृष्ठ की, बड़े साइज की, जिसमें एक हजार एक इण्डस्ट्रियों का सचित्र विवरण है, आज ही Rs. 101/- का M.O. या बैंक ड्राफ्ट भेजकर "लघु काटेज टिनी इण्डस्ट्रीज" नामक पुस्तक मंगा लेनी चाहिए।

(3) सी. सी. आई. प्लाँट प्रोसिस नो हाऊ रिपोर्टस एण्ड नो हाऊ बुक्स (C.C.I. Plant Process Know How Reports & Know How Books) हिन्दी अथवा अंग्रेजी किसी भी भाषा में मंगाने के लिए आज ही डेढ़ रुपया 1·50 MO द्वारा निम्न पते पर भेज दें :

**सी. सी. आई. कन्सल्टैण्ट्स कार्पोरेशन आफ इण्डस्ट्रीज**

113-B, चावड़ी बाजार, (इनसाइड मुकट राय निवास), दिल्ली-6 फोन : 261030

C.C.I. CONSULTANTS CORPORATION OF INDUSTRIES

113-B, Inside Mukat Rai Niwas, Chawri Bazar, Delhi-6 Ph. 261030


CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# मन्त्रों द्वारा रोग निवारण

जब पुराणों में 'ॐ नमः शिवाय' अथवा 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' आदि मंत्रों के अद्भुत चमत्कारों का वर्णन आता है और इन मंत्रों के द्वारा समस्त रोग शोक दूर होने की तथा साक्षात् भगवान् के दर्शन करने तक की अद्भुत शक्ति का वर्णन पढ़ने को मिलता है तो कुछ लोग एकदम से विदक जाते हैं, और इन बातों को गपोड़ेबाजी तथा सफेद झूठ मानकर हंसी में उड़ाने लगते हैं। आज हम पाठकों के सामने 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का चमत्कार आर्य नेता अरविन्द कुमार विद्यालंकार द्वारा छपवाई सत्य घटना के आधार पर रखने जा रहे हैं। आशा है पाठक इसे ध्यान से पढ़ने की कृपा करेंगे। साप्ताहिक पत्र 'पूर्वाञ्चल धारा' (30 जुलाई, 12 अगस्त 1979 वाराणसी) के मुख पृष्ठ पर इस प्रकार छपा है—

## 'नमः शिवाय' मंत्र में कैंसर रोग एवं महाव्याधि को दूर करने की विलक्षण शक्ति

अमेरिका की महिला शारी ब्राउन 'ओम् नमः शिवाय' मंत्र के रहस्य की अनुभूति कर कष्टों से मुक्त हो गई। उसने कैंसर का विकट आपरेशन इस मंत्र का जाप करते-करते हँसते हुए कराया। यह चमत्कार देख सारा अस्पताल 'ओम् नमः शिवाय' की पवित्र ध्वनि से गूंज उठा। वह मंत्र जाप तब बन्द हुआ जब अस्पताल की मैट्रन ने कहा, यह आश्रम नहीं अस्पताल है। अमरीकी महिला शारी ब्राउन के शब्दों में ही उसका अनुभव पढ़िये जो मूल अंग्रेजी से अनुदित है। टेलीफोन पर अचानक महिला ब्राउन ने 'ओम् नमः शिवाय' मंत्र सुना और वह अनिर्वचनीय अनुभव से परिपूर्ण हो उठी तथा तुरन्त न्यूयार्क के आश्रम में पहुँची। उसने कहा, इस मंत्र ने इसके बाद से मेरी जीवन दृष्टि बदल दी। सब कुछ बदल गया। क्यों और कैसे हुआ ? यह बताना मेरे लिए संभव नहीं। यह वह रहस्यपूर्ण हृदय की अनुभूति थी। मेरे चारों ओर का सब कुछ बदल गया। कैंसर का कठिन आपरेशन अनायास सुखमय हो गया। सब चकित और विस्मित हो 'ओम् नमः शिवाय' मंत्र जपने लगे। ब्राउन का कहना है वह तो कैंसर के प्रति कृतज्ञता अनुभव करती है क्योंकि इसके कारण यह अनमोल पवित्र मंत्र पाया। इस महान अनुभूति को पाने के लिये कैंसर रोग होना तुच्छ बात है। ओम् नमः शिवाय मंत्र की महिमा जानना जीवन की एक अनहोनी घटना जैसी है। यह कल्पनातीत है। अनिवर्चनीय है। 'ओम् नमः शिवाय' पुस्तक की भूमिका स्वामी मुक्तानन्द ने लिखी है। स्वामी जी का कहना है कि सब रोग इस मंत्र के जप से दूर हो सकते हैं। मानव की अवस्था तथा आध्यात्मिक जीवन सुधर सकता है। आधिव्याधि को दूर करने की शक्ति 'ओम् नमः शिवाय' मंत्र में है। सत्य की पुष्टि अमेरिकी महिला शारी ब्राउन ने की है। क्या भौतिकता से ग्रस्त अमेरिका पर यह भारत की आध्यात्मिक विजय नहीं है ?

भारत देश की सामान्य जनता का मंत्र की शक्ति पर दृढ़ विश्वास है। मंत्र में निहित गूढ़ शक्ति का भले ही अनुभव न करे और न जानता हो परन्तु उसका विश्वास अडिग है। यह कुछ वर्षों से नहीं प्रत्युत विक्रम संवत् से अन्यून 2500 वर्ष पूर्व से चला आ रहा है। ब्रिटिश इतिहासकार जान डरविन ने माना है कि प्राग् ऐतिहासिक काल में विश्व भर में जन जातियां शिवलिंग की पूजा करती थीं।

शिव एक देवता हैं, भारत राष्ट्र के आद्य निर्माताओं में से एक हैं। संध्या करने वाले प्रातः सायं इस मंत्र का ध्यान करते है और शिव को नमस्कार करते हैं—

"नमः शम्भवाय च, मयोभवाय च, नमः शंकराय च, मयस्कराय च, नमः शिवाय च, शिवतराय च।"

इस प्रकार भारतीय जन अपने पूर्व पुरुष का स्मरण करते हैं। राष्ट्र की अमरता का अनुभव करते हैं। सुख के लिये ही नहीं, कल्याण के लिये ही नहीं, अपितु भव-बाधाओं से मुक्त होने के लिये भी 'ओम् नमः शिवाय' का जप करते हैं।

पश्चिम वासी भारतीय जनों के दृढ़ विश्वास को अन्धविश्वास कहते हैं। वास्तव में ओम् नमः शिवाय तो बीज मंत्र है। भारत राष्ट्र के इस दृढ़ विश्वास का सब धर्मों का मूल स्रोत वेद है "वेदो अखिलो धर्ममूलम्" इसी सन्दर्भ में 19वीं सदी में महर्षि दयानन्द के ये उद्गार प्रबोधक हैं। उन्होंने कहा था—भारत को पश्चिम से कुछ लेना नहीं है। भिखारी पश्चिम भारत को क्या देगा ? विमान सूक्त के आधार पर नारायणराव ने सन् 1891 में विश्व भर में सबसे पहले विमान बनाया और उड़ा कर दिखाया। राइट बन्धुओं ने इसके दो साल बाद विमान बनाया। वेद ज्ञान के विस्मरण के कारण ही हमारा पतन हुआ।

'ओम् नमः शिवाय' मंत्र में आधिव्याधि को दूर करने की कितनी विलक्षण शक्ति है, यह न्यूयार्क की महिला शारी ब्राउन के उद्धरण से भी पुष्ट है। इसके अतिरिक्त इन मंत्रों का आध्यात्मिक जीवन के लिये प्रभाव तो असीम ही है। (साभार : मन्त्र महार्णव)

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणम् ।

( १ ) तर्पणकालः—तर्पण का जल सूर्योदय से एक प्रहर तक अमृत, डेढ़ प्रहर तक दुग्ध, साढ़े तीन प्रहर तक जलरूप से पितरों को प्राप्त होता है ।

( २ ) तर्पणकर्ता पूर्वाभिमुख हो कुशा के आसन पर बैठकर तीन बार आचमन करने के बाद कुशा और जल लेकर संकल्प पढ़े ।

( ३ ) तर्पण संकल्प—ॐ अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे कलियुगे कलिप्रथमचरणे पुण्यक्षेत्रे अमुक संवत्सरे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्न अमूकशर्माहं देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणं करिष्ये ।

( ४ ) तर्पणतीर्थं—तर्पण के तीन तीर्थ हैं । ( १ ) देवतीर्थअंगुलियों का अग्रभाग- ( २ ) कायतीर्थ ( प्रजापति ) सबसे छोटी अंगुलि का मूल (३) पितृतीर्थतर्जनी और अंगुष्ठमूलभाग—

अथ देवादि तर्पण—सव्य (बायें कन्धे पर जनेऊ रखकर) होकर देवतीर्थ से पूर्वमुख बैठकर त्रिकुशा और अक्षत से एक-एक अञ्जलि जल प्रत्येक नाम को पढ़कर देवे ।

ॐ ब्रह्मातृप्यताम् १ ॐ विष्णुस्तृप्यताम् २ ॐ रुद्रस्तृप्यताम् ३ ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम् ४ ॐ देवास्तृप्यन्ताम् ५ ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम् ६ ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम् ७ ॐ वेदास्तृप्यन्ताम् ८ ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम् ९ ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम् १० ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम् ११ ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यताम् १२ ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम् १३ ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम् १४ ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम् १५ ॐ नागास्तृप्यन्ताम् १६ ॐ सागरास्तृप्यन्ताम् १७ ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम् १८ ॐ सरितस्तृप्यन्ताम् १९ ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम् २० ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम् २१ ॐ रक्षांसितृप्यन्ताम् २२ ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम् २३ ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम् २४ ॐ भूतानितृप्यन्ताम् २५ ॐ पशवस्तृप्यन्ताम् २६ ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम् २७ ॐ औषधयस्तृप्यन्ताम् २८ ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यताम् २९ ।

अथ दिव्यमनुष्य तर्पण—"निवीति" अर्थात् माला के समान यज्ञोपवीत और अंगोछे को करके कायतीर्थ से उत्तर मुख बैठकर त्रिकुशा यव से दो-दो अंजलि जल प्रत्येक को देवें ।

ॐ सनकस्तृप्यताम् १ ॐ सनन्दनस्तृप्यताम् २ ॐ सनातनस्तृप्यताम् ३ ॐ कपिलस्तृप्यताम् ४ ॐ आसुरिस्तृप्यताम् ५ ॐ वोढुस्तृप्यताम् ६ ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम् ७ ।

अथ मरीच्यादि तर्पण—पुनः सव्य होकर पूर्वाभिमुख देवतीर्थ से अक्षत सहित एक-एक अञ्चलि जल नीचे के मरीच्यादि ऋषियों को देवताओं की तरह देवें ।

ॐ मरीचिस्तृप्यताम् १ ॐ अत्रिस्तृप्यताम् २ ॐ अङ्गिरातृप्यताम् ३ ॐ पुलहस्त्यस्तृप्यताम् ४ ॐ पुलहस्तृप्यताम् ५ ॐ क्रतुस्तृप्यताम् ६ ॐ प्रचेतास्तृप्यताम् ७ ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम् ८ ॐ भृगुस्तृप्यताम् ९ ॐ नारदस्तृप्यताम् १० ।

अथ पितृतर्पणम्—अपसव्य (दक्षिण कन्धे पर यज्ञोपवीत को करके) दक्षिण मुख हो तिल मोटक लेकर तीन तीन अञ्जलि जल तिलसहित वामघुटना मोड़ कर पितृतीर्थ द्वारा प्रत्येक को देवे ।

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, । १ ॐ सोमस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा तस्मै स्वधा, । २ ॐ यमस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा तस्मै स्वधा, । ३ ॐ अर्यमातृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, ४ ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्तामिदं जलं तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा, ५ वर्हिषदस्तृपन्तामिदं जल तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा । ६ ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्तामिदं जलं तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा ७ ।

अथ यमतर्पण—पूर्वोक्त विधि से निम्न १४ यमों को भी तीन-तीन अञ्जलि जल देवे ।

ॐ यमाय नमः १ ॐ धर्मराजाय नमः २ ॐ मृत्यवेनमः ३ ॐ अन्तकाय नमः ४ ॐ वैवस्वताय नमः ५ ॐ कालाय नमः ६ ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः ७ ॐ औदुम्बराय नमः ८ ॐ दध्नाय नमः ९ ॐ नीलाय नमः १० परमेष्ठिने नमः ११ ॐ वृकोदराय नमः १२ ॐ चित्राय नमः १३ ॐ चित्रगुप्ताय नमः १४ ।

अथ पितृतर्पणम्—तीन कुशा को एक में लपेट कर इकट्ठा कर लेने को मोटक कहते हैं और तीन कुशा को त्रिकुशा कहते हैं । तिल और कुशा सहित तीन-तीन अञ्जलि जल पितरों को देवे ।

ॐ वसुरूपः अमुकगोत्रः अस्मत्पिता अमुकशर्मा तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा ३ ॐ रुद्ररूपः अमुकगोत्रः अस्मत्पितामहः अमुकशर्मा तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः ३ । ॐ आदित्यरूपः अमुकगोत्रः अस्मत्प्रपितामहः अमुकशर्मा तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः ३ ।

ॐ गायत्रीरूपा अमुकगोत्रा अस्मन्माता अमुकी देवी तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा ३ । ॐ सावित्रीरूपा अमुकगोत्रा अस्मत्पितामही अमुक देवी तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा ३ । सरस्वती रूपा अमुकगोत्रा अस्मत्प्रपितामही अमुकी देवी तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा नमः ३ ।

ॐ अमुकगोत्रः अस्मन्मातामहः अमुकशर्मा सपत्नीकस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः ३ । ॐ अमुकगोत्रः अस्मत्प्रमातामहः अमुकशर्मा सपत्नीकस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः ३ । ॐ अमुकगोत्रः अस्मद्वृद्धप्रमातामहः अमुकशर्मा तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः ३ ।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

इसी क्रम से पितृव्य, तत्पत्नी, भ्राता, तत्पत्नी, भगिनी, मातुल, मातुलानी, पितृष्वसा ( फूआ ), मातृष्वसा ( मौसी ) मातृष्वस्रीय, मातुलेयादि तथा पिता माता के सपिण्ड को एक एक अञ्जलि जल दिया जावे । ससुर, सास, गुरु का भी तर्पण करे। इसके अतिरिक्त और भी जो पितृ देव मानव आदि जिनको जल देना अभीष्ट हो नीचे लिखे मन्त्र से जल देवे :

ॐ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः ।
तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः ॥
अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम् ।
आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ॥

नीचे के श्लोक को पढ़ते समय बराबर जल देते जावे !

येऽबान्धवाबान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः ।
ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवांछति ॥ १ ॥

इस श्लोक को पढ़ते समय अंगोछे के खूँट से जल पृथ्वी पर निचोड़ कर तर्पण करे ।

ये चास्माकं कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः ।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम् ॥ २ ॥

श्री भीष्मपितामह को अपसव्य होकर नीचे लिखे मन्त्र से अथवा केवल जल लेकर तीन तीन अञ्जलि देवे । ऐसा सौभाग्य बालब्रह्मचारी पितामह को ही प्राप्त है । जिसे सभी हिन्दू जनता अपना पितामह मान कर तर्पण करती है । यह हमारे देश का आदर्श है ।

वैयाघ्रपदगोत्राय साङ्कृत्यप्रवराय च ।
अपुत्राय ददाम्येतत्तज्जलं भीष्माय वर्मणे ॥

सूर्यार्घ्यः—सव्य होकर पूर्वाभिमुख निम्नलिखित मन्त्र से पुष्प गन्ध तुलसी आदि लेकर ३ अर्घ्य देवे ।

ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशि जगत्पते ।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर ॥

## उपसंहार व सदुपदेश

आदित्यपुराणे-यस्तु कार्तं ( सत्य ) युगो धर्मो न कर्तव्यः कलौयुगो पापप्रयुक्ताश्च सदा कलौ नार्यो नरोस्तथा ॥ वाग्दानानन्तरमन्यस्मै दानमदूषितम् ॥ विज्ञानेश्वरवचनम्—दत्तामपि हरेत्पूर्वाच्छ्रेयांश्चेद्वर आव्रजेत् ॥ त्यजेद्देशं कृतयुगे त्रेतायां ग्रामसुत्सृजेत् । द्वापरे कुलमेकन्तु कर्तारन्तु कलौ युगे ॥ कृते तुमानवाधर्मास्त्रेतायां गौतमाः स्मृता ॥ अन्योपदेश—आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन् । ज्ञात्वा पापकरणे न तस्य निष्कृतिर्दृष्टा भूम्यामिपतनादृते । विधवया महाधर्मा चरणे स पुरुषस्त्याज्यः—यो नरो विधवा नारीमुपेयात्कामलोलुपः स हन्तव्योऽथवा त्याज्यो द्विजाती नामयं विधिः ॥ आशीर्वादाः—सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः । सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात् ॥ शुभम् ॥

यस्मिन्देशेत्वमुत्पन्नो हितं तस्य विधीयताम् । रक्षणीयाः प्रयत्नेन गावो विप्राः सुतस्त्रियः ॥ अन्न जलं स्वदेशीयं यथा गृह्णाति मानवः । तथा वस्त्रं स्वदेशीयं धार्यं देशहिताय च ॥ अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् । उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ शरीरं बलवद्धार्यं धैर्यं धार्यं भयं नहि । भारतं भारतीयानामित्येको मंत्र उत्तमः । जयश्राव्यौ गृहीतव्यः उपदेष्टव्य एव च ।



श्रीगणेशउवाच ॥ भद्रे भाद्रपदेमासि संकष्टीयाचतुर्थिका । अनेकफलदा प्रोक्ता सर्वसिद्धि प्रदायिनी ॥२॥ पूजापूर्वविधानेन तस्याः कार्यासमन्ततः विशेषं तु प्रवक्ष्यामि भोजनादिसु पार्वति ॥३॥ श्रीकृष्ण उवाच—एवं निवेदिते पुत्रे सुतं पप्रच्छपार्वती । को विशेषः प्रकर्तव्यः पूजने भोजनेषु च ॥४॥ श्रीगणेशउवाच—गुरूपदिष्टमार्गेण भक्त्या तद्व्रतमाचरेत् । द्वादशप्वपि मासेषु पृथग्नामभिरर्चयेत् ॥ ५ ॥ विनायकश्चैकदन्तः कृष्णपिंगोगजाननः । लाम्बोदरो भालचन्द्रो हेरम्बो विकटस्तथा ॥ ६ ॥ वक्रतुंडश्चासुरथो विघ्नराजो गणाधिपः । द्वादशैनामभिश्चैतैर्गणेशं पूजयेद्व्रती ॥ ७ ॥ द्वादशस्वपिमासेषु पूज्यते नमामिः पृथक् ॥ चतुर्थ्यां प्रातरुत्थाय नित्यकृत्यं यथोदितम् ॥ ८ ॥ नलोह्यासीत्कृतयुगे पुण्यश्लोको नराधिपः । तस्य रूपवती भार्य्या दमयन्तीति विश्रुता ॥९॥ तस्य दैववशाच्छापः स्त्रीयोगविवादकृत । तदा देव्या कृतं ह्येतद् व्रतानामुत्तमं व्रतम् ॥ १० ॥ पार्वत्युवाच—केन वै विधिना पुत्र दमयन्ती व्रतोत्तमम् । चकार भूपति लेभे तृतीये मासि शोभना ॥११॥ श्री कृष्ण उवाच- एवं निगदितः पार्थ पार्वत्या गणनायकः । प्रोवाच वचनं धीमान् विस्तरेण शृणुष्व तत् ॥ १२ ॥ श्रीगणेश उवाच—मातर्नलस्य भूपस्य विपत्तिर्विपुलाभवत् ॥ गजाश्च गजशालायां मदरायां हया हताः ॥ १३ ॥ कोशस्तु तस्करैर्नीतो गृहं दग्धं कृशानुना ॥ मंत्रिणोऽपिगतास्तस्य राजकार्यविनाशकाः ॥१४॥ अक्षक्रीडनकेनैव राजा सर्वहृतोऽभवत् ॥ मग्नदेशस्ततो राजा स्वपुरान्निर्गतो वनम् ॥१५॥ दमयन्त्यासमं तत्र नानाक्लेशैश्च पीडितः ॥ तत्रापि दमयन्ती च वियोगं प्राप दैवतः ॥ १६ ॥ कस्मिंश्चिन्नगरे राजा भृत्यभावं समागतः ॥ कस्मिंश्चिद्विषये भार्या कस्मिंश्चिद्विषये सुतः ॥१७॥ भिक्षाशिनस्तु ते सर्वे नानाव्याधिप्रपीडिताः । स्वकर्मभोगान् भुंजानाः परस्परवियोगिनः ॥१८॥ एकदा दमयन्ती सा शरभंगं महामुनिम् । प्रणम्य पादमूर्ध्ना बद्धाञ्जलिरभाषत ॥ १९ ॥ दमयंत्युवाच-कथं भो भगवन्निशाः पुत्राक्षिश्च कथं भवेत् । कथं गजहयान् राज्यं नगरं भूमिराकुलं ॥ २० ॥ कथमेतादृशं भाग्यं भुने तद्वद निश्चितम् । गणेश उवाच—इति तस्या वचः श्रुत्वा शरभंगोऽब्रवीद्वचः ॥ २१ ॥ शरभंग उवाच—दमयन्ति शृणु वचो वक्ष्यामि हितकारकम् । महासंकष्टशमनं सर्वकामप्रदं शुभम् ॥ २२ ॥ भाद्रमासस्य या कृष्णाचतुर्थी संकटातु सा । तस्या पूज्यो नरैः स्त्रीभिरेकदन्तो गजाननः ॥ २३ ॥ पूर्वोक्तेन विधानेन भक्त्या प्रीत्या च श्रद्धया । व्रतेनानेन भो देवि लब्धकामा भविष्यसि ॥२४॥ मुनिभार्यैर्महाराजमिति मे निश्चला मति । गणेश उवाच—दमयन्ती तदा चक्रे संकष्टव्रतमुत्तमम् । भाद्रे मासि कृतारंभा गणनाथार्चने रता ॥ २५ ॥ सप्तमासैः पतिं पाप राज्यं पुत्रं तथैव च । तथैव सुपदं राजा कृत्वा चैव व्रतोत्तमम् ॥ २६ ॥ श्रीकृष्ण उवाच—तथा पार्थ व्रतादस्माद्राज्यं प्राप्स्यसि निश्चितम् । वैरिणस्ते पराभूता भविष्यन्ति विशेषतः ॥ २७ ॥ इति ते कथितं भूप व्रतानामुत्तमं व्रतम् ॥ करिष्यति महाभागं सर्वं दुःखनिवारणम् ॥२८॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे श्रीकृष्णयुधिष्ठिर संवादे भाद्रपदकृष्णचतुर्थीव्रतकथा समाप्ता ॥२९॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

**ज्वर झारने का मन्त्र**—ॐ नमो अजयपाल की दुहाई जो ज्वर रहे तो महादेव की दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरो वाच।

इस मन्त्र को सात वार पढ़कर झारे तो ज्वर न रहे। इस मन्त्र को दीपावली की रात्रि में सात वार पढ़कर तथा धूप-दीप देकर सिद्ध कर लेना चाहिए।

## यज्ञोपवीत धारण मन्त्र

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

## यज्ञोपवीत उतारने का मन्त्र

एतावद्दिन पर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात् परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखम्॥

## सूर्यार्घ्य मन्त्र

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥

## औषध खाने का मन्त्र

अच्युतानन्द गोविन्द नामोच्चारण भेषजात्।
नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥

## नव ग्रहों की शान्ति के लिये तान्त्रिक मन्त्र

| | | |
|---|---|---|
| सूर्य—ॐ घृणि सूर्याय नमः | जप संख्या | ७००० |
| चन्द्र—ॐ सों सोमाय नमः | ,, | ११००० |
| मंगल—ॐ अं अंगारकाय नमः | ,, | १०००० |
| बुध—ॐ बुं बुधाय नमः | ,, | ९००० |
| गुरु—ॐ बृं बृहस्पतये नमः | ,, | १९००० |
| शुक्र—ॐ शुं शुक्राय नमः | ,, | १६००० |
| शनि—ॐ शं शनैश्चराय नमः | ,, | २३००० |
| राहु—ॐ रां राहवे नमः | ,, | १८००० |
| केतु—ॐ कें केतवे नमः | ,, | १८००० |

**गर्भिणी तथा उसके पति के लिये आवश्यक कर्त्तव्य**—वारह पुराण का वचन है कि गर्भ धारण के वाद स्त्री को मांस नहीं खाना चाहिए। गृह्य कारिका में लिखा है कि गर्भवती स्त्री अंगार, भस्म, हड्डी, कपाल, चूल्ही, सूप, ऊखल, पत्थर आदि यन्त्र, तुष (भूसी मार्जनी (झाड़ू) तथा गोवर के पिंड आदि पर न वैठे। जल में घुस कर स्नान न करे। कोयला या नख से पृथ्वी पर न लिखे। झगड़ा न करे, अंगड़ाई न ले। खुले केश न रहे। नंगी न हो, सन्ध्या समय भोजन तथा शयन न करे। अमंगल शब्द का उच्चारण, शून्य में रहना तथा अकेले किसी वृक्ष के नीचे जाना भी वर्जित है। विष्णु धर्मोत्तर में लिखा है कि कटु, तीखा, कसैला, अत्यन्त गर्म तथा अधिक नमकीन भोजन, अधिक परिश्रम, बोझा ढोना, नाव या किसी सवारी पर चढ़ना, तथा मैथुन करना गर्भवती स्त्री को त्याग देना चाहिए। हेमाद्रि में कौण्डिन्य का वचन है कि मुण्डन, पिंडदान तथा सम्पूर्ण प्रेत कर्म को जीवत्पितृक तथा गर्भिणी के पति को त्याग देना चाहिए। मिताक्षारा मे लिखा है कि समुद्र के जल से स्नान, नख काटना तथा मुण्डन, यदि गर्भिणी का पति करे तो प्रजा की हानि होती है। पृथ्वी चन्द्रोदय में गरुण पुराण का वचन है कि गर्भिणी पति गया में पिंडदान कर सकता है। प्रयोग परिजात में कश्यप का वचन है कि गर्भिणी स्त्री, हाथी, घोड़ा, पर्वत तथा कोठे पर न चढ़े, मैथुन तथा शीघ्र गमन को त्याग दे। शोक करना, रक्त विमोक, साहसिक कर्म, कुक्कुट के समान बैठना, अधिक परिश्रम, दिन में सोना तथा रात्रि में जागना भी त्याग दे। मदन रत्न में स्कन्द पुराण का वचन है कि हल्दी, कुंकुम, सिन्दूर, काजल, कर्पासक, (चोली) पान, मंगल सूत्र, केश संस्कार, हाथा-कान के भूषण इनके पति की आयु चाहने वाली स्त्री को गर्भावस्था में भी नहीं त्यागना चाहिये। वृहस्पति का वचन है कि चौथे छठे, आठवें तथा विशेष कर आषाढ़ मास में गर्भिणी स्त्री यात्रा न करे। याज्ञवल्क्य का वचन है कि दोहद (जो वस्तु गर्भिणी को खाने की इच्छा हो) गर्भिणी को यत्न पूर्वक देना चाहिये। इससे सुन्दर तथा अयुष्मान सन्तान की उत्पत्ति होती है। वहीं पर आश्वलायन का वचन है कि मंडन, मैथुन, तीर्थयात्रा (गया को छोड़ कर) सात मास के गर्भ के वाद श्राद्ध भोजन इन्हें वेद के ज्ञाता गर्भिणी पति को त्याग देना चाहिये।

**शालग्रामादि शिला के पूजनादि का विचार**—तिथि तत्व में ब्रह्मपुराण का वचन है कि सूर्य तथा शिव के सिवा अन्य देवताओं की पूजा कमल से करना श्रेष्ठ है। वाराह तथा पद्म पुराण में लिखा है कि घर में दो लिंग, दो शालग्राम, दो द्वारका चक्र, दो सूर्य, तीन शक्ति, तीन गणेश, दो शंख, खंडित प्रतिमा, मत्स्य-कूर्म आदि १० अवतार, अग्नि से जली तथा भग्न प्रतिमाओं को न पूजे, क्यों कि इनके पूजने से गृहस्थ को सदा उद्वेग प्राप्त होता है। शालग्राम सम (चार छः आदि) पूजना चाहिये। किन्तु दो नहीं पूजना चाहिये, विषम में एक के सिवा तीन आदि पूजना ठीक नहीं। द्वारावती चक्र के सहित टूटी-फूटी शालग्राम शिला की पूजा कर सकते हैं क्यों कि शालग्राम की भग्न शिला भी श्रेष्ठ कही गयी है। वाराहपुराण में लिखा है कि जो मनुष्य भक्त को सोने के सहित शालग्राम शिला का दान करता है। उसे सम्पूर्ण पृथ्वी दान का फल प्राप्त होता है। यह भी लिखा है कि १०० शालग्राम शिलाओं की नित्य पूजा का फल अवर्णनीय है। विष्णुधर्म में लिखा है कि शालग्राम तथा द्वारावती चक्र की शिला को ब्राह्मण को नित्य पूजना चाहिये। क्षत्रिय आदि स्पर्श कर पूजन न करें। स्कन्द पुराण में लिखा है कि शूद्र, अनुपनीत, स्त्री तथा पतित ये विष्णु तथा महादेव को स्पर्श करें तो नरक की प्राप्ति होती है। कल्याण चाहने वाली ब्राह्मणी को भी शालग्राम को नहीं छूना चाहिये, क्योंकि लोक में इसका प्रायश्चित नहीं है। इन्हें स्पर्श रहित पूजन का ही अधिकार है। वाराह पुराण का वचन है कि शालग्राम को स्त्री तथा शूद्र का स्पर्श वज्र के स्पर्श से भी अधिक होता है। मोहवश स्पर्श करने पर प्रलय पर्यन्त नरक में रहना पड़ता है। निर्णयसिन्धुकार का मत है कि केवल शालग्राम के स्पर्श का ही दोष होता है। ब्रह्म पुराण में लिखा है कि शालग्राम की शिला के निकट यदि किसी का देहान्त हो जाय तो उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized eGangotri

## षोडशोपचारदेवपूजनविधिः

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥ आचमन—ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ विष्णवे नमः। प्राणायाम। संकल्पः—ॐ विष्णुः ३, ॐतत्सदद्यश्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्त्तैकदेशान्तर्गते पुण्यक्षेत्रे·····बौद्धावतारे अमुक संवत्सरे····· अमुक शालिवाहनशाके·····अमुक····· नाम्नि संवत्सरे अमुक अयने अमुक ऋतौ अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुकनामाहं मम कायिकवाचिकमानसिकज्ञाताज्ञातसकलदोषपरिहारार्थं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं च····अमुककर्म करिष्ये॥ देवतापूजनं॥ प्रतिष्ठा की हुई मूर्ति हो तो केवल पुष्प छोड़ देवे। यदि प्रतिष्ठा की हुई न हो तो सुपारी के ऊपर नारा लपेट कर अक्षत के ऊपर स्थापित करके दाहिने हाथ में अक्षत लेकर नीचे लिखे मन्त्र से छोड़े॥ आवाहन—आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव। यावत् पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधो भव॥ प्रतिष्ठा—अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः चरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥ आसन—रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्। आसनञ्च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥ (आसनं समर्पयामि)॥ पाद्य—उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्धसंयुतम्। पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्॥ (पाद्यं स०)। अर्घ्य—अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः सह। करुणाकर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते। (अर्घ्यं स०)॥ आचमन—सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धिनिर्मलं जलम्। आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर। (आचमनीयं स०)॥ स्नान—गङ्गासरस्वतीरेवा पयोष्णीनर्मदाजलैः। स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्तिं कुरुष्व मे। (स्नानं स०)॥ दुग्धस्नान—कामधेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्। पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्। (दुग्धस्नानं स०)॥ (पुनर्जलस्नानं स०)॥ दधि स्नान—पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्। दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्। (दधिस्नानं स०)॥ घृतस्नान—नवनीत समुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्। घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्। (घृतस्नानं स०)॥ मधुस्नान—तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु। तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् (मधुस्नान स०) शर्करास्नान—इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका। मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्। (शर्करास्नानं स०)॥ पञ्चामृतस्नान—पयोदधिघृतं चैव मधुशर्करयायुतम्। पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् (पञ्चामृतस्नानं स०) शुद्धोदकस्नानम्—मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्। तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्। (शुद्धोदकस्नानं स०)॥ वस्त्र—सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे। मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्। (वस्त्रोपवस्त्रं स०)॥ यज्ञोपवीत—नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयं। उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर। (यज्ञोपवीतं स०)॥ गन्ध—श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ, चन्दनं प्रतिगृह्यताम्। (गन्धं स०) कुंकुम—(रोली) कुंकुमं कामनादिव्यं कामनाकामसंभवम्। कुंकुमेनार्चितो देव गृहाण परमेश्वर (कुंकुमं स०)॥ अक्षत—अक्षतांश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर। (अक्षतान् स०)॥ पुष्प—माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मया हृतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर॥ (पुष्पाणि स०) पुष्पमाला—सुरभि पुष्पनिचयैः ग्रथितां शुभमालिकां। ददामि तव शोभार्थं गृहाण परमेश्वर। (पुष्पमालां स०) दूर्वा (अग्रभाग चढ़ावे)॥ त्वं दूर्वेऽमृतजन्मासि वन्दितासि सुरैरपि। सौभाग्यं सन्ततिं देहि सर्वकार्यकरी भव। (दूर्वां स०॥ शमीपत्र—शमी शमयते पापं शमी लोहितकण्टकी। धारिण्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियवादिनी। (शमीपत्रं स०)॥ सिन्दूर—सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्य सुखवर्धनम्। शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्। (सिन्दूरं स०) सौभाग्यद्रव्य—हरिद्रा कुंकुमं चैव सिन्दूरं कज्जलान्वितम्। सौभाग्यद्रव्यसंयुक्तं गृहाण परमेश्वर॥ (सौभाग्यद्रव्याणि स०)॥ अबीर गुलाल—अबीरं च गुलालं च चोवाचन्दनमेव च। अबीरेणार्चितो देव अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥ (अबीरं गुलालं स०)॥ आभूषण—अलङ्कारान् महादिव्यान्नानारत्नैर्विनिर्मितान्। गृहाण देवदेवेश प्रसीद परमेश्वर॥ (आभूषणं स०)॥ धूप—वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥ (धूपमाघ्रापयामि)॥ दीप—साज्यं च वर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहं। (दीपं दर्शयामि) नैवेद्य—शर्कराघृत संयुक्तं मधुरं स्वादुचोत्तमम्। उपहारसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥ (नैवेद्यं निवेदयामि)॥ आचमन—गंगाजलं समानीतं सुवर्णकलशे स्थितम्। आचम्यतां सुरश्रेष्ठ शुद्धमाचमनीयकम्। (आचमनीयं स०)॥ ऋतुफल—नारिकेलफलं जम्बूफलं नारङ्गमुत्तमम्। कूष्माण्डं पुरतो भक्त्या कल्पितं प्रतिगृह्यताम्॥ (ऋतुफलं स०)॥ अखण्डऋतुफल—इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥ (अखण्ड ऋतुफलं स०)। ताम्बूल पूगीफल—पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलाचूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्। (ताम्बूलं पूगीफलं स०) दक्षिणा—हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिप्रयच्छ मे। (दक्षिणां स०)॥ आरती—चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च। त्वमेव सर्वं ज्योतीषि आर्त्तिक्यं प्रतिगृह्यताम्॥ प्रार्थना—गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थ जम्बूफलचारुभक्षणम्। उमासुतं शोकविनाश कारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्॥ अनया पूजया गणपतिः प्रीयतां न मम॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji). Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## आग बुझाने का मन्त्र ( आग बाँधना )

ॐ नमो कोरा करवा जल सा भरिया ले गौरा के सिर पर धरिया, ईश्वर ले गौरा नहाय, जलती अग्नि शीतल हो जाय। शब्द साँचा पिंड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ॥ मन्त्र ग्रहण या दीपावली में जगा लेवें।

विधि—कूप के पास से सात कंकड़ी लेकर प्रत्येक पर सात बार पढ़ कर अग्नि की ओर देवें ॥

## नजर झाड़ने का मन्त्र

गुरुर चरणे दिया मन, श्रीहरी मोक्ष कारण, देव दानव दैत्याणी खाई, नरसिंह वरा आसी सब उड़ाई, आलाली पालाली चोटी चाटी हुंकारे फूकरि उड़ाव माटी शलिकेर पाँव देख, दुकरिया जाय अपुकार अंगे ॥ डाइनेर दृष्टि पलाय, कार अचावीर नरसिंह आज्ञा ॥ दीपावली में सिद्ध करके इस मन्त्र से झारने का विधान है।

## सर्पविषनाशक मन्त्र-औषधि

गारुणास्त्र मन्त्र—ॐसुपर्णोसि गरुत्मा स्त्रीवृत्ते शिरा गावत्रं चक्षुर्वृहद्रथन्तरेवक्षी। सोम आत्माच्छेन्दा स्यङ्गानि यजूंषि-नाम। साम ले तनुर्वाम देव्यंयज्ञयज्ञि यम्युच्छन्धिष्टायाऽशव्या सुपर्णोसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वःपत ॐ इसे ग्रहण में सिद्ध कर नीम की टहनी या अपामार्ग से झारने का विधान है।

दधि मधु नवनीता, पिप्पली शृङ्गवेरं।
मिरचमपि कूटे, प्रतिहन्सा सुकेसी ॥
यदि डसति सरोषो, तक्षको वासुकी वा।
यमसदनगतानां नास्ति मृत्युर्नराणाम् ॥

गाय के ताजे दूध से निकाला ताजा मक्खन, गाय का दही, शहद, पीपल, अदरक, मिर्च और कूट बराबर मात्रा में मिलाकर साँप से डसे हुए व्यक्ति को खिला देने से विष उतर जायगा।

( १ ) चिन्ता निवारण लक्ष्मी प्राप्ति मन्त्र :—

ॐ श्रीं ह्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्री महालक्ष्म्यै नमः।

( २ ) पुत्र कन्या के विवाह में यदि कठिनाई उपस्थित होता हो या विघ्न हो तो श्रीकात्यायनी देवी का पूजन विधि से करावें।

स्थायी धनस्थिति मन्त्रः—ॐ ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः॥

प्रसवभयजलमन्त्र—आकाश टले पर्वत टले राम लक्ष्मण दुई लाचा सुन की कर कोका कौकी रिक्तकुण्डली बसिया बाहरी हव असिया सिद्ध गुरु कालिका चण्डी रवरें शीघ्र करिया भूमें वे पड़े ॥ ताजा शुद्ध जल को सात बार मन्त्र पढ़कर परोरने के पश्चात् पिलाने का विधान है।

## मन्त्र-शक्ति

अथ मृत्युञ्जय मन्त्रः—ॐ हौं ॐजूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवःस्वरों जूं सः हौं ॐ।

पुराणोक्तमृत्युञ्जय मन्त्रः—"मृत्युञ्जयाय रुद्राय नीलकण्ठाय शम्भवे। अमृतेशाय शर्वाय महादेवाय ते नमः"।

## ॐ हौं जूं सः त्र्यक्षरमन्त्र है।

इसके विनियोग न्यास नित्यकर्म प्रयोगशाला से देख लीजिए।

## धनधान्य पूर्णकर अन्नपूर्णा का मन्त्र।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा, क्लीं श्रीं ह्रीं ॐ—इस मन्त्र के प्रभाव से धनधान्य पूर्ण रहता है। २ लक्ष जप, तिल, लाल धान की लाई, खील, दाख, गोघृत से हवन करना चाहिये। २ लक्ष का पुरश्चरण। क्षेत्र के भीतर यंत्र या तावीज गाड़ देते हैं, उससे धान्य बढ़ता है।

## आपदुद्धारक बटुक भैरव मन्त्र।

ॐ नमो भगवते बटुकाय आपदुद्धारकाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं। भात घी, सरसो, चन्दनचूरा आदि से हवन कराना चाहिए।

## सर्व सिद्धप्रद हनुमानजी का अष्टादशाक्षर मन्त्र।

ॐ नमो भगवते आंजनेयाय महबलाय स्वाहा। खीर, दाल, ऊख रस, पलास, पीपल, खैर की लकड़ी से हवन १ लक्ष का पुरश्चरण। भेद यह है कि कामना के अनुकूल हवन वस्तु होनी चाहिये।

## बिच्छू झारने का मन्त्र

ॐ छः फट् स्वाहा। जल अभिमंत्रित करके देना। आदित्य-रथवेगेन विष्णुबाणबलेन च श्री तार्क्ष्य पक्ष निपातेन भूम्यां गच्छ महाविष। ( तार्क्ष्य = गरुड़ )।

आँख झारने का मन्त्र—शर्यातिच सुकन्याच च्यवनं शुक्रमश्विनौ संध्ययो स्मरतां नित्यं तस्य चक्षुर्नश्यति। जल से धुलवाना।

ज्वर झारना—ॐ नमो नरहरे रोगापहारिणे ज्वरं नाशय नाशय सुखमारोग्यं कुरु-कुरु स्वाहा।

अन्तरा तिजरा चौथिया का मन्त्र—

'ॐलङ्कायाम् दक्षिणे तीरे कुमुदो नाम वानरः। तस्य स्मरण मात्रेण ज्वरो याति दिशोदश ॥ पीपल के पत्ते पर लिखकर डोरा से बाँध देवें।

यदि गर्भवती को क्लेश हो तो सुख से प्रसव के लिए चन्दन से चक्रव्यूह कांसे की थाली में बनावे; फिर धोकर धर्मराज का स्मरण करे।

मन्त्र—हिमवत्युत्तरे पार्श्वे शर्वरीनाम यक्षिणी। तस्य नूपुर शब्देन विशल्या गर्भिणी भवेत्।

चिरचिरा ( चिचड़ी ) मस्तक में बाँधने से सुख से प्रसव होता है। इन सब मन्त्रों को १०८ बार पढ़ना चाहिये ॥

## यात्रा में स्मरण करने का मन्त्र—

यः स्मरेत्तुलसीं सीतां रामंसौमित्रिणासह। कार्यं कृत्वा रिपूञ्जित्वा क्षेमेणायाति वै नरः ॥ थोड़ा सा दही स्वयं खाकर यात्रा करे और चन्दन तिलक से सदा पूर्ण रहे।

गाँव में भैसों की बीमारी न आवे इसके लिये गुरुपुष्य, हस्तार्क अथवा उत्तम पर्व में मिट्टी के कच्चे कसोरे ( परई ) के भीतर मंत्र लिखकर गोशाला में लटका दे तो बीमारी नहीं होगी।

मन्त्रः—अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः। बीभत्सु विजयी पार्थ सव्यसाची धनञ्जयः। कपिध्वजो गुडाकेशो गांडवी कृष्णसारथि।

एतान्यर्जुन नामानि गवां गोष्ठे च यो लिखेत्। न तत्र पशु-रोगादि शुभं शीघ्रं प्रजायते ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji). Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

**चौल (मुण्डन) मुहूर्त्त**—जन्मकाल से विषमवर्ष में चैत्र को छोड़कर उत्तरायण में करना चाहिए। शुभ नक्षत्र–ज्येष्ठा, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित, स्वाती पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष। चन्द्र, गुरु, बुध, शुक्रवार, चन्द्र तारा अनुकूल होने पर २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में २, ३, ४ ६, ७, ९, १२ लग्न तथा नवमांश में श्रेष्ठ होता है।

**अक्षरारम्भ मुहूर्त्त**—उत्तरायण में जन्म से पाँचवें वर्ष में गणेश, विष्णु, सरस्वती, लक्ष्मी तथा कुलदेवता की सविधि पूजा करके शुक्लपक्ष में बालक को अक्षरारम्भ कराना चाहिये। शुभ तिथि–२, ३ ५, ६ १०, ११, १२ तिथियों में चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्रवार, अश्विनी, आर्द्रा पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा स्वाती, अनुराधा, श्रवण, रेवती, नक्षत्र, २, ३, ६, ९, १२ लग्न तथा नवमांश में, अष्टम शुद्ध होने पर कुम्भ के नवमांश को छोड़कर करना चाहिए।

**विद्यारम्भ मुहूर्त्त**—शुक्लपक्ष की २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथि तथा कृष्णपक्ष में ५ तिथि तक कुम्भ के सूर्य को छोड़ कर केन्द्र कोण में शुभ ग्रह हों, बुध बलवान हो, बुध, सूर्य, बृहस्पति, शुक्रवार आश्विनी, पुष्य, आर्द्रा, अनुराधा, मृगशिरा, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वा३, श्लेषा, शतभिष नक्षत्र में अष्टम शुद्ध होने पर, २, ३, ६, २, १२ लग्नों में लग्न से १, २, ३, ४, ५, ७, ९, १०, ११ स्थानों में शुभ ग्रह, ३, ६, ११ में पापग्रह होने से शुभ है।

**उपनयन मुहूर्त्त**—गुरु, शुक्र के अस्त, शिशुत्व और वार्द्धक्य को छोड़ कर सूर्य के उत्तरायण होने पर, सूर्य, चन्द्रमा, गुरु, शुद्ध हो तो माघादि ५ मासों में ब्राह्मण के लिए चैत्रमास में विशेष शुभ कहा गया है। शुभ नक्षत्र-अश्विनी मृगशिरा, आर्द्रा, हस्त, पुष्य, उत्तरा ३, रोहिणी, श्लेषा, स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, मूल, चित्रा, अनुराधा, पूर्वा ३, रेवती नक्षत्र में वेधरहित होने पर करना चाहिए, परन्तु अपराह्न में नहीं। शुक्ल पक्ष में २, ३, ५, १०, ११, १२ तथा कृष्ण पक्ष में, २, ३, ५, तिथि में सूर्य, चन्द्र बुध, गुरु, शुक्रवार को भद्रा तथा रोग बाण से रहित होने पर, ३, ६ में पापग्रह, २, ३, ७, १० में चन्द्रमा, केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह तथा एकादश में सभी शुभ हैं। चन्द्रमा, शुक्र, बृहस्पति तथा लग्नेश ६ तथा ८ में शुभ नहीं हैं। चन्द्र, शुक्र लग्न से १२वें निन्दित हैं। ५, ८, में पापग्रह शुभ नहीं होते, ६, ८, १२ में शुभग्रह शुभ नहीं हैं। ३, ६, ११ में पापग्रह शुभ हैं। लग्न में सूर्य शुभ है। चन्द्रमा के नवमांश को छोड़ कर पूर्ण चन्द्रमा वृष कर्क लग्न में श्रेष्ठ होते हैं अन्यथा नहीं।

**दीक्षा (मन्त्र) ग्रहणमुहूर्त्त**—अधिमास को छोड़ कर चैत्र, वैशाख, श्रवण, आश्विन, कार्त्तिक, मार्गशीर्ष, माघ तथा फाल्गुन मास में, अश्विनी, रोहिणी, पूर्वा ३, उत्तरा ३, चित्रा, रेवती, अनुराधा, पुष्य, स्वाती, पुनर्वसु, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष नक्षत्र, सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार शुक्लपक्ष में २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, कृष्णपक्ष में, २, ३, ५ तिथि में, २, ३, ५, ६, ७, ९, १२ लग्न में चन्द्र तारा अनुकूल होने पर लग्न से ३, ६, ११ में पापग्रह, १, ४, ५, ७, ९, १० में शुभग्रह हो, गुरु, शुक्र उदय हों तो श्रेष्ठ है। अष्टमी, संक्रान्ति तथा चन्द्र, सूर्यग्रहण में भी दीक्षाग्रहण उत्तम कहा गया है।

**वधूप्रवेश मुहूर्त्त**—विवाह दिन से २, ४, ५, ६, ७, ८, ९ १०, १२, १४वें दिन, इसके बाद विषम मास तथा विषम वर्ष, पाँच वर्ष के बाद कभी भी हो सकता है। १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ तिथि में चन्द्र, बृहस्पति, शुक्र शनिवार (मतान्तर से बुधवार भी) उत्तरा ३, रोहिणी, अश्विनी, पुष्य, अभिजित, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, श्रवण, धनिष्ठा, मूल, मघा, स्वाती नक्षत्र में २, ५, ८, ११ लग्न में करना चाहिए।

**द्विरागमन मुहूर्त्त**—विवाह के बाद द्वितीय बार पिता के घर से पति के घर जाने की यात्रा को द्विरागमन कहते हैं। यह विवाह से विषम मास और वर्ष में होता है। शुक्लपक्ष में मेष, वृश्चिक, कुम्भ राशि के सूर्य में पति के रवि, गुरु, शुद्ध होने पर, गुरु, शुक्र के उदय में सम्मुख दक्षिण रहित शुक्र के होने पर उत्तम होता है। अन्यथा नहीं। हस्त, अश्विनी, पुष्य, उत्तरा ३ रोहिणी, स्वाती, अभिजित, धनिष्ठा, शतभिषा, मूल, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, नक्षत्र में, चन्द्र, बृहस्पति, बुध, शुक्रवार, को चन्द्रतारा अनुकूल होने पर, १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १० ११, १३, १५, तिथि में, १, ३, ६, ७, १२ लग्न में ३, ६, १०, ११ में गुरु, १, ४, १० में शुक्र, ३, ६, ११ में पापग्रह होने पर द्विरागमन करना चाहिये।

**नवीन वधू के लिये रसोई बनाने का मुहूर्त्त**—मृगशिरा, उत्तरा ३, पुष्य, कृत्तिका, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, रोहिणी, विशाखा तथा रेवती नक्षत्र में, सौम, बृहस्पति, शुक्र, बुधवार को स्थिर लग्न में चतुर्थ शुद्ध होने पर लग्न भाव में बलवान शुभग्रह हो, नवम स्थान शुद्ध हो तो नयी वधू को पहले पहल रसोई बनाना चाहिये।

**हलप्रवहण बीजोप्ति मुहूर्त्त**—भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, श्लेढा, पूर्वा ३ को छोड़ कर ४, ६, ८, ९, १४, २० से रहित तिथि में कुम्भ, कर्क मेष, मकर, तुला को छोड़ कर अन्य लग्न में पापग्रहों के निर्बल होने पर चन्द्रमा जलचर राशि के नवमांश में, शुक्र चन्द्रमा के नवमांश में तथा बृहस्पति लग्न में हों तो रविवार और शनिवार को छोड़ कर अन्य दिनों में हलप्रहवण करना श्रेष्ठ है। हलप्रहवहण में कहे गये नक्षत्रों में, श्रवण, शतभिषा, पुनर्वसु, विशाखा तथा मंगलवार को छोड़कर बीजोप्ति चक्र शुद्ध होने पर बीजवपन करना चाहिए।

**यात्रा विचार–यात्रा में शुभाशुभ नक्षत्र**—अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिरा, पुष्य, रेवती, हस्त, श्रवण, धनिष्ठा नक्षत्र में यात्रा में शुभ है। रोहिणी, उत्तरा ३, पूर्वा ३, ज्येष्ठा, मूल मध्यम, हैं। भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, श्लेषा, मघा, चित्रा स्वाती, विशाखा निन्दित हैं। अनुराधा, हस्त, मृगशिरा, इनमें रिक्ता और दिक्शूल को छोड़ कर सर्वदा सब दिशाओं में यात्रा शुभ है। अत्यन्त आवश्यक हो तो तीनों पूर्वा को १६, कृत्तिका को २१, मघा को ११, भरणी ७, स्वाती, ज्येष्ठा, विशाखा तथा श्लेषा, को ९०० और चित्रा की ३० घटी आरम्भ की छोड़ कर यात्रा कर सकते हैं। जन्म राशि तथा लग्न से अष्टम लग्न

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) - Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

होने पर यात्रा नहीं करनी चाहिए। प्रथम तीर्थ यात्रा गुरु-शुक्र के अस्त होने पर नहीं करनी चाहिए। सिंहस्थ तथा नीच राशि के गुरु में भी तीर्थ यात्रा वर्जित है। यात्रा में लग्न शुद्धि-जन्म राशि तथा जन्मलग्न से ८ वीं राशि एवं कुम्भ लग्न तथा उसका नवमांश, मीन तथा पृष्ठोदय राशि का लग्न यात्रा में त्याग देना चाहिए। लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह ३, ६, ११, में पापग्रह शुभ हैं। १० में शनि तथा ७ में शुक्र नेष्ट हैं। लग्न से १, ६, ७, ८ स्थानों में चन्द्रमा १, ६, ७, ८ तथा १२ में लग्नेश शुभ नहीं होते। लग्न से ८ स्थान ग्रहरहित होना चाहिए। वारशूल—चन्द्र शनिवार को पूर्व में, चन्द्र-गुरुवार की अग्नि कोण में गुरुवार दक्षिण में, रवि तथा शुक्रवार को नैऋत्य कोण में, रवि-शुक्र का पश्चिम में, मंगलवार को वायव्य कोण में, मंगल-बुध को उत्तर में, बुध तथा शनिवार को ईशान कोण में नहीं जाना चाहिए। नक्षत्र शूल—ज्येष्ठा में पूर्व, उ. भा. में दक्षिण, रोहिणी में पश्चिम, उ. फा. में उत्तर दिशा में नक्षत्र शूल का निवास रहता है। कालनिवास—शनिवार को पूर्व में, शुक्रवार को अग्नि कोण में, गुरुवार को दक्षिण में, बुधवार को नैऋत्य कोण में, मंगलवार को पश्चिम में, सोमवार को वायव्य कोण में तथा रविवार को उत्तर दिशा में काल का निवास रहता है। जिस दिशा में काल का निवास हो उस दिन उसके सामने की दिशा में पाश का निवास रहता है। प्रस्थान स्थापन—यदि किसी कारण से यात्रा के समय न जा सके तो अपनी कोई प्रिय वस्तु घर से बाहर उसी दिशा में रख दें। प्रस्थान पूर्व दिशा में ७ दिन, दक्षिण दिशा में ५ दिन, पश्चिम में ३ दिन तथा उत्तर में २ दिन तक प्रस्थान कहा गया है।

चन्द्रमा का निवास—मेष, सिंह तथा धनुराशि का चन्द्रमा पूर्व में, वृष, कन्या तथा मकर का दक्षिण में, मिथुन, तुला, कुम्भ का पश्चिम में, तथा कर्क, वृश्चिक, मीन का चन्द्रमा उत्तर दिशा में, रहता है। सम्मुख तथा दक्षिण का चन्द्रमा, शुभप्रद होता है। योगिनी निवास—१, ९ तिथि को पूर्व में ३, ११ में अग्निकोण, ५, १३ को दक्षिण में, ४, १२ में नैऋत्य में ६, १४ पश्चिम में, ७, १५ को वायव्य में, २, १० को उत्तर में तथा ८, ३० तिथि में ईशान कोण में योगिनी का निवास रहता है। योगिनी सम्मुख तथा बायें में शुभ नहीं है। अपनी राशि से चतुर्थ, अष्टम तथा द्वादश राशि का चन्द्रमा यात्रा में अशुभ फलदायक होता है। आवश्यकतावश १२ वें चन्द्र में यात्रा कर सकते हैं। यात्रा में शुभ शकुन—ब्राह्मण २, घोड़ा, हाथी, फल, अस, दूध, दही, गाय, सरसो कमल, विमलवस्त्र, वेश्या, बाजा, मोर, नेवला, सिंहासन, शस्त्र, मांस, प्रज्वलित, अग्नि, मछली, दर्पण, बालक सहित स्त्री, सामने छत्र, मधु, नीलकंठ पक्षी, बँधा हुआ एक पशु, चम्बा आदि पुष्प, कन्या, कार्यसिद्धि, वाक्य, मिट्टी, भरा कलश, घी, ऊख रत्न-मणि, पगड़ी-टोपी, सफेद बैल, मदिरा, काजल, धोया हुआ वस्त्र, गोरोचन, मुर्दा (रोदन रहित), पताका, भेंड़, धोबी (धोये वस्त्र के साथ) वेदध्वनि, मंगल वस्तु, गीत, भारद्वाज पक्षी, पालकी, अंकुश, महावत, पिछे भरा कलश, मंगल शब्द, दुर्वा, कोयल, पोतकी, छिपकली, शूकरी, रत्ना, भेरवी, छछुन्दरी, सियारिन, कबूतर, खंजन, तितर, हंस तथा बायें गदहा का शब्द, यात्रा में शुभ है। यात्रा में अशुभ शकुन—वन्ध्या स्त्री, चर्म, भूसी, हड्डी, सर्प, नमक, धूम्ररहित अग्नि, ईन्धन, नपुंसक, विष्ठा, तेल, पागल, चर्बी, औषध, शत्रु, जटावान, संन्यासी, तृण, रोगी, नंगा आदमी (छोटे बालक को छोड़कर) तेल, उबटन लगाये मनुष्य, अंगहीन, कुजाति, भूखा, रक्त, स्त्री पुष्प, गिरगिट, छींक, अपने घर का जलना, मार्जार युद्ध, लाल वस्त्र, गुड़, तक्र, (मट्ठा), पंक, विधवा, कुब्ज, गृहकलह, वस्त्र, आदि का गिरना, भैंसा का युद्ध, काला अन्न, रुई, वमन, दाहिने गदहा का शब्द, क्रधी, गर्भवती, वैरागी वस्त्र, अमंगल, शब्द, अन्धा, बहरा, रजस्वला का वस्त्र, गोधा (गोह) दर्शन शूकर दर्शन, खरहा, वानर, तथा भालू का शब्द यात्रा के समय शुभ नहीं है। नदी पार करते, युद्ध में तथा चोरी गई वस्तु के खोजते समय अशुभ शकुन भी शुभ होते हैं।

## गण्डमूल नक्षत्र और उनके फल

गण्डमूल—अश्विनी, मघा तथा मूल नक्षत्र की आरम्भ की क्रम से ३, ४ तथा ९ घटी तथा रेवती, श्लेषा तथा ज्येष्ठा के क्रमशः अन्त की ४, ११ तथा ६ घटी में कोई बालक उत्पन्न हो तो माता-पिता तथा परिवार के लिए हानिकारक होता है। जन्म से १२ वें या २७वें दिन मूल शान्ति करनी चाहिए। शान्ति से पहले पिता लड़के का मुख न देखे। साधारणतया उपर्युक्त सभी नक्षत्रों में उत्पन्न बालक की मूल शान्ति करनी चाहिए। सुवर्ण तथा गोदान भी करना चाहिए।

| अश्विनी चरण-फल | | श्लेषा चरण-फल | |
|---|---|---|---|
| चरण | फल | चरण | फल |
| १ | पिता को भय | १ | शांति से शुभ |
| १ | सुख ऐश्वर्य | २ | धन-नाश |
| ३ | मन्त्री पद | ३ | मातृ-नाश |
| ४ | राज सम्मान | ४ | पितृ-नाश |

| मघा चरण फल | | ज्येष्ठा चरण-फल | |
|---|---|---|---|
| चरण | फल | चरण | फल |
| १ | माता को नेष्ट | १ | बड़े भ्राता को कष्ट |
| २ | पितृ को भय | २ | छोटे भ्राता को नेष्ट |
| ३ | सुख | ३ | मातृ-नाश |
| ४ | धन विद्या सुख | ४ | स्वयं नाश |

| मूल चरण फल | | रेवती चरण फल |
|---|---|---|
| चरण | फल | फल |
| १ | पितृ-नाश | राज सम्मान-सुख |
| २ | मातृ-नाश | मंत्रित्व प्राप्ति |
| ३ | यश-नाश | धन सुख प्राप्ति |
| ४ | शान्ति से सुख | अनेक कष्ट |

अभुक्त मूल—नारद जी के मत से ज्येष्ठा नक्षत्र के अन्त की ४ घटी तथा मूल के आरम्भ की ४ घटी को अभुक्त मूल कहा गया है। वशिष्ठ के मत से ज्येष्ठा के अन्त की १ घटी तथा मूल के आरम्भ की २ घटी को अभुक्त मूल कहा गया है। बृहस्पति के मत से दोनों नक्षत्रों की एक एक घटी को ही अभुक्त मूल कहा गया है। बृहस्पति का मत ही अधिक आदरणीय है। अभुक्त मूल में उत्पन्न बालक का मुख ८ वर्ष तक पिता को नहीं देखनी चाहिए। शान्ति करके देख सकते हैं।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## शुभाशुभ मुहूर्त्त

स्त्रियों के प्रथम रजोदर्शन में श्रेष्ठ मास पक्ष तिथि इत्यादि—१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में शुभ है कृष्ण पक्ष में दशमी तक मध्यम है। चन्द्र बुध, गुरु तथा शुक्रवार को शुभ है।

अश्विनी, मृगशिरा, शतभिष, धनिष्ठा रेवती चित्रा, अनुराधा, हस्त, श्रवण, पुष्य, तीनों उत्तरा तथा रोहिणी नक्षत्र में शुभ है। मूल, पुनर्वसु मघा विशाखा, तथा कृत्तिका में मध्यम है। शेष अशुभ है। दिन में भद्रा तथा दुर्योग रहित शुभ है। रात्रि में अशुभ है। २, ३, ४, ६, ७, ९, १२ लग्नों में शुभ ग्रहों से दृष्ट होने पर शुभ है।

गर्भाधान मुहूर्त्त—तीनों गण्डान्त, जन्मतारा, मूल, मघा, अश्विनी, रेवती नक्षत्र, ग्रहण दिन, व्यतिपात, वैधृति, श्राद्ध दिन, दिन में परिघ का पूर्वार्ध, उत्पातहत नक्षत्र, भद्रा, पर्वदिन, ४, ६, ९, १४ तिथि, सन्ध्या समय सूर्य, मंगल, शनिवार तथा रजोदर्शन से ४ रात्रि तक गर्भाधान शुभ नहीं है। तीनों उत्तरा, मृगशिरा, हस्त अनुराधा, रोहणी, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा तथा शतभिष नक्षत्र शुभ हैं।

लग्न से १, ४, ५, ९, १०, में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ में पापग्रह शुभ हैं, सूर्य, मङ्गल, बृहस्पति लग्न में हो तथा चन्द्रमा विषम राशि के नवमांश में हों तो ६, ८, १०, १२ रात्रि में गर्भाधान शुभ होता है। चित्रा, पुनर्वसु, पुष्य अश्विनी नक्षत्रों में गर्भाधान मध्यम होता है।

ऋतुमती स्नान का मुहूर्त्त—हस्त, स्वाती, अश्विनी, मृगशिरा, अनुराधा, धनिष्ठा, रोहिणी, उत्तरा ३ तथा ज्येष्ठा में शुभ वार तथा लग्न में ऋतुमती स्नान शुभ है।

विशेष—विवाह तथा गर्भ सम्बन्धी संस्कारों में स्त्रियों का चन्द्रबल विचारना चाहिए। अन्य कार्यों में पति का।

जातकर्म मुहूर्त्त—१, २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२ १३ तिथियाँ तथा चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्रवारों में रोहणी, मृकशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष तथा रेवती नक्षत्रों में शुभ हैं।

पुंसवन मुहूर्त्त—स्त्री-पुरुष के चन्द्रमा तथा तारा के शुद्ध होने पर गर्भाधान से दूसरे या तीसरे मास में पुंसवन छठे या आठवें मास में मासाधिपति के बलवान होने पर सीमन्तोन्नयन संस्कार करना चाहिये। बृहस्पति और शुक्र का अस्तादि दोष इसमें नहीं लगता। शुभवार-सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र। शुभ नक्षत्र-पुरुष के जन्म नक्षत्र को छोड़कर मृगशिरा, रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, मूल, श्रवण, हस्त, उत्तरा ३ तथा रेवती में शुभ है। शुभ तिथि—१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ शुक्ल पक्ष में (कृष्ण पक्ष में १० तक) पूर्वाह्न में करना चाहिये। लग्नशुद्धि-पुरुष लग्न तथा पुरुष नवमांश में लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ में पापग्रह हों तो उत्तम हैं, चन्द्रमा १, ६, ८, १२, में न हों, ४, ८, १२, शुद्ध हो तो शुभ है।

सूतीस्नान मुहूर्त्त—रेवती, उत्तरा, ३ रोहिणी, हस्त, स्वाती, अनुराधा, अश्विनी नक्षत्र में. रवि, मंगल, गुरुवार को १, २, ३, ५, ७, १०, १३, १५, तिथियों में शुभ है। आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, मघा, भरणी, विशाखा, कृत्तिका मूल तथा चित्रा नक्षत्र, बुध, शनिवार ४, ६, ८, ९, १२, १४ तिथियाँ शुभ नहीं हैं। शेष पृथ्वी नक्षत्र, वार मध्यम हैं।

भूम्युपवेशन मुहूर्त्त—पृथ्वी तथा वाराह का पूजन करके मंगल के बलवान होने पर उत्तरा ३ रोहिणी, मृगशिरा, ज्येष्ठा, अनुराधा, अश्विनी, हस्त, पुष्य तथा अभिजित नक्षत्र में रिक्ता अमावस्या से भिन्न तिथि में, स्थिर लग्न में, चन्द्र बुध, शुक्र के दिन बालक को कटिसूत्र (कर्धनी) बाँध कर पृथ्वी पर बैठ कर उसके सामने वस्त्र, शस्त्र, पुस्तक, लेखनी (कलम) सोना, चाँदी रख देनी चाहिये। जिस वस्तु को सबसे पहले बालक छुये उसी वस्तु से उसकी जीविका चलेगी। ऐसा समझना चाहिये।

नामकरण मुहूर्त्त—जन्म से बारहवें, दिन अथवा अपने कुलाचर वश जन्म के दिन से सोलहवें या बीसवें दिन नामकरण करना चाहिये। शुभनक्षत्र-मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अश्विनी, उत्तरा ३, रोहिणी. हस्त, श्रवण, पुनर्वसु, अभिजित, स्वाती, पुष्य, अनुराधा तथा शतभिष, शुभवार-चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र तिथि—१, २, ५, ७, ११, १२, १३। शुभ लग्न २, ५ ८, ११ अष्टम शुद्ध होने पर शुभग्रह के नवमांश में। लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह ३, ६, ११ में पापग्रह, ६, ८, १२ शुद्ध हो, पिता पुत्र के तारा और चन्द्रमा बलवान रहने पर पूर्वाह्न में नामकरण करना चाहिये। मध्याह्न में मध्यम होता है।

## नवग्रह के जपार्थ वैदिक मन्त्र

सूर्य—ॐ आकृष्णेन रजसावर्तमानोनिवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च ॥ हिरण्मयेन सवितारथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ चन्द्र—ॐ इमन्देवाअसपत्नर्ठसुवध्वं महतेक्षत्रायमहतज्यैष्ठ्यायमहतेजानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ॥ इमममुष्यपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएषवोमीराजासोमोऽस्माकं ब्रह्मणानार्ठ राजा ॥ भौम—ॐ अग्निमूधादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् ॥ अपार्ठ रेतार्ठसिजिन्वति ॥ बुध—ॐ उद्बुध्यस्वाग्नेप्रतिजागृहीत्वमिष्टापूतसर्ठ सृजेथामयञ्च ॥ अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानञ्चसीदत ॥ गुरु—बृहस्पतेऽअतियदर्योऽजर्हाद्युमद्विमाविक्रतुमज्जनेषु ॥ यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजातदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम् ॥ शुक्र—ॐ अग्नात्परिस्रुतोरसं ब्रह्मणाव्यपिवत्क्षत्रं पयः ॥ सोमं प्रजापतिः। ऋतेनसत्यमिन्द्रियं विपानर्ठ शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतंमधु ॥ शनि—ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽयापोभवन्तुपीतये ॥ शंयोरभिस्रवन्तुनः ॥ राहु—ॐ कयानिश्चत्रत्रऽभूवद्तीसवृधः सखा ॥ कयाशचिष्टयावृता ॥ केत—ॐ केतुकृण्वन्नकेतवेपेशोमर्याऽतेशसे ॥ समुषद्भिरक्षायथाः ॥ इति ॥

देहाती पुस्तक भण्डार (Regd.)
चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006
फोन : 261030

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# अन्य विशेष यन्त्र

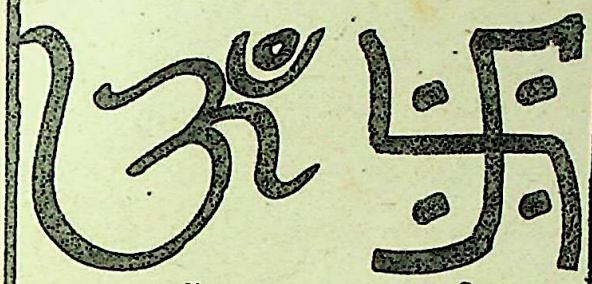

ओंकार स्वस्तिक

| | | | |
|---|---|---|---|
| 13 | 3 | 16 | 6 |
| 4 | 8 | 15 | 11 |
| 14 | 10 | 5 | 9 |
| 7 | 17 | 2 | 12 |

38

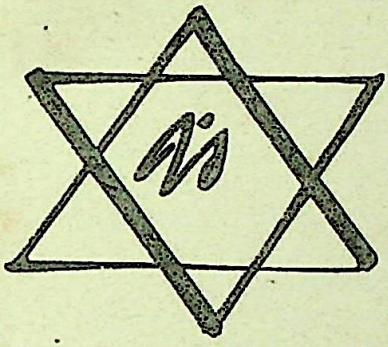

त्रिकोण

| | | | |
|---|---|---|---|
| 15 | 5 | 18 | 8 |
| 6 | 10 | 17 | 13 |
| 16 | 12 | 7 | 11 |
| 9 | 19 | 4 | 14 |

46

| | | | |
|---|---|---|---|
| 12 | 22 | 17 | 23 |
| 15 | 25 | 14 | 20 |
| 21 | 11 | 24 | 18 |
| 26 | 16 | 19 | 13 |

74

| | | | |
|---|---|---|---|
| 17 | 20 | 23 | 22 |
| 24 | 21 | 18 | 19 |
| 26 | 27 | 16 | 13 |
| 15 | 14 | 25 | 28 |

82

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

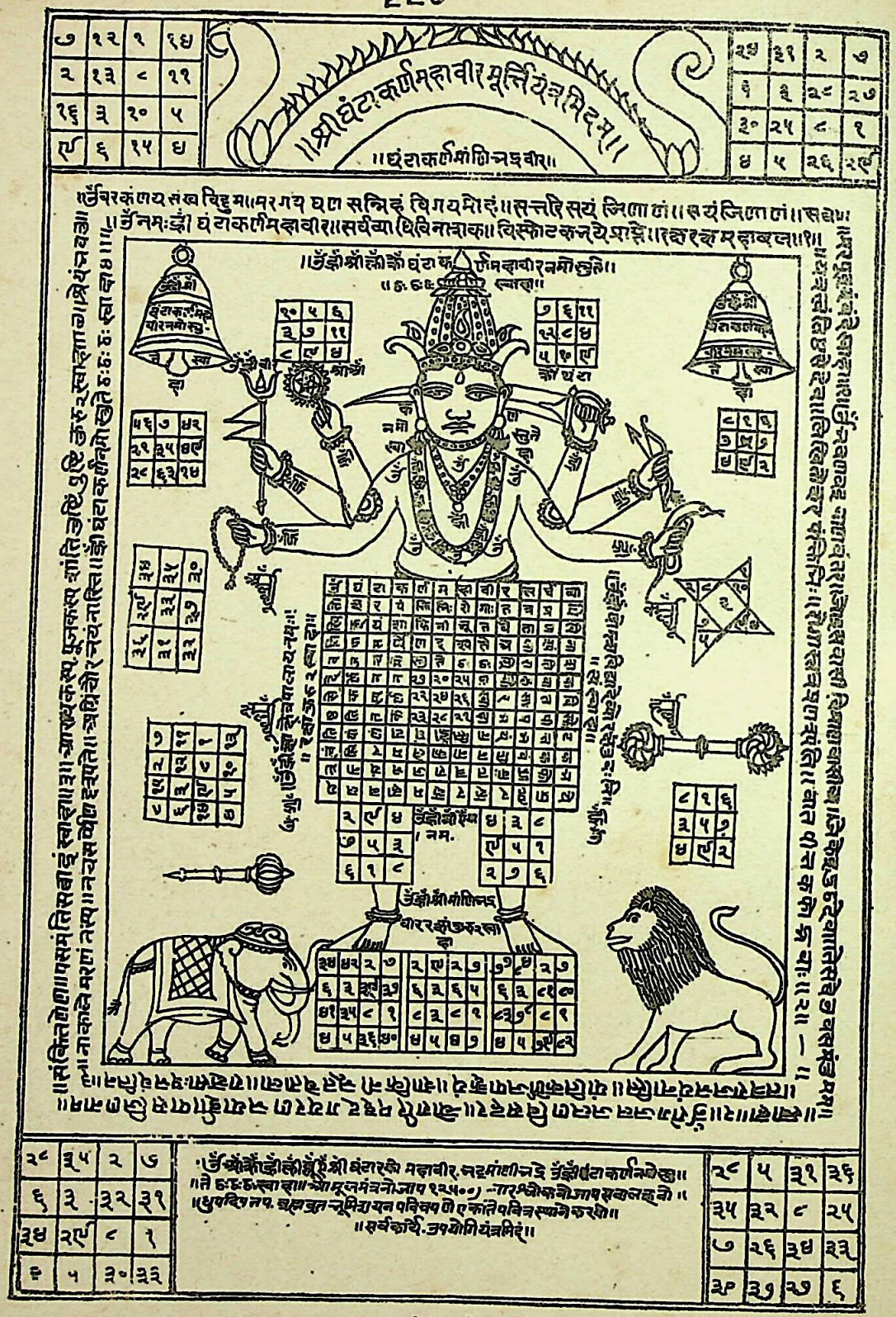




CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

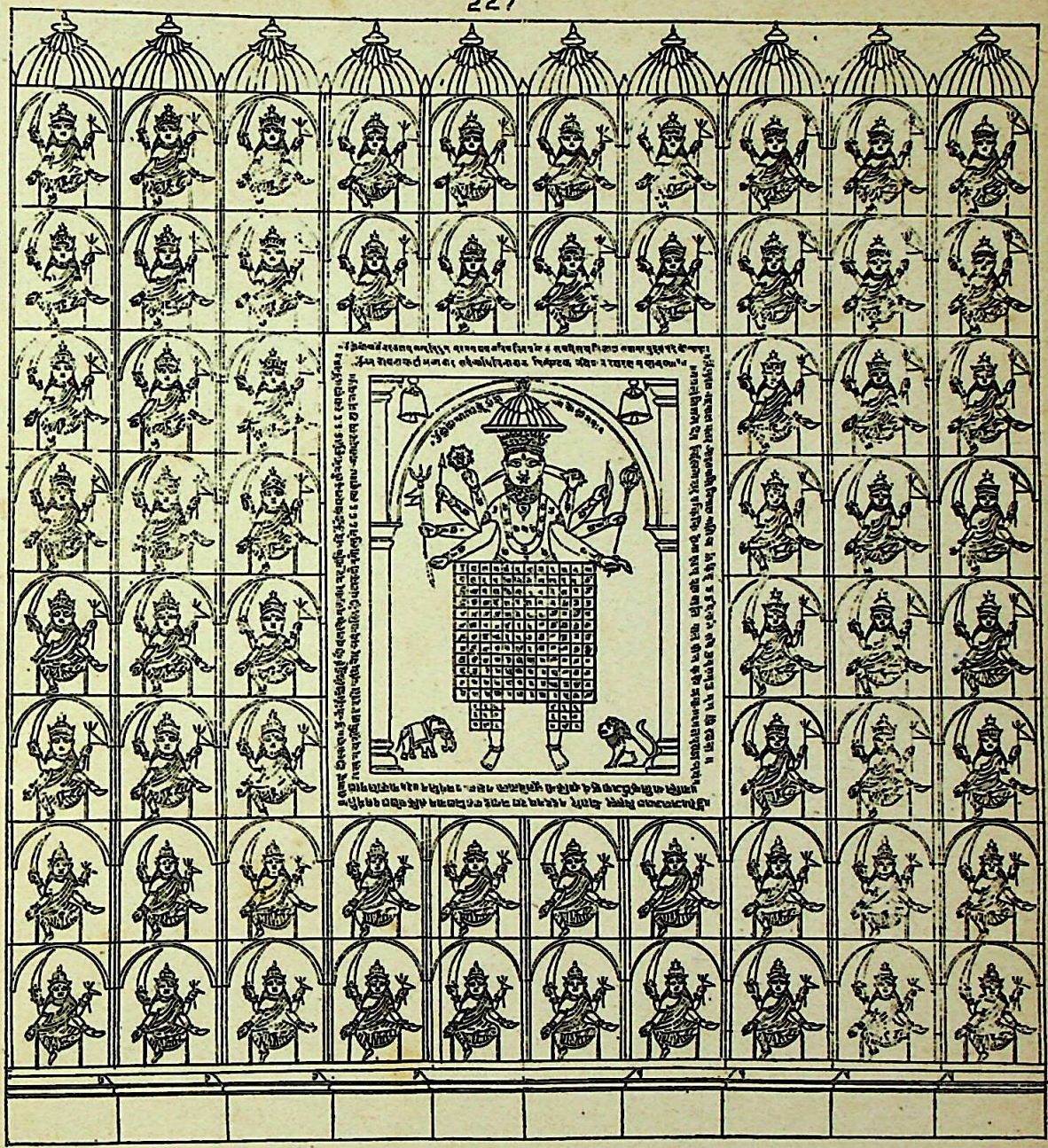

श्रीघंटाकर्ण महावीर चोसठ योगिणी सहित

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

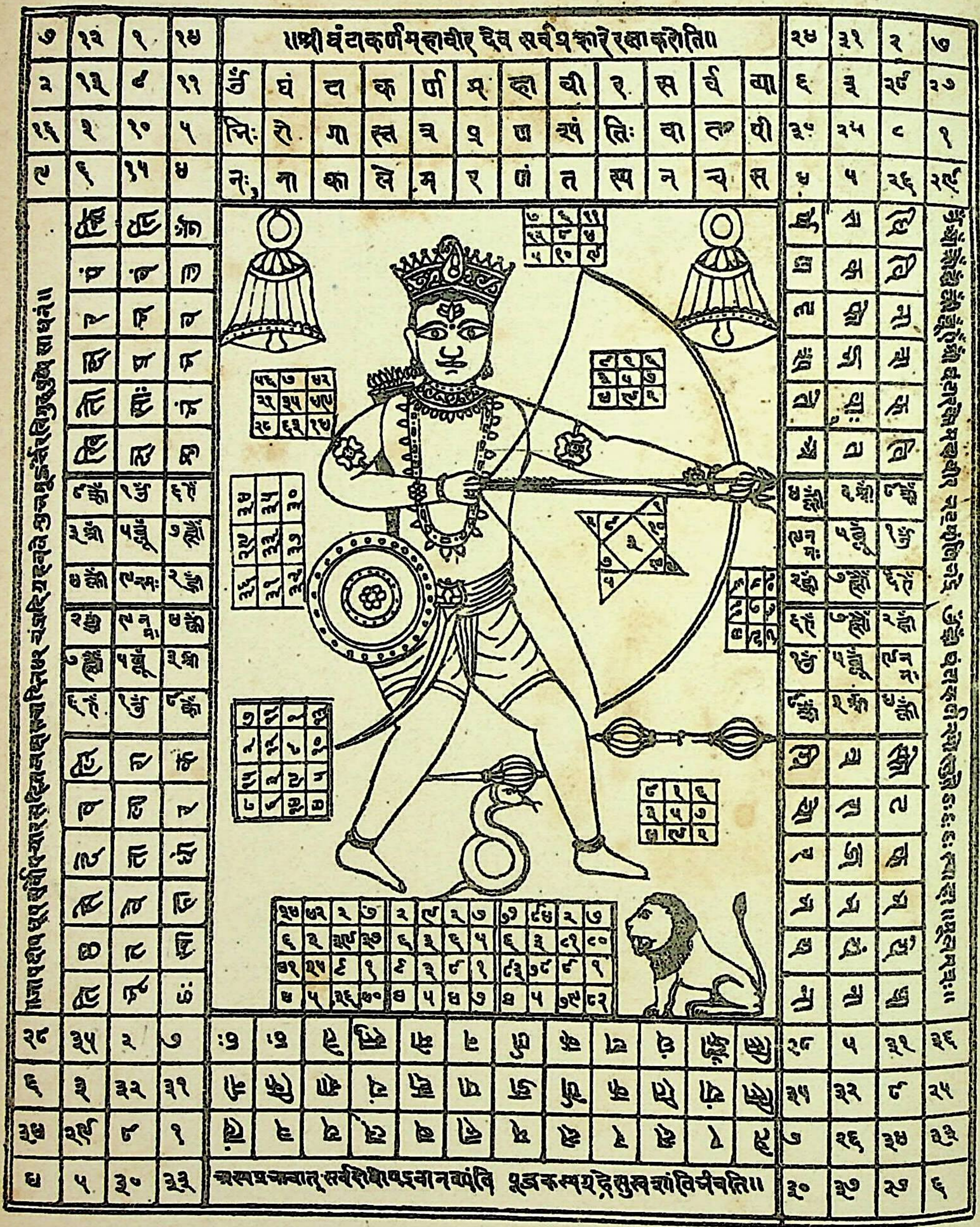


CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

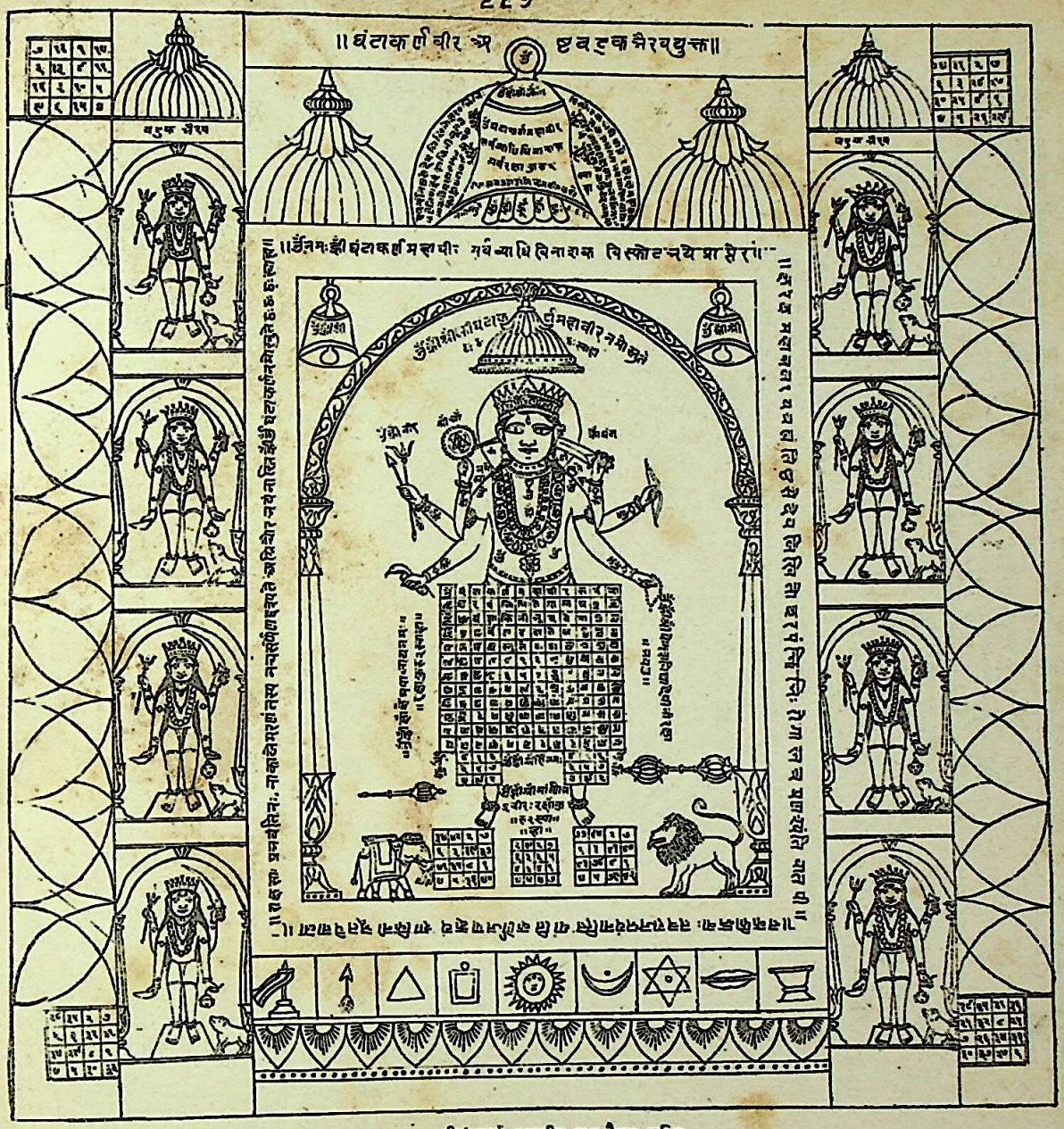


श्रीघंटाकर्ण महावीर आठ भैरव सहित

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

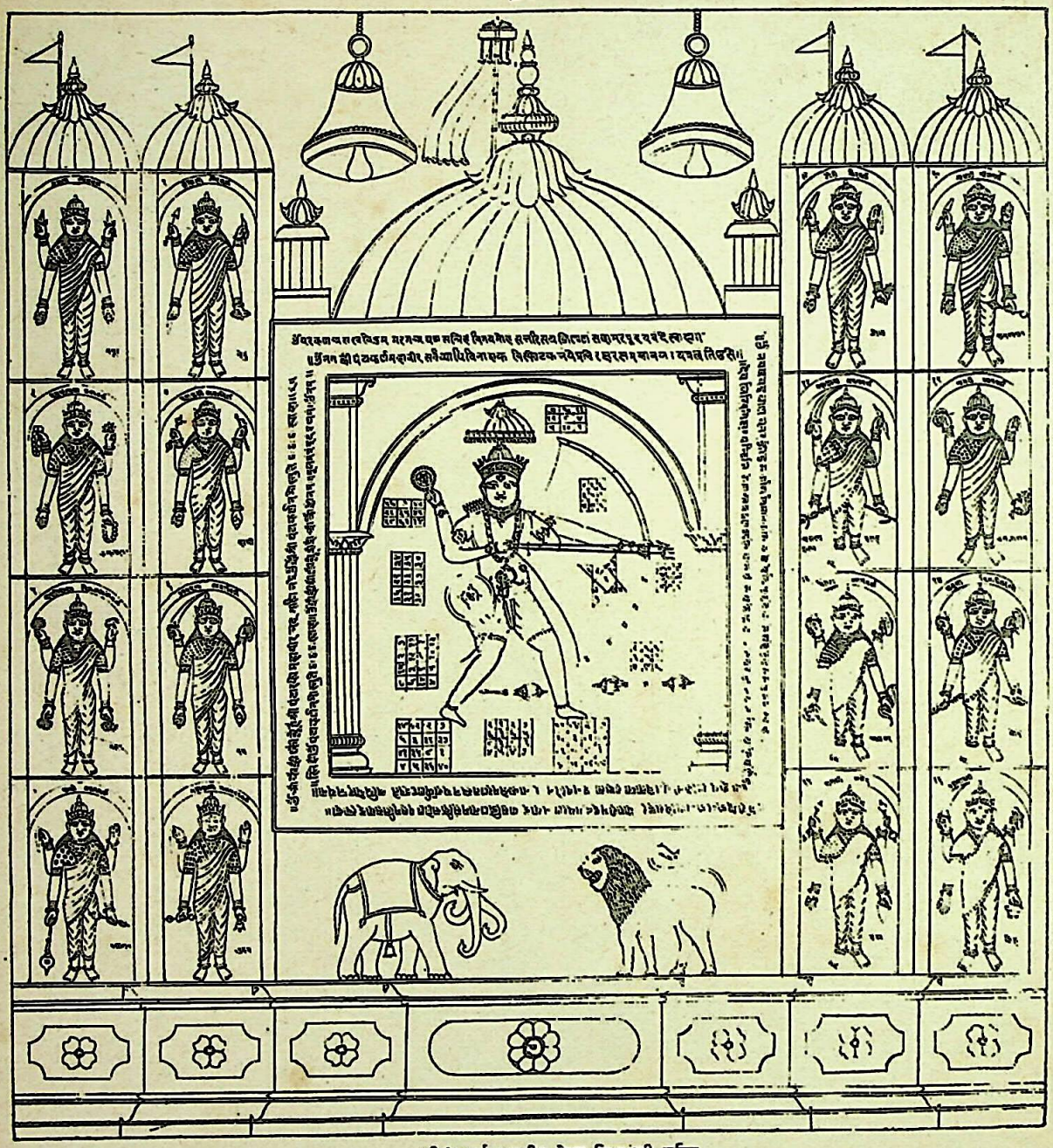

श्रीघंटाकर्ण महावीर सोळ विद्यादेवी सहित

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

॥वशीकरणयंत्र॥





॥देवादिनिवारणं॥







CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

भीषटाकर्ण महावीर बावन वीर सहित

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

234 A

## श्री ऋषिमण्डल महायंत्र

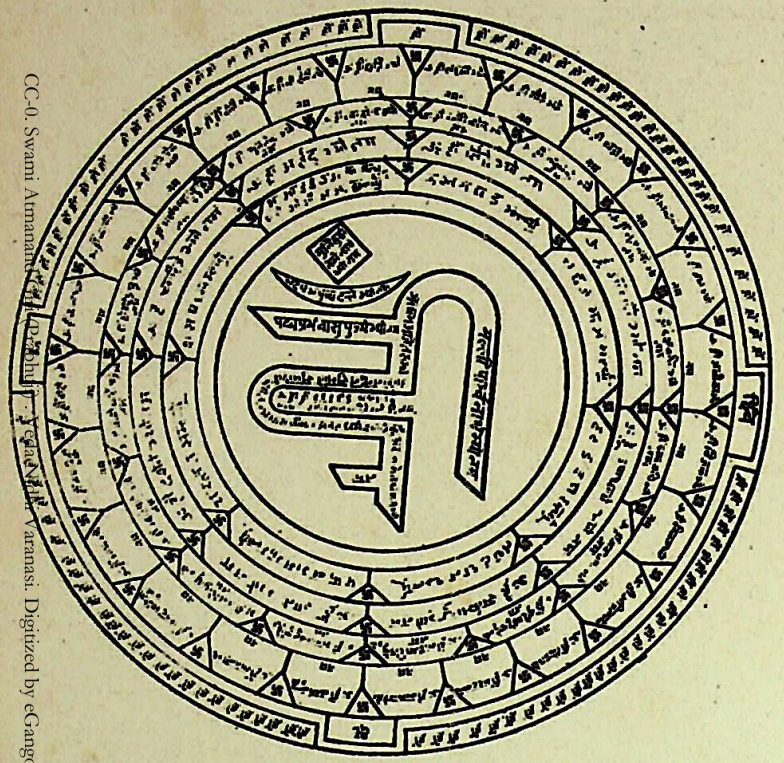

234 B

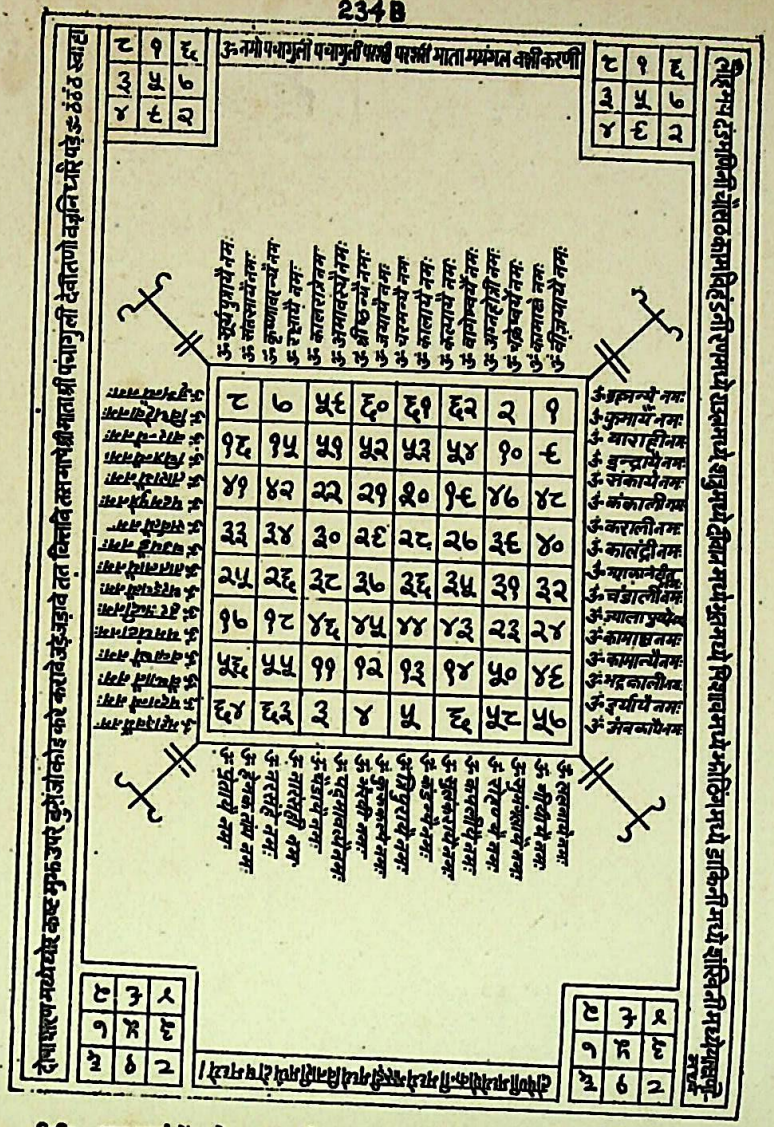

विधि — शुभ मुहूर्त में सफेद वस्त्र, सफेद आसन से पूर्व की ओर मुंह कर, अनार की कलम व अष्ट-गंध स्याही से भोजपत्र पर लिख, ताम्रपत्र पर खुदवा लें। मंत्र का सात बार जाप कर सर्वांग पर हाथ फेरे—इसके प्रभाव से हस्त रेखाविद की भविष्यवाणी सफल होगी। यह सौभाग्यशाली, रोग नाशक व भूत, प्रेत बाधा नाशक प्रभावापन्न यंत्र है।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## 235 A

—महाप्रभावक सर्वतोभद्र-यंत्र—

| ह्यल्वर्यू | ॐ ह्रीं श्रीं रोहिणी नमः | ॐ ह्रीं श्रीं प्रज्ञप्ती नमः | ॐ ह्रीं श्रीं भैरव यक्ष रक्षाः | ॐ ह्रीं श्रीं वज्रश्रृंखलाये नमः | ॐ ह्रीं श्रीं वज्रांकुश्यै नमः | ह्यल्वर्यू |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ॐ ह्रीं श्रीं महा-माणस्यै नमः | २५ ह | ८० र | क्षि | १५ हुं | ५० हः | ॐ ह्रीं श्रीं चक्रेश्वर्ये नमः |
| ॐ ह्रीं श्रीं माणस्यै नमः | २० स | ४५ र | प | ३० सुं | ७५ सः | ॐ ह्रीं श्रीं नरदत्ताये नमः |
| ॐ ह्रीं श्रीं कपिल-पिंगल यक्ष रक्षाः | क्षि | प | ॐ | स्वा | हा | ॐ ह्रीं श्रीं पूरण-भद्रयक्ष रक्षाः |
| ॐ ह्रीं श्रीं अच्छु-प्तायै नमः | ७० ह | ३५ र | स्वा | ६० हुं | ५ हः | ॐ ह्रीं श्रीं कालिये नमः |
| ॐ ह्रीं श्रीं वैरो-ट्यायै नमः | ५५ स | १० र | हा | ६५ सुं | ४० सः | ॐ ह्रीं श्रीं महा-कालियै नमः |
| ह्यल्वर्यू | ॐ ह्रीं श्रीं मानव्ये नमः | ॐ ह्रीं श्रीं महाज्वालाये नमः | ॐ ह्रीं श्रीं माणभद्रयक्ष रक्षाः | ॐ ह्रीं श्रीं गंधार्यै नमः | ॐ ह्रीं श्रीं गौर्यै नमः | ह्यल्वर्यू |

विधि- -यह महा प्रभावशाली यंत्र पुष्य नक्षत्र या अपने नाम का उत्कृष्ट मुहूर्त निकलवाकर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके अष्टगंध स्याही से भोजपत्र पर लिखे। धूप, दीप, नैवेद्य, इत्र, फल, फूल से पूजा करे। स्वर्ण के तावीज में डालकर लाख से बन्द करके गले में धारण करे तो भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी आदि व्यंतर देवों की क्रूर दृष्टि से रक्षा करता है। हर कार्य में सफलता प्राप्त होती है। चांदी की या कांसे की थाली में अष्टगन्ध से लिखकर इस यंत्र का जल

## 235 B

से प्रक्षालन कराकर वह जल रोज रोगी को पिलाने से ज्वर, हिचकी, मस्तक दर्द, पेट का दर्द, घबराहट व वायु आदि कितने ही रोगों में लाभ होता है। जैसे कहा है :—

सत्तरीसयनो महिमा अनंत,
तुच्छ बुद्धि किम जाणे तंत !

यह १७० के सर्वतोभद्र यंत्र की महिमा है।

### श्री घंटाकर्ण महायंत्र

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ॐ | घं | टा | क | र्णो | म | हा | वी | रः | स | र्वं | व्या |
| ता | क्ष | र | पं | क्ति | भि | रो | गा | स्त | त्र | प्र | धि |
| खि | त्क्ष | यं | शा | कि | नी | भू | त | वे | ता | ण | वि |
| लि | पा | स | र्पे | ण | दं | स्य | ते | अ | ला | श्य | ना |
| वा | ज | च | र्घं | टा | क | र्णो | न | ग्नि | रा | न्ति | श |
| दे | र्णे | न | ह्रीं | र | ठः | ठः | मो | चौ | क्ष | वा | कः |
| से | क | स्य | ब्लूं | वी | स्वाहा | ठः | स्तु | र | सा | त्त | वि |
| ष्ठ | न्ति | त | क्लीं | र | न | ॐ | ते | भ | प्र | पि | स्फो |
| ति | या | णं | श्रीं | ह्रीं | ॐ | स्ति | ना | यं | भ | त्त | ट |
| त्वं | स्ति | र | म | ले | का | ना | नः | न्ति | व | क | क |
| त्र | ना | य | भ | ज | रा | त्र | त | वाः | द्भू | फो | भ |
| य | लः | व | हा | म | क्ष | र | क्ष | र | प्ते | प्रा | य |

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## 236 A

**विधि**—यह यंत्र रवि पुष्य अथवा शुभ नक्षत्र में चांदी या तांबे के पत्र पर अथवा कांसे की थाली पर खुदवाना चाहिए या भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखना चाहिए। रविहस्त, रविमूल, गुरु पुष्य या दीवाली में भी लिखा जा सकता है। विशेषतः कांसे की थाली में खुदवाना चाहिए। फिर शुद्ध जल से स्नान कर, शुद्ध वस्त्र पहन कर, पंचामृत से अभिषेक करना चाहिए। फिर एक बाजोट पर थाली को यानी यंत्र को विराजमान कर चन्दन, केसर से पूजा करे। थाली के एक तरफ अगर के १०८ टुकड़े तथा दूसरी तरफ दीपक व लाल रंग के जूही आदि के १०८ फूल रखे। साधक व्यक्ति मंत्र बोले। एक मंत्र बोलने पर पास बैठा एक व्यक्ति थाली में एक फूल चढ़ावें व दूसरा पास बैठा व्यक्ति अगर का टुकड़ा धूप में छोड़े व थाली के बेलन से घंटा दे। इस तरह १०८ बार करके थाली में नारियल व पंच रत्न की एक पोटली तथा चांदी का एक रुपया चढ़ाये। फिर बाजोट सहित लाल कपड़ा बांधकर उस पर चांदी का वर्क चन्दन व फूल का हार चढ़ाये। धन-तेरस को चालीस माला, रूप चौदस को बयालीस माला तथा दीवाली को तयालीस माला घंटाकर्ण महा मंत्र की फेरे। यंत्र पास में रखे। जप-घर में इसका स्थापन करे। क्षुद्र उपद्रव शान्त होंगे। सुख-सौभाग्य की वृद्धि होगी।

### चन्द्रप्रज्ञप्ति यंत्र

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ओं | ह्रीं | श्रीं | क्लीं | ब्लूं | न | मि |
| ग | ए | कि | ले | से | अ | उ |
| ये | ये | स | व्व | सा | रि | ण |
| दि | झा | स्वा | हा | हु | हे | अ |
| र्व | त्त | मः | न | र्णं | सि | सुर |
| रि | उ | ये | रि | य | द्धा | सुर |
| प | ग | यं | भु | ल | रु | ग |

## 236 B

**विधि**—रवि पुष्य नक्षत्र में सोने, चांदी, तांबे या भोजपत्र पर इसे लिख कर विधिपूर्वक पूजा करे। उस दिन व समापन के दिन चौविहार उपवास करे। एकांत स्थान में इस मंत्र को लिखे तथा सफेद वस्त्र धारण कर सफेद माला से इसका जाप प्रारंभ करे। १२५०० जाप होने से यंत्र व मंत्र सिद्ध होता है। इससे मनवाछित कार्य सिद्धि होती है। अकस्मात् धन प्राप्त होता है। इसे पंचमी दशमी या पूर्णिमा को शुरू करना चाहिए।

### श्री मणिभद्र महा यंत्र

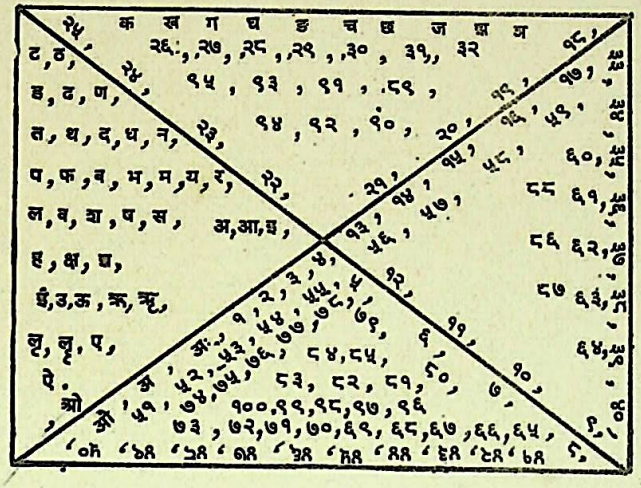


**विधि**—यह मणिभद्र महाराज का सौ अक्षरों वाला महायंत्र है। दीवाली के दिन चौविहार उपवास करके अष्टगन्ध या पंचगंध से सोने, चांदी, तांबे या भोजपत्र पर दीवाली की रात्रि को लिखकर मध्य रात्रि के समय गुंजा की झाड़ी की जड़ में गाड़ दे। दूसरे दिन प्रातः ब्राह्म मुहूर्त में मौनपूर्वक जाकर निकाल लाए। घर आकर पवित्र स्थान में स्थापना करे व पूजन करे। प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक पूजन करता रहे। यह महा प्रभावक यंत्र है। घर में आनन्द रहता है, लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## 237 A

### चौसठ योगिनी महायंत्र

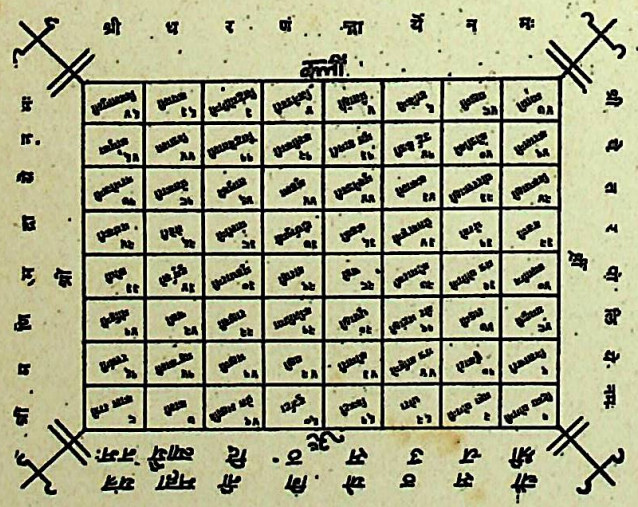

विधि—यह चौसठ योगिनियों का प्रभावक यंत्र है। यह यंत्र कृष्ण-पक्ष की अष्टमी रविवार या चतुर्दशी रविवार को पूर्व दिशा की ओर मुंह कर अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखना चाहिए अथवा चांदी, सोने या तांबे के पत्र पर खुदवा कर घर में पूजन के लिए रखा जा सकता है। पूजन में रखने के बाद नित्य धूप, दीप करना चाहिए। शरीर की दुर्बलता, पुराना ज्वर तथा किसी भी प्रकार की शारीरिक व्याधि के लिए सात दिन तक नित्य एक बार चांदी की थाली में अष्ट-गंध से लिखकर जल प्रक्षालित कर पिलाने से पूर्ण लाभ मिलता है। इस यंत्र को धारण करने से भूत, प्रेत, पिशाच, शाकिनी, डाकिनी, व्यंतर आदि देवों का दूषित प्रभाव अथवा दोष नहीं होते हैं। यंत्र को पानी में घोलकर वह पानी घर में चारों कोनों में छिड़कने से व्यंतर देव सम्बन्धी दोष निवारण होता है। ऋद्धि, सिद्धि व समृद्धि का आगमन होता है, प्रतिकूल तांत्रिक व मांत्रिक प्रभावों को नष्ट करता है।

## 237 B

### महाप्रभावक उवसग्गहर यंत्र

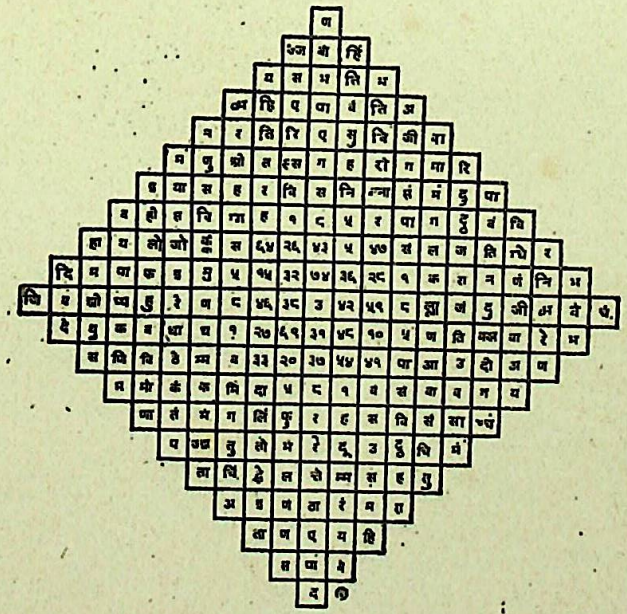

विधि—यह उवसग्गहर यंत्र पांच गाथा का सर्व प्रचलित यंत्र है। इसे रवि पुष्य, गुरु पुष्य, रविहस्त नक्षत्र या दीवाली अथवा शुभ मुहूर्त में सफेद कपड़े पहन, पूर्व की ओर मुंह करके अष्टगंध से भोजपत्र पर सोने, चांदी या अनार की कलम से लिखना चाहिए। धूप, दीप करना चाहिए। सोने की मादलिये में डालकर, धूप लेकर दाहिने हाथ या गले में धारण करने से सर्व प्रकार के भय, दुष्ट ग्रह व रोग शान्त होते हैं। भूत, प्रेत दोष मिटे, लक्ष्मी प्राप्त हो, मान-सम्मान बढ़े, कोर्ट-कचहरी में विजय हो, राज दरबार में सम्मान हो। घर में सोने, चांदी या तांबे के पत्र पर खुदवा कर रखे तथा प्राण-प्रतिष्ठा करके रोज पूजन करे तो अखूट भंडार रहे और इसको धोकर पानी पीवे तो गुमड़े, फोड़े, भूत-प्रेत भय, चोर भय दूर हो। गर्भवती स्त्री के बिना कष्ट सन्तान हो।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## 238 A

### भगवती पद्मावती महायंत्र

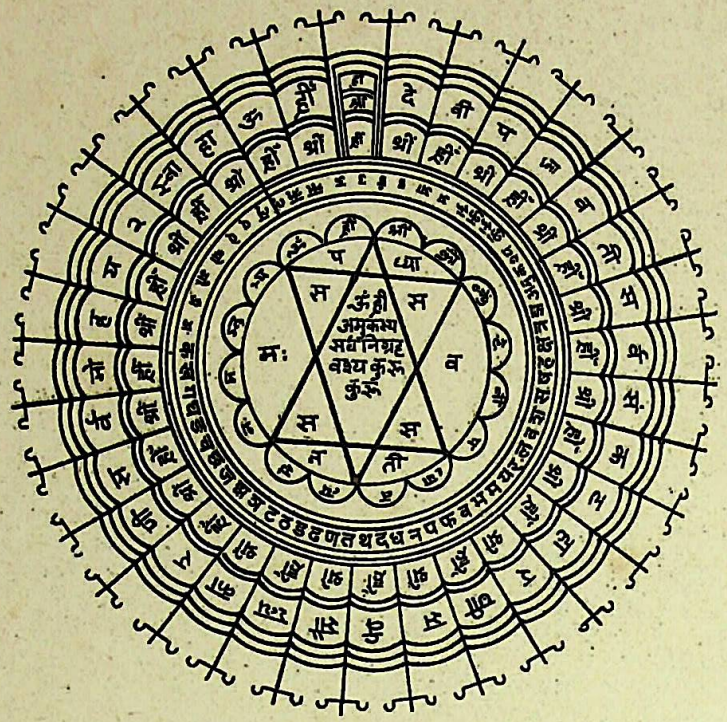

मंत्र —ओं ह्रीं श्रीं पद्मावती सर्व संकट हरणी सर्व सौख्य करणी सर्व मोहय मोहय स्वाहा।

विधि—यह यंत्र कुंकुम, कपूर, कस्तूरी व गोरोचन से भोजपत्र पर लिखे। जूही के पुष्प पर १००००० जाप करे। फिर दाख १०००, शर्करा १००, खारक खंड १०००, चन्दन खंड १०००, नारिकेल खंड १००० श्वेत वस्त्र पहनकर नव रात्र में द्विप्रहर पर—मध्याह्न-वेला में चावल के साथ हवन करे।

## 238 B

### विजयराज यंत्र

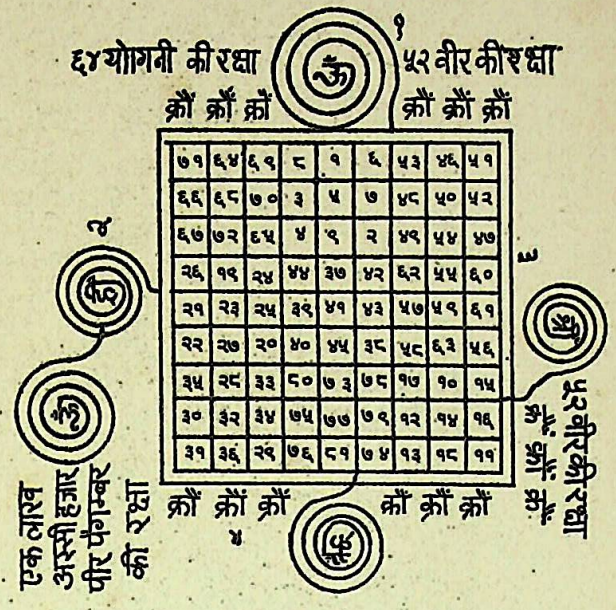


विधि—रवि पुष्य या शुभ मुहूर्त में पूर्व की ओर मुंह करके सफेद वस्त्र पहन कर, सफेद आसन पर बैठकर अनार की कलम से, अष्टगन्ध स्याही से भोजपत्र पर लिखे अथवा चांदी या तांबे के पत्र पर खुदवाये। रोज दशांग धूप से पूजन करे। लिखने का शुभारम्भ बड़े अक्षरों से यानी ८१-८०-७९-७८ इस तरह कम होते अक्षरों से १ तक लिखे। जिस खाने में जो अक्षर हों वे उसीमें लिखें। यह अत्यन्त शुभप्रद, भाग्योन्नायक तथा लक्ष्मीप्रद यंत्र है। इससे हर प्रकार के भय का नाश होता है। शत्रु से रक्षा होती है। कोर्ट, कचहरी के काम के समय प्रतिदिन सुबह, दोपहर व शाम को एक यंत्र लिखे व गिरा दे तो मुकदमे में जीत हो। जब तक कोर्ट में सफल न हो तब तक रोज लिखे।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# ॥ श्री श्री यन्त्रम ॥

## ॥ श्री श्री ललिता महा त्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्म्यै महा यन्त्रम ॥

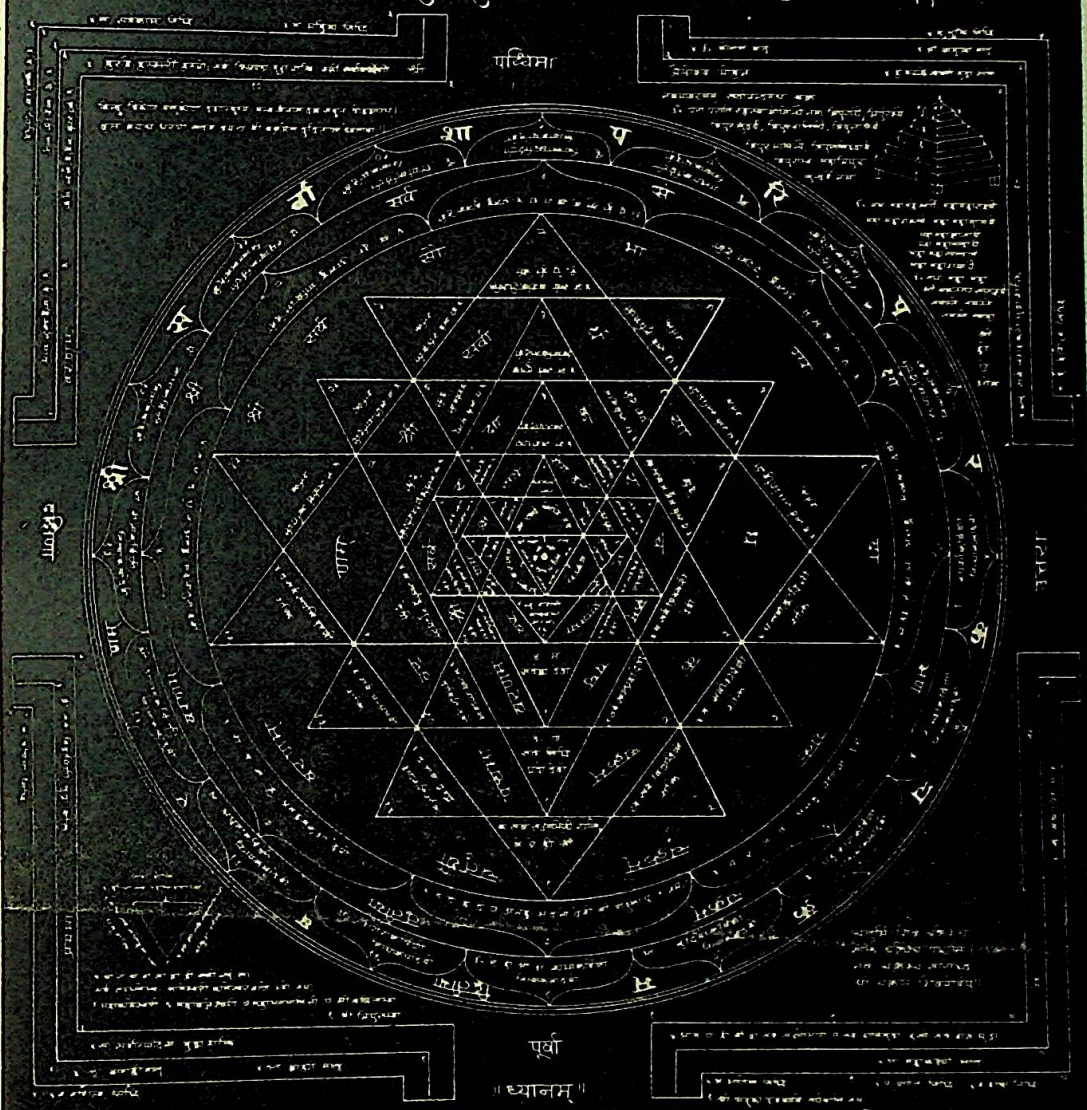


॥ ध्यानम् ॥

सिन्दूरारुण विग्रहां त्रिनयनां माणिक्य मौलि स्फुरत्तार नायक शेखरां स्मितमुखीं मापीन वक्षोरुहाम् ।
पाणिभ्यामलिपूर्ण रत्न चषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं सौम्यां रत्न घटस्थ रक्त चरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम् ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

80,00,00,000 (अस्सी करोड़) भारतीय तथा समस्त विश्व के लिए कल्याणकारी

# ★ गायत्री मन्त्र और उसका महत्व ★

**ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ॥**

गायत्री मन्त्र में 1 ॐ, 2 भूः, 3 भुवः, 4 स्वः, 5 तत्, 6 सवितुः 7 वरेण्यम्, 8 भर्गो, 9 देवस्य यह नौ नाम हैं। इन नौ नामों में भगवान् की स्तुति की गई है। 'धीमहि' उपासना है। 'धियो यो नः प्रचोदयत्' यह प्रार्थना है। इसमें पाँच अवसान हैं। "ओ म्" यहाँ प्रथम अवसान है। 'भूर्भुवः स्वः' दूसरा, 'ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्' तीसरा, 'भर्गो देवस्य धीमहि' चौथा, 'धियो यो नः प्रचोदयत् ॐ' यहाँ पाँचवां अवसान है। प्रत्येक अवसान पर मन्त्र जपते समय कुछ ठहरना चाहिये। ओं=सर्वव्यापक रक्षा करने वाला; भूः=सत्य स्वरूप; भुवः=चैतन्य स्वरूप, ज्ञान स्वरूप; स्वः=सुख स्वरूप; तत्=वह अनन्त परमात्मा; सवितुः=सबको उत्पन्न करने वाला; वरेण्यम्=ग्रहण करने योग्य, तारीफ के लायक; भर्गो=सब पापों को भर्जन नाश करने वाला, शुद्ध तेजः स्वरूप; देवस्य=प्रकाश और आनन्द के देनेवाले दिव्य स्वरूप ऐसे परमात्मा का; धीमहि=हम सब ध्यान करते हैं; धियः=बुद्धियों को, यः=वह परमात्मा; नः=हमारी; प्रचोदयात्=धर्मार्थ काम मोक्ष में प्रेरणा करे, संसार से हटा कर अपने स्वरूप में लगाये और शुद्ध बुद्धि प्रदान करे।

गायत्री मन्त्र का सविता देवता है, अग्नि मुख है, विश्वामित्र ऋषि है, गायत्री छन्द है और उपनयन, प्राणायाम और जप में विनियोग (इस्तेमाल) है।

यह गायत्री मन्त्र आदिमन्त्र है। अन्य मतों की तो बात ही क्या है वेद में भी इसके अतिरिक्त ऐसा कोई मन्त्र नहीं है जिसमें एक ही मन्त्र में भगवान् की स्तुति उपासना और प्रार्थना तीनों बातें हों। भगवान के भजन में पहिले भगवान् की स्तुति की जाती है, फिर उपासना ध्यान किया जाता है और पश्चात् भगवान् से प्रार्थना की जाती है। गायत्री मन्त्र में स्तुति, प्रार्थना और उपासना तीनों हैं। गायत्री ही एक ऐसा मन्त्र है जो हिन्दू मात्र के लिए एक मन्त्र हो सकता है। भगवान् वेद में आज्ञा करते हैं "समानो मन्त्रः" 'कि तुम्हारा मन्त्र एक हो' अतः हिन्दू मात्र का एक गायत्री मन्त्र होना चाहिये।

सारभूतास्तु वेदानां गुह्योपनिषदोमतः।
ताभ्यः सारस्तु गायत्री त्रिस्रो व्याहृतयस्तथा ॥

चारों वेदों का सार उपनिषद् हैं और उपनिषदों का सार गायत्री है।

एवं यस्तु विजानाति गायत्री ब्राह्मणस्तु सः।
अन्यथा शूद्रधर्मा स्याद् वेदानामपि पारगः ॥

इस प्रकार से जो गायत्री को जानता है वह ही ब्राह्मण है और जो नहीं जानता वह चारों वेदों का पारगामी भी क्यों न हो, शूद्र है।

या सन्ध्या सैव गायत्री द्विधा भूता व्यवस्थिता।
सन्ध्या उपासिता येन विष्णुस्तेन उपासितः ॥

जो गायत्री है वही सन्ध्या है और जो सन्ध्या है वही गायत्री है। जिसने गायत्री की उपासना करली उसने विष्णु भगवान् की उपासना कर ली। गोभिल ऋषि कहते हैं—

सन्ध्या येन न विज्ञाता सन्ध्या नैवाप्युपासिता।
जीवमानो भवेच्छूद्रो मृतः श्वा चाभिजायते ॥

जिसने गायत्री को नहीं जाना और उपासना नहीं की वह जीता हुआ शूद्र है और मर कर कुत्ते की योनि को प्राप्त होगा।

गायत्री प्रोच्यते तस्मात् गायन्तं त्रायते यतः ॥

इसका नाम गायत्री इसीलिये है कि यह गाने वाले को संसार सागर से पार कर देती है।

गायत्री वेदजननी गायत्री पापनाशिनी।
गायत्र्यास्तु परं नास्ति दिवि चेह च पावनम् ॥

गायत्री वेद की माता है, गायत्री पाप नष्ट करने वाली है। गायत्री के अतिरिक्त भूलोक में तथा स्वर्गलोक में पवित्र करने वाला और नहीं है।

मनु भगवान् ने कहा है कि विधि यज्ञ से जप यज्ञ दश गुणा फलदायक है, इसमें भी जिसमें होठ ही हिलें शतगुणा और मानसिक सहस्र गुण फल देता है। लेटा-लेटा, बैठा-बैठा, डोलता-फिरता जिस भी अवस्था में हो, मनुष्य गायत्री का मानसिक जप कर सकता है। इसके जपने में किसी प्रकार का भी विधि निषेध नहीं है। इसके जपने से सब कामना पूरी होती हैं और अन्त में स्वर्गधाम पाकर मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस मन्त्र से प्रातः, मध्याह्न, सायंकाल और अर्ध रात्रि के समय इस प्रकार चार बार सन्ध्या करनी चाहिये। नौ नामों से भगवान् की स्तुति करे फिर "धीमहि" से भगवान् का इस प्रकार ध्यान करे।

**"योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहमस्मि ओं ॐ ब्रह्म"**

सूर्य में स्वर्ण जैसे रंग का जो प्रकाश स्वरूप पुरुष है, वह मैं हूँ। फिर 'धियो यो नः प्रचोदयात्' से प्रार्थना करे। अर्थ सहित चाहे एक भी मन्त्र दिन में चार बार जपो वह भी कल्याण देने वाला है। वेद का मन्त्र है, भगवान् की आज्ञा है, इससे पाप नष्ट होते हैं और ज्ञान का प्रकाश होता है।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# अथ इन्द्राक्षीस्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः । श्री नर्मदादेव्यै नमः । ॐ अस्य श्री इन्द्राक्षीस्तोत्रमन्त्रस्य पुरंदर ऋषिः । अनुष्टुप् छंदः । इन्द्राक्षी देवता । महालक्ष्मी बीजम् । भुवनेश्वरी शक्तिः । भवानीति कीलकम् । मम सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे श्री इन्द्राक्षी वरप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ अथ न्यासः । इन्द्राक्षीअंगुष्ठाभ्यां नमः । महालक्ष्मी तर्जनीभ्यां नमः । माहेश्वरी मध्यमाभ्यां नमः । अंबुजाक्षी अनामिकाभ्यां नमः । कात्यायनी कनिष्ठिकाभ्यां नमः । कौमारी करतल करपृष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादिः । इन्द्राक्षी हृदयाय नमः । महालक्ष्मी शिरसे स्वाहा । माहेश्वरी शिखायै वषट् । अंबुजाक्षी कवचाय हुम् । कात्यायनी नेत्रत्रयाय वौषट् । कौमारी अस्त्राय फट् । ॐ ह्रां हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ ह्रूं शिखायै वषट् । ॐ ह्रैं कवचाय हुम् ॥ ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ अस्त्राय फट् । अथ दिग्बंधः । प्राच्यै दिशे नमः । इंद्राय नमः । आग्नेय्यै दिशे नमः । अग्नये नमः । याम्यायै दिशे नमः । यमाय नमः । नैर्ऋत्यै दिशे नमः । नैर्ऋत्याय नमः । प्रतीच्यै दिशे नमः । वरुणाय नमः । वायव्यै दिशे नमः । वायवे नमः । उदीच्यै दिशे नमः कुबेराय नमः । ईशान्यै दिशे नमः । ईश्वराय नमः । ऊर्ध्वायै दिशे नमः । ब्रह्मणे नमः । अधरायै दिशे नमः । अनन्ताय नमः । ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वरोमिति दिग्बन्धनम् । अथ ध्यानम् । इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीतवस्त्रद्वयान्विताम् । वामहस्ते वज्रधरां दक्षिणेन वरप्रदाम् ॥ इन्द्राक्षी सहस्र युवतीनानालङ्कारभूषिताम् । प्रसन्नवदनां भोजामप्सरोगणसेविताम् ॥ अथमन्त्रः ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कलीं इन्द्राक्षी क्लीं श्री ह्रीं ऐं ॐ स्वाहा अष्टोत्तरशतं जप्त्वा सर्वसिद्धिप्रदायकम् इन्द्र उवाच इन्द्राक्षी नाम सा देवी दैवतैः समुदाहृता गौरी शाकंभरी देवी दुर्गानाम्नीति कात्यायनी महादेवी चन्द्रघण्टा महातपा, सावित्री सा च गायत्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी । नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिङ्गला, अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी । मेघश्यामा सहस्राक्षी मुक्तकेशी जलोदरी । महादेवी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला । अजिता भद्रदा नन्दा रोगहन्त्री शिवप्रिया, शिवदूती करालीं च प्रत्यक्षा परमेश्वरी । सदा सम्मोहिनी देवी सुन्दरी भुवनेश्वरी, इन्द्राक्षी इंद्ररूपा च इन्द्रशक्तिः परायणा । महिषासुरसंहर्त्री चामुण्डा गर्भदेवता, वाराही नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी । श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती, अनन्ता विजया पूर्णा मानस्तोकाऽपराजिता । भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्याम्बिका शिवा, एतैर्नामशतैर्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता । आयुरारोग्यमैश्वर्यं वित्तं ज्ञानं यशो बलम्, नाभिमात्रे जले स्नात्वा सहस्रपरिसंख्या । जपेत्स्तोत्रमिमं मन्त्रं वाचां सिद्धिर्भवेत्ततः, अनेन विधिना भक्त्या मन्त्रीसिद्धिश्च जायते । सन्तुष्टा च भवेद्देवी प्रत्यक्षा सम्प्रजायते । शतमावर्तयेद्यस्तु मुच्यते नात्र संशयः । आवर्तनसहस्रेण लभ्यते वांछितं फलम्, सायं शतं पठेन्नित्यं षण्मासात्सिद्धिरुच्यते । चोरव्याघ्रभयस्थाने मनसा ह्यनुचिन्तयन् । संवत्सरमुपाश्रित्य सर्वकामार्थसिद्धये । राजानं वश्यप्नोति षण्मासान्नात्र संशयः । इति श्री 'युगल' कृत इन्द्राक्षीस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।

## ॐ ॥अथ नेत्रोपनिषत्प्रारम्भः॥

अथातः—चाक्षुष्मतीं विद्याम्पठितसिद्धां चक्षूरोगहरां व्याख्यास्यामि, यथा चक्षूरोगाः सर्वतो नश्यन्ति चक्षुषो दीप्तिर्भवति । तस्याः चाक्षुष्मतीविद्यायां अहिर्बुध्न्य ऋषये नमः शिरसि गायत्रीच्छन्दसे नमो मुखे । ओ३म् श्रीसूर्य देवतायै नमो हृदये । ओं स्वचक्षूरोगनिवृत्तये जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ओं चक्षुश्चक्षुस्तेजःस्थिरोभव । मा याहि मा याहि । त्वरितं चक्षुरोगान् शमय शमय । मम

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय। यथाहमन्धो न स्याम् तथा कृपय कृपय। कल्याणं कुरु कुरु। मम यानि पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुः-प्रतिरोधकानि दुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय। ओं नमश्चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्यभास्कराय। ओं नमः करुणाकरायामृताय। ओं नमः श्री सूर्याय ओं नमो भगवते सूर्य्याय अक्षय्यतेजसे नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय। ओं सूर्य्य उष्णो भगवान् शुचिरूपः। हंसो भगवान् हंसरूपः। य इमां चाक्षुष्मतीं विद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते, न तस्यान्धिरोगो भवति। न तस्य कुलेऽन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भविष्यति, ओं नमो विश्वरूपं घृणिनं जातवेदसं देवं हिरण्मयं पुरुषं ज्योतीरूपंतपन्तं सहस्ररश्मिभिः शतधा वर्तमानः प्राणः पुरः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः ओं नमो भगवते आदित्याय अहोवाहनाय स्वाहा।


असली, प्राचीन, हस्तलिखित

दुर्लभ ग्रन्थ

1. असली प्राचीन हस्तलिखित बृहद् यन्त्र महार्णव—अद्भुत चमत्कार तथा प्रभाव प्रदर्शित करने वाले सैकड़ों मन्त्र और उनसे सम्बन्धित सभी आवश्यक ज्ञातव्य विषय, मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, आकर्षण एवं शांतिकरण यन्त्रों का विशालतम संकलन। भेंट 151/- रु०

2. असली प्राचीन हस्तलिखित बृहद् तन्त्र महार्णव—चिन्ता, कष्ट, दुःख, रोग एवं पीड़ानाशक, धन-सम्पत्ति, वस्त्राभूषण, वाहन, सेवक, गृह, पत्नी तथा सन्तानदाता, चमत्कारी करतबों का प्रदर्शक, प्रामाणिक, गोपनीय तथा लोक-प्रचलित तन्त्रों का अभूतपूर्व विशाल ग्रन्थ। भेंट 131/-

3. असली प्राचीन हस्तलिखित बृहद् मन्त्र महार्णव—प्राचीन गोपनीय ग्रन्थों का निचोड़, इहलोक व परलोक साधन का यह चमत्कारी एवं लोक-कल्याणकारी महाग्रन्थ प्रत्यक्ष प्रभाव प्रदर्शित करने वाला है। मूल ग्रन्थ के सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य इस ग्रन्थ की विशेषता है। कलिकाल में प्रभावशाली, मन्त्र साधकों का हृदय, परमार्थ-साधकों का मार्गदर्शक तथा तान्त्रिकों का सर्वस्व। भेंट 171/- रु०

4. असली प्राचीन हस्तलिखित यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र विशेषांक—आज के इस भौतिकवादी वैज्ञानिक युग में भी प्राचीन यन्त्र-तन्त्र-मन्त्रों की मान्यता कम नहीं हुई है। प्रस्तुत विशाल ग्रन्थ में गोपनीय यन्त्र-तन्त्र-मन्त्रों का दुर्लभ संग्रह किया है। भेंट 321/- (तीन सौ इक्कीस रु०)

देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाज़ार, देहली-6


CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# आदर्श-ध्यानयोग

### चित्त स्थिर करनेका एक उपाय

अनेक ग्रन्थकारोंने आदर्श-ध्यानयोग इस प्रकार बतलाया है—

अपने सामने एक आदर्श या आईना रक्खे और घीका दीया इस तरह उसके सामने रक्खे कि उसकी ज्योति दर्पणके मध्यभागपर प्रतिबिम्बित हो। दर्पणके मध्यभागमें सुगन्धित तेलका एक बूँद डाल दे। अनन्तर दर्पणके मध्यभागमें जहाँ ज्योति दिख रही हो, वहाँ उस ज्योतिकी शङ्खाकृतिपर दृष्टि स्थिर करनेका अभ्यास करे। इस अभ्यासके समय मौन रहे, मनमें कोई विचार न आने दे और बाहरसे आनेवाले शब्दों-की ओर जिसमें ध्यान न जाय, इसके लिये आगे लिखे अनुसार कर्णमुद्राका उपयोग करे। केसर, इलायची और जायफल समभाग लेकर उसे कूटकर चूर्ण करे, और उसे वस्त्रसे छानकर किसी रेशमी कपड़ेके टुकड़ेमें रखकर उसकी पोटली बनाकर इस तरह उसे सीये कि कानमें उसका डाट दिया जा सके। डाट देकर उसपर मोम लगा दे। यह कर्णमुद्रा कानमें लगाकर तब दर्पणमें ज्योतिके प्रतिबिम्बकी शङ्खाकृतिपर दृष्टि स्थिर करे। शुरू-शुरूमें उष्णताके कारण आँखोंसे गरम पानी जायगा, उसे जाने दे, बंद न करे। लगभग एक सप्ताहके अंदर ही पानीका जाना बंद हो जायगा। पानीसे यदि आँखें बीचहीमें बंद हो जायँ तो कोई हर्ज नहीं। आँखें पोंछकर फिरसे अभ्यास आरम्भ करे। चित्तवृत्तिको स्थिर करके, बिना पलक गिराये जितनी ही अधिक देरतक अभ्यास किया जा सके उतना ही अधिक लाभप्रद है। पहले प्रतिदिन दस-ही-पंद्रह मिनट अभ्यास करे, पीछे धीरे-धीरे घंटे-सवा-घंटेतक बढ़ा ले जाय। जब आध घंटेतक चित्तको स्थिर रखकर बिना पलक गिराये एकाग्र दृष्टिसे देखनेका अभ्यास हो जाता है तब इष्टदेवताके दर्शन होते हैं, उनसे सम्भाषण होता है और भूत, भविष्य, वर्तमानका ज्ञान आदि अनेकविध चमत्कार देख पड़ते हैं। परन्तु इन चमत्कारोंमें न फँसकर साधक भगवत्स्वरूपकी भावनाको दृढ रखकर उसका प्रत्यक्ष होते ही उससे तन्मय हो जाय और इस तरह कृतार्थता लाभ करे।

# मन्त्रानुष्ठान

'मन्त्र' शब्दका अर्थ है गुप्त परामर्श। वह श्रीगुरुदेवकी ही कृपासे प्राप्त होता है। मन्त्र प्राप्त होनेपर भी यदि उसका अनुष्ठान न किया जाय, सविधि पुरश्चरण करके उसे सिद्ध न कर लिया जाय तो उससे उतना लाभ नहीं होता जितना होना चाहिये। श्रद्धा, भक्तिभाव और विधिके संयोगसे जब मन्त्रोंके अक्षर अन्तर्देशमें प्रवेश करके एक दिव्य आहिण्डन करने लगते हैं तो उस सङ्घर्षसे जन्म-जन्मान्तरीय पाप-तापोंके संस्कार धुल जाते हैं। जीवकी प्रसुप्त चेतनता जीवन्त, ज्वलन्त एवं जागरितरूपमें चमक उठती है। मन्त्रार्थके साक्षात्कारसे वह कृतकृत्य हो जाता है। जबतक दीर्घकालतक निरन्तर श्रद्धाभावसे मन्त्रका अनुष्ठान नहीं किया जायगा, तबतक प्रेम अथवा ज्ञानके उदयकी कोई सम्भावना ही नहीं है। इस अनुष्ठानमें कुछ नियमोंकी आवश्यकता होती है। यम और नियम ही आन्तरिक एवं बाह्य शान्तिके मूल हैं। इन्हींकी नीवपर अनुष्ठानका प्रासाद प्रतिष्ठित है। इसलिये अनुष्ठान करनेके पूर्व उन्हें जान लेना आवश्यक है। यहाँ संक्षेपमें उनका दिग्दर्शन कराया जाता है।

## मन्त्रानुष्ठानके योग्य स्थान

मन्त्रानुष्ठान स्वयं ही करना चाहिये। यह सर्वोत्तम कल्प है। यदि श्रीगुरुदेव ही कृपा करके कर दें तब तो पूछना ही क्या। यदि ये दोनों सम्भव न हों तो परोपकारी, प्रेमी, शास्त्रवेत्ता, सदाचारी ब्राह्मणके द्वारा भी कराया जा सकता है। कहीं-कहीं अपनी धर्मपत्नीसे भी अनुष्ठान करानेकी आज्ञा है; परन्तु ऐसा उसी स्थितिमें करना चाहिये, जब उसे पुत्र हो। अनुष्ठानका स्थान निम्नलिखित स्थानोंमेंसे कोई होना

महापुरुषों के दृष्टांत (स्वर्ग-नर्क सब यहीं है) (Mahapurushon Ke Drashtant) मूल्य 36.00

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

चाहिये। सिद्धपीठ, पुण्यक्षेत्र, नदीतट, गुहा, पर्वतशिखर, तीर्थ, सङ्गम, पवित्र जङ्गल, एकान्त उद्यान, बिल्ववृक्ष, पर्वतकी तराई, तुलसीकानन, गोशाला ( जिसमें बैल न हों ), देवालय, पीपल या आँवलेके नीचे, पानीमें अथवा अपने घरमें मन्त्रका अनुष्ठान शीघ्र फलप्रद होता है। सूर्य, अग्नि, गुरु, चन्द्रमा, दीपक, जल, ब्राह्मण और गौओंके सामने बैठकर जप करना उत्तम माना गया है। यह नियम सार्वत्रिक नहीं है। मुख्य बात यह है कि जहाँ बैठकर जप करनेसे चित्तकी ग्लानि मिटे और प्रसन्नता बढ़े, वही स्थान सर्वश्रेष्ठ है। घरसे दसगुना गोष्ठ, सौगुना जंगल, हजारगुना तालाब, लाखगुना नदीतट, करोड़गुना पर्वत, अरबों गुना शिवालय और अनन्तगुना गुरुका सन्निधान है। जिस स्थानपर स्थिरतासे बैठनेमें किसी प्रकारकी आशङ्का अथवा आतङ्क न हो, म्लेच्छ, दुष्ट, बाघ, साँप आदि किसी प्रकारका विघ्न न डाल सकते हों, जहाँके लोग अनुष्ठानके विरोधी न हों, जिस देशमें सदाचारी और भक्त निवास करते हों, किसी प्रकारका उपद्रव अथवा दुर्भिक्ष न हो, गुरुजनोंकी सन्निधि और चित्तकी एकाग्रता सहजभावसे ही रहती हो, वही स्थान जप करनेके लिये उत्तम माना गया है। यदि किसी साधारण गाँव अथवा घरमें अनुष्ठान करना हो तो पहले कूर्म भगवान्‌का चिन्तन करना चाहिये। जैसे कूर्म भगवान्‌की पीठपर स्थित मन्दराचलके द्वारा समुद्रमन्थन किया गया था, वैसे ही मैं कूर्माकार भूमिप्रदेशमें स्थित होकर उन्हींके आश्रयसे अमृतत्वकी प्राप्तिके लिये प्रयत्न कर रहा हूँ। ऐसी भावना करनी चाहिये।

## भोजनकी पवित्रता

मन्त्रके साधकको अपने भोजनके सम्बन्धमें पहलेसे ही विचार कर लेना चाहिये; क्योंकि भोजनके रससे ही शरीर, प्राण और मनका निर्माण होता है। जो अशुद्ध भोजन करते हैं, उनके शरीरमें रोग, प्राणोंमें क्षोभ और चित्तमें ग्लानिकी वृद्धि होती है। ग्लान चित्तमें देवता और मन्त्रके प्रसादका उदय नहीं होता। इसके विपरीत जो शुद्ध अन्नका भोजन करते हैं, उनके चित्तके मल और विक्षेप शीघ्र ही निवृत्त हो जाते हैं। अन्नका सबसे बड़ा दोष है न्यायोपार्जित न होना। जो अन्यायसे, बेईमानी, चोरी, डकैती आदि करके अपने शरीरका पालन-पोषण करते हैं, उनकी उस क्रियाके मूलमें ही अशुद्ध मनोवृत्ति रहनेके कारण वह अन्न सर्वथा दूषित रहता है और उसके द्वारा शुद्ध चित्तका निर्माण असम्भवप्राय है। जो लोग अन्याय तो नहीं करते, परन्तु संन्यासी अथवा ब्रह्मचारी न होनेपर भी विना परिश्रम किये ही दूसरोंका अन्न खाते हैं, उनमें तमोगुणकी वृद्धि होती है; वे अधिकांश आलस्य और प्रमादमें पड़े रहते हैं। उनके चित्तका मल दूर होना भी बड़ा कठिन है। अपनी कमाईके अन्नमें भी जिससे दूसरोंका चित्त दुखता है, उस अन्नसे चित्तकी शुद्धि सम्भव नहीं है। जिस गौका बछड़ा अलग छटपटा रहा है, पेटभर भोजन न मिलनेके कारण जिस गौकी आँखोंसे आँसू गिर रहे हों, उसका न्यायोपार्जित दूध भी चित्तको प्रसन्न कर सकेगा—इसमें सन्देह है। इसलिये भोजनमें सबसे पहले यह बात देखनी चाहिये कि यह वर्णाश्रमोचित परिश्रमसे प्राप्त किया हुआ है या नहीं? इसके उपयोगसे किसीका हक तो नहीं मारा गया है? इसको स्वीकार करनेसे किसीको कष्ट तो नहीं हुआ है? कहीं इसके मूलमें विषादका बीज तो नहीं है? इन बातोंको ध्यानमें रखकर ही भोजनकी व्यवस्था करनी चाहिये।

भोजनमें तीन प्रकारके दोष और माने गये हैं—जातिदोष, आश्रयदोष और निमित्तदोष। जातिदोष वह है, जो स्वभावसे ही कई पदार्थोंमें रहता है। इसके उदाहरणमें प्याज, लहसुन और सलगमको रख सकते हैं। जातिदोष न होनेपर भी स्थानके कारण बहुत-सी वस्तुएँ अपवित्र हो जाती हैं। शुद्ध दूध भी यदि शराबखानेमें रख दिया जाय तो वह अपवित्र हो जाता है। यही आश्रयदोष है। शुद्ध स्थानमें रक्खी हुई शुद्ध वस्तु भी कुत्ते आदिके स्पर्शसे अशुद्ध हो जाती है। इस प्रकारके दोषका नाम निमित्तदोष है।

साधकका भोजन अवश्य ही इन तीन दोषोंसे रहित होना चाहिये। गौके दही, दूध, घी, श्वेत तिल, मूँग, कन्द, केला, आम, नारियल, आँवला, जड़हन धान, जौ, जीरा, नारंगी आदि हविष्यान्न जो विभिन्न व्रतोंमें उपादेय माने गये हैं; तथा जिस देशमें जिनकी पवित्रता शिष्टसम्मत है उस देशमें वहाँके निवासी वही भोजन कर सकते हैं। मधु, खारी नमक, तेल, पान, गाजर, उड़द, अरहर, मसूर, कोदो, चना, बासी अन्न, रूखा अन्न और वह अन्न, जिसमें कीड़े पड़ गये हों, नहीं खाना चाहिये। काँसेके बर्तनमें भी न खाना चाहिये।

भोजनके सम्बन्धमें एक बात और भी ध्यानमें रखनी चाहिये। जितने भोजनकी आवश्यकता हो, उससे कम ही खाया जाय। भोज्य अन्न खूब पका हुआ हो, थोड़ा गरम हो,

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

हृदयदाही न हो। जिससे इन्द्रियोंको अधिक बल और उत्तेजना मिले, पेट बढ़े एवं निद्रा, आलस्य आवें, वह सर्वथा वर्जित है। भगवान् शङ्करने एक स्थानपर पार्वतीसे कहा है कि—जिनकी जिह्वा परान्नसे जल गयी है, जिनके हाथ प्रतिग्रहसे जले हुए हैं और जिनका मन परस्त्रीके चिन्तनसे जलता रहता है, उन्हें भला मन्त्रसिद्धि कैसे प्राप्त हो सकती है! जिन्हें भिक्षा लेनेका अधिकार है, उन संन्यासी आदिकोंके लिये भिक्षा परान्न नहीं है। परन्तु वैदिक, सदाचारी, पवित्र एवं कुलीन ब्राह्मणोंसे ही भिक्षा लेनी चाहिये। एक ग्रन्थमें ऐसा उल्लेख मिलता है कि सर्वोत्तम बात तो यही है कि अग्निके अतिरिक्त और कोई भी वस्तु किसीसे न ली जाय। यदि ऐसा सम्भव न हो तो तीर्थके बाहर जाकर पर्वोंको छोड़कर न्यायोपार्जित अन्नकी भिक्षा लेनी चाहिये, सो भी एक दिन खानेभर। जो रागवश इससे अधिक भिक्षा ग्रहण करता है, उसे मन्त्रसिद्धि नहीं प्राप्त हो सकती।

## कुछ आवश्यक बातें

स्त्रीसंसर्ग, उनकी चर्चा, तथा जहाँ वे रहती हों वह स्थान छोड़ देना चाहिये। ऋतुकालके अतिरिक्त अपनी स्त्रीका भी स्पर्श करना निषिद्ध है। स्त्री-साधिकाओंके लिये पुरुषोंके सम्बन्धमें भी यही बात समझनी चाहिये। कुटिलता, क्षौर, उबटन, विना भोग लगाये भोजन और विना संकल्पके कर्म नहीं करने चाहिये। केवल आँवलेसे अथवा पञ्चगव्यसे शास्त्रोक्त विधिसे स्नान करना चाहिये। स्नान, आचमन, भोजन आदि मन्त्रोच्चारणके साथ ही हों। यथाशक्ति तीनों समय, दो समय अथवा एक समय स्नान, सन्ध्या और इष्टदेवकी पूजा भी अवश्य करनी चाहिये। स्नान-तर्पण किये विना, अपवित्र हाथसे, नग्न-अवस्थामें अथवा सिरपर वस्त्र रखकर जप करना निषिद्ध है। जपके समय माला पूरी हुए विना बातचीत नहीं करनी चाहिये। आवश्यक हो तो जप समाप्त करने और प्रारम्भ करनेके पूर्व आचमन कर लेना चाहिये।

यदि जप करते समय एक शब्दका उच्चारण हो जाय तो एक बार प्रणवका उच्चारण कर लेना चाहिये। यदि वह शब्द कठोर हो तो प्राणायाम भी आवश्यक हो जाता है। यदि कहीं बहुत बात कर जाय, तो आचमन, अङ्गन्यास करके पुनः माला प्रारम्भ करनी चाहिये। छींक और अस्पृश्य स्थानोंका स्पर्श हो जानेपर भी यही विधान है। जप करते समय यदि शौच, लघुशङ्का आदिका वेग हो तो उसका निरोध नहीं करना चाहिये; क्योंकि ऐसी अवस्थामें मन्त्र और इष्टका चिन्तन तो होता नहीं, मल-मूत्रका ही चिन्तन होने लगता है। ऐसे समयका जप-पूजनादि अपवित्र होता है। मलिन वस्त्र, केश और मुखसे जप करना शास्त्रविरुद्ध है। जप करते समय इतने कर्म निषिद्ध हैं—आलस्य, जँभाई, नींद, छींक, थूकना, डरना, अपवित्र अङ्गोंका स्पर्श और क्रोध।

जपमें न बहुत जल्दी करनी चाहिये और न बहुत विलम्ब। गाकर जपना, सिर हिलाना, लिखा हुआ पढ़ना, अर्थ न जानना और बीच-बीचमें भूल जाना—ये सब मन्त्रसिद्धिके प्रतिबन्धक हैं। जपके समय यह चिन्तन रहना चाहिये कि इष्टदेवता, मन्त्र और गुरु एक ही हैं।

जबतक जप किया जाय, यही बात मनमें रहे। पहले दिन जितने जपका सङ्कल्प किया जाय, उतना ही जप प्रतिदिन होना चाहिये। उसे घटाना-बढ़ाना ठीक नहीं। मन्त्रसिद्धिके लिये बारह नियम हैं—१–भूमिशयन, २–ब्रह्मचर्य, ३–मौन, ४–गुरुसेवन, ५–त्रिकालस्नान, ६–पापकर्म-परित्याग, ७–नित्य पूजा, ८–नित्य दान, ९–देवताकी स्तुति एवं कीर्तन, १०–नैमित्तिक पूजा, ११–इष्टदेव और गुरुमें विश्वास, १२–जपनिष्ठा। जो इन नियमोंका पालन करता है, उसका मन्त्र सिद्ध ही समझना चाहिये।

स्त्री, शूद्र, पतित, व्रात्य, नास्तिक आदिके साथ सम्भाषण, उच्छिष्ट मुखसे वार्तालाप, असत्यभाषण और कुटिलभाषण छोड़ देना चाहिये। किसी भी अनुष्ठानके समय शपथ लेनेसे सब निरर्थक हो जाता है। अनुष्ठान आरम्भ कर देनेपर यदि मरणाशौच या जननाशौच पड़ जाय तो भी अनुष्ठान नहीं छोड़ना चाहिये। अपने आसन, शय्या, वस्त्र आदिको शुद्ध एवं स्वच्छ रखना चाहिये। किसीका गाना, बजाना, नाचना न सुनना चाहिये और न देखना। उबटन, इत्र, फूल-मालाका उपयोग और गरम जलसे स्नान नहीं करना चाहिये। एक वस्त्र पहनकर अथवा बहुत वस्त्र पहनकर एवं पहननेका वस्त्र ओढ़कर और ओढ़नेका वस्त्र पहनकर जप नहीं करना चाहिये। सोकर, विना आसनके, चलते या खाते समय, विना माला ढके और सिर ढककर जो जप किया जाता है, अनुष्ठानके जपमें उसकी गिनती नहीं होती। जिसके चित्तमें व्याकुलता, क्षोभ, भ्रान्ति हो, भूख लगी हो, शरीरमें पीड़ा हो, स्थान अशुद्ध एवं अन्धकाराच्छन्न हो, उसे वहाँ जप नहीं करना चाहिये। जूता पहने हुए

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

अथवा पैर फैलाकर जप करना निषिद्ध है। और भी बहुत-से नियम हैं, उन्हें जानकर यथाशक्ति उनका पालन करना चाहिये। ये सब नियम मानस जपके लिये नहीं हैं। शास्त्रकारोंने कहा है----

अशुचिर्वा शुचिर्वापि गच्छंस्तिष्ठन् स्वपन्नपि।
मन्त्रैकशरणो विद्वान् मनसैव सदाभ्यसेत्॥
न दोषो मानसे जाप्ये सर्वदेशेऽपि सर्वदा।

अर्थात् 'मन्त्रके रहस्यको जाननेवाला जो साधक एकमात्र मन्त्रकी ही शरण हो गया है, वह चाहे पवित्र हो या अपवित्र, सब समय चलते-फिरते, उठते-बैठते, सोते-जागते, मन्त्रका अभ्यास कर सकता है। मानस जपमें किसी भी समय और स्थानको दोषयुक्त नहीं समझा जाता।' कुछ मन्त्रोंके सम्बन्धमें अवश्य ही विभिन्न विधान हैं। उनके प्रसंगमें वे नियम स्पष्ट कर दिये जायँगे।

'माला और उसके संस्कार' शीर्षक लेखमें संक्षेपमें इस बातका निर्देश किया गया है कि जप किस प्रकार सुषुप्त चेतनाको जागरित करके परम तत्त्वसे एक कर देता है। यहाँ उसकी पुनरुक्ति आवश्यक नहीं है। जो लोग आधिदैविक जगत्का रहस्य जानते हैं, वे भलीभाँति इस तत्त्वसे अवगत हैं कि स्थूल जगत्की एक-एक वस्तुके पृथक्-पृथक् अधिष्ठातृ देवता होते हैं और वे जगा लिये जानेपर अनेक प्रकारकी सिद्धियाँ दे सकते हैं। केवल परमार्थ ही नहीं, इनके द्वारा स्वार्थ भी सिद्ध होता है। इन देवताओंमें अनेकों प्रकारके चमत्कारकी शक्ति रहती है और इनकी सहायतासे अर्थप्राप्ति, धर्मपालन एवं कामोपभोग पूर्णरूपसे किये जा सकते हैं। प्राचीन भारतीयोंके सम्बन्धमें जो बहुत-सी बातें सुनी जाती हैं वे किंवदन्तीमात्र नहीं हैं, पूर्ण सत्य हैं। चाहे अर्वाचीन लोग इसे न मानें, परन्तु वे ही सिद्धियाँ आज भी सम्भव हैं। इन मन्त्रोंमें ऐसी ही शक्ति है, चाहे जो इनका जप करके प्रत्यक्ष फल प्राप्त कर सकता है।

## जपकी महिमा और भेद

शास्त्रोंमें जपकी बड़ी महिमा गायी गयी है, सब यज्ञोंकी अपेक्षा जप-यज्ञको श्रेष्ठ बतलाया गया है। जप-यज्ञमें किसी भी बाह्य सामग्री अथवा हिंसा आदिकी आवश्यकता नहीं होती। पद्म एवं नारदीय पुराणमें कहा गया है कि और समस्त यज्ञ वाचिक जपकी तुलनामें सोलहवें हिस्सेके बराबर भी नहीं हैं। वाचिक जपसे सौगुना उपांशु और सहस्रगुना मानस जपका फल होता है। मानस जप वह है, जिसमें अर्थका चिन्तन करते हुए मनसे ही मन्त्रके वर्ण, स्वर और पदोंकी बार-बार आवृत्ति की जाती है। उपांशु जपमें कुछ-कुछ जीभ और होंठ चलते हैं, अपने कानोंतक ही उनकी ध्वनि सीमित रहती है, दूसरा कोई नहीं सुन सकता। वाचिक जप वाणीके द्वारा उच्चारण है। तीनों ही प्रकारके जपोंमें मनके द्वारा इष्टका चिन्तन होना चाहिये। मानसिक स्तोत्र-पाठ और जोर-जोरसे उच्चारण करके मन्त्र-जप, दोनों ही निष्फल हैं। गौतमीय तन्त्रमें कहा गया है कि केवल वर्णोंके रूपमें जो मन्त्रकी स्थिति है, वह तो उसकी जडता अथवा पशुता है। सुषुम्णाके द्वारा उच्चारित होनेपर उसमें शक्तिसञ्चार होता है। पहले ऐसी भावना करनी चाहिये कि मन्त्रका एक-एक अक्षर चिच्छक्तिसे ओतप्रोत है और परम अमृतस्वरूप चिदाकाशमें उसकी स्थिति है। ऐसी भावना करते हुए जप करनेसे पूजा, होम आदिके बिना ही मन्त्र अपनी शक्ति प्रकाशित कर देते हैं। मन्त्रजप करनेकी यही विधि है कि प्राणबुद्धिसे सुषुम्णाके मूलदेशमें स्थित जीवरूपसे मन्त्रका चिन्तन करके मन्त्रार्थ और मन्त्रचैतन्यके ज्ञानपूर्वक उनका जप किया जाय। कुलार्णवतन्त्रमें भगवान् शङ्करने कहा है कि मन एक जगह, शिव दूसरी जगह, शक्ति तीसरी जगह और प्राण चौथी जगह—ऐसी स्थितिमें मन्त्रसिद्धिकी क्या सम्भावना है। इसलिये इन सबको एकत्र चिन्तन करते हुए ही जप करना चाहिये।

## मन्त्रमें सूतक और मन्त्रसिद्धिके साधन

मन्त्रमें दो प्रकारके सूतक होते हैं—एक जात-सूतक और दूसरा मृत-सूतक। इन दोनों अशौचोंका भङ्ग किये बिना मन्त्र सिद्ध नहीं होते। इसके भङ्ग करनेकी विधि यह है कि जपके प्रारम्भमें एक सौ आठ बार अथवा असमर्थ होनेपर सात बार ओंकारसे पुटित करके अपने इष्ट मन्त्रका जप कर लेना चाहिये। मन्त्रार्थ और मन्त्रचैतन्यका उल्लेख किया जा चुका है। उनके साथ ही योनिमुद्राका अनुष्ठान करना भी आवश्यक होता है। उसके विकल्पमें भूत-लिपिका विधान होता है, उससे अनुलोम-विलोम पुटित करके मन्त्र-जप करनेसे बहुत ही शीघ्र मन्त्र सिद्ध होता है। भूत-लिपिका क्रम निम्नलिखित है—

अ इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ ह य र व ल ङ
क ख घ ग ञ च छ झ ज ण ट ठ ढ ड न त
थ ध द म प फ भ ब श ष स (इसके बाद इष्टमन्त्र; फिर)

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

स प श व भ फ प म द ध थ त न ड ढ ठ ट ण ज झ छ च ञ ग घ ख क ङ ल व र य ह औ ओ ऐ ए ऌ ऋ उ इ अ।

इस प्रकार एक महीनेतक एक हजार जप करना चाहिये। ऐसा करनेसे मन्त्र जागरित हो जाता है। तीन प्राणायाम पहले और तीन पीछे कर लेने चाहिये। प्राणायामकी साधारण विधि यह है कि चार मन्त्रसे पूरक, सोलह मन्त्रसे कुम्भक और आठ मन्त्रसे रेचक करना चाहिये। जप पूरा हो जानेपर उसको तेजःस्वरूप ध्यान करके इष्ट देवताके दाहिने हाथमें समर्पित कर देना चाहिये। यदि देवीका मन्त्र हो तो बायें हाथमें समर्पण करना चाहिये। प्रतिदिन अथवा अनुष्ठानके अन्तमें जपका दशांश हवन, हवनका दशांश तर्पण, तर्पणका दशांश अभिषेक और यथाशक्ति ब्राह्मणभोजन कराना चाहिये।

होम, तर्पण आदिमेंसे जो अंग पूरा न किया जा सके, उसके लिये और भी जप करना चाहिये। होम न कर सकनेपर ब्राह्मणोंके लिये होमकी संख्यासे चौगुना, क्षत्रियोंके लिये छगुना, वैश्योंके लिये आठगुना जप करनेका विधान है।

स्त्रियोंके लिये वैश्योंके समान ही समझना चाहिये। शूद्र यदि किसी वर्णका आश्रित हो, तब तो उसके लिये अपने आश्रयकी संख्या ही समझनी चाहिये। यदि वह स्वतन्त्र हो तो उसे होमकी संख्यासे दसगुना जप करना चाहिये। अर्थात् एक लाखका अनुष्ठान हो तो होमके लिये भी एक लाख जप करना चाहिये। 'योगिनीहृदय'में यह संख्या कुछ कम करके लिखी है। ब्राह्मणोंके लिये होम-संख्याका दुगुना, क्षत्रियोंके लिये तिगुना, वैश्योंके लिये चौगुना और शूद्रोंके लिये पाँचगुना है। अनुष्ठानके पाँच अङ्ग हैं—जप, होम, तर्पण, अभिषेक और ब्राह्मणभोजन। यदि होम, तर्पण और अभिषेक न हो सकें तो केवल ब्राह्मणोंके आशीर्वादसे भी काम चल जाता है। स्त्रियोंके लिये तो ब्राह्मणभोजनकी भी उतनी आवश्यकता नहीं है। उन्हें न्यास, ध्यान और पूजाकी भी छूट है, केवल जपमात्रसे ही उनके मन्त्र सिद्ध हो जाते हैं। अनुष्ठानमें दीक्षासम्पन्न ब्राह्मणोंको ही खिलाना चाहिये।

अनुष्ठान पूरा हो जानेपर गुरु, गुरुपुत्र, गुरुपत्नी अथवा उनके वंशजोंको दक्षिणा देनी चाहिये। वास्तवमें यह सब उनकी प्रसन्नताके लिये ही है। जबतक वे प्रसन्न न हों, तब-तक परम रहस्यमय ज्ञानकी उपलब्धि नहीं हो सकती। अपने प्रयत्न एवं विचारसे चाहे कोई कितना ही ऊपर क्यों न उठ जाय, वह पूर्णरूपसे सन्देहरहित नहीं हो सकता। इसलिये विशेष करके उपासनाके सम्बन्धमें गुरुके अतिरिक्त और कोई गति ही नहीं है। उनके विना वह रहस्य और कौन बता सकता है, जिसमें गुरु और शिष्य एक हैं। शिष्य स्वयं गुरुका अस्तित्व कभी मिटा नहीं सकता। केवल गुरु ही अपने गुरुत्वको मिटाकर शिष्यको उसके वास्तविक स्वरूपमें प्रतिष्ठित करते हैं। यह एक ऐसा रहस्य है, जिसे निगुरे नहीं जान सकते। अतः समझना चाहिये कि अनुष्ठानकी पूर्णता गुरुकी प्रसन्नतामें है। एक बार एक मन्त्र सिद्ध हो जानेपर दूसरे मन्त्रोंकी सिद्धिमें किसी प्रकारका विलम्ब नहीं होता, वे निर्विघ्न सिद्ध हो जाते हैं।

इस प्रकार विधि-निषेध आदि जानकर गुरुदेवके आश्रयमें रहते हुए, श्रद्धा-भक्तिपूर्वक मन्त्रानुष्ठान करनेसे अवश्यमेव मन्त्रसिद्धि होती है—इसमें कोई सन्देह नहीं है। शा०


## यूनानी तिब्बी गाइड (Unani Tibbi Guide)

आयुर्वेदिक तथा यूनानी चिकित्सा पद्धति से सम्बन्धित अनेक लोकप्रिय पुस्तकें श्री शुक्ल जी द्वारा लिखित पहले भी प्रकाशित हो चुकी हैं और उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा हुई है। यह पुस्तक उनकी नवीनतम भेंट है। वैद्य और हकीम इस बात को भली प्रकार जानते हैं कि किसी समय यूनानी तिब्ब का झण्डा सारे विश्व में लहरा रहा था। इसकी अचूक औषधियाँ तथा नुस्खे समस्त संसार में ख्याति अर्जित कर चुके हैं। आज के युग में ऐलोपैथिक चिकित्सा अत्यधिक महंगी होने तथा गाँवों की निर्धन जनता तक न पहुँच पाने के कारण उनका एकमात्र सहारा आयुर्वेदिक तथा यूनानी चिकित्सा पद्धति की वे जड़ी बूटियाँ ही हैं जो उनके गांव में ही प्रकृति की गोद में बिखरी मिल जाती हैं। यह पुस्तक ऐसे ही चमत्कारी यूनानी नुस्खों का संग्रह है और ग्रामीण जनता तथा वैद्यों व हकीमों के लिए एक अनुपम भेंट है। मूल्य- 36-00 डाकखर्च 5/- पृथक्।

पुस्तक का मूल्य 36/- (छत्तीस रुपये)


CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# मन्त्र-साधन

## मन्त्र और सिद्धादिशोधन

'ते यथा तत्र वर्त्तेरंस्त्वं तथा तत्र वर्त्तेथाः ।'

जैसे विवाह-सम्बन्ध निश्चित होनेके पूर्व नाड़ी, भकूट आदिका ज्यौतिष शास्त्रके अनुसार विचार किया जाता है, वैसे ही मन्त्र-दीक्षा-निर्णयके पूर्व साधक और मन्त्रके सम्बन्धका विचार भी मन्त्रशास्त्रके अनुसार किया जाता है। इसका विस्तार बहुत है, परन्तु संक्षेपमें कुछ आवश्यक चक्रोंका वर्णन कर दिया जाता है। पहले कुलाकुल चक्रका विचार होता है। पचास वर्णोंको पञ्चभूतोंके अन्तर्गत करके साधकके नामके साथ विचार किया जाता है और यदि मन्त्रका आदि अक्षर साधकके नामके आदि अक्षरवाली पंक्तिमें ही आता है तो वह मन्त्र और साधक एकदैवत हैं, ऐसा समझना चाहिये। चक्र निम्नलिखित है—

### कुलाकुल-चक्र

| वायु | अग्नि | भूमि | जल | आकाश |
|---|---|---|---|---|
| अ आ | इ ई | उ ऊ | ऋ ॠ | ऌ ॡ |
| ए | ऐ | ओ | औ | अं |
| क | ख | ग | घ | ङ |
| च | छ | ज | झ | ञ |
| ट | ठ | ड | ढ | ण |
| त | थ | द | ध | न |
| प | फ | ब | भ | म |
| य | र | ल | व | श |
| ष | क्ष | ल | स | ह |

यह चक्र पाँच कोष्ठोंमें विभक्त है। ऊपर पाँच तत्त्वोंके नाम लिखे हुए हैं। एक भूतके नीचे जो अक्षर लिखे हुए हैं, वे एकदैवत हैं। साधकके नामका आदि अक्षर और मन्त्रका आदि अक्षर यदि एक ही कोष्ठकमें पड़ते हों तो वह अपने कुलका मन्त्र है और उसे ग्रहण करना चाहिये। यदि एक कोष्ठकमें न पड़ें तो अपने मित्रके कोष्ठकका मन्त्र लिया जा सकता है। जलवर्ण भूमिवर्णका और वायुवर्ण अग्निवर्णका मित्र है। वायुवर्ण भूमिवर्णका एवं अग्निवर्ण जल और भूमिवर्णका शत्रु है। आकाशवर्ण सभी भूतोंका मित्र है। जिन मन्त्रोंके आदि अक्षर शत्रुतत्त्वके वर्णके हों, उन्हें नहीं ग्रहण करना चाहिये।

अब राशि-चक्रका विचार लिखा जाता है। उसका स्वरूप निम्नलिखित है—

### राशिचक्र

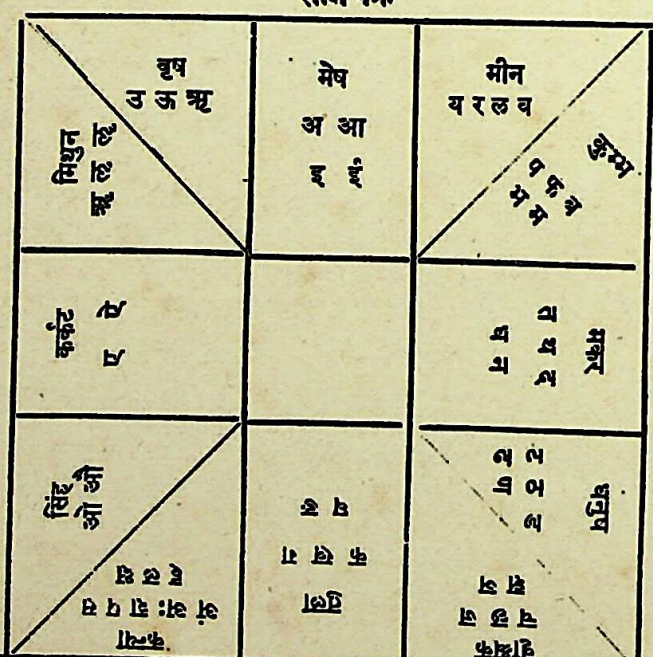


CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

राशि-चक्रमें उल्लिखित अक्षरोंके द्वारा अपनी और मन्त्रकी राशि निश्चित करनी चाहिये। फिर अपनी राशिसे मन्त्रकी राशितक गिनकर उसका फलाफल निश्चित करना चाहिये। यदि छठा, आठवाँ अथवा बारहवाँ पड़े तो मन्त्र श्रेष्ठ नहीं है। एक, पाँच और नौ मित्र हैं; दो, छः, दस हितकारी हैं; तीन, सात, ग्यारह पुष्टिकर हैं; चार, आठ, बारह घातक हैं।

इसके पश्चात् नक्षत्र-चक्रका विचार करना चाहिये। उसका स्वरूप निम्नलिखित है—

## नक्षत्र-चक्र

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अश्विनी<br>अ आ<br>देव | भरणी<br>इ<br>नर | कृत्तिका<br>ई उ ऊ<br>राक्षस | रोहिणी<br>ऋ ॠ ऌ ॡ<br>नर | मृगशिरा<br>ए<br>देव | आर्द्रा<br>ऐ<br>नर | पुनर्वसु<br>ओ औ<br>देव | पुष्य<br>क<br>देव | आश्लेषा<br>ख ग<br>राक्षस |
| मघा<br>घ ङ<br>राक्षस | पू०फाल्गुनी<br>च<br>नर | उ०फाल्गुनी<br>छ ज<br>नर | हस्ता<br>झ ञ<br>देव | चित्रा<br>ट ठ<br>राक्षस | स्वाती<br>ड<br>देव | विशाखा<br>ढ ण<br>राक्षस | अनुराधा<br>त थ द<br>देव | ज्येष्ठा<br>ध<br>राक्षस |
| मूल<br>न प फ<br>राक्षस | पूर्वाषाढ़ा<br>ब<br>नर | उत्तराषाढ़ा<br>भ<br>नर | श्रवणा<br>म<br>देव | धनिष्ठा<br>य र<br>राक्षस | शतभिषा<br>ल<br>राक्षस | पू०भाद्रपद<br>व श<br>नर | उ०भाद्रपद<br>ष स ह<br>नर | रेवती<br>ल क्ष अं अः<br>देव |

इस चक्रके अनुसार अपना और मन्त्रका गण निश्चित कीजिये। यदि आप मनुष्यगण हैं तो मनुष्यगणका मन्त्र ही आपके लिये श्रेष्ठ है। देवगणका भी उत्तम है, किन्तु राक्षसगणका घातक है। देवगणके लिये मनुष्यगणका मन्त्र मध्यम है और राक्षसगणका शत्रु है। राक्षसगणके लिये केवल राक्षसगणका मन्त्र ही उपयोगी है। इसी चक्रके अनुसार अपना और मन्त्रका नक्षत्र निश्चित करके अपने नक्षत्रसे मन्त्रका नक्षत्र गिने। क्रमशः जन्म, सम्पत्, विपत्, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वध, मित्र और परम मित्र समझना चाहिये। यदि मन्त्र इतनी संख्याके अंदर न आवे तो इनको दुबारा और तिबारा गिन लेना चाहिये।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

इसके पश्चात् अकडम-चक्रका विचार करना चाहिये। यह चक्र अ, क, ड, म, इन अक्षरोंसे प्रारम्भ होता है; इसलिये इसका वही नाम है। इसका स्वरूप निम्नलिखित है—

## अकडम-चक्र

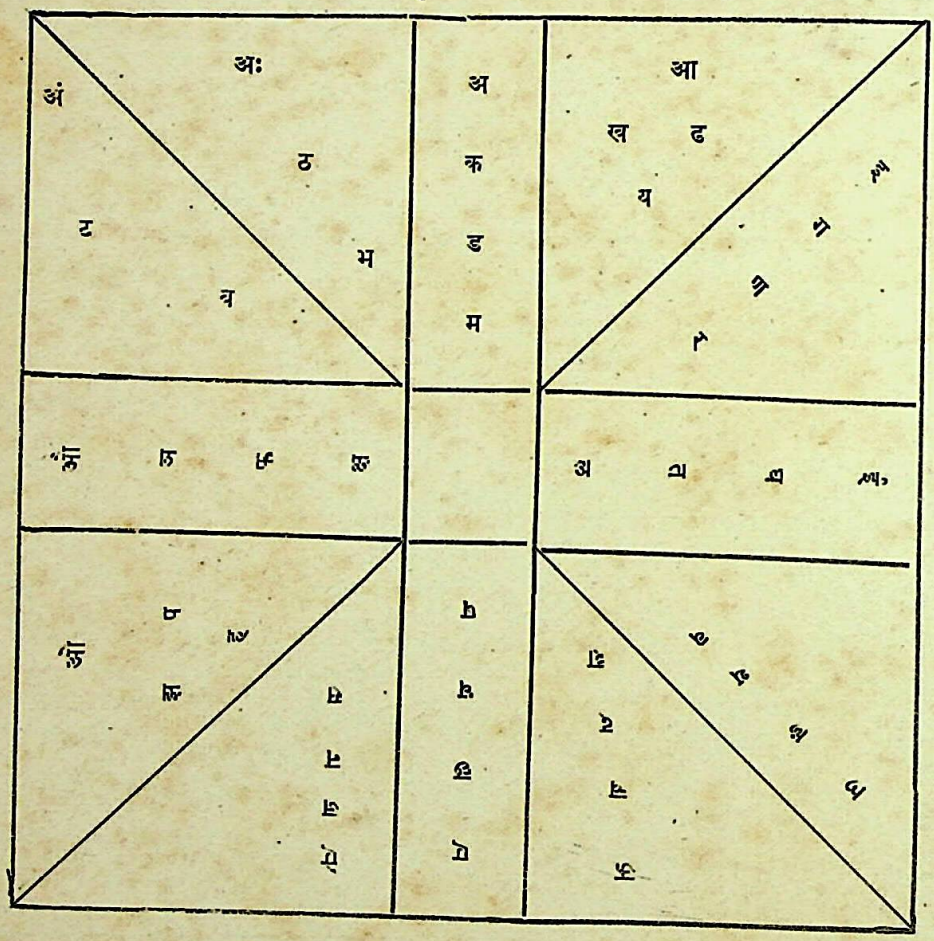


साधकके नामका पहला अक्षर जिस प्रकोष्ठमें हो, उससे गिनना प्रारम्भ कीजिये। मन्त्रका पहला अक्षर जिस प्रकोष्ठमें हो, वहाँतक गिनते चलिये। यह गणना दक्षिणावर्त होनी चाहिये। मन्त्रका पहला अक्षर पहले प्रकोष्ठमें ही हो तो सिद्ध, दूसरेमें हो तो साध्य; तीसरेमें हो तो सुसिद्ध, चौथेमें हो तो अरि—ऐसा समझना चाहिये। मान लीजिये कि साधकका नाम 'श्याम' है और 'ऐम्' मन्त्रका विचार करना है। जिस प्रकोष्ठमें 'श' है, उससे ग्यारहवें प्रकोष्ठमें 'ऐ' पड़ता है। श्यामके लिये 'ऐम्' सुसिद्ध मन्त्र है। अरि मन्त्र त्याज्य है; साध्य मन्त्र मध्यम है, सिद्ध और सुसिद्ध उत्तम हैं।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

इसी प्रकार एक अकथह-चक्र है। उसमें भी सिद्ध, साध्य आदिका ही विचार होता है। चक्र निम्नलिखित है—

### अकथह-चक्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| १<br>अ क<br>थ ह | २<br>उ<br>ङ प | ३<br>आ<br>ख द | ४<br>ऊ<br>च फ |
| ५<br>ओ<br>ड व | ६<br>ल<br>झ म | ७<br>औ<br>ढ श | ८<br>लृ<br>ञ य |
| ९<br>ई<br>घ न | १०<br>ऋ<br>ज भ | ११<br>इ<br>ग ध | १२<br>ऋ<br>छ व |
| १३<br>अः<br>त स | १४<br>ऐ<br>ठ ल | १५<br>अं<br>ण ष | १६<br>ए<br>ट र |

साधकके नामका आदि अक्षर जिस प्रकोष्ठमें हो, उससे मन्त्रके आदि अक्षरवाले प्रकोष्ठतक गिनते चलिये। पहले प्रकोष्ठमें मन्त्राक्षर हो तो सिद्ध, दूसरेमें हो तो साध्य, तीसरेमें हो तो सुसिद्ध और चौथेमें हो तो अरि। इस प्रकार जबतक मन्त्राक्षर न मिले, गिनते जाना चाहिये। इसकी गिनती क्रमशः दाहिनी ओर चलती है।

एक ऋणि-धनि-चक्र है। उससे भी ग्राह्य मन्त्रका विचार होता है। उसका स्वरूप निम्नलिखित है—

### ऋणि-धनि-चक्र

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | ६ | ६ | ० | ३ | ४ | ४ | ० | ० | ० | ३ |
| अ<br>आ | इ<br>ई | उ<br>ऊ | ऋ<br>ॠ | ऌ<br>ॡ | ए | ऐ | ओ | औ | अं | अः |
| क | ख | ग | घ | ङ | च | छ | ज | झ | ञ | ट |
| ठ | ड | ढ | ण | त | थ | द | ध | न | प | फ |
| ब | भ | म | य | र | ल | व | श | ष | स | ह |
| २ | २ | ५ | ० | ० | २ | १ | ० | ४ | ४ | १ |

रुद्रयामलमें लिखी हुई प्रक्रियासे यह चक्र अङ्कित किया गया है। ऊपर मन्त्र-वर्णोंके अङ्क हैं और नीचे साधक-वर्णोंके अङ्क हैं। मन्त्र और साधकके स्वर और वर्ण अलग-अलग करके प्रत्येकके अङ्क पृथक्-पृथक् जोड़ लेने चाहिये। दोनोंमें अलग-अलग आठका भाग देना चाहिये। शेषमें मन्त्रका अङ्क अधिक होनेपर वह ऋणी होता है और कम होनेपर धनी। ऋणी मन्त्रसे बहुत शीघ्र सिद्धि मिलती है, बराबर होनेपर भी उत्तम होता है, धनी होनेपर विलम्ब होता है और यदि शेष शून्य हो तब तो मृत्युकारक है। मान लीजिये साधकका नाम 'राम' है। इसके नाममें चार अक्षर हैं—र्, आ, म् और अ। इनके अङ्क हुए क्रमशः०, २, ५ और २। इनका योग हुआ ९। ८ का भाग देनेपर १ शेष बचा। अब इसको 'ऐम्' मन्त्रकी साधना करनी है। इसमें दो अक्षर हैं, ऐ और म्। इनके अङ्क हुए क्रमशः ४ और ६। योग हुआ १०। और ८ का भाग देनेपर बचा २। साधककी अपेक्षा मन्त्रके अङ्क अधिक हैं, इसलिये 'राम' के लिये 'ऐम्' मन्त्र ऋणी हुआ। इसलिये वह उत्तम है।

इस प्रकारके और भी कई चक्र हैं। विस्तारभयसे उनका उल्लेख नहीं किया जाता। इन सब चक्रोंके अनुसार शुभ होनेपर ही मन्त्र ग्रहण करना चाहिये। कुछ मन्त्रोंमें इसका अपवाद भी है। जैसे—

> स्वमलब्धे स्त्रिया दत्ते मालामन्त्रे च त्र्यक्षरे।
> वैदिकेषु च सर्वेषु सिद्धादीन्नैव शोधयेत्॥
> हंसस्याष्टाक्षरस्यापि तथा पञ्चाक्षरस्य च।
> एकद्वित्र्यादिबीजस्य सिद्धादीन्नैव शोधयेत्॥

'जो मन्त्र स्वप्नमें प्राप्त हुआ हो, स्त्री-गुरुने जिसकी दीक्षा दी हो, जो मन्त्र बीस अक्षरसे अधिकका हो, जिसमें तीन ही अक्षर हों और जितने भी वैदिक मन्त्र हैं, उनमें सिद्धादि-शोधनकी आवश्यकता नहीं। हंसमन्त्र, अष्टाक्षरमन्त्र, पञ्चाक्षरमन्त्र, एक, दो, तीन आदि बीजरूप मन्त्र—इनमें भी सिद्धादिशोधनकी आवश्यकता नहीं।'

समस्त ऐश्वर्य और ज्ञानके एकमात्र आश्रय परमानन्द-स्वरूप भगवान् श्रीकृष्णके मन्त्रोंमें भी सिद्धादिशोधनकी आवश्यकता नहीं है। त्रैलोक्य-सम्मोहनतन्त्रमें गोपाल-मन्त्रको लक्ष्य करके कहा गया है—

> न चात्र शात्रवा दोषा नर्णस्वादिविचारणा।
> ऋक्षराशिविचारो वा न कर्तव्यो मनौ प्रिये॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

अर्थात् 'गोपालमन्त्रमें अरि आदि दोष नहीं हैं, ऋणी-धनीका विचार भी नहीं है। इस मन्त्रमें नक्षत्र और राशिका विचार भी नहीं करना चाहिये।' बृहद्गौतमीयमें सामान्यतः समस्त श्रीकृष्ण-मन्त्रोंमें सिद्धादि-विचारकी अनावश्यकता बतलायी है।

नात्र चिन्त्योऽरिशुद्ध्यादिर्नारिमित्रादिलक्षणम्।
न वा प्रयासबाहुल्यं साधने न परिश्रमः॥
सिद्धसाध्यसुसिद्धारिरूपा नात्र विचारणा।

अर्थात् 'श्रीकृष्ण-मन्त्रमें सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध, अरि आदिका विचार नहीं करना चाहिये।'

इसी प्रकार दश महाविद्या, सिद्धविद्या आदिके सम्बन्धमें भी वचन मिलते हैं। परन्तु इस विषयमें निबन्धकारोंने ऐसा निर्णय किया है कि मन्त्रोंके विचारका प्रकरण दूसरा है और उनकी प्रशंसाका प्रकरण दूसरा है। उनके विचारका जहाँ प्रकरण है, वहाँ विचार करना चाहिये और उनकी महिमा और प्रशंसाके प्रकरणमें उनके प्रति श्रद्धाभावकी अभिवृद्धि करनी चाहिये। तात्पर्य यह कि साधारणतः इनका विचार करना ही चाहिये। जहाँ अनन्य श्रद्धाका विषय हो, वहाँ ये बातें लागू नहीं होतीं।

यह चक्रोंका विषय एक प्रकारसे तन्त्रज्यौतिषका विषय है; इसलिये इस प्रसङ्गमें यदि मन्त्रग्रहणके मास, पक्ष, तिथि आदिका निर्णय कर लिया जाय तो अनुपयुक्त न होगा। मासनिर्णयमें ऐसा समझना चाहिये कि वैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ और फाल्गुन मन्त्र-ग्रहणमें उत्तम हैं। चैत्रमें केवल गोपाल-मन्त्र लिया जा सकता है। आषाढ़में केवल श्रीविद्याका ग्रहण ही वर्जित है; और मन्त्र ले सकते हैं। मलमास सर्वथा निषिद्ध है। उपर्युक्त उत्तम मासोंमेंसे किसीके भी शुक्ल या कृष्णपक्षमें दीक्षा ले सकते हैं। शुक्लपक्ष उत्तम है। कोई-कोई कृष्णपक्षकी पञ्चमीतक ग्राह्य मानते हैं। कालोत्तर-तन्त्रके अनुसार सम्पत्ति चाहनेवालेको शुक्लपक्षमें और मोक्ष चाहनेवालेको कृष्णपक्षमें ग्रहण करना चाहिये। मन्त्रग्रहणमें द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी और पूर्णिमा ग्राह्य हैं; शेष निषिद्ध। कुछ महीनोंकी विशेष तिथियाँ भी अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं—जैसे अक्षयतृतीया, नागपञ्चमी आदि। सौर गणनासे मास और चान्द्र गणनासे तिथियोंका विचार करना चाहिये। शनि और मङ्गलको छोड़कर शेष दिन दीक्षाग्रहणमें उपयोगी हैं। नक्षत्रोंमें अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, पूर्वाफाल्गुनीसे स्वातीतक, अनुराधा, मूल, पूर्वोत्तराषाढा, शतभिषा, पूर्वोत्तरभाद्रपद, रेवती—ये नक्षत्र उत्तम हैं। शुभ, सिद्ध, आयुष्मान् आदि उत्तम योग और बव, बालव आदि उत्तम करणोंका भी विचार कर लेना चाहिये। इस प्रकार नक्षत्र, चन्द्र, तारा आदिकी शुद्धि देखकर लग्नका विचार करना चाहिये। वृष, सिंह, कन्या, धनुष् और मीन—ये लग्न उत्तम हैं। विष्णुमन्त्र लेनेमें स्थिर लग्न, शिवमन्त्र लेनेमें चर लग्न और शक्तिमन्त्र लेनेमें स्थिर-चर लग्न उत्तम कहे गये हैं। लग्ननिर्णयमें ग्रहविचारकी भी आवश्यकता होती है। लग्नसे तीसरे, छठे और ग्यारहवें स्थानमें पापग्रह तथा केन्द्र (१, ४, ७, १०) और त्रिकोण (९, ५) में शुभ ग्रह हों तो उत्तम हैं। ये सब विचार करके ही मन्त्र-ग्रहणका दिन रखना चाहिये। सूर्य और चन्द्रमाके ग्रहण आदि अवसरोंपर विशेष मुहूर्तकी अपेक्षा नहीं होती।

इन सब विचारोंमें साधककी उपादानगत विशेषता, मन्त्रकी विशेष शक्ति और ज्योतिश्चक्रका स्थूल-सूक्ष्म सृष्टि-पर प्रभाव—इन सबका सम्बन्ध आ जाता है। किस तिथिको साधकका ब्रह्माण्डके साथ कैसा सम्बन्ध रहता है और उसके अन्तःकरणके द्रव्य किस प्रकार प्रभावित रहते हैं और कैसी स्थितिमें कौन-सा मन्त्र उसके हृदयका स्पर्श करेगा, किस शक्तिके साथ उसकी एकता हो सकेगी—इन बातोंको ध्यानमें रखकर ही दीक्षाके मुहूर्तका निर्णय किया गया है।

सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् श्रीगुरुदेवकी दृष्टिसे ये बातें छिपी नहीं रहतीं। इसीसे दीक्षाके सम्बन्धमें पूर्णतः उन्हींपर निर्भर रहना चाहिये। वे जिस दिन, जिस अवस्थामें शिष्यपर कृपा कर देते हैं, चाहे जो मन्त्र दे देते हैं, विधिपूर्वक या अविधि-पूर्वक—सब ज्यों-का-त्यों शास्त्रसम्मत है। वही शुभ मुहूर्त है, जब श्रीगुरुदेवकी कृपा हो; वही शुभ मन्त्र है, जो वे दे दें। उसमें किसी प्रकारके सन्देह या विचारके लिये स्थान नहीं है। वे अनधिकारीको अधिकारी बना सकते हैं। एक-दो-की तो बात ही क्या, सारे संसारका उद्धार कर सकते हैं। तत्त्वसारमें क्या ही सुन्दर कहा है—

यः समः सर्वभूतेषु विरागो वीतमत्सरः।
कर्मणा मनसा वाचा भीते चाभयदः सदा॥
समबुद्धिपदं प्राप्तस्तत्रापि भगवन्मयः।
पञ्चकालपरश्चैव पाञ्चरात्रार्थवित्तथा॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

विष्णुतत्त्वं परिज्ञाय एकं चानेकभेदगम् ।
दीक्षयेन्मेदिनीं सर्वां किं पुनश्चोपसन्नतान् ॥

'जो समस्त प्राणियोंमें सम हैं, राग-द्वेषहीन हैं, कर्म, मन और वाणीसे आर्तत्राणपरायण हैं, जिन्हें समत्वकी प्राप्ति हो गयी है और जो भगवन्मय हो गये हैं, जो नित्यकर्मका पालन करते हैं और वैष्णवशास्त्रका रहस्य जानते हैं—वे एक ही विष्णुतत्त्वको अनेक रूपोंमें जानकर सारी पृथिवीको दीक्षित कर सकते हैं; फिर शरणमें आये हुए अधिकारियोंकी तो बात ही क्या है ।'

श्रीगुरुदेवकी ऐसी ही महिमा है । ये विधि-विधान भी उनकी लीला और उनकी प्रसन्नताके साधन ही हैं ।

## मन्त्र-चैतन्य

साधारणतः लोगोंकी ऐसी धारणा है कि शब्दोंके तीन ही प्रकार हो सकते हैं—एक तो आकाशके कारण तन्मात्राके रूपमें शब्द, दूसरा आकाशरूप शब्द और तीसरा आकाशके गुण अथवा कार्यके रूपमें शब्द । पाश्चात्य वैज्ञानिकोंने तो वायुके गुणके रूपमें ही शब्दोंको स्वीकार किया है । परन्तु ये सब दृष्टियाँ बहुत ही स्थूल हैं । आध्यात्मिक जगत्में शब्द-तत्त्वकी बड़ी ही सुन्दर विवेचना हुई है । शब्द दो प्रकारके हैं—एक तो किसी अर्थके अवगत हो जानेपर उसको व्यक्त करनेके लिये मनःप्रेरित वायुके आघातसे कण्ठ, तालु आदि विशेष स्थानोंसे उच्चारित होनेवाला शब्द और दूसरा अन्तःकरणमें अर्थको उद्भासित करनेवाला चैतन्य शब्द, जिसको वैयाकरणोंने 'स्फोट' अथवा 'शब्द-ब्रह्म' कहा है । 'स्फोट' शब्दका अर्थ ही यह है—जिससे अर्थ स्फुटित हो । अर्थका स्फुरण स्पन्दन अथवा कम्पनसे होता है और कम्पन नादसहकारी है । अतः कम्पन शब्दरूप ही है । यह चैतन्य-स्पन्दन, जिससे कि समस्त सूक्ष्म अर्थ, शब्दतन्मात्रा, आकाश, स्थूल शब्द और स्थूल सृष्टिकी अभिव्यक्ति हुई है, शब्द-ब्रह्म अथवा सगुण ब्रह्म ही है । यही मन्त्रका मूल स्वरूप है और इसी अर्थमें मन्त्र, देवता और गुरुका ऐक्य है । यही कारण है कि मन्त्रशास्त्रमें मन्त्रोंको साधारण शब्दोंकी भाँति किसी सामान्य अर्थका बोधक नहीं माना है—'जिसके समझ लेनेपर मन्त्रका काम समाप्त हो जाय—बल्कि मन्त्रको समस्त सृष्टिका मूल एवं चैतन्यस्वरूप परमात्मा ही माना है । इसलिये यह आवश्यक हो जाता है कि साधकके चित्तमें अपने मन्त्रके प्रति साधारण शब्द-भाव न रहे, ब्रह्म-भाव जाग्रत् हो जाय, मन्त्र चैतन्यके रूपमें स्फुरित होने लगे और वह उसीमें तल्लीन एवं तन्मय हो जाय ।

इस मन्त्र-चैतन्यकी प्रक्रिया अनेक प्रकारसे शास्त्रोंमें वर्णित हुई है । उन प्रक्रियाओंमेंसे कुछ यहाँ लिखी जाती हैं ।

१. जिन्हें षट्चक्रकी प्रक्रिया ज्ञात है, वे जानते हैं कि षट्चक्रोंके कमल एक प्रकारसे वर्णरूप ही हैं । ये वर्ण सृष्टिक्रमसे समस्त कमलदलोंपर आते हैं और संहारक्रमसे कुण्डलिनी शक्तिके द्वारा अपने मूलस्थानमें विलीन कर दिये जाते हैं । पुनः दिव्यरूपमें उनकी सृष्टि होती ह । इसी प्रकार अपने मन्त्रको, जो कि चिच्छक्ति अथवा कुण्डलिनी शक्तिसे ही ध्वनित हो रहा है, वर्णभावसे परे चैतन्यरूपमें स्थित अनुभव करना, षट्चक्रोंका भेदन करके सनातन शब्दरूपमें अर्थात् नाद-बिन्दुसंयुक्त चैतन्यसे एक कर देना और पुनः उन्हीं देदीप्यमान, जीवन्त, ज्वलन्त अं र जाग्रत् चैतन्य वर्णोंकी समष्टिसे निर्मित मन्त्रका साक्षात् करना—यह एक प्रकारका मन्त्र-चैतन्य है ।

२. ऐसा ध्यान करना चाहिये कि मेरे हृदयमें अनाहत चक्रपर मेरे मन्त्रके सब वर्ण स्थित हैं । मूलाधारसे जाग्रत् होकर कुण्डलिनी सुषुम्णा मार्गसे आती है । और मेरे मन्त्रको कण्ठस्थित विशुद्ध चक्रका भेदन करके सहस्रारमें ले जाती है । वहाँ सहस्रदलकमलकी कर्णिकापर नाद-बिन्दुसंयुक्त मन्त्रके सम्पूर्ण अक्षर स्थित हैं और चैतन्यरूप मन्त्र-शक्ति स्फुरित हो रही है । मन्त्रका प्रत्येक अक्षर चैतन्य-शक्तिसे ही निर्मित एवं ग्रथित है, ऐसी भावना करके मन्त्र-वर्णोंको नाभिस्थित मणिपूर चक्रमें ले आवे । और वहाँसे वे वाणीमें आते हैं, ऐसा जानकर चिद्रूपसे ही उनका जप करे । यह दूसरे प्रकारका मन्त्र-चैतन्य है ।

३. मन्त्रके पूर्व कामबीज, श्रीबीज और शक्तिबीज तथा अकारसे लेकर क्षकारपर्यन्त समस्त स्वर-वर्णोंको बोले । फिर मन्त्रका उच्चारण करके पीछे भी उन्हीं बीजों और अक्षरोंका उच्चारण करे । इस प्रकार इस मूलविद्याका १०८ बार जप करे । इस प्रयोगसे मन्त्र-चैतन्य हो जाता है । मान लीजिये मन्त्र है 'ऐं', इसको चैतन्य करना है, तो पहले पूर्वोक्त तीनों बीजोंका उच्चारण करना चाहिये—'ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं' और इसके पश्चात् कं खं गं घं ङं चं छं—इस प्रकार क्षं पर्यन्त उच्चारण करना चाहिये । इसके पश्चात् उसी 'ऐं' मन्त्र और पुनः उन्हीं बीज तथा अक्षरोंका १०८ बार जप करनेसे

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

मन्त्र-चैतन्य हो जाता है एवं जपका फल कोटि-कोटि-गुणित होता है।

४. सूर्यमण्डलमें—बहिःस्थित अथवा अन्तःस्थित द्वादशकलात्मक सूर्यमें अपने मन्त्रका चिन्तन करे और १०८ बार जप करे। सूर्यमण्डलमें अपने सनातन शिवस्वरूप गुरु एवं ब्रह्मरूपा उनकी शक्तिका भी ध्यान करे। इस प्रकार श्रीगुरुदेव, उनकी शक्ति और मन्त्रका चिन्तन करता हुआ जो साधक १०८ बार अपने मन्त्रका जप करता है, उसका मन्त्र-चैतन्य हो जाता है।

५. वरदातन्त्रमें ऐसा उल्लेख मिलता है कि यदि मन्त्रको 'ईं' से सम्पुटित करके जप किया जाय तो स्वयं ही मन्त्र-चैतन्य हो जाता है।

उपर्युक्त भावनाओं, क्रियाओं अथवा तत्त्वज्ञानसे मन्त्र-चैतन्य अवश्य ही सम्पन्न कर लेना चाहिये। विना मन्त्र-चैतन्यके मन्त्र-सिद्धि होनी बहुत ही कठिन है। इसलिये जपके पूर्व मन्त्र-चैतन्यकी क्रिया कर लेनी चाहिये।

## मन्त्रार्थ

मन्त्र साधारण शब्दमात्र नहीं है, उसकी शक्ति दिव्य है; तथापि उसका एक अर्थ तो होता ही है। वह इष्टदेवतासे अभिन्न होनेपर भी देवताके स्वरूपका बोध कराता है, इसलिये इष्टदेवका अनुग्रहविशेष ही मन्त्र है। मन्त्र जिस वस्तुका सङ्केत करता है, साधकको जहाँ ले जाना चाहता है, यदि साधकको भी उस लक्ष्यका पता हो तो यात्रामें—साधनामें और भी सुविधा हो जाती है। यही कारण है कि शास्त्रोंमें मन्त्र-जपके साथ उसके अर्थ-ज्ञानकी भी आवश्यकता बतलायी गयी है और योगदर्शनमें तो मन्त्रार्थभावनाको ही जप कहा गया है। 'मन्त्र' शब्दका धातुगत अर्थ है गुप्त परिभाषण। परन्तु साधकके लिये वह गुप्त नहीं, प्रकट होना चाहिये। श्रीगुरुदेवकी कृपासे कुछ बीज-मन्त्रोंके अर्थ यहाँ प्रकट किये जाते हैं।

**ह्रौं**—इसको प्रसादबीज कहते हैं। इसमें हकारका अर्थ है 'शिव', औकारका अर्थ है 'सदाशिव' और विन्दु दुःख-हरणके अर्थमें है। इसलिये इस बीजका अर्थ है—शिव और सदाशिवकी कृपा और प्रसादसे मेरे समस्त दुःख नष्ट हो जायँ।

**दूं**—'द' का अर्थ है दुर्गा, ऊकारका अर्थ है रक्षा और विन्दुका अर्थ है करो। इस प्रकार दुर्गा-बीज अर्थात् 'दूं' का अर्थ हुआ—'हे मा दुर्गे, मेरी रक्षा करो।'

**क्रीं**—क का अर्थ है काली, 'र'का अर्थ है ब्रह्म, ईकारका अर्थ है महामाया, नादका अर्थ है विश्वमाता और विन्दुका अर्थ है दुःखहरण। इस कालीबीज अथवा कर्पूरबीज 'क्रीं' का अर्थ है—'ब्रह्मशक्तिस्वरूपिणी महामाया कालीमाता मेरे दुःखोंका नाश करें।'

**ह्रीं**—ह=शिव; र=प्रकृति; ई=महामाया; नाद=विश्वमाता और विन्दु=दुःखहरण। इस शक्तिबीज अथवा मायाबीजका अर्थ है—शिवयुक्त विश्वमाता महामाया शक्ति मेरे दुःखोंका नाश करें।

**श्रीं**—श=महालक्ष्मी; र=धन-सम्पत्ति; ई=तुष्टि; नाद=विश्वमाता और विन्दु=दुःखहरण। इस लक्ष्मीबीज अथवा श्रीबीजका अर्थ है—धन-सम्पत्ति, तुष्टि-पुष्टिकी अधिष्ठात्री माता महालक्ष्मी मेरे दुःखोंका नाश करें।

**ऐं**—ऐ=सरस्वती और विन्दु=दुःखहरण। देवी सरस्वती मेरे दुःखोंका नाश करें। यह सरस्वतीबीज है।

**क्लीं**—क=कृष्ण अथवा काम; ल=इन्द्र; ई=तुष्टि और विन्दु=सुखकर। सर्वश्रेष्ठ मन्मथमन्मथ भगवान् श्रीकृष्ण मुझे सुख और शान्ति दें। यह कृष्णबीज अथवा कामबीज है।

**हूं**—ह=शिव; ऊ=भैरव; नाद=सर्वोत्कृष्ट और विन्दु=दुःखहरण। सर्वश्रेष्ठ असुर-भयङ्कर भगवान् शिव मेरे दुःखों-का नाश करें। इसको वर्मबीज अथवा कूर्चबीज कहते हैं।

**गं**—ग=गणेश और विन्दु=दुःखहरण। इस गणेश-बीजका यही अर्थ है कि गणेश भगवान् मेरे दुःखोंको दूर करें।

**ग्लौं**—ग=गणेश; ल=व्यापक; औ=तेज और विन्दु=दुःखहरण। परम व्यापक ज्योतिर्मय भगवान् गणेश मेरे दुःखोंका नाश करें। यह भी गणेशबीज है।

**क्ष्रौं**—क्ष=नृसिंह; र=ब्रह्म; औ=ऊर्ध्वदन्त और विन्दु=दुःखहरण। यह नृसिंहबीज है। ब्रह्मस्वरूप ऊर्ध्वदन्त भगवान् नृसिंह दुःखोंसे मेरी रक्षा करें।

**स्त्रीं**—स=दुर्गोत्तारण; त=तारक; र=मुक्ति; ई=महामाया; नाद=विश्वमाता और विन्दु=दुःखहरण। दुर्गोत्तारिणी,

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

तारिणी, मुक्तिस्वरूपा, विश्वमाता भगवती महामाया दुःखोंसे मेरी रक्षा करें। यह वधू-बीज है।

इसी प्रकार और भी अनेकों बीज हैं—जैसे आकाशका 'हं', वायुका 'यं', अग्निका 'रं', जलका अथवा अमृतका 'वं', पृथिवीका 'लं' आदि। उन्हें एकाक्षरी कोषसे देख लेना चाहिये। ऐसा कोई अक्षर नहीं है, जो मन्त्र न हो। केवल उनका ठीक-ठीक प्रयोग करनेकी विधि जाननी चाहिये।

परन्तु यह अर्थ तो साधकके लिये भावनाविशेष है। मन्त्रका वास्तविक अर्थ तो मन्त्रप्रतिपादित देवताका साक्षात्कार होनेपर ही मालूम होता है। इसीसे सरस्वतीतन्त्रमें मन्त्रार्थका ज्ञान और साक्षात्कार प्राप्त करनेकी एक विधि बतलायी गयी है:। उसमें कहा गया है कि मूलाधारचक्रमें शुद्ध स्फटिकके समान स्वच्छ इष्टदेवता और मन्त्ररूप इष्टविद्याका चिन्तन करना चाहिये। आधे मुहूर्ततक ध्यान करके फिर नाभिचक्रमें इष्टदेवता और इष्टमन्त्रका चिन्तन करना चाहिये। वहाँ उनका वर्ण रक्त होगा। फिर हृदयमें मरकत मणिके समान दोनोंका ध्यान होगा और विशुद्धादि चक्रोंके क्रमसे सहस्रारमें जाकर ब्रह्मस्वरूपमें दोनों एक हो जायँगे, इस स्थितिका अनुभव किया जायगा। इस प्रकार ध्यान करते-करते जब साधक इतना तन्मय हो जायगा कि वह स्वयं मन्त्रदेवतात्मक ब्रह्मसे पृथक् नहीं रह जायगा, तब कहीं इस स्थितिके फलस्वरूप मन्त्रका वास्तविक अर्थ अर्थात् लक्ष्यार्थ प्रकट होगा। वास्तवमें वही मन्त्रार्थ है। परन्तु एकाएक वह बुद्धिगम्य नहीं हो सकता, इसलिये उस तत्त्वतक पहुँचनेकी दृष्टिसे इस प्रकारके अर्थ कहे जाते हैं। भगवान् शंकरके वचन हैं—

ध्यानेन परमेशानि यद्रूपं समुपस्थितम्।
तदेव परमेशानि मन्त्रार्थं विद्धि पार्वति॥

'सहस्रारमें पहुँचकर ब्रह्मस्वरूपका ध्यान करते-करते जो स्वरूप स्वयं प्रकट होता है, वही मन्त्रका अर्थ है। उसी मन्त्रार्थको प्राप्त करनेकी चेष्टा करनी चाहिये।'

## मन्त्रोंकी कुल्लुका

सरस्वती-तन्त्रमें कहा गया है कि मन्त्रोंके जपके पूर्व उसकी कुल्लुकाका ज्ञान भी आवश्यक है। जप प्रारम्भ करनेके समय जिस मन्त्रका जप करना हो, उसकी कुल्लुका सिरपर स्थापित कर लेनी चाहिये अर्थात् मूर्द्धामें उसका न्यास कर लेना चाहिये। कुछ मन्त्रोंकी कुल्लुका यहाँ लिख दी जाती है—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तारा | मन्त्रकी | कुल्लुका— | ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं। |
| काली | ,, | ,, | ,, क्रीं हूं स्त्रीं ह्रीं फट्। |
| छिन्नमस्ता | ,, | ,, | ,, श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं ह्रीं ह्रीं स्वाहा। |
| वज्रवैरोचनी | ,, | ,, | ,, श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं ह्रीं ह्रीं स्वाहा हूं। |
| भैरवी | ,, | ,, | ,, ह स रैं। |
| त्रिपुरसुन्दरी | ,, | ,, | ,, ऐं क्लीं ह्रीं त्रिपुरे भगवति स्वाहा अथवा क्लीं। |
| मञ्जुघोषा | ,, | ,, | ॐ अ र व च ल धीं। |
| भुवनेश्वरी | ,, | ,, | ,, ह्रीं। |
| विष्णु | ,, | ,, | ,, नमो नारायणाय। |
| मातङ्गी | ,, | ,, | ,, ॐ। |
| धूमावती | ,, | ,, | ,, ह्रीं। |
| षोडशी | ,, | ,, | ,, स्त्रीं। |
| लक्ष्मी | ,, | ,, | ,, श्रीं। |
| सरस्वती | ,, | ,, | ,, ऐं। |
| अन्नपूर्णा | ,, | ,, | ,, क्लीं। |
| शिव | ,, | ,, | ,, हौं। |

दूसरे देवताओंके अपने-अपने मन्त्र ही कुल्लुका हैं।

## मन्त्रसेतु

प्रधानतः मन्त्रोंका सेतु प्रणव ही है। ब्राह्मण और क्षत्रियोंके लिये प्रणव, वैश्योंके लिये फट् और शूद्रोंके लिये ह्रीं सेतु है। जप प्रारम्भ करनेके पूर्व हृदयमें इसका जप कर लेना चाहिये।

## महासेतु

जपके पहले महासेतुका जप किया जाता है। इसके जपसे सभी समय और सभी अवस्थाओंमें जप करनेका अधिकार प्राप्त हो जाता है। त्रिपुरसुन्दरीका महासेतु 'ह्रीं', कालिकाका 'क्रीं' तथा ताराका 'हूं' है। अन्य सब देवताओंका महासेतु 'स्त्रीं' है। इसका जप कण्ठदेशस्थित विशुद्धचक्रमें करना चाहिये।

## निर्वाण

पहले प्रणव और उसके पश्चात् 'अ' इत्यादि समस्त स्वर-वर्णोंका उच्चारण करके अपना मन्त्र पढ़े। तत्पश्चात् 'ऐं' तथा समस्त स्वर-वर्णोंका और अन्तमें प्रणवका जप करे। इस

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

प्रकार सम्पुट करके मणिपूरकचक्रमें जप करना चाहिये। इसका नाम निर्वाण है।

## मुखशोधन

मन्त्रशास्त्र जाननेवालोंका कहना है कि मन्त्र-जपके पूर्व मुखशोधन अवश्य कर लेना चाहिये। क्योंकि अशुद्ध जिह्वासे जप करनेसे सिद्धिके बदले हानि होती है। जिह्वापर अनेकों प्रकारके मल निवास करते हैं—भोजनका मल, झूठ बोलनेका मल और कलहका मल। इनके शोधनके बिना जिह्वा मन्त्रोच्चारणके योग्य नहीं होती। इसलिये शास्त्रोंमें जिह्वाशोधनकी विधि बतलायी है। जिस देवताका मन्त्र जपना हो, उसके अनुसार मुखशोधन-मन्त्रका पहले दस बार जप कर लेना चाहिये। मन्त्र निम्नलिखित हैं—

त्रिपुरसुन्दरी = श्रीं ॐ श्रीं-ॐ श्रीं ॐ।
श्यामा = क्रीं क्रीं क्रीं ॐ ॐ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं।
तारा = ह्रीं हूं ह्रीं।
दुर्गा = ऐं ऐं ऐं।
बगलामुखी = ऐं ह्रीं ऐं।
मातङ्गी = ॐ ऐं ॐ।
लक्ष्मी = श्रीं।
धूमावती = ॐ।
धनदा = ॐ धूं ॐ।
गणेश = ॐ गं।
विष्णु = ॐ हं।

अन्य देवताओंका केवल ॐकार ही मुखशोधनका मन्त्र है। मन्त्र-जपके पहले दस बार इसका जप कर लेना चाहिये।

## प्राणयोग

जैसे प्राणयुक्त शरीर ही सचेष्ट होता है, वैसे ही प्राणयुक्त मन्त्र ही सिद्ध होता है। इसकी विधि केवल इतनी ही है कि माया-बीज अर्थात् 'ह्रीं' से पुटित करके अपने मन्त्रका सात बार जप कर लेना चाहिये।

## दीपनी

जैसे दीपकसे घरका अन्धकार दूर होकर उसकी सारी चीजें दीखने लगती हैं, वैसे ही दीपनी क्रियासे मन्त्र प्रकाशमें आ जाता है। यह दीपनी क्रिया केवल इतनी ही है कि मन्त्र-जप प्रारम्भ करनेके पहले मन्त्रको प्रणवसे पुटित करके सात बार जप लेना चाहिये।

## मन्त्रके आठ दोष

हरितत्त्वदीधितिमें मन्त्रके आठ दोष गिनाये गये हैं। वे क्रमशः ये हैं—अभक्ति, अक्षरभ्रान्ति, लुप्त, छिन्न, ह्रस्व, दीर्घ, कथन और स्वप्नकथन।

१—मन्त्रको अक्षर और वर्णोंकी समष्टिमात्र समझना अभक्ति है। जैसा कि सिद्धान्तदृष्टिसे है—मन्त्र देवतास्वरूप है, ऐसा अनुभव करके एक-एक मन्त्रके उच्चारणमें परमानन्दका अनुभव करते हुए जो जप करते हैं, उन्हें बहुत ही शीघ्र सिद्धि मिलती है। परन्तु जो मन्त्रको केवल अक्षर-वर्णमात्र समझते हैं अथवा दूसरे मन्त्रको अपने मन्त्रसे श्रेष्ठ समझकर अपने मन्त्रको हीन समझते हैं, उन्हें सिद्धि तो मिलती ही नहीं, विपरीत फल भी मिलता है। इस अभक्तिको दूर करनेके लिये उस मन्त्रका बहुत-बहुत जप करना चाहिये। जप, हवन और तपस्यासे जब मन्त्रकी अधिष्ठात्री देवता प्रसन्न होती है, तब उसमें भक्तिका उदय होता है और भक्तिका उदय होनेपर सिद्धिलाभमें विलम्ब नहीं होता।

२—गुरु अथवा शिष्यके भ्रम-प्रमादसे मन्त्रके अक्षरोंमें उलट-फेर हो जाना अथवा एक-आध अक्षर बढ़ जाना—यह अक्षरभ्रान्ति है। ऐसा हो जानेपर गुरुसे, उनकी अनुपस्थितिमें उनके पुत्रसे अथवा और किसी साधकसे पुनः मन्त्र ग्रहण करना चाहिये।

३—मन्त्रमें किसी वर्णकी न्यूनता 'लुप्त' दोष है। इसके लिये भी पुनः मन्त्रग्रहणकी आवश्यकता है।

४—'छिन्न' दोष उसको कहते हैं जिसमें संयुक्त वर्णोंमेंसे कोई अंश छूट जाता है। यह दोष भी उपर्युक्त पद्धतिसे ही दूर होता है।

५—दीर्घ वर्णके स्थानमें ह्रस्व वर्णका उच्चारण ह्रस्व नामक दोष है।

६—ह्रस्व वर्णके स्थानपर दीर्घ वर्णका उच्चारण करना दीर्घ नामक दोष है।

७—जाग्रत् अवस्थामें अपना मन्त्र किसीको कह देना कथन नामका दोष है।

८—स्वप्नमें अपना मन्त्र किसीको बतला देना स्वप्नकथन नामका दोष है।

५ और ६ दोषका निराकरण तो पूर्वोक्त पद्धतिसे ही होता है, परन्तु ७ और ८ दोष श्रीगुरुदेवके चरणोंमें निवेदन

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

करनेपर वे जिस प्रायश्चित्तकी व्यवस्था करें, उसके अनुष्ठानसे होता है। इन आठ प्रकारके दोषोंसे बचकर ही मन्त्रजप करना चाहिये, तभी सिद्धि होती है।

## मन्त्रसिद्धिके उपाय

श्रद्धा और विधिके साथ मन्त्रानुष्ठान करनेपर भी यदि सिद्धि-लाभ न हो तो पुनः-पुनः उसका अनुष्ठान करना चाहिये। तीन बारके अनुष्ठानसे भी यदि मन्त्र सिद्ध न हो तो निम्नलिखित सात उपाय करने चाहिये। एक साथ ही इन सबको करनेकी आवश्यकता नहीं। एक करनेपर मन्त्र सिद्ध न हो, तब दूसरा करना चाहिये। इनके द्वारा अवश्य ही मन्त्रसिद्धि प्राप्त होती है। वे उपाय निम्नलिखित हैं—१. भ्रामण, २. रोधन, ३. वश्य, ४. पीडन, ५. पोषण, ६. शोषण और ७. दाहन।

१. भ्रामण उसको कहते हैं जिसमें वायु-बीज 'यं' द्वारा मन्त्रको ग्रथित किया जाता है। यन्त्रपर एक वायुबीज और एक मन्त्राक्षर, इस क्रमसे मन्त्रके सम्पूर्ण अक्षरोंको सम्पुटित करना चाहिये। तत्पश्चात् शिलारस, कर्पूर, कुङ्कुम, खस और चन्दनको मिलाकर उसीसे यन्त्रपर पूरा मन्त्र लिखे। लिखित मन्त्रको दूध, घी, मधु और जलमें छोड़कर पूजा, जप और होम करे। ऐसा करके अनुष्ठान करनेसे मन्त्र शीघ्र ही सिद्ध हो जाता है।

२. वाग्-बीज 'ऐं' के द्वारा मन्त्रको पुटित करके यथा-साध्य जप करनेसे रोधन-क्रिया सम्पन्न होती है।

३. अलक्तक, रक्तचन्दन, कुट, धतूरेका बीज और मैनसिल—इन सबको एकमें मिलाकर इसीसे भोजपत्रपर अपना मन्त्र लिखे और उसे गलेमें धारण करे। इसी क्रिया-का नाम वश्य अथवा वशीकरण है।

४. अधरोत्तर-योगसे मन्त्रका जप करते हुए अधरोत्तर-स्वरूपिणी देवताकी पूजा करे। इसके पश्चात् अकवनके दूधसे मन्त्र लिखकर पैरसे दबाकर हवन करे। इसका नाम पीडन-क्रिया है।

५. मन्त्रके आदि और अन्तमें 'श्रीं' जोड़कर जप करे और गायके दूधसे मन्त्र लिखकर हाथमें पहने। इस क्रियाका नाम पोषण है।

६. वायुबीज 'यं' द्वारा मन्त्रको पुटित करके जप करे और यज्ञिय भस्मसे भोजपत्रपर लिखकर गलेमें धारण करे। इस क्रियाका नाम शोषण है।

७. मन्त्रके प्रत्येक स्वर-वर्णके साथ अग्निबीज 'रं' जोड़-कर जप करे और पलास बीजके तेलसे मन्त्र लिखकर कंधेपर धारण करे। इस प्रक्रियाका नाम दाहन है।

ये सातों प्रयोग एक साथ करनेके लिये नहीं हैं। एकसे मन्त्र सिद्ध न हो तो दूसरा करना चाहिये। इनके अनुष्ठानसे अवश्य ही मन्त्र सिद्ध हो जाता है। शा०


## ज्योतिष की पुस्तकें वी.पी.पी. द्वारा मंगाइए!

(डाक खर्च ग्राहक को देना होगा)

● **ज्योतिष विज्ञान**—जन्म-जन्मान्तर का हाल बताना, जन्म-कुण्डली बनाना, गुप्त प्रश्नों का ठीक-ठीक उत्तर देना, मृत्यु व जन्म बताना, वर्षफल, तेजी-मन्दी, मुहूर्त-शकुन, ग्रहों का स्पष्टीकरण, गणित व फलित के गूढ़ रहस्य। (ले०—पं० विशुद्धानन्द) मूल्य 24/-

● **व्यापार चमत्कार**—धन खोकर व्यापार में सफलता प्राप्त करने वाले व एक ही चांस में वारे-न्यारे देखने वाले व्यापारी इस पुस्तक को अवश्य मंगायें। तेजी-मन्दी के अद्वितीय चांस, ग्रह तथा नक्षत्र आदि का पूरा-पूरा विवरण। (ले०—पं० रतीराम) मू० 24/-

● **रमल ज्योतिष शास्त्र**—रमल के पासों द्वारा जीवन का भूत, भविष्य तथा वर्तमान (तीनों कालों का) हाल जानने के लिए इस ग्रन्थ को मंगाकर पढ़ें। (ले०—राजेश दीक्षित) मू० 24/- रुपये। रमल के पासों वास्ते 51 रु० M.O. द्वारा भेजें।


CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# मन्त्रोंके दस संस्कार

कोई भी मन्त्र छिन्न, रुद्ध, शक्तिहीन, पराङ्मुख आदि पचास दोषोंसे बच नहीं सकता। सप्तकोटि मन्त्र हैं, सभी इन दोषोंमें किसी-न-किसी दोषसे दुष्ट पाये जाते हैं। इन दोषोंकी निवृत्तिके लिये मन्त्रके निम्नलिखित दस संस्कार करने चाहिये।

दोषानिमानविज्ञाय यो मन्त्रान् भजते जडः।
सिद्धिर्न जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि॥

जनन, दीपन, बोधन, ताडन, अभिषेक, विमलीकरण, जीवन, तर्पण, गोपन और आप्यायन—ये दस संस्कार हैं।

१. भोजपत्रपर गोरोचन, कुङ्कुम, चन्दनादिसे आत्माभिमुख त्रिकोण लिखे, फिर तीनों कोणोंमें छः-छः समान रेखा खींचे। ऐसा करनेपर ४९ त्रिकोण कोष्ठ बनेंगे, उनमें ईशानकोणसे मातृकावर्ण लिखकर देवताका आवाहन-पूजन करके मन्त्रका एक-एक वर्ण उद्धार करके अलग पत्रपर लिखे। ऐसा करनेपर 'जनन' नामका प्रथम संस्कार होगा।


स्व-मूत्र चिकित्सा विज्ञान—प्रत्येक स्त्री-पुरुष का मूत्र विधि पूर्वक सेवन किये जाने पर स्वयं के शारीरिक रोगों को जड़ से उखाड़ फेंकने की सामर्थ्य रखता है। भारत की इस प्राचीन रामबाण चिकित्सा को अपना कर अमेरिका तथा इंगलैंड के वैज्ञानिकों ने अनेक प्रयोग व परीक्षणों द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि यदि उचित विधि द्वारा स्वमूत्र का सेवन किया जाय तो शारीरिक विकारों को दूर करने में अमृत जैसा सिद्ध हो सकता है। आज ही इस चमत्कारी पुस्तक को मंगाकर पढ़ें। ले. राजेश दीक्षित

12/- (बारह रुपये)


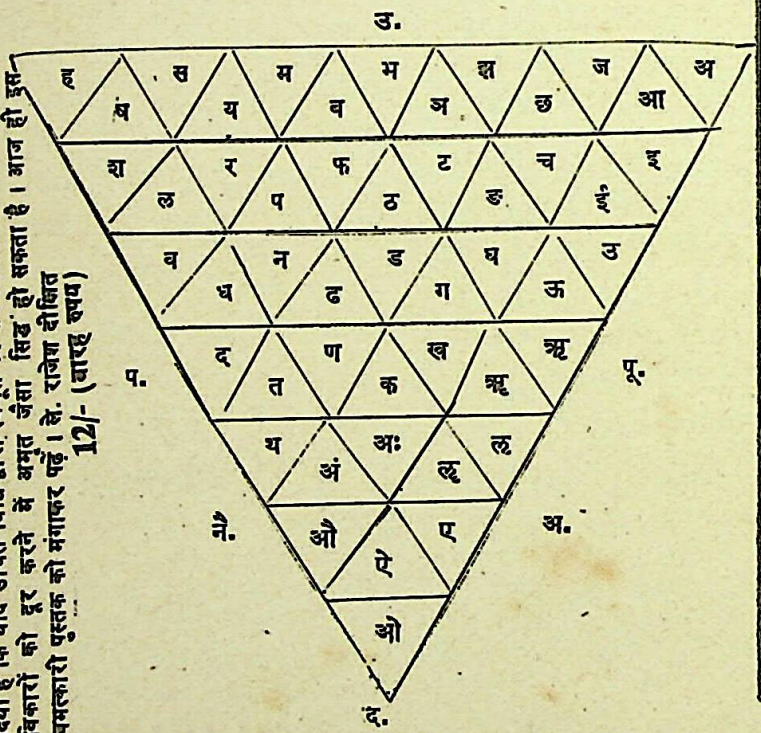


मन्त्रोद्धारके अनन्तरं यन्त्रको धोकर शुद्ध जलमें डाल दे।


सदा नीरोग रहिए!

नाड़ी ज्ञान तरंगिणी—सफल चिकित्सक वही हो सकता है, जिसको नाड़ी देखने का ज्ञान व अनुभव हो। नाड़ी की गति देखकर होने वाले रोग, निदान व चिकित्सा आसानी से की जा सकती है। प्राचीनकाल में भारतीय वैद्यों को नाड़िया वैद्य का पद प्राप्त था। सुखेन वैद्य ने लक्ष्मणजी की नाड़ी देखकर उन्हें सुखोदय से पुनः जीवित कर दिखाया। ले. ऋषि कुमार भू०12-00

देहाती पुस्तक भंडार (Regd.)

चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहतुला, दिल्ली-110 006 फोन 261030


CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

२. हंसमन्त्रका सम्पुट करनेसे एक हजार जपद्वारा मन्त्रका दूसरा 'दीपन'-संस्कार होता है। यथा—हंसः रामाय नमः सोऽहम्।

३. हूँ-बीज-सम्पुटित मन्त्रका पाँच हजार जप करनेसे 'बोधन' नामक तीसरा संस्कार होता है। यथा—हूँ रामाय नमः हूँ।

४. फट्-सम्पुटित मन्त्रका एक हजार जप करनेसे 'ताड़न' नामक चतुर्थ संस्कार होता है। यथा—फट् रामाय नमः फट्।

५. भूर्जपत्रपर मन्त्र लिखकर 'रों हंसः ओं' इस मन्त्रसे अभिमन्त्रित करे और एक हजार बार जपे हुए जलसे अश्वत्थपत्रादिद्वारा मन्त्रका अभिषेक करे। ऐसा करनेपर 'अभिषेक' नामक पाँचवाँ संस्कार होता है।

६. 'ओं त्रों वषट्' इन वर्णोंसे सम्पुटित मन्त्रका एक हजार जप करनेसे 'विमलीकरण' नामक छठा संस्कार होता है। यथा—ओं त्रों वषट् रामाय नमः वषट् त्रों ओं।

७. स्वधा-वषट्-सम्पुटित मूलमन्त्रका एक हजार जप करनेसे 'जीवन' नामक सातवाँ संस्कार होता है। यथा—स्वधा वषट् रामाय नमः वषट् स्वधा।

८. दुग्ध, जल, घृतसे मूलमन्त्रसे सौ बार तर्पण करना ही 'तर्पण' संस्कार है।

९. ह्रीं-बीज-सम्पुटित एक हजार जप करनेसे 'गोपन' नामक नवम संस्कार होता है। यथा—ह्रीं रामाय नमः ह्रीं।

१०. ह्रौं-बीज-सम्पुटित एक हजार जप करनेसे 'आप्यायन' नामक दसवाँ संस्कार होता है। यथा—ह्रौं रामाय नमः ह्रौं १०००।

इस प्रकार संस्कृत किया हुआ मन्त्र शीघ्र सिद्धिप्रद होता है।

प्रसङ्गवशात् दीपस्थान (कूर्मचक्र) का भी निर्णय लिखते हैं। ऐसा कहा गया है—

'दीपस्थानं समाश्रित्य कृतं कर्म फलप्रदम्।'

जिस स्थानमें, क्षेत्रमें, नगरमें वा गृहमें पुरश्चरण करना हो उसके नौ समान भाग कल्पना करके मध्यभागमें स्वर लिखे और पूर्वादि क्रमसे कवर्गादि लिखे; ईशानकोणमें ल, क्ष लिखे, यथा—

कूर्मचक्र

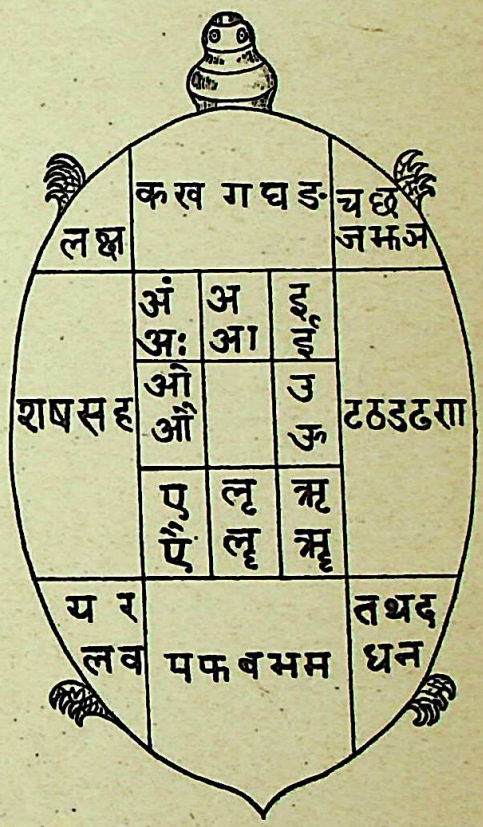


जिस कोष्ठमें क्षेत्रका पहला अक्षर हो, उस कोष्ठको मुख समझना चाहिये। उसके दोनों ओरके दो कोष्ठ भुजा, फिर दोनों ओरके दो कोष्ठ कुक्षि, फिर दोनों ओरके दो कोष्ठ पैर, शेष कोष्ठ पुच्छ समझने चाहिये। मुखस्थानमें जप करनेसे सिद्धि प्राप्त होती है, भुजामें स्वल्पजीवन, कुक्षिमें उदासीनता, पैरोंमें दुःख और पुच्छमें वध-बन्धनादि पीड़ा होती है। ●

देहाती पुस्तक भंडार (Regd.)
चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110 006 फोन 261030

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# माला और उसके संस्कार

साधकोंके लिये माला बड़े महत्त्वकी वस्तु है। माला भगवान्‌के स्मरण और नामजपमें बड़ी ही सहायक होती है, इसलिये साधक उसे अपने प्राणोंके समान प्रिय समझते हैं और उसे गुप्त धनकी भाँति सुरक्षित रखते हैं। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि जपकी संख्या अवश्य होनी चाहिये। इससे उतनी संख्या पूर्ण करनेके लिये सब समय प्रेरणा प्राप्त होती रहती है एवं उत्साह तथा लगनमें किसी प्रकारकी कमी नहीं आने पाती। जो लोग बिना संख्याके जप करते हैं, उन्हें इस बातका अनुभव होगा कि जब कभी जप करते-करते मन अन्यत्र चला जाता है, तब मालूम ही नहीं होता कि जप हो रहा था या नहीं या कितने समयतक जप बंद रहा। यह प्रमाद हाथमें माला रहनेपर या संख्यासे जप करनेपर नहीं होता। यदि कभी कहीं मन चला भी जाता है तो मालाका चलना बंद हो जाता है, संख्या आगे नहीं बढ़ती, और यदि माला चलती रही तो जीभ भी अवश्य ही चलती रहेगी और ये दोनों कुछ ही समयमें मनको खींच लानेमें समर्थ हो सकेंगी। जो लोग यह कहते हैं कि मैं जप तो करता हूँ पर मेरा मन कहीं अन्यत्र रहता है, उन्हें यह विश्वास रखना चाहिये कि यदि जीभ और माला दोनों घूमती रहीं—क्योंकि बिना कुछ-न-कुछ मन रहे ये घूम नहीं सकतीं तो बाहर घूमनेवाला मन कहीं भी आश्रय न पाकर अपने उसी स्थिर अंशके पास लौट आवेगा, जो मूर्च्छितरूपसे मालाकी गतिमें कारण हो रहा है। मालाके फिरनेमें जो श्रद्धा और विश्वासकी शक्ति काम कर रही है, वह एक दिन व्यक्त हो जायगी और सम्पूर्ण मनको आत्मसात् कर लेगी।

मालाके द्वारा जब इतना काम हो सकता है, तब आदर-पूर्वक उसका विचार न करके यों ही साधारण-सी वस्तु समझ लेना भूल नहीं तो और क्या है? उसे केवल गिननेकी एक तरकीब समझकर अशुद्ध अवस्थामें भी पास रखना, बायें हाथसे गिन लेना, लोगोंको दिखाते फिरना, पैरतक लटकाये रहना, जहाँ कहीं रख देना, जिस किसी चीज़से बना लेना तथा चाहे जिस प्रकार गूँथ लेना सर्वथा वर्जित है। ऐसी बातें समझदारी और श्रद्धाकी कमीसे ही होती हैं, विशेषकर उन लोगोंसे, जिन्होंने किसी गुरुसे विधिपूर्वक दीक्षा न लेकर मालाके विधि-विधानपर विचार ही नहीं किया है। शास्त्रोंमें मालाके सम्बन्धमें बहुत विचार किया गया है। यहाँ संक्षेपसे उसका कुछ थोड़ा-सा दिग्दर्शन कराया जाता है।

माला प्रायः तीन प्रकारकी होती है—करमाला, वर्णमाला और मणिमाला। अँगुलियोंपर जो जप किया जाता है, वह करमालाका जप है। यह दो प्रकारसे होता है—एक तो अँगुलियोंसे ही गिनना और दूसरा अँगुलियोंके पर्वोंपर गिनना। शास्त्रतः दूसरा प्रकार ही स्वीकृत है। इसका नियम यह है कि अनामिकाके मध्यभागसे नीचेकी ओर चले, फिर कनिष्ठाके मूलसे अग्रभागतक; और फिर अनामिका और मध्यमाके अग्रभागपर होकर तर्जनीके मूलतक जाय। इस क्रमसे अनामिकाके दो, कनिष्ठाके तीन, पुनः अनामिका-का एक, मध्यमाका एक और तर्जनीके तीन पर्व—कुल दस संख्या होती है। मध्यमाके दो पर्व सुमेरुके रूपमें छूट जाते हैं। साधारणतः करमालाका यही क्रम है, परन्तु अनुष्ठानभेदसे इसमें अन्तर भी पड़ता है। जैसे शक्तिके अनुष्ठानमें अनामिकाके दो पर्व, कनिष्ठाके तीन, पुनः अनामिकाका अग्रभाग एक, मध्यमाके तीन पर्व और तर्जनीका एक मूलपर्व—इस प्रकार दस संख्या पूरी होती है। श्रीविद्यामें इससे भिन्न नियम है। मध्यमाका मूल एक, अनामिकाका मूल एक, कनिष्ठाके तीन, अनामिका और मध्यमाके अग्रभाग एक-एक और तर्जनीके तीन—इस प्रकार दस संख्या पूरी होती है। करमालासे जप करते समय अँगुलियाँ अलग-अलग नहीं होनी चाहिये। थोड़ी-सी हथेली मुड़ी रहनी चाहिये। मेरुका उल्लङ्घन और पर्वोंकी सन्धि (गाँठ) का स्पर्श निषिद्ध है। यह निश्चित है कि जो इतनी सावधानी रखकर जप करेगा, उसका मन अधिकांश अन्यत्र नहीं जायगा। हाथको हृदयके सामने लाकर, अँगुलियोंको कुछ टेढ़ी करके वस्त्रसे उसे ढककर दाहिने हाथसे ही जप करना चाहिये। जप अधिक संख्यामें करना हो तो इन दशकोंको स्मरण नहीं रक्खा जा सकता। इसलिये उसको स्मरण करनेके लिये एक प्रकारकी गोली बनानी चाहिये। लाक्षा, रक्तचन्दन, सिन्दूर और गौके सूखे कंडेको चूर्ण करके सबके मिश्रणसे वह गोली तैयार करनी चाहिये। अक्षत, अँगुली, अन्न, पुष्प, चन्दन अथवा मिट्टीसे उन दशकोंका स्मरण रखना निषिद्ध है। मालाकी गिनती भी इनके द्वारा नहीं करनी चाहिये।

वर्णमालाका अर्थ है—अक्षरोंके द्वारा संख्या करना। यह प्रायः अन्तर्जपमें काममें आती है, परन्तु बहिर्जपमें

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

भी इसका निषेध नहीं है। वर्णमालाके द्वारा जप करनेका प्रकार यह है कि पहले वर्णमालाका एक अक्षर विन्दु लगाकर उच्चारण कीजिये और फिर मन्त्रका—इस क्रमसे अवर्गके सोलह, कवर्गसे पवर्गतकके पचीस और यवर्गके हकारतक आठ और पुनः एक लकार—इस प्रकार पचास-तक गिनते जाइये; फिर लकारसे लौटकर अकारतक आ जाइये—सौकी संख्या पूरी हो जायगी। क्षको सुमेरु मानते हैं। उसका उल्लङ्घन नहीं होना चाहिये। संस्कृतमें त्र और ज्ञ स्वतन्त्र अक्षर नहीं, संयुक्ताक्षर माने जाते हैं। इसलिये उनकी गणना नहीं होती। वर्ग भी सात नहीं, आठ माने जाते हैं। आठवाँ शकारसे प्रारम्भ होता है। इनके द्वारा 'अं कं चं टं तं पं यं शं' यह गणना करके आठ बार और जपना चाहिये—ऐसा करनेसे जपकी संख्या १०८ हो जाती है। ये अक्षर तो मालाके मणि हैं। इनका सूत्र है कुण्डलिनी शक्ति। वह मूलाधारसे आज्ञाचक्र-पर्यन्त सूत्ररूपसे विद्यमान है। उसीमें ये सब स्वर-वर्ण मणिरूपसे गुथे हुए हैं। इन्हींके द्वारा आरोह और अवरोह क्रमसे अर्थात् नीचेसे ऊपर और ऊपरसे नीचे जप करना चाहिये। इस प्रकार जो जप होता है, वह सद्यः सिद्धिप्रद होता है।

जिन्हें अधिक संख्यामें जप करना हो, उन्हें तो मणि-माला रखना अनिवार्य है। मणि ( मनिया ) पिरोये होनेके कारण इसे मणिमाला कहते हैं। यह माला अनेक वस्तुओंकी होती है। रुद्राक्ष, तुलसी, शङ्ख, पद्मबीज, जीवपुत्रक, मोती, स्फटिक, मणि, रत्न, सुवर्ण, मूँगा, चाँदी, चन्दन और कुशमूल—इन सभीके मनियोंसे माला तैयार की जा सकती है। इनमें वैष्णवोंके लिये तुलसी और स्मार्त, शैव, शाक्त आदिकोंके लिये रुद्राक्ष सर्वोत्तम माना गया है। माला बनानेमें इतना ध्यान रखना चाहिये कि एक चीजकी मालामें दूसरी चीज न लगायी जाय। विभिन्न कामनाओंके अनुसार भी मालाओंमें भेद होता है और देवताओंके अनुसार भी। उनका विचार कर लेना चाहिये। मालाके मणि ( दाने ) छोटे-बड़े न हों। एक सौ आठ दानोंकी माला सब प्रकारके जपोंमें काम आती है। ब्राह्मण-कन्याओंके द्वारा निर्मित सूतसे माला बनायी जाय तो सर्वोत्तम है। शान्तिकर्ममें श्वेत, वशीकरणमें रक्त, अभिचारमें कृष्ण और मोक्ष तथा ऐश्वर्यके लिये रेशमी सूतकी माला विशेष उपयुक्त है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रोंके लिये क्रमशः श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण वर्णके सूत्र श्रेष्ठ हैं। रक्त वर्णका प्रयोग सब वर्णोंके लोग सब प्रकारके अनुष्ठानोंमें कर सकते हैं। सूतको तिगुना करके फिरसे तिगुना कर देना चाहिये। प्रत्येक मणिको गूँथते समय प्रणवके साथ एक-एक अक्षरका उच्चारण करते जाना चाहिये—जैसे 'ॐ अं' कहकर प्रथम मणि तो 'ॐ आं' कहकर दूसरी मणि। बीचमें जो गाँठ देते हैं, उसके सम्बन्धमें विकल्प है। चाहे तो गाँठ दें और चाहे तो न दें। दोनों ही बातें ठीक हैं। माला गूँथनेका मन्त्र अपना इष्टमन्त्र भी है। अन्तमें ब्रह्मग्रन्थि देकर सुमेरु गूँथे और पुनः ग्रन्थि लगावे। स्वर्ण आदिके सूत्रमें भी माला पिरोई जा सकती है। रुद्राक्षके दानोंमें मुख और पुच्छका भेद भी होता है। मुख कुछ ऊँचा होता है और पुच्छ नीचा। पोहनेके समय यह ध्यान रखना चाहिये कि दानोंका मुख परस्परमें मिलता जाय अथवा पुच्छ। गाँठ देनी हो तो तीन फेरेकी अथवा ढाई फेरेकी लगानी चाहिये। ब्रह्मग्रन्थि भी लगा सकते हैं। इस प्रकार मालाका निर्माण करके उसका संस्कार करना चाहिये।

पीपलके नौ पत्ते लाकर एकको बीचमें और आठको अगल-बगल इस ढंगसे रक्खे कि वह अष्टदल कमल-सा मालूम हो। बीचवाले पत्तेपर माला रक्खे और 'ॐ अं आं' इत्यादिसे लेकर 'हं क्षं' पर्यन्त समस्त स्वर-वर्णोंका उच्चारण करके पञ्चगव्यके द्वारा उसका क्षालन करे और फिर 'सद्योजात' मन्त्र पढ़कर पवित्र जलसे उसको धो डाले। 'सद्योजात' मन्त्र यह है—

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।

इसके पश्चात् वामदेवमन्त्रसे चन्दन, अगर, गन्ध आदिके द्वारा घर्षण करे। वामदेवमन्त्र निम्नलिखित है—

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमः।

बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।

तत्पश्चात् अघोरमन्त्रसे धूपदान करे।

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्व-शर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

यह अघोरमन्त्र है। तदनन्तर तत्पुरुषमन्त्रसे लेपन करे।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

इसके पश्चात् एक-एक दानेपर एक-एक बार अथवा सौ-सौ बार ईशानमन्त्रका जप करना चाहिये। ईशानमन्त्र यह है—

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्।

फिर मालामें अपने इष्टदेवताकी प्राण-प्रतिष्ठा करे। प्राण-प्रतिष्ठाकी विधि पूजाके प्रकरणमें देखनी चाहिये। तदनन्तर इष्टमन्त्रसे सविधि पूजा करके प्रार्थना करनी चाहिये—

माले माले महामाले सर्वतत्त्वस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥

यदि मालामें शक्तिकी प्रतिष्ठा की हो तो इस प्रार्थनाके पहले 'ह्रीं' जोड़ लेना चाहिये। और रक्तवर्णके पुष्पसे पूजा करनी चाहिये। वैष्णवोंके लिये माला-पूजाका मन्त्र है—

'ॐ ऐं श्रीं अक्षमालायै नमः।'

अकारादि क्षकारान्त प्रत्येक वर्णसे पृथक्-पृथक् पुटित करके अपने इष्टमन्त्रका एक सौ आठ बार जप करना चाहिये। इसके पश्चात् एक सौ आठ आहुति हवन करे अथवा दो सौ सोलह बार इष्टमन्त्रका जप कर ले। उस मालापर दूसरे मन्त्रका जप न करे। स्वयं हिले नहीं और मालाको हिलावे नहीं। आवाज़ नहीं होनी चाहिये और हाथसे छूटकर गिरनी नहीं चाहिये। मालाका टूटना मृत्यु ही है—ऐसा समझकर निरन्तर सावधान रहना चाहिये। उसे बड़े आदरसे पवित्र स्थानमें रखना चाहिये और प्रार्थना करनी चाहिये—

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां सर्वसिद्धिप्रदा मता।
तेन सत्येन मे सिद्धिं देहि मातर्नमोऽस्तु ते॥

ऐसी प्रार्थना करके मालाको गुप्त रखना चाहिये। अङ्गुष्ठ और मध्यमाके द्वारा जप करना चाहिये और तर्जनीसे मालाका कभी स्पर्श नहीं करना चाहिये। सूत पुराना हो जाय तो फिर गूँथकर सौ बार जप करना चाहिये। प्रमादवश हाथसे गिर पड़े अथवा निषिद्ध स्पर्श हो जाय तो भी सौ बार जप करना चाहिये। टूट जानेपर फिर गूँथकर पूर्ववत् सौ बार जप करना चाहिये। मालाके इन नियमोंमें सावधानी बर्तनेसे शीघ्र ही सिद्धि-लाभ होगा, इसमें सन्देह नहीं।

मालाके संस्कारकी एक और प्रक्रिया है जिसका, आगमकल्पद्रुममें उल्लेख हुआ है। भूतशुद्धि आदि करके मालामें विष्णु, शिव, शक्ति, सूर्य और गणेशका आवाहन करके पूजा करनी चाहिये। फिर मालाको पञ्चगव्यमें डालकर 'ॐ हे सौः' इस मन्त्रसे निकालकर उसको सोनेके पात्रमें रक्खे। उसके ऊपर पञ्चामृतके नियमसे दूध, दही, घी, मधु और शीतल जलसे स्नान करावे। इसके पश्चात् चन्दन, कस्तूरी और कुङ्कुम आदि सुगन्धद्रव्यसे मालाको लिप्त करे और 'हे सौः' इस मन्त्रका एक सौ आठ बार जप करे। इसके पश्चात् मालामें नवग्रह, दिक्पाल और गुरुदेवकी पूजा करके उस मालाको ग्रहण करना चाहिये। इस प्रकारकी माला ही प्रत्येक क्षण भगवान्‌का स्मरण दिलाती रहती है। साधकको मालाकी आवश्यकता, उसके भेद, निर्माणपद्धति, संस्कार और प्रायश्चित्त जानकर उनके अनुसार अनुष्ठान करना चाहिये।

● **शकुन ज्योतिष शास्त्र**—यात्रा, परदेश अथवा अन्य अवसरों पर शकुन निकालना, जीवन पर शकुनों का अच्छा-बुरा प्रभाव, विभिन्न पशु-पक्षी, पदार्थ, शब्द, अंग फड़कना तथा अन्य घटनाओं का सचित्र दिग्दर्शन। (ले०—राजेश दीक्षित) मू० 24-00

● **स्वर ज्योतिष शास्त्र**—यह बात बहुत कम लोगों को मालूम है कि यदि नाक के विभिन्न छिद्रों से श्वास वायु का आगमन निश्चित तिथि और समय के अनुसार न हो तो शरीर में विचित्र प्रकार के रोग हो जाते हैं। नौकरी प्राप्ति, मुकदमे में जीत, इच्छानुसार संतान, शत्रु को वश में करना, मृत्यु का समय जानना, भाग्य चमकाने का उपाय आदि में स्वर ज्योतिष चमत्कारपूर्ण कार्य करता है। यह प्राचीन विद्या दुर्लभ थी। पहली बार छपी अत्युत्तम पुस्तक। □ मूल्य 24/-

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# पूजाके विविध उपचार

संक्षेप और विस्तारके भेदसे अनेकों प्रकारके उपचार हैं—चौंसठ, अठारह, सोलह, दस और पाँच।

## ६४ उपचार

देवीकी पूजाके चौंसठ उपचार यहाँ लिखे जाते हैं। इष्टमन्त्रसे इनका समर्पण होता है। मानस-पूजामें इनकी भावना होती है। वाग्बीज, मायाबीज और लक्ष्मीबीजके साथ भी इनका समर्पण होता है—जैसे पाद्यके समय 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पाद्यं कल्पयामि नमः'। प्रत्येक उपचारका नाम जोड़कर यही मन्त्र बोल सकते हैं। उपचारोंके नाम ये हैं—१. पाद्यम्, २. अर्घ्यम्, ३. आसनम्, ४. सुगन्धितैलाभ्यङ्गम्, ५. मज्जनशालाप्रवेशनम्, ६. मज्जनमणिपीठोपवेशनम्, ७. दिव्यस्नानीयम्, ८. उद्वर्तनम्, ९. उष्णोदकस्नानम्, १०. कनककलशस्थितसर्वतीर्थाभिषेकम्, ११. धौतवस्त्रपरिमार्जनम्, १२. अरुणदुकूलपरिधानम्, १३. अरुणदुकूलोत्तरीयम्, १४. आलेपमण्डपप्रवेशनम्, १५. आलेपमणिपीठोपवेशनम्, १६. चन्दनागुरुकुङ्कुममृगमदकर्पूरकस्तूरीरोचनादिव्यगन्धसर्वाङ्गानुलेपनम्, १७. केशभारस्य कालागुरुधूपमल्लिकामालतीजातीचम्पकाशोकशतपत्रपूगकुहरीपुन्नागकह्लारयूथीसर्वर्तुकुसुममालाभूषणम्, १८. भूषणमण्डपप्रवेशनम्, १९. भूषणमणिपीठोपवेशनम्, २०. नवरत्नमुकुटम्, २१. चन्द्रशकलम्, २२. सीमन्तसिन्दूरम्, २३. तिलकरत्नम्, २४. कालाञ्जनम्, २५. कर्णपालीयुगलम्, २६. नासाभरणम्, २७. अधरयावकम्, २८. ग्रथनभूषणम्, २९. कनकचित्रपदकम्, ३०. महापदकम्, ३१. मुक्तावलीम्, ३२. एकावलीम्, ३३. देवच्छन्दकम्, ३४. केयूरयुगलचतुष्कम्, ३५. वलयावलीम्, ३६. ऊर्मिकावलीम्, ३७. काञ्चीदामकटिसूत्रम्, ३८. शोभाख्याभरणम्, ३९. पादकटकयुगलम्, ४०. रत्ननूपुरम्, ४१. पादाङ्गुलीयकम्, ४२. एककरे पाशम्, ४३. अन्यकरे अङ्कुशम्, ४४. इतरकरेषु पुण्ड्रेक्षुचापम्, ४५. अपरकरे पुष्पबाणान्, ४६. श्रीमन्माणिक्यपादुकाम्, ४७. स्वसमानवेशास्त्रावरणदेवताभिः सह सिंहासनारोहणम्, ४८. कामेश्वरपर्यङ्कोपवेशनम्, ४९. अमृताशनम्, ५०. आचमनीयम्, ५१. कर्पूरवटिकाम्, ५२. आनन्दोल्लासविलासहासम्, ५३. मङ्गलारात्रिकम्, ५४. श्वेतच्छत्रम्, ५५. चामरयुगलम्, ५६. दर्पणम्, ५७. तालवृन्तम्, ५८. गन्धम्, ५९. पुष्पम्, ६०. धूपम्, ६१. दीपम्, ६२. नैवेद्यम्, ६३. पानम्, ६४. पुनराचमनीयम्; इसके पश्चात् ताम्बूलम्, नमस्कारम्—इत्यादि; इन सबके साथ पूर्वोक्त बीज पहले जोड़कर पीछे 'कल्पयामि नमः' कहना चाहिये। मानस पूजामें तो ये उपचार ही पूरा ध्यान करा देते हैं। बाह्य-पूजामें उपचारोंका अभाव होनेपर भी स्थिरभावसे इन मन्त्रोंका पाठ कर लेनेपर पूजाका ही फल मिलता है।

## १८ उपचार

अष्टादशोपचार ये हैं—१. आसन, २. स्वागत, ३. पाद्य, ४. अर्घ्य, ५. आचमनीय, ६. स्नानीय, ७. वस्त्र, ८. यज्ञोपवीत, ९. भूषण, १०. गन्ध, ११. पुष्प, १२. धूप, १३. दीप, १४. अन्न, १५. दर्पण, १६. माल्य, १७. अनुलेपन और १८. नमस्कार।

## १६ उपचार

षोडशोपचार ये हैं—१. पाद्य, २. अर्घ्य, ३. आचमनीय, ४. स्नानीय, ५. वस्त्र, ६. आभूषण, ७. गन्ध, ८. पुष्प, ९. धूप, १०. दीप, ११. नैवेद्य, १२. आचमनीय, १३. ताम्बूल, १४. स्तवपाठ, १५. तर्पण और १६. नमस्कार।

## १० उपचार

दशोपचार ये हैं—१. पाद्य, २. अर्घ्य, ३. आचमनीय, ४. मधुपर्क, ५. आचमनीय, ६. गन्ध, ७. पुष्प, ८. धूप, ९. दीप और १०. नैवेद्य।

## ५ उपचार

पञ्चोपचार ये हैं—१. गन्ध, २. पुष्प, ३. धूप, ४. दीप और ५. नैवेद्य।

## आवश्यक बातें

आसन-समर्पणमें आसनके ऊपर पाँच पुष्प भी रख लेने चाहिये। छः पुष्पोंसे स्वागत करना चाहिये। पाद्यमें चार पल जल और उसमें श्यामा घास, दूब, कमल और अपराजिता देनी चाहिये। अर्घ्यमें चार पल जल और गन्ध, पुष्प, अक्षत, यव, दूब, चार तिल, कुशाका अग्रभाग तथा श्वेत सरसो देना चाहिये। आचमनीयमें छः पल जल और उसमें जायफल, लवङ्ग और कङ्कोलका चूर्ण देना चाहिये। मधुपर्कमें कांस्य-

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

पात्रस्थित घृत, मधु और दधि देना चाहिये। मधुपर्कके पश्चात्‌वाले आचमनमें केवल एक पल विशुद्ध जल ही आवश्यक होता है। स्नानके लिये पचास पल जलका विधान है। वस्त्र बारह अङ्गुलसे ज्यादा, नवीन और जोड़ा होना चाहिये। आभरण स्वर्णनिर्मित हों और उनमें मोती आदि जड़े हों। गन्ध-द्रव्यमें चन्दन, अगर, कर्पूर आदि एकमें मिला लिये गये हों, एक पलके लगभग उनका परिमाण कहा गया है। पुष्प पचाससे अधिक हों, अनेक रङ्गके हों। धूप गुग्गुलका हो और कांस्यपात्रमें निवेदन किया जाय। नैवेद्यमें एक पुरुषके भोजन योग्य वस्तु होनी चाहिये। चर्व्य, चोष्य, लेह्य, पेय—चारों प्रकारकी सामग्री हो। दीप कपासकी बत्तीसे कर्पूर आदि मिलाकर बनाया जाय। बत्तीकी लंबाई चार अङ्गुलके लगभग हो और दृढ़ हो। दीपकके साथ शिलापिष्टका भी उपयोग करना चाहिये। इसीको श्री अथवा आक कहते हैं, जो आरतीके समय सात बार घुमाया जाता है। दूर्वा और अक्षतकी संख्या सौसे अधिक समझनी चाहिये। एक-एक सामग्री अलग-अलग पात्रोंमें रक्खी जाय; वे पात्र सोने, चाँदी, ताँबे, पीतल या मिट्टीके हों। अपनी शक्तिके अनुसार ही करना चाहिये। जो वस्तु अपने पास नहीं हो, उसके लिये चिन्ता करनेकी आवश्यकता नहीं और अपनी शक्ति-सामर्थ्य-के अनुसार जो मिल सकते हों, उनके प्रयोगमें आलस्य, प्रमाद और सङ्कीर्णता नहीं करनी चाहिये।

## पूजाके मन्त्र

भगवान् विष्णु, कृष्ण आदिकी पूजामें जिन मन्त्रोंका उपयोग होता है, वे लिखे जाते हैं—

### आसन

सर्वान्तर्यामिणे देव सर्वबीजमयं ततः।
आत्मस्थाय परं शुद्धमासनं कल्पयाम्यहम्॥

'हे देव, आप सबके अन्तर्यामी और आत्मरूपसे स्थित हैं; इसलिये आपको मैं सर्वबीजस्वरूप उत्तम और शुद्ध आसन समर्पित कर रहा हूँ।'

### स्वागत

यस्य दर्शनमिच्छन्ति देवा ब्रह्महरादयः।
कृपया देवदेवेश मदग्रे सन्निधीभव॥
तस्य ते परमेशान स्वागतं स्वागतं प्रभो।

'ब्रह्मा, शिव आदि जिसके दर्शनके लिये लालायित रहते हैं, हे देवदेवेश, वे ही सबके आराध्य आप दया करके मेरे सम्मुख आवें। परमेश्वर, प्रभो, आपका स्वागत है, स्वागत है।'

### आवाहन

कृतार्थोऽनुगृहीतोऽस्मि सफलं जीवितं तु मे।
यदागतोऽसि देवेश चिदानन्दमयाव्यय॥
अज्ञानाद्वा प्रमादाद्वा वैकल्यात् साधनस्य च।
यदपूर्णं भवेत् कृत्यं तथाप्यभिमुखो भव॥

'हे विज्ञानानन्दघन, हे अविनाशी, हे देवेश, आपने जो पदार्पण किया, इससे मैं कृतार्थ हो गया; बड़ा अनुग्रह किया आपने। मेरा जीवन सफल हो गया। अज्ञान, असावधानी और साधनोंकी कमीके कारण मैं आपकी पूजा पूर्णतः नहीं कर सकता तथापि आप कृपा करके मेरे सामने रहें।'

### पाद्य

यद्भक्तिलेशसम्पर्कात् परमानन्दसम्भवः।
तस्मै ते परमेशान पाद्यं शुद्धाय कल्पये॥

'जिनकी बिन्दुमात्र भक्तिका संस्पर्श हो जानेसे हृदय परमानन्द-धाराका उद्गम बन जाता है, हे परमेश्वर! आपके उसी विशुद्ध स्वरूपको मैं पाद्य समर्पित कर रहा हूँ।'

### आचमनीय

देवानामपि देवाय देवानां देवतात्मने।
आचामं कल्पयामीश सुधायाः स्रुतिहेतवे॥

'हे ईश, आप समस्त देवताओंके भी देवता—आराध्य-देव हैं। और तो क्या, स्वयं आप ही देवताओंमें देवत्वरूपसे प्रकट हैं। आप सुधाके मूलस्रोत हैं, अतः आपसे सुधाक्षरणके लिये मैं आचमनीय समर्पित कर रहा हूँ।'

### अर्घ्य

तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम्।
तापत्रयविमोक्षाय तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम्॥

'हे प्रभो! आपका अर्घ्य तीनों तापोंको हरनेवाला, दिव्य एवं परमानन्दस्वरूप है; इसलिये तीनों तापोंसे मुक्ति प्राप्त करनेके लिये मैं आपको अर्घ्य समर्पित करता हूँ।'

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## मधुपर्क

सर्वकल्मषहीनाय परिपूर्णसुधात्मकम् ।
मधुपर्कमिमं देव कल्पयामि प्रसीद मे ॥

'हे देव, आप समस्त पापों और उनके कारणोंसे मुक्त हैं; आपके लिये मैं यह परिपूर्णसुधात्मक मधुपर्क समर्पित करता हूँ । आप अनुग्रह करके इसे स्वीकार करें ।'

## पुनराचमनीय

उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरणमात्रतः ।
शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनराचमनीयकम् ॥

'जिसके स्मरण करनेमात्रसे उच्छिष्ट अथवा अपवित्र भी पवित्र हो जाता है, वही आप हैं । आपके लिये मैं आचमन समर्पित करता हूँ ।'

## स्नान

परमानन्दबोधाब्धिनिमग्ननिजमूर्तये ।
साङ्गोपाङ्गमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमीश ते ॥

'हे ईश, आप अपने परमानन्दस्वरूप ज्ञान-समुद्रमें स्वयं निमग्न हैं; आपके लिये साङ्गोपाङ्ग स्नानार्थ जल मैं समर्पित करता हूँ ।'

## वस्त्र

मायाचित्रपटाच्छन्ननिजगुह्योरुतेजसे ।
निरावरणविज्ञान वाससे ते कल्पयाम्यहम् ॥

'आपने अपना परमज्योतिर्मय स्वरूप मायाके विचित्र वस्त्रसे ढक रक्खा है, वास्तवमें आप आवरणरहित विज्ञान-स्वरूप हैं । ऐसे आपके लिये, हे देव, मैं वस्त्र समर्पित कर रहा हूँ ।'

## उत्तरीय

यमाश्रित्य महामाया जगत्सम्मोहिनी सदा ।
तस्मै ते परमेशाय कल्पयाम्युत्तरीयकम् ॥

'जिसका आश्रय करके महामाया जगत्को मोहित करती है, आप वे ही परमेश्वर हैं । आपके लिये मैं उत्तरीय समर्पित करता हूँ ।'

## यज्ञोपवीत

यस्य शक्तित्रयेणेदं सम्प्रोतमखिलं जगत् ।
यज्ञसूत्राय तस्मै ते यज्ञसूत्रं प्रकल्पये ॥

'जिसकी सृष्टि, स्थिति और प्रलयरूप तीन शक्तियोंके द्वारा यह जगत् गुँथा हुआ है, जो स्वयं यज्ञसूत्र हैं, उन्हींके लिये मैं यज्ञोपवीत समर्पित कर रहा हूँ ।'

## आभूषण

स्वभावसुन्दराङ्गाय नानाशक्त्याश्रयाय ते ।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयामि सुरार्चित ॥

'हे सुरपूजित, आपका एक-एक अङ्ग स्वभावसे ही परम सुन्दर, परम मनोहर है; आप स्वयं समस्त शक्तियोंके आश्रय हैं । आपके लिये मैं विचित्र भूषण समर्पित करता हूँ ।'

## जल

समस्तदेवदेवेश सर्वतृप्तिकरं परम् ।
अखण्डानन्दसम्पूर्ण गृहाण जलमुत्तमम् ॥

'हे देवदेवेश्वर, हे अनन्त आनन्दसे परिपूर्ण, आपके लिये मैं सबको तृप्ति देनेवाला यह उत्तम जल समर्पित करता हूँ, कृपया इसे स्वीकार करें ।'

## गन्ध

परमानन्दसौरभ्यपरिपूर्णदिगन्तरम् ।
गृहाण परमं गन्धं कृपया परमेश्वर ॥

'हे परमेश्वर, जिसकी परमानन्दमय सुरभिसे दिग्-दिगन्त परिपूर्ण हो रहे हैं—आपके लिये वही परम गन्ध मैं समर्पित करता हूँ । आप कृपा करके स्वीकार करें ।'

## पुष्प

तुरीयं गुणसम्पन्नं नानागुणमनोहरम् ।
आनन्दसौरभं पुष्पं गृह्यतामिदमुत्तमम् ॥

'त्रिगुणातीत, गुणयुक्त, अनेक गुणोंसे मनोहर, आनन्दसौरभसम्पन्न, यह उत्तम पुष्प मैं आपको समर्पित करता हूँ; इसे स्वीकार करें ।'

## धूप

वनस्पतिरसो दिव्यो गन्धाढ्यः सुमनोहरः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

'वनस्पतियोंके रससे संगृहीत, दिव्य, सुगन्धपूर्ण, निखिल देवताओंके आघ्राण करने योग्य यह सुमनोहर धूप मैं आपको समर्पित करता हूँ; कृपया स्वीकार करें ।'

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## दीप

सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः ।
सबाह्याभ्यन्तरं ज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

'परम तेजसे सम्पन्न, भीतर और बाहर ज्योतिर्मय, सब ओरसे अन्धकारको दूर करनेवाला जो उत्तम आलोकमय दीपक है, वह आप स्वीकार करें ।'

## नैवेद्य

सत्पात्रसिद्धं सुहविर्विविधानेकभक्षणम् ।
निवेदयामि देवेश सानुगाय गृहाण तत् ॥

'हे देवेश, पवित्र पात्रमें बनाये हुए, अनेक प्रकारकी खाद्य-सामग्रियोंसे युक्त यह उत्तम नैवेद्य अनुचरोंके सहित आपकी सेवामें समर्पित करता हूँ; आप कृपा करके इसे स्वीकार करें ।'

भोजनके पश्चात् जल आदि पूर्वोक्त मन्त्रोंसे ही देने चाहिये। आगेकी विधि मन्त्रपुरश्चरणके प्रसङ्गमें देखनी चाहिये ।

## पूजाके पाँच प्रकार

शास्त्रोंमें पूजाके पाँच प्रकार बताये गये हैं—अभिगमन, उपादान, योग, स्वाध्याय और इज्या । देवताके स्थानको साफ करना, लीपना, निर्माल्य हटाना—ये सब कर्म अभिगमनके अन्तर्गत हैं । गन्ध, पुष्प आदि पूजा-सामग्रीका संग्रह उपादान है । इष्टदेवकी आत्मरूपसे भावना करना योग है । मन्त्रार्थका अनुसन्धान करते हुए जप करना, सूक्त, स्तोत्र आदिका पाठ करना, गुण, नाम, लीला आदिका कीर्तन करना, वेदान्तशास्त्र आदिका अभ्यास करना—ये सब स्वाध्याय हैं । उपचारोंके द्वारा अपने आराध्यदेवकी पूजा इज्या है । ये पाँच प्रकारकी पूजाएँ क्रमशः सार्ष्टि, सामीप्य, सालोक्य, सायुज्य और सारूप्य मुक्तिको देनेवाली हैं ।


क्या आप जीवन से निराश हो चुके हैं और यह समझ बैठे हैं कि अब मेरा रोग जाने का नहीं, तो निम्नलिखित पुस्तकें पढ़िए !

# प्राकृतिक चिकित्सा की शरण लीजिए

यह शरीर मिट्टी, पानी धूप और हवा से बना है और उन्हीं के समुचित प्रयोग से फिर नवीन हो सकता है । प्राकृतिक चिकित्सा के साधन जल, धूप, मिट्टी, वायु, आसन, प्राणायाम, मालिश, उपवास, फलयुक्त आहार व हरी सब्जियों के सेवन की विधि जानिये और सूर्य किरण-चिकित्सा, दुग्ध कल्प और विचार शक्ति के प्रयोग से स्वास्थ्य लाभ पाइए । इस प्रकार अपना स्वास्थ्य लौटाने के साथ-साथ अपने कुटुम्बीजनों, इष्ट मित्रों तथा अन्य दुःखीजनों को प्राकृतिक साधनों द्वारा रोगमुक्त और स्वस्थ रहने की सलाह देने लायक हो जायेंगे ।

● **1. प्राकृतिक चिकित्सा विज्ञान**—धूप, हवा, पानी, दही, मट्ठा, छाछ और दूध आदि द्वारा विभिन्न रोगों की सरल प्राकृतिक चिकित्सा की जानकारी प्रदान कर, शरीर को स्वस्थ, सुन्दर एवं दीर्घायु बनाने वाली श्रेष्ठ पुस्तक । ☐ लेखक-डा० युगलकिशोर ☐ पृष्ठ 384, ☐ सजिल्द ☐ मूल्य 24/-

● **2. पानी, धूप, मिट्टी द्वारा सब रोगों का प्राकृतिक इलाज**—पानी, धूप तथा मिट्टी द्वारा सब रोगों का प्राकृतिक इलाज, मोटापा दूर करने के साधन, स्त्री रोगों की चिकित्सा, बच्चों के पालन-पोषण तथा तम्बाकू के उपयोग से छुटकारा पाने के उपायों को बताने वाली अनुपम पुस्तक । लेखक-डा० युगलकिशोर पृष्ठ 384 ☐ स्क्रीन प्रिंटिड जिल्द, ☐ मूल्य 24/-

● **3 फलों द्वारा चिकित्सा**—आम, अमरूद, नींबू, सन्तरा, सेब, अनार, बादाम, अनन्नास, खजूर, जामुन, केला, पपीता, खरबूजा, मौसमी, चकोतरा, खीरा, ककड़ी, नारियल इत्यादि अनेक फलों के गुण, उपयोग तथा कठिन-से-कठिन रोगों की चिकित्सा सरल ढंग से दी गई है । इस पुस्तक के पास होने पर कोई भी व्यक्ति धन व यश दोनों कमा सकता है । ताजा फल खाकर स्वस्थ रहिए ☐ पृष्ठ 152, सजिल्द पुस्तक, ☐ बढ़िया कागज, ☐ मूल्य 15/-

प्राप्तिस्थान—**देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला दिल्ली**


CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# नवग्रहोंकी उपासना

हिंदूजातिमें प्राचीन कालसे जो अनेकों प्रकारकी धारणाएँ या प्रथाएँ प्रचलित हैं, उनमें नवग्रहोंकी उपासना भी है। यह केवल रूढिमात्र अथवा प्रथामात्र नहीं है, इसके मूलमें हमलोगोंके शरीरसे नवग्रहोंका सम्बन्ध और ज्योतिष-की दृष्टिसे सुपुष्ट विचार भी है। यह उक्ति प्रायः सर्वत्र प्रसिद्ध है कि 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे।' अर्थात् जो कुछ एक शरीरमें है, वह सम्पूर्ण ब्रह्माण्डमें है और जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्डमें है, वह एक शरीरमें भी है। हिंदू-शास्त्रोंके अनुसार यह सृष्टि केवल उतनी ही नहीं है, जितनी हमलोग देखते हैं। इन्द्रियोंसे जो कुछ देखा या सुना जाता है, वह तो बहुत ही स्थूल है। यन्त्रोंका तत्त्वविश्लेषण केवल जडतत्त्वोंतक ही सीमित है, वह कभी चेतनाका साक्षात्कार नहीं कर सकता। क्योंकि वे यन्त्र स्वयं जड हैं। प्रत्येक स्थूल वस्तुके एक-एक अधिष्ठातृदेवता हैं, यह बात युक्ति, अनुभव और शास्त्रसे सिद्ध है। जैसे स्थूल नेत्रगोलक, जिन्हें हम देखते हैं, नेत्रके अधिभूत रूप हैं। नेत्र-इन्द्रिय अध्यात्म है, जो कि इस स्थूल गोलकके द्वारा देखती है। इस दर्शनक्रियाका सहायक जो सूर्य है, वह नेत्रका अधिदैव रूप है। नेत्र-इन्द्रिय नेत्रगोलकके द्वारा स्थूल रूपको देखे, यह सूर्यकी शक्तिकी सहायता लिये बिना असम्भव है। इसलिये नेत्रके अधिष्ठातृदेवता सूर्य हैं। सूर्यके भी तीन रूप हैं। जिस सूर्यको हमलोग देखते हैं, वह सूर्यका स्थूल अथवा अधिभूत रूप है। दृश्यमान सूर्यमण्डलके अभिमानी देवताका नाम सूर्य देवता है। उन्हींका रथ सात घोड़ोंका है और अरुण सारथि हैं। शनैश्चर, यमराज आदि उनकी सन्तान हैं। और भी देवताके रूपमें सूर्यका जितना वर्णन आता है, वह सब इस दृश्यमान सूर्यमण्डलके अभिमानी देवताका ही है। सूर्यका अध्यात्म रूप है, समष्टिका नेत्र होना। इन तीन रूपोंको ध्यानमें रखनेसे ही शास्त्रोंमें जो सूर्यका वर्णन हुआ है, वह समझमें आ सकता है। यह बात सभी देवताओंके सम्बन्धमें समझ लेनी चाहिये।

अब यह बात सिद्धान्तरूपसे मान ली गयी है कि यह सम्पूर्ण स्थूल जगत् सूक्ष्म जगत्का ही प्रकाशमात्र है। समष्टिके मनमें जो दर्शनकी इच्छा है, वही सूर्यके रूपमें प्रकट हुई है। जीवके मनमें जो दर्शनकी इच्छा है, वह नेत्र-इन्द्रियके रूपमें प्रकट हुई है। इन दोनोंके अभिमानी देवता हैं सूर्य, इसलिये नेत्र-इन्द्रियका सीधा सम्बन्ध सूर्यसे है। सूर्यकी प्रत्येक स्थितिका प्रभाव इस पृथ्वीपर और इसपर रहनेवाले प्राणियोंपर पड़ता है। जैसे यह स्थूल शरीर ही जीव नहीं है, उससे भिन्न है, वैसे ही यह दृश्यमान पृथ्वी ही पृथ्वी देवता नहीं है, यह तो पृथ्वी देवताका शरीर है। इन सब स्थूलताओंका निर्माण सूक्ष्म जगत्की दृष्टिसे ही हुआ है। सूक्ष्म ही स्थूल बना है; इसलिये जो लोग सूक्ष्म जगत्पर विचार नहीं करते, केवल स्थूल जगत्में ही अपनी दृष्टिको आबद्ध रखते हैं, वे ठीक-ठीक इसका मर्म नहीं समझ पाते। जैसे पृथ्वी, समुद्र, चन्द्रमण्डल, विद्युत्, उष्णता आदिसे सूर्यका साक्षात् सम्बन्ध है, वैसे ही उन पदार्थोंसे बने हुए मानव-शरीरके साथ भी है। प्रत्येक शरीरकी उत्पत्तिके समय, चाहे वह गर्भाधानका हो या भूमिष्ठ होनेका हो, सूर्य और इतर ग्रहोंका पृथ्वीके साथ जैसा सम्बन्ध होता है और ग्रहचार-पद्धतिके अनुसार उस प्रदेशमें, उस प्रकृतिके शरीरपर उनका प्रभाव पड़ता है, वह जीवनभर किसी-न-किसी रूपमें चलता ही रहता है। ग्रहमण्डलकी स्थिति, देशविशेषपर उनका विशेष प्रभाव और देहगत उपादानोंकी विभिन्नताके कारण प्रत्येक शरीरका ग्रहोंके साथ भिन्न सम्बन्ध होता है और उसीके अनुसार फल भी होता है। प्रत्येक ग्रहके साथ पृथ्वीका और उसपर रहनेवाली वस्तुओंका जो महान् आकर्षण-विकर्षण चल रहा है, उसके प्रभावसे कोई बच नहीं सकता और जगत्के परिवर्तनोंमें, अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियोंमें, सुख-दुःखके निमित्तोंमें यह महान् शक्ति भी एक कारण है—इस सत्यको अस्वीकार नहीं किया जा सकता। इसीसे योग-सम्पन्न महर्षियोंने अपनी अन्तर्दृष्टिसे इस तत्त्वका साक्षात्कार करके जीवोंके हितार्थ इस ज्योतिर्विद्याको प्रकट किया है।

संसारमें जो घटनाएँ घटती हैं, उनके अनेकों कारण बतलाये जाते हैं—जीवका प्रारब्ध अथवा पुरुषार्थ, समष्टि-कर्ता ईश्वरकी इच्छा अथवा प्रकृतिका नियमित प्रवाह। इन घटनाओंके साथ ग्रहोंके आकर्षण-विकर्षणका क्या सम्बन्ध है? उपर्युक्त बलवान् कारणोंके रहते हुए जगत्के कार्योंमें वे क्या नवीनता ला सकते हैं? यह प्रश्न उठानेके पहले उन सबके एकत्वका विचार कर लेना चाहिये।

समष्टिकर्ताकी इच्छा ही प्रकृतिका प्रवाह है। प्रकृतिके सात्त्विक, राजसिक और तामसिक प्रवाहोंके अनुसार ही

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

ग्रहोंकी निश्चित गति और जीवोंका प्रारब्ध है। इन गति और प्रारब्धोंके अनुसार ही पुरुषार्थ और फल होते हैं। शरीरकी उत्पत्ति प्रारब्धके अनुसार होती है; जिसका जैसा कर्म, उसका वैसा शरीर। जिस शरीरमें प्रारब्धके अनुसार जैसी कर्मवासनाएँ रहती हैं, उस जीवनमें जैसी घटनाएँ घटनेवाली होती हैं, उसीके अनुसार उस शरीरके जन्मके समय वैसी ही ग्रहस्थिति रहती है। यों भी कह सकते हैं कि वैसी ग्रहस्थितिमें ही उसका जन्म होता है अथवा ग्रहोंकी एक स्थितिमें रहनेपर भी भिन्न-भिन्न देश और शरीरके भेदसे उनका भिन्न-भिन्न प्रभाव पड़ता है इसीसे ज्यौतिष-शास्त्रमें कहा गया है कि ग्रह किसी नवीन फलका विधान नहीं करते, बल्कि प्रारब्धके अनुसार घटनेवाली घटनाको पहले ही सूचित कर देते हैं—'ग्रहा वै कर्मसूचकाः।' ग्रहोंकी स्थिति, गति, वक्रता, अतिचार आदिको जाननेवाला ज्यौतिषी किसी भी व्यक्तिके जन्म-समयको ठीक-ठीक जानकर बतला सकता है कि इसके भविष्य जीवनमें कौन-कौन-सी घटनाएँ घटित होनेवाली हैं। स्थूल कर्मचक्रके अनुसार केवल इतनी ही बात है, गणितकी सत्यताको इस-रूपमें पाश्चात्य वैज्ञानिकोंने भी स्वीकार कर लिया है। पाश्चात्य देशोंमें ग्रहोंकी स्थितिका अध्ययन करके गणितके आधारपर फलित ज्यौतिष उसी प्रकार प्रतिष्ठित किया गया है, जैसे हिंदूशास्त्रोंमें। परन्तु यह बात इतनेसे ही समाप्त नहीं हो जाती, इसके आगे और भी कुछ है।

हिंदुओंका देवता-विज्ञान इन स्थूल कार्यकारण-परम्परा और सम्बन्धोंसे और भी ऊपर जाता है। मानस-शास्त्रके वेत्ताओंने एक स्वरसे यह बात स्वीकार की है कि शुद्ध, परिपुष्ट एवं बलिष्ठ मनके द्वारा स्थूल जगत्में अघटित घटना भी घटित की जा सकती है। यदि हम उन सूक्ष्मताओंके भी अन्तस्तलमें स्थित हो जायँ, जो स्थूल घटनाओंकी कारण हैं, तो हम न केवल स्थूल जगत्में, बल्कि सूक्ष्म जगत्में भी परिवर्तन कर सकते हैं। इस मनोवैज्ञानिक दृष्टिसे विचार करनेपर यह सिद्ध होता है कि ग्रहोंके द्वारा भावी घटनाओंका ज्ञान हो जानेपर मानसिक साधनाके द्वारा उन्हें रोका भी जा सकता है। प्राचीन ऋषियों, योगियों और सिद्ध पुरुषोंके द्वारा ऐसा किया गया है। इससे यह सिद्ध होता है कि मन ऐसी स्थितिमें भी जा सकता है, जहाँसे वह घटनाओंका विधान और अवरोध कर सकता है। परन्तु सर्वसाधारणके पक्षमें यह बात दुःसाध्य है। इसलिये उन्हें ग्रहमण्डलाधिष्ठातृदेवताकी शरण लेनी पड़ती है। जिसके शरीरपर सूर्यग्रहका दुष्प्रभाव पड़ रहा है या पड़नेवाला है, वह यदि सूर्यमण्डलके अभिमानी देवताका आश्रय ले और पूजा, पाठ, जप आदिके द्वारा यह अनुभव कर सके कि सूर्यदेवता मुझपर प्रसन्न हैं, मेरा कल्याण कर रहे हैं और मुझे जीवनदान दे रहे हैं, तो बहुत अंशमें उसका अरिष्ट शान्त हो जायगा और वह अपनेको सूर्यग्रहजन्य पीड़ासे बचा सकेगा। ग्रहशान्तिकी ये दोनों प्रणालियाँ शास्त्रीय हैं—पहलीका नाम अहंग्रह-उपासना और दूसरीका प्रतीक-उपासना है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि यह सूर्यदेवता केवल उपासनाके लिये ही हैं। वास्तवमें समस्त देवताओंका अलग-अलग अस्तित्व है और सबके लोक, शक्ति, वाहन, क्रिया आदि अलग-अलग बँटे हुए हैं। जबतक विभिन्न शरीर, वस्तु, लोक और नक्षत्रमण्डल आदि पृथक्-पृथक् प्रतीत हो रहे हैं, इनके द्वारा पृथ्वीमण्डल प्रभावित हो रहा है, तबतक इनमें रहनेवाले देवताओंको अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

वर्तमानकालमें सम्पूर्ण संसार राष्ट्रविप्लव, पारस्परिक द्रोह, पारिवारिक वैमनस्य, ईर्ष्या-द्वेष, रोग-शोक और उद्वेग-अशान्तिसे सर्वथा उपद्रुत हो रहा है। इसके अनेक कारणोंमें देवताओंकी उपेक्षा और उनसे प्राप्त होनेवाली सहायताको अस्वीकार कर देना भी है। अन्तर्जगत्के नियमानुसार देवताओंको जागतिक पदार्थोंके उत्पादन, विनिमय और वितरणका अधिकार प्राप्त है। मनुष्य देवताओंको सन्तुष्ट करें और देवता मनुष्योंको समृद्धि एवं अभिवृद्धिसे सम्पन्न करें। परन्तु मनुष्योंने अपनी बुद्धि और पुरुषार्थका मिथ्या आश्रय लेकर स्वयं ही आत्मवञ्चना कर ली है, जिसका यह सब, जो दुःख-दारिद्र्यके रूपमें दीख रहा है, फल है। वेदोंने और तदनुयायी शास्त्रोंने एक स्वरसे ग्रहशान्तिकी आवश्यकता स्वीकार की है। अथर्ववेदमें सब देवताओंकी पूजाके साथ-साथ ग्रह-शान्तिका भी वर्णन आता है—

शन्नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्याश्च राहुणा।—इत्यादि।

प्राचीन आर्योंमें इस वैदिक मर्यादाका पूर्णरूपसे पालन होता था, इसीसे वे सुखी थे। आज भी जहाँ प्राचीन प्रथाओंका पालन होता है, वहाँ प्रत्येक शान्तिक और पौष्टिक कर्मोंमें पहले नवग्रहकी पूजा होती है। यह ध्यान रखना चाहिये कि इस पूजाका सम्बन्ध उन-उन मण्डलोंमें रहनेवाले देवताओंसे है। यहाँ संक्षेपसे नवग्रहोंके ध्यान और

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

मन्त्रका उल्लेख कर दिया जाता है। पूजा-पद्धतिके अनुसार उनका अनुष्ठान करना चाहिये।

## सूर्य

सूर्य ग्रहोंके राजा हैं। ये कश्यप गोत्रके क्षत्रिय एवं कलिङ्गदेशके स्वामी हैं। जपाकुसुमके समान इनका रक्त-वर्ण है। दोनों हाथोंमें कमल लिये हुए हैं, सिन्दूरके समान वस्त्र, आभूषण और माला धारण किये हुए हैं। जगमगाते हुए हीरे, चन्द्रमा और अग्निको प्रकाशित करनेवाला तेज, त्रिलोकीका अन्धकार दूर करनेवाला प्रकाश। सात घोड़ोंके एकचक्र रथपर आरूढ़ होकर सुमेरुकी प्रदक्षिणा करते हुए, प्रकाशके समुद्र भगवान् सूर्यका ध्यान करना चाहिये। इनके अधिदेवता शिव हैं और प्रत्यधिदेवता अग्नि। इस प्रकार ध्यान करके मानस पूजा और बाह्य पूजाके अनन्तर मन्त्रजप करना चाहिये। सूर्यके अनेक मन्त्रोंमेंसे एक मन्त्र है 'ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः'।

## चन्द्रमा

भगवान् चन्द्रमा अत्रिगोत्र हैं। यामुन देशके स्वामी हैं। इनका शरीर अमृतमय है। दो हाथ हैं—एकमें वर-मुद्रा है, दूसरेमें गदा। दूधके समान श्वेत शरीरपर श्वेत वस्त्र, माला और अनुलेपन धारण किये हुए हैं। मोतीका हार है। अपनी सुधामयी किरणोंसे तीनों लोकोंको सींच रहे हैं। दस घोड़ोंके त्रिचक्र रथपर आरूढ़ होकर सुमेरुकी प्रदक्षिणा कर रहे हैं। इनके अधिदेवता हैं उमादेवी और प्रत्यधिदेवता जल हैं। इनका मन्त्र है 'ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।'

## मङ्गल

मङ्गल भरद्वाज गोत्रके क्षत्रिय हैं। ये अवन्तिके स्वामी हैं। इनका आकार अग्निके समान रक्तवर्ण है, इनका वाहन मेष है, रक्तवस्त्र और माला धारण किये हुए हैं। हाथोंमें शक्ति, वर अभय और गदा धारण किये हुए हैं। इनके अङ्ग-अङ्गसे कान्तिकी धारा छलक रही है। मेषके रथपर सुमेरुकी प्रदक्षिणा करते हुए अपने अधिदेवता स्कन्द और प्रत्यधिदेवता पृथ्वीके साथ सूर्यके अभिमुख जा रहे हैं। मङ्गलका मन्त्र है 'ॐ हूं श्रीं मङ्गलाय नमः'।

## बुध

बुध अत्रिगोत्र एवं मगधदेशके स्वामी हैं। इनके शरीरका वर्ण पीला है। चार हाथोंमें ढाल, गदा, वर और खड्ग है। पीला वस्त्र धारण किये हुए हैं, बड़ी ही सौम्य-मूर्ति है, सिंहपर सवार हैं। इनके अधिदेवता हैं नारायण और प्रत्यधिदेवता हैं विष्णु। इनका मन्त्र है 'ॐ ऐं क्लीं श्रीं बुधाय नमः'।

## बृहस्पति

बृहस्पति अङ्गिरा गोत्रके ब्राह्मण हैं। सिन्धुदेशके अधिपति हैं। इनका वर्ण पीत है, पीताम्बर धारण किये हुए हैं, कमलपर बैठे हैं। चार हाथोंमें रुद्राक्ष, वरमुद्रा, शिला और दण्ड धारण किये हुए हैं। इनके अधिदेवता ब्रह्मा हैं और प्रत्यधिदेवता इन्द्र। इनका मन्त्र है 'ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः'।

## शुक्र

शुक्र भृगु गोत्रके ब्राह्मण हैं। भोजकट देशके अधिपति हैं। कमलपर बैठे हुए हैं। श्वेत वर्ण है, चार हाथोंमें रुद्राक्ष, वरमुद्रा, शिला और दण्ड हैं। श्वेत वस्त्र धारण किये हुए हैं। इनके अधिदेवता इन्द्र हैं और प्रत्यधिदेवता चन्द्रमा हैं। इनका मन्त्र है—'ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।'

## शनि

ये कश्यप गोत्रके शूद्र हैं। सौराष्ट्रप्रदेशके अधिपति हैं। इनका वर्ण कृष्ण है, कृष्ण वस्त्र धारण किये हुए हैं। चार हाथोंमें बाण, वर, शूल और धनुष हैं। इनका वाहन गीध है। इनके अधिदेवता यमराज और प्रत्यधिदेवता प्रजापति हैं। इनका मन्त्र है—'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः'।

## राहु

राहु पैठीनस गोत्रके शूद्र हैं। मलय देशके अधिपति हैं। इनका वर्ण कृष्ण है और वस्त्र भी कृष्ण ही हैं। इनका वाहन है सिंह। चार हाथोंमें खड्ग, वर, शूल और ढाल लिये हुए हैं। इनके अधिदेवता काल हैं और प्रत्यधिदेवता सर्प हैं। इनका मन्त्र है—'ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः'।

## केतु

ये जैमिनि गोत्रके शूद्र हैं। कुशद्वीपके अधिपति हैं। इनका वर्ण धुएँका-सा है और वैसा ही वस्त्र भी धारण किये हुए हैं। मुख विकृत है, गीध वाहन है। दो हाथोंमें वरमुद्रा तथा गदा हैं। इनके अधिदेवता हैं चित्रगुप्त तथा प्रत्यधि-देवता हैं ब्रह्मा। इनका मन्त्र है—'ॐ ह्रीं केतवे नमः।'

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

| देवता | मन्त्र | जप-संख्या | फल |
|---|---|---|---|
| श्रीमहागणेश | ॐ ह्रीं गं ह्रीं महागणपतये स्वाहा। | १ लाख | सर्वकामनापूर्ति |
| श्रीसूर्यनारायण | ॐ नमो नारायणाय | १६ लाख | ,, ,, ,, |
| श्रीविष्णु (लक्ष्मी-भूमिसहित) | ॐ नमो नारायणाय | १६ लाख | ,, ,, ,, |
| श्रीराम | ॐ रां रामाय नमः | ६ लाख | ज्ञान और ऐश्वर्यकी प्राप्ति |
| श्रीकृष्ण | ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा | १० ,, | भक्ति, ज्ञान और ऐश्वर्य-प्राप्ति |
| श्रीबालगोपाल | ॐ क्लीं कृष्णाय नमः | १ ,, | ,, ,, ,, |
| श्रीराधाजी | ॐ ह्रीं श्रीं राधिकायै नमः | १६ ,, | सर्वार्थप्राप्ति |
| श्रीराधाकृष्ण | ॐ नमो गोपीजनवल्लभाभ्याम् | १० ,, | ,, ,, ,, |
| श्रीकृष्ण | ॐ क्लीं गोपीजनवल्लभाय स्वाहा अथवा ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा | १॥ ,, | बृहस्पतिके समान त्रिकाल-ज्ञताप्राप्ति |
| ,, | ,, | १ ,, | शत्रुभय आदि विपत्तियोंसे रक्षा |
| ,, | ,, | १ लाख | सर्वकार्यसिद्धि |
| ,, | ,, | १ ,, | संसारसागरसे सद्योमुक्ति |
| ,, | ,, | १ ,, | किन्नरोंके साथ गायन |
| ,, | ,, | १ ,, | विज्ञता ज्वर-अपस्मार |
| ,, | ,, | १०८ | आदि रोगोंका नाश |
| ,, | ,, | १ लाख | वेदार्थ-पारदर्शिता और ज्ञान |
| ,, | ,, | १ ,, | शत्रु-पराजय |
| ,, | ,, | १ ,, | ऐश्वर्य और पशुलाभ |
| ,, | ,, | २४०००० (एक मासतक ८ हज़ार प्रति-दिन) | सर्वगुणसम्पन्न कन्यासे विवाह |
| ,, | ,, | १ लाख | मेधाशक्ति और कवित्वकी प्राप्ति |
| श्रीनृसिंहदेव | ॐ आं ह्रीं क्षौं क्रों हुं फट् | ६ लाख | सर्वकामनापूर्ति |

इसके अतिरिक्त और बहुतसे मन्त्र तथा ध्यान हैं। कामनाओंके अनुसार उनके प्रयोग होते हैं। इन मन्त्रोंके प्रयोगमें भी इनकी पूजा-पद्धति, न्यास तथा हवन आदिके जो पृथक्-पृथक् विधान हैं, उन्हें जान लेना चाहिये। विधि, श्रद्धा और एकाग्रताके साथ करनेपर सभी मन्त्र शास्त्रोक्त फल देते हैं। यदि इन्हीं मन्त्रोंका अनुष्ठान निष्कामभावसे किया जाय, तो अन्तःकरणकी शुद्धि होकर परमात्माकी प्राप्ति होती है। स्थानाभावके कारण यहाँ उनके विशेष विधि-विधान नहीं लिखे गये। मन्त्रानुष्ठान-प्रेमियोंको मन्त्र जाननेवाले विद्वानोंसे जान लेना चाहिये।

**देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006**

● देहाती जड़ी-बूटियाँ (साइंस की रोशनी में हिन्दुस्तानी जड़ी-बूटियाँ अर्थात् भारतीय संन्यासी जड़ी-बूटी विज्ञान)—भारतवर्ष के देहातों में, खेतों, जंगलों, पर्वतों की तराइयों तथा नदी व तालाबों के किनारे प्राकृतिक रूप से उगने वाली वनस्पतियों एवं जड़ी-बूटियों का सचित्र वर्णन इस पुस्तक के प्रथम भाग में दिया है, साथ ही द्वितीय भाग में बूटियों द्वारा सरल घरेलू इलाज आयुर्वेदिक पद्धति द्वारा बतलाया गया है। घरेलू चिकित्सा के इच्छुक तथा चिकित्सकगण दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी है। □ पृष्ठ 500, □ सचित्र, □ मूल्य 30/ देहाती पुस्तक भण्डार (Regd.) चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# ॥ हादिविद्यायुतं श्रीचक्रम् ॥

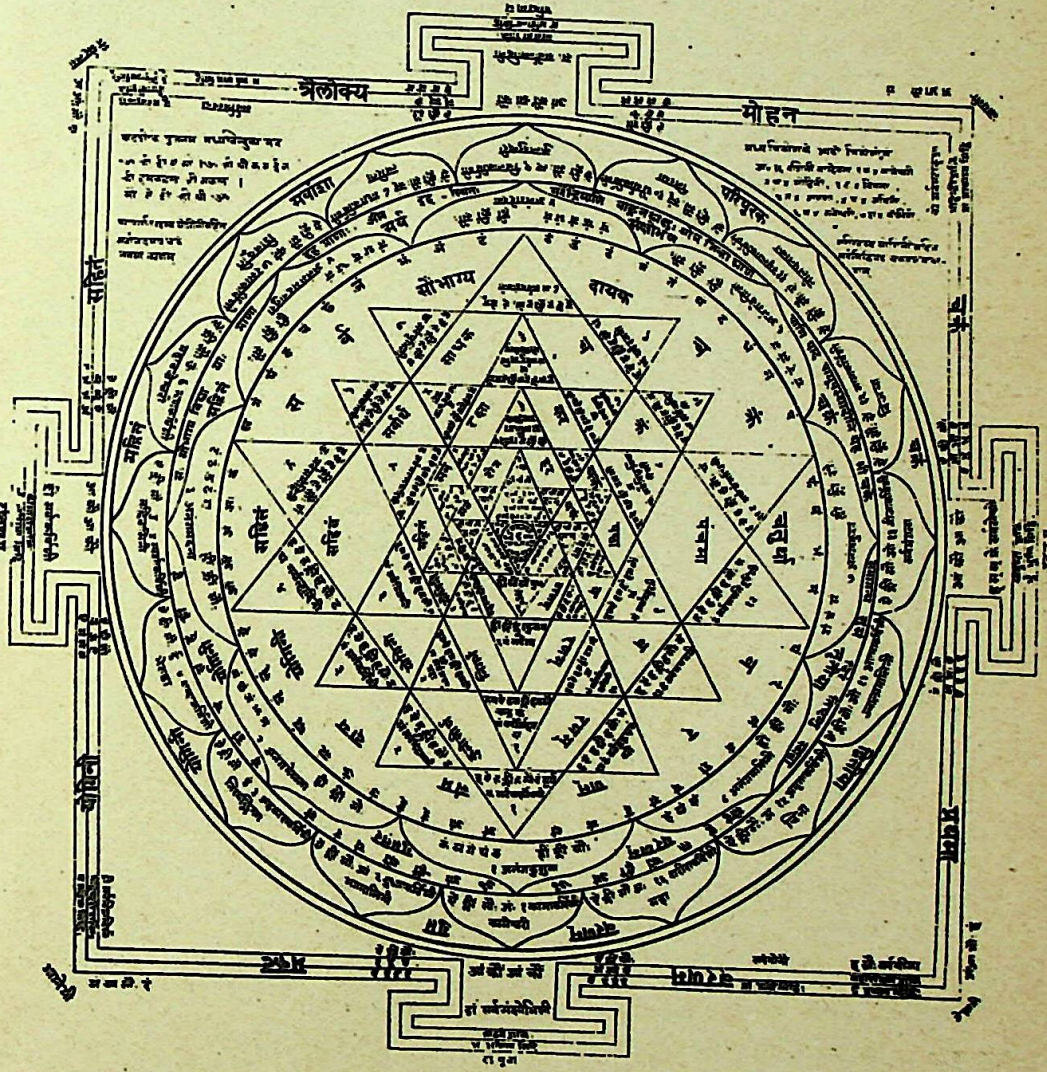


CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

असली प्राचीन हस्तलिखित भृगुसंहिता महाग्रन्थ

सकल पदारथ हैं जगमाहीं । भाग्यहीन नर पावत नाहीं ॥

दक्षिणा 501/- रु० सिर्फ

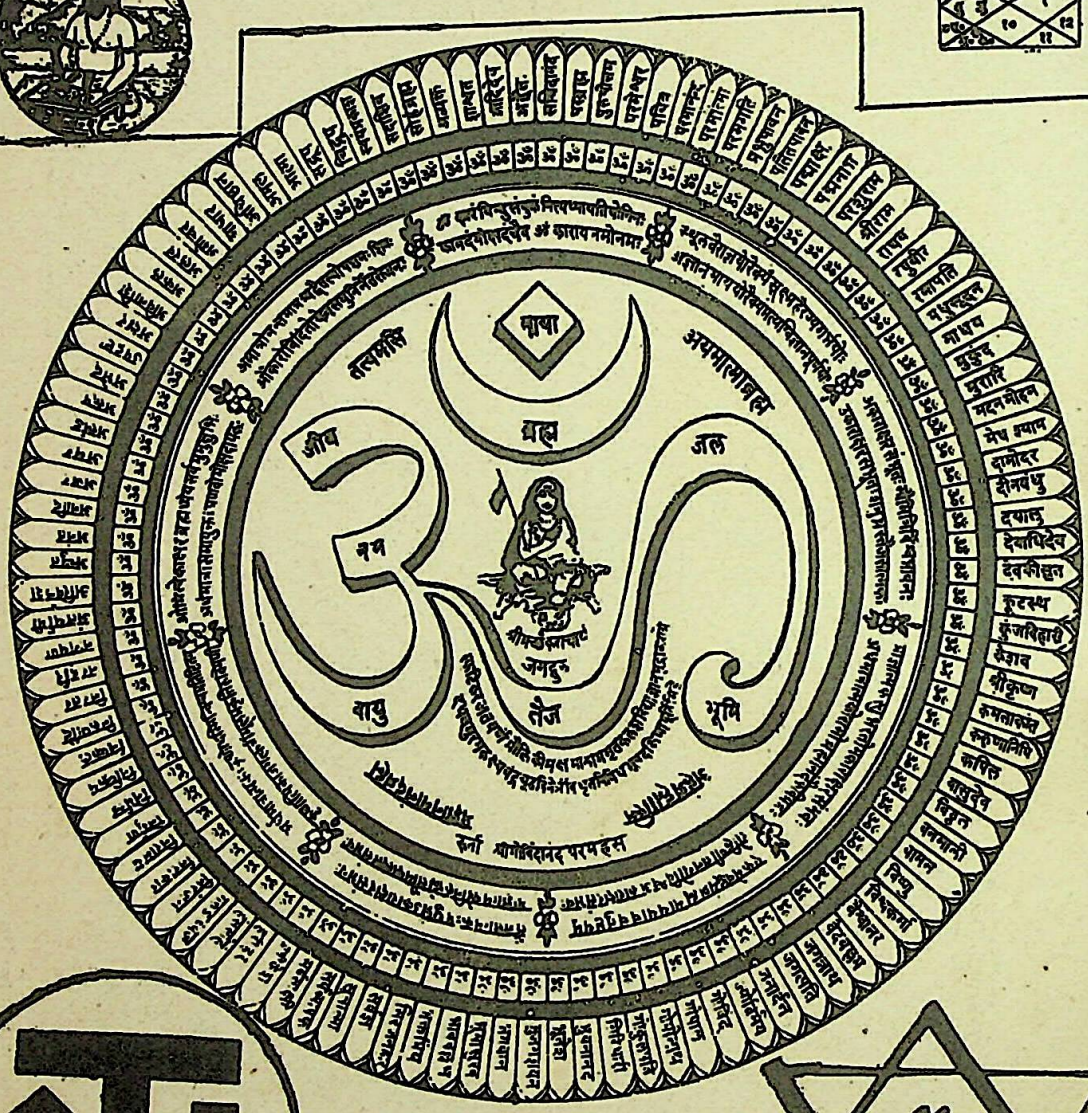


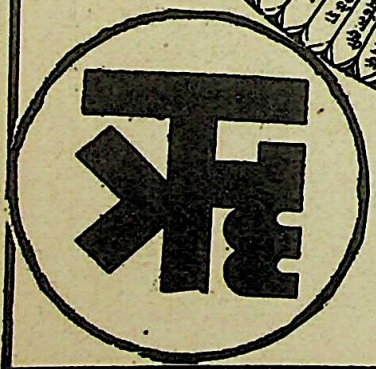

ॐकार-महिमा

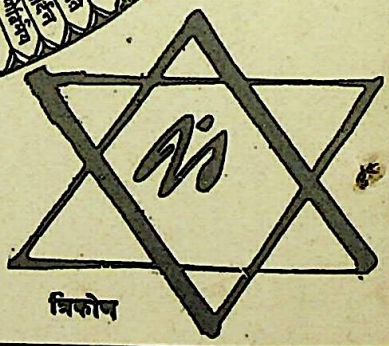

त्रिकोण

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

अर्धनारी नटेश्वर म्हणजे - आर्धांगिनी धारण करणारा किंवा मोठा नट शक्तियुक्त शिव किंवा प्रकृति पुरुष

- पंचकर्णांचे अनुभव घेऊन प्राणायाम करण्याची रीत खालीदाखविल्याप्रमाणे आनुभव आपल्या गुरु जवळ घेणे

# प्राणायाम.

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# शून्य चक्र

सहस्त्रदल पद्म

विसर्ग परम शिव

BRAIN

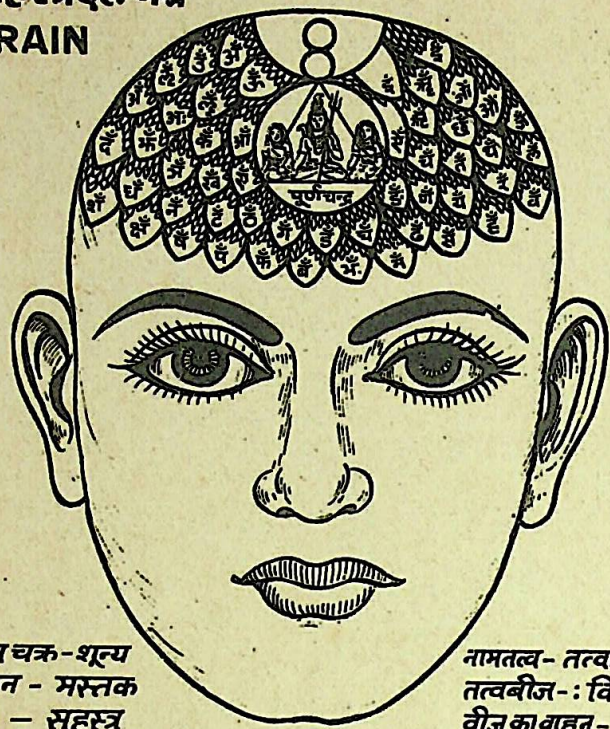


नाम चक्र - शून्य
स्थान - मस्तक
दल — सहस्त्र
दलों के अक्षर - अँ से क्षँ तक
लोक — सत्यः

नामतत्व - तत्वातीत
तत्वबीज - : विसर्ग
बीज का वाहन - विन्दु
देव — परब्रम्ह
देवशक्ति - महाशक्ति
यन्त्र - पूर्णचन्द्र निराकार
ध्यान फल-अमर- मुक्त

उत्पत्ति पालन में समर्थ आकाश गामी और समाधि युक्त होता है।

## षट्चक्र मूर्ति

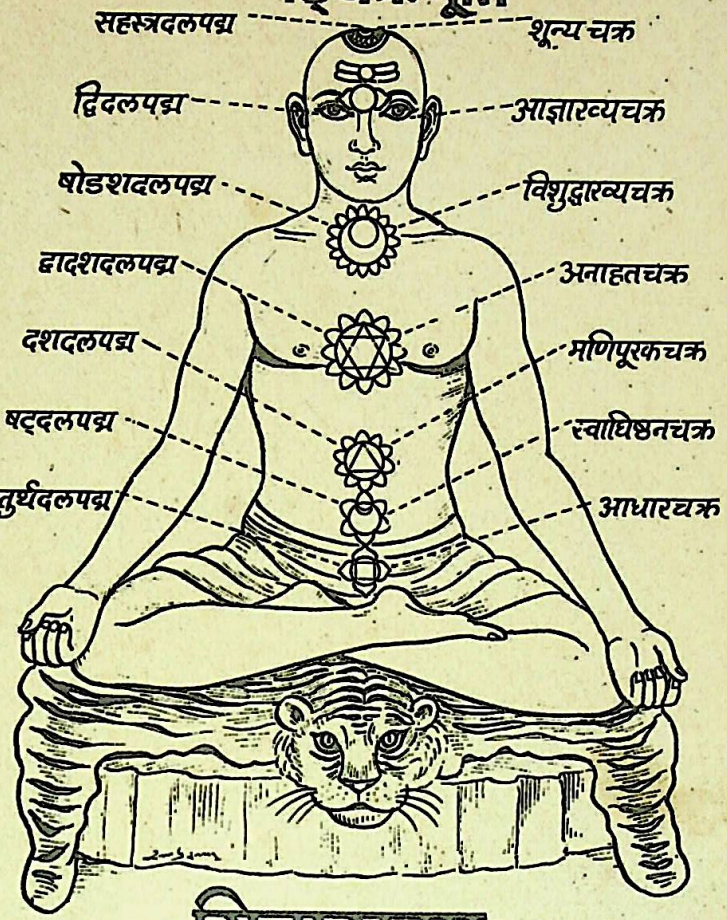


सिद्धासनम्

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

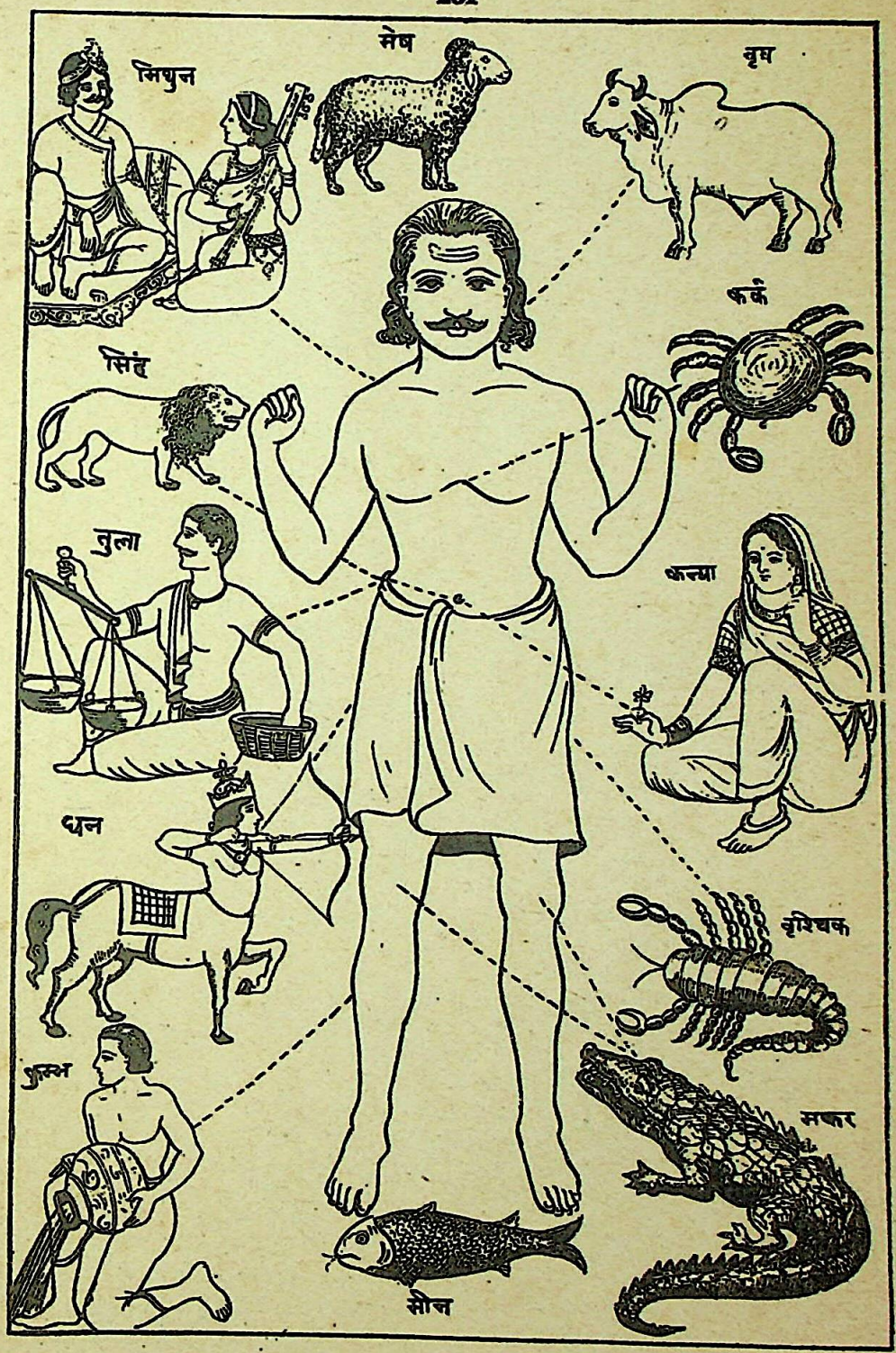


CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# सिद्ध रुद्राक्ष धारण फल

भारतवर्ष में आजकल रुद्राक्ष धारण का प्रचलन काफी बढ़ता जा रहा है। पौराणिक दृष्टि से उसको पर्याप्त धार्मिक मान्यता प्राप्त है। रुद्राक्ष धारण करने वाले भक्त भगवान शिव को अत्यन्त प्रिय होते हैं। यथायोग्य सिद्ध रुद्राक्ष की माला पहनने से शरीर में रक्त का संचालन सही रूप में होता है अर्थात् रक्तचाप (ब्लड प्रैशर) को रोगी का रक्त कंट्रोल करने में बड़ी सहायता मिलती है। हृदय को शक्ति मिलने के साथ-साथ शहद में घिसकर रुद्राक्ष देने से मूर्च्छा तथा मृगी जैसे रोगों से भी छुटकारा मिल जाता है। पेट के रोग इससे दूर होते हैं। रुद्राक्ष धारण करने से सकट दूर होकर सर्वदा कल्याण होता है। इतना ही नहीं, बल्कि ब्रह्महत्या जैसे पापों से मुक्ति मिलकर अन्त में मोक्ष की प्राप्ति होती है। यहाँ पर पाठकों के लाभार्थ संक्षेप में रुद्राक्ष की उत्पत्ति तथा एक मुख से लेकर चौदह मुख रुद्राक्ष का फल दिया गया है। पूजन विधि आदि विस्तृत जानकारी के लिए "सिद्ध रुद्राक्ष प्रयोग विधि" नामक पुस्तक ?1/- (इक्कीस रु०) का M. O. भेजकर देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली से मंगायें।

### पौराणिक रुद्राक्ष उत्पत्ति की कथा

स्कन्द ने शिवजी से पूछा—हे देव, महान् गुण सम्पन्न रुद्राक्ष का निर्माण कैसे हुआ? रुद्राक्ष के कितने मुख होते हैं और उनकी धारणा विधि व मन्त्र क्या हैं? विस्तृत रूप से कहिए।

भगवान् शंकर कहने लगे, हे स्कन्द! प्राचीन काल में त्रिपुर नाम का एक अजेय दैत्य था। ब्रह्मा, विष्णु तथा इन्द्रादि देवता उससे पराजित होकर मेरे पास आये और त्रिपुर को मारने की प्रार्थना की। तब जिसे देखने का सामर्थ्य न कर सके, ऐसा कालाग्नि नाम का अघोर शस्त्र मैंने धारण किया। उस शस्त्र को देखने मात्र से देवताओं की आंखें एक हजार वर्ष तक उन्मीलन करती रहीं। तेज प्रकाश की व्याकुलता से उनकी आँखों से जो आंसू गिरे, उनसे मनुष्य लोक में आरोग्यदायी रुद्राक्ष वृक्ष का निर्माण हुआ। इसकी माला पहनने, जपजाप्य से सौ करोड़ गुणा पुण्य प्राप्त होता है। साथ ही हाथ, कान, मस्तक तथा गले में सच्चा रुद्राक्ष धारण करने से अत्यन्त दुर्लभ मृत्युंजय पद मिलता है। हे महाभाग! रुद्राक्ष धारण करने वाला समस्त पापों से मुक्त हो जाता है।

स्कन्द ने प्रश्न किया—हे भगवन्! रुद्राक्ष में जो एक मुख से लेकर चौदह मुख के प्रकार हैं उनके गुणों का वर्णन क्रमशः कीजिए।

भगवान शंकर ने कहा, हे स्कन्द! एक मुखी रुद्राक्ष का फल सुनो—

### 1. एकमुखी रुद्राक्ष

एकमुख वाले रुद्राक्ष को सोमवार के दिन प्रातःकाल यथाविधि न्यासादि करके 'ॐ एं ह्रं श्रीं ऐं ॐ' मन्त्र का 108 बार जप करके धारण करना चाहिए।

एकमुखी रुद्राक्ष शिव स्वरूप माना जाता है। इसके धारण से ब्रह्महत्या जैसे पाप दूर हो जाते हैं। इसके पूजन से लक्ष्मी का वास होता है। इसे धारण करने वाला चिन्तामुक्त होकर निर्भय रहता है। कोई भी शत्रु उसे हानि नहीं पहुँचा सकता।

### 2. द्विमुखी रुद्राक्ष

दो मुख वाले रुद्राक्ष को यथाविधि सोमवार को प्रातः काल, शिवरात्रि या महाशिवरात्रि को 'ॐ ह्रीं क्लीं ह्रीं ॐ' मन्त्र का 108 बार जाप करके धारण करना चाहिए।

देव-देव नाम वाले दो मुख के रुद्राक्ष को धारण करने से गोहत्या जैसे पाप दूर होकर स्वर्ग प्राप्ति में सहायक होता है। साथ ही धन-धान्य से सम्पन्न होकर चिन्ताओं से मुक्त हो जाता है।

### 3. त्रिमुखी रुद्राक्ष

तीन मुख वाले रुद्राक्ष को सोमवार के दिन यथा विधि 'ॐ रं ह्रं ह्रीं ह्रूं ओं' मन्त्र का 108 बार जप करके धारण करें।

तीन मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् अग्नि स्वरूप होता है। यह स्त्री-हत्या जैसे पापों को नष्ट करने वाला, विद्या प्रदाता, शत्रु नाश, पेट की व्याधि तथा अपघात जैसी अशुभ घटनाओं से रक्षा करता है।

### 4. चतुर्मुखी रुद्राक्ष

चौमुखी रुद्राक्ष को सोमवार के दिन विधि पूर्वक प्रातः काल 'ॐ वां क्रां त्रां हां इं' मन्त्र का जप करके गले में धारण करें। यदि इच्छा न हो तो पाकिट में साथ रखें। प्रतिदिन एक बार मन्त्र का जप अवश्य करें।

चार मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् 'ब्रह्मा' कहा गया है। इसे धारण करने वाला वेदशास्त्र ज्ञाता, सबका प्रिय तथा धन-संपन्न होता है। किसी प्रकार की कमी नहीं रहती। इससे आत्महत्या का पातक दूर हो जाता है। आंखों में तेज, वाणी में मिठास, शरीर से स्वस्थ तथा दूसरों को आकर्षित करने का गुण उसमें आ जाता है।

### 5. पंचमुखी रुद्राक्ष

पाँच मुख वाले रुद्राक्ष को सोमवार के दिन प्रातःकाल काले धागे में गूंथकर यथाविधि धारण करें और 'ॐ ह्रां क्रां वां हां' मन्त्र या 'ॐ ह्रीं नमः' का 108 बार जप करें। यदि सोमवार को इतना समय न मिले तो प्रातः स्नान करके एक बार अवश्य जपें।

यह रुद्राक्ष 'कालाग्नि' नाम से जाना जाता है। सब रुद्राक्षों में इसे अधिक शुभ तथा पुण्यदाता माना गया है। इसे धारण करने से यश, वैभव, संपन्नता, सुख-शांति तथा प्रतिष्ठा बढ़ती है। दूषित तथा अभक्ष्य अन्नादिक सेवन से उत्पन्न विकार तथा बाधाओं का शमन हो जाता है।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

### 6. षट्मुखी रुद्राक्ष

छह मुख वाले रुद्राक्ष की 'कार्तिकेय' संज्ञा है। सोमवार को प्रातःकाल काले धागे में गूँथकर पहने। फिर यथाविधि न्यासादि करके 'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सौं ऐं' मन्त्र जप करे अथवा स्नानादि करके प्रतिदिन 'ॐ ह्रीं हुं नमः' पढ़े।

इस रुद्राक्ष को धारण करने वाला शुभ लक्षणों से युक्त, सद्गुणी तथा धैर्यवान हो जाता है। सभा-सम्मेलनों में बोलने की शक्ति प्राप्त होती है। उस पर पार्वती देवी की विशेष कृपादृष्टि रहती है।

### 7. सप्तमुखी रुद्राक्ष

सात मुख वाले रुद्राक्ष का नाम 'अनन्त' है। इसे सोमवार के दिन काले धागे में गूँथकर धारण करे। विधिपूर्वक करन्यास, अंगन्यास तथा ध्यान करके 'ॐ ह्रं क्रीं ह्रीं सौं' मन्त्र का जाप करे। प्रतिदिन इस मन्त्र अथवा 'ॐ हुं नमः' का पाठ करे।

इस रुद्राक्षधारी को विष बाधा नहीं सताती। सभी पाप व शोक नष्ट होकर सुख, शान्ति तथा लाभ प्राप्त होता है। स्त्री वशीकरण, गुप्त धन तथा कीर्ति प्राप्त कर निरंतर तरक्की करता जाता है।

### 8. अष्टमुखी रुद्राक्ष

आठ मुख वाले रुद्राक्ष को प्रत्यक्ष 'गणेश' का अवतार माना गया है। सोमवार के दिन काले धागे में गूँथकर इस रुद्राक्ष को धारण करे। यथाविधि न्यासादि करके 'ॐ ह्रां ग्रीं लं आं श्रीं' मन्त्र का पहले दिन जप करे। इसके बाद प्रतिदिन उपरोक्त मन्त्र अथवा 'ॐ हुं नमः' का पाठ करे।

इसे धारण करने वाले को जीवनभर अपयश का मुँह नहीं देखना पड़ता। विद्या प्राप्त होना इसकी सर्वश्रेष्ठता है।

### 9. नवमुखी रुद्राक्ष

नौ मुख वाला रुद्राक्ष 'भैरव' नाम से प्रसिद्ध है। सोमवार के दिन भगवान के सामने यथाविधि पूजन करके काले धागे में बाँधकर गले में बाँधे और 'ॐ ह्रीं वं यं रं लं' मन्त्र का जप करे। इसके पश्चात् भगवान शंकर का चित्र सामने रखकर प्रतिदिन उपर्युक्त मन्त्र अथवा 'ॐ ह्रीं हुं नमः' का पाठ करे।

इस रुद्राक्षधारी, शिव का अत्यन्त प्रिय होने से स्वर्ग में इन्द्र के समान पूजा जाता है। मृत्यु लोक में धन संपत्ति, ऐश्वर्य तथा मान-प्रतिष्ठा की कमी नहीं रहती।

### 10. दशमुखी रुद्राक्ष

दस मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् जनार्दन विष्णु भगवान का रूप माना गया है। सोमवार को प्रातः स्नान करके भगवान के सामने यथाविधि पूजन व न्यासादि करके काले धागे में बांधकर पहने तथा ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं व्रीं ॐ' मन्त्र जपे।

इस रुद्राक्ष को धारण करने से सर्पादि का भय नहीं होता। भूत, प्रेत, पिशाच तथा ब्रह्मराक्षस आदि बाधाएँ नहीं सतातीं। यह रुद्राक्ष अत्यन्त शक्तिशाली होता है।

### 11. एकादशमुखी रुद्राक्ष

ग्यारह मुख वाला रुद्राक्ष रुद्रस्वरूप माना गया है। सोमवार को प्रातः स्नान करके भगवान के सामने चौरंग रख, उस पर आसन बिछा रुद्राक्ष रखें। फिर परमेश्वर का ध्यान कर अनन्य भाव से रुद्राक्ष को नमस्कार कर यथाविधि न्यासादि करके पूजन व 'ॐ रूं मूं औं' मन्त्र का जप करे। बाद में रुद्राक्ष को काले धागे में गूंथ कर गले में पहने। अन्य दिन ऊपर कहे गये मन्त्र अथवा 'ॐ ह्रीं हुं नमः' को प्रातःकाल पढ़े।

यह रुद्राक्ष धारण करने से चन्द्र ग्रहण में किये गये दान तथा वाजपेय यज्ञ से भी हजार गुना पुण्य फल मिलता है। यश, वैभव तथा पर्याप्त प्रसिद्धि मिलती है।

### 12. द्वादशमुखी रुद्राक्ष

बारह मुख वाला रुद्राक्ष आदित्य स्वरूप अर्थात् सूर्य के समान तेजस्वी माना गया है। सोमवार के दिन प्रातः सूर्योदय होते ही नारायण को नमस्कार करे। फिर रुद्राक्ष हाथ में लेकर सूर्य की किरणों का स्नान करावे। तदनन्तर घर के पवित्र स्थान में भगवान् के समीप चौरंग (चौकी) बिछा, उस पर रखे। फिर काले धागे में गूंथ कर यथा विधि न्यासादि करके 'ॐ ह्रीं क्षौं घृणिः श्रीं' मन्त्रोच्चारण के साथ गले में धारण करे। अन्य दिन स्नानादि करके उपर्युक्त मन्त्र या 'ॐ क्रों क्षौं रौं नमः' सूर्य दर्शन करके केवल एक बार पढ़े।

इसे धारण करने से चोर, अग्नि, दारिद्रय तथा व्याधियों से मुक्ति मिलती है। कुछ ही समय में धन पुत्रादि से भरा-पूरा हो जाता है। जंगली विषैले जीव-जन्तु, दुःख तथा निराशा उसे छू भी नहीं सकती।

### 13. त्रयोदशमुख रुद्राक्ष

तेरह मुख वाले रुद्राक्ष की 'इन्द्र' संज्ञा मानी गई है। इस रुद्राक्ष को सोमवार के दिन भगवान् के सामने आसन पर विराजमान करें। फिर यथाविधि न्यासादि करें। 'ॐ ईं यां आप औं' मन्त्र पाठ करके काले धागे में गूँथ कर गले में पहन लो। नित्यप्रति भगवान का दर्शन और रुद्राक्ष स्पर्श कर उपरोक्त मन्त्र या 'ॐ ह्रीं नमः' कहे।

इसे धारण करने वाले की सभी कामनायें पूर्ण होती हैं। ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त होकर पापों से मुक्त हो जाता है।

### 14. चतुर्दशःमुखी रुद्राक्ष

चौदह मुख वाला रुद्राक्ष हनुमान का स्वरूप माना गया है। सोमवार के दिन प्रातःकाल स्नानादि करके भगवान के सामने चौकी पर आसन बिछा रुद्राक्ष को विराजमान कर नमस्कार करे। विधिपूर्वक पूजन करे। 'ॐ ह स्फें खव्फ्रें हस्रौं हसव्फ्रें' मन जपे। अन्त में रुद्राक्ष काले धागे में गूंथकर गले में धारण करें। अन्य दिन प्रातः भगवान के सामने रुद्राक्ष का स्पर्श कर उपर्युक्त मन्त्र या 'ॐ नमः' मन्त्र पढ़ें।

यह बलशाली रुद्राक्ष हनुमान का प्रतीक होने से भूत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी आदि तथा अन्य संकटों से रक्षा कर, बल एवं साहस प्रदान करता है।

विशेष जानकारी के वास्ते 2/- (दो रु०) का M.O. पत्र-व्यवहार के लिए भेजें।

पता— ज्योतिषाचार्य पं० मुकुट बिहारी लाल शर्मा,
(V. & P.O. पैगांव (Paigaon), जिला मथुरा (U. P.)

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# कन्या के लिए योग्य वर न मिलने से क्या आप परेशान हैं ? अथवा आपके लड़के के लिए मनपसन्द वधू नहीं मिल रही ?

भारतीय समाज के हिन्दू परिवारों में अपनी कन्या के लिए योग्य वर ढूंढना एक समस्या है। इसमें दहेज की बाधा तो होती ही है, वर पक्ष वाले कन्या में सभी अलौकिक गुणों की अपेक्षा रखते हैं। उनका लड़का चाहे कम पढ़ा-लिखा हो, मामूली सर्विस करता हो, साधारण रूप गुण वाला हो, परन्तु कन्या का सर्वगुण सम्पन्न, अपूर्व सुन्दरी होना आवश्यक है। कन्या के माता-पिता व अभिभावकों को पूरा दहेज देने के साथ-साथ वर-पक्ष के सभी नाज-नखरे भी उठाने पड़ते हैं। मेरे पास विवाह-योग्य कन्याओं के ऐसे अभिभावक आते ही रहते हैं और अपनी परेशानी बताने पर मैं उनको निम्नलिखित तन्त्र बता दिया करता हूँ। गुरु प्रदत्त एवं अनुभव सिद्ध इस तन्त्र से 80-90 प्रतिशत लोगों को तुरन्त सफलता मिल चुकी है। इसकी सहायता से अनेक कन्याओं को मनचाहा वर प्राप्त हुआ है तथा उनके अभिभावकों की मानसिक परेशानी दूर हुई है।

## ● कन्या के लिए योग्य वर प्राप्ति

जिस प्रकार बिना श्रद्धा के ईश्वर का साक्षात्कार नहीं हो सकता, उसी प्रकार श्रद्धा और विश्वास के बिना यन्त्र-मन्त्र व तन्त्र भी फलदायी सिद्ध नहीं होते। मन में किसी प्रकार की शंका व सन्देह नहीं रखना चाहिए। कुछ लोग तन्त्रों को जादू-टोना (टोटका) समझ कर अकारण ही भयभीत होने लगते हैं। इसलिए तन्त्र प्रयोग में सबसे पहले यह विश्वास दिलाना आवश्यक है कि यह शुद्ध वैष्णव तन्त्र है। इससे किसी प्रकार की हानि नहीं होती। माता पार्वती के इस तन्त्र का प्रयोग पूर्ण विश्वास एवं श्रद्धा के साथ किया जाए तो निश्चित सफलता मिलती है। दूसरी खास बात यह है कि इसको गुप्त रखा जाए अर्थात् क्रिया करते समय किसी के द्वारा टोका-टाकी नहीं होनी चाहिए। नीचे लिखी वस्तुओं को एकत्रित करें। ऐसा करते समय किसी को यह अवसर न दो कि वह आपसे पूछे कि यह क्या है, क्यों कर रहे हो, कहाँ जा रहे हो ? इन चीजों को लाते समय यदि इस प्रकार की टोका-टाकी हो भी जाए तो उस कार्य को दोबारा बिना टोके प्रयोग में लाना चाहिए। घर के खास आदमियों (माता, पिता, कन्या, अभिभावक) के अतिरिक्त किसी अन्य को अपना अभिप्राय नहीं बताना चाहिए।

(1) छोटी या बड़ी सात साबुत सुपारी, (2) हल्दी की साबुत छोटी या बड़ी सात गाँठें, (3) गुड़ की छोटी-छोटी सात डली, (4) हल्दी या केसर से पीले रंगे जनेऊ के सात जोड़े, (5) पीले रंग के सात फूल ताजा उसी दिन के लाए हुए, (6) चने की दाल सत्तर ग्राम, (7) पीले रंग का कपड़ा सत्तर सेंटीमीटर (यदि सफेद रंग का कपड़ा मिले तो उसे पीला रंग लें), (8) पीले रंग के सात सिक्के (आजकल दस या बीस पैसे के सिक्के पीले रंग के मिल जाते हैं। यदि न मिलें तो पीतल के सात गोल टुकड़े कटवा लें), (9) अष्टगंध से अनार की कलम द्वारा भोज-पत्र पर 15 का यन्त्र लिखकर उस पर माता पार्वती का बीजमन्त्र, कन्या का नाम तथा मनचाहे वर की प्राप्ति की प्रार्थना लिखकर रख लें। यदि चाहें तो ऐसा बना बनाया यन्त्र हमारे यहाँ से केवल 31/- (इकतीस रुपए) M.O. द्वारा भेजकर मंगा सकते हैं।

जब उपर्युक्त वस्तुएँ इकट्ठी हो जाएँ तो बृहस्पतिवार को प्रातःकाल कन्या स्नान कर माता पार्वती का ध्यान करके शंकर-पार्वती या दुर्गा देवी की मूर्ति या चित्र के सामने मन ही मन प्रार्थना करे कि उसे मनचाहा वर प्राप्त हो। कन्या स्वयं अथवा उसके माता-पिता या अभिभावक कुछ मनौती मानें कि माँ की कृपा से मनोकामना पूरी होने पर इतनी रकम धर्मार्थ दान करेंगे। इसके पश्चात् सभी वस्तुओं को पीले कपड़े में बांधकर घर के किसी ऐसे सुरक्षित कोने में उठाकर रख दें, जहाँ किसी बाहरी व्यक्ति की दृष्टि न पड़े। ये सभी वस्तुएँ कन्या के हाथ से ही उठवाकर रखी जायें। भगवती की कृपा से 40 दिन में कार्य सिद्ध हो जाता है या उसके होने के आसार नजर आने लगते हैं। मेरे यजमानों तथा ग्राहकों में सैकड़ों परिवार ऐसे हैं जिनका कार्य सिद्ध हुआ है। हाँ, कुछ केसों में आजकल की मॉडर्न कहलाने वाली लड़कियों ने शंका (सन्देह) करके इसे ढकोसलापन मानकर सच्चे मन से तन्त्र का प्रयोग नहीं किया, उन्हें सफलता नहीं मिली, परन्तु जब दुबारा श्रद्धापूर्वक तन्त्र प्रयोग किया तो उन्हें भी सफलता प्राप्त हुई है।

जब कार्य सिद्ध हो जाए तो तन्त्र की मनौती की रकम किसी विद्वान ब्राह्मण को, माता के मन्दिर में या अन्य किसी धार्मिक संस्था को दान कर देनी चाहिए। यदि यन्त्र हमसे मंगाया हो और हमारे लिए कुछ मनौती बोली हो तो उसे हमारे यहाँ भेज दें।

कन्या को देखने के लिए वर पक्ष के लोग कन्यापक्ष के घर या अन्य किसी उपयुक्त स्थान पर आते हैं। उनमें

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

सभी प्रकार की मनोवृत्ति के लोग होते हैं। कन्यापक्ष की ओर से उनके आतिथ्य सत्कार का प्रबन्ध किया जाता है और उसमें चाय, शर्बत, मिष्ठान या अन्य खाद्य-पदार्थ पेश किए जाते हैं। यदि उन पेय खाद्य-पदार्थों में कोई अभिमन्त्रित वस्तु मिला दी जाए तो वरपक्ष के लोगों पर मनोवैज्ञानिक अनुकूल प्रभाव होता है। थोड़ी चीनी, इलायची या मिसरी आदि लेकर उस पर मन्त्र पढ़कर उसे चाय, शर्बत या मसाले आदि में मिला देने से वर पक्ष का निर्णय अनुकूल होता देखा गया है। इन वस्तुओं को यदि उनके साथ बैठकर कन्या पक्ष वाले भी खा लें तो भी कोई निषेध नहीं है। हाँ, इसमें कोई बाहरी अखाद्य वस्तु नहीं मिलानी चाहिए, जो कि किसी के स्वास्थ्य के लिए हानि-प्रद हो। वर पक्ष में सभी प्रकार की मनोवृत्ति के लोग होने से उनमें दुष्ट प्रकृति के, अकारण मीन-मेष निकालने या विघ्न-बाधा डालने वाले कुटिल वृत्ति के भी कुछ लोग हो सकते हैं। अभिमन्त्रित पदार्थ उन पर अनुकूल मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालने में सफल होता है।

अभिमन्त्रित पदार्थ की विधि यह है कि कोई शुद्ध हृदयी, सदाचारी, धार्मिक पूजा-पाठ करने वाला पुरुष या स्त्री स्नान करके, साफ कपड़े पहन, नंगे पैर थोड़ी चीनी, छोटी या बड़ी इलायची अथवा मिसरी कोई सी एक वस्तु लेकर भगवती माँ की मूर्ति या चित्र के सामने खड़े होकर या बैठकर नीचे लिखा गया सिद्ध मन्त्र कम से कम सात बार या अधिक से अधिक 21 बार पढ़े। हर बार मन्त्र पढ़कर उस वस्तु पर फूंक मारता जाए। इस प्रकार वह पदार्थ अभिमन्त्रित हो जाता है। कोई भी अधिकारी व्यक्ति अथवा माता का उपासक इस मन्त्र को सवा लाख की संख्या में जप करके सिद्ध कर सकता है। सिद्ध मन्त्र का प्रभाव अधिक होता है। समय का अभाव हो और कोई सिद्ध मन्त्रवेत्ता न मिले तो आप ऐसा पदार्थ हमारे यहाँ से भी मंगा कर रख सकते हैं।

मन्त्र इस प्रकार है—"ॐ क्लीं क्लीं ·· ···(वर पक्ष का नाम)····· ···(कन्या का नाम) वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।" यदि निर्णय वर पक्ष के हाथ में हो तो वर पक्ष के स्थान पर (खाली स्थान पर) वर का नाम, अन्यथा उसके माता-पिता या जिसके हाथ में निर्णय है उसका नाम लो और उसके साथ खाली स्थान पर कन्या का नाम लेकर मन्त्र बोलना चाहिए। (मान लो वर का नाम श्यामलाल और कन्या का नाम शीला है तो पूरा मन्त्र इस प्रकार बनेगा—"ॐ क्लीं क्लीं श्यामलालं शीला वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।"

यदि कन्या पढ़ी-लिखी तथा धार्मिक वृत्ति की है तो उसे तुलसीकृत रामायण के बालकाण्ड की "जय-जय गिरिराज किशोरी" से आरम्भ करके "वाम अंग फरकन लागे" तक की चौपाई, दोहा तथा सोरठा का 40 दिन प्रातः स्नान करके नित्य पाठ कर सके तो और भी अच्छा है।

### ● वर के लिए मनचाही धर्मपत्नी की प्राप्ति

अच्छे घरानों के लड़कों के विवाह में प्रायः कोई दिक्कत नहीं आती। कदाचित किसी को मनचाही पत्नी की प्राप्ति में देर अथवा कोई बाधा हो तो नित्य स्नान करके स्वच्छ वस्त्र पहन कर भगवती माँ की मूर्ति या चित्र के सामने बैठकर दुर्गा सप्तशती के अर्गला स्तोत्र में वर्णित 24वें श्लोक. "पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्। तारिणीं दुर्ग संसारसागरस्य कुलोद्भवाम्॥" का 40 दिन तक श्रद्धापूर्वक पाठ करने से शीघ्र मनोकामना पूरी होती है। जो लोग पाठ नहीं कर सकते अथवा चाहें तो पाठ के साथ-साथ नीचे बताए गए तन्त्र को उपरोक्त कन्या तन्त्र के नियमों के अनुसार ही शुक्रवार को प्रातःकाल उठाकर रख दें। (1) सफेद रंग के चांदी के सिक्के, यदि सिक्के न हों तो चांदी के सात गोल टुकड़े कटवा लें, (2) सफेद चावल 70 ग्राम, (3) मिसरी की डली छोटी सात, (4) सफेद रंग का कपड़ा 70 सेंटीमीटर, (5) सफेद रंग के फूल 7, (6) सफेद चन्दन के छोटे-छोटे सात टुकड़े, (7) यज्ञोपवीत (जनेऊ) के सात जोड़े, (8) सफेद रंग की सात इलायची (हरी न हों), (9) भोजपत्र पर अनार की कलम से अष्टगन्ध द्वारा शुक्रवार को लिखा गया 'शुक्र' का यन्त्र, जिसमें वर का नाम तथा उपरोक्त श्लोक लिखा हो, इन सब वस्तुओं को शुक्रवार को प्रातःकाल विवाह का इच्छुक पुरुष स्नान करके भगवती माँ के सामने प्रार्थना करके मनौती मानकर उठाकर रख दे तो 40 दिन में कार्य सिद्ध हो जाता है।

पांडित्य संबंधी कोई बात पूछनी हो तो जवाबी कार्ड भेजकर मालूम कर सकते हैं। हमारा पता है—पं मुकट बिहारी लाल शर्मा, मु० व पोस्ट पैगांव, जिला मथुरा (उत्तर प्रदेश)।

इस प्रकार के अनेक अनुभूत मन्त्र यन्त्र प्रयोग "सिद्धिदाता यन्त्र साधना" नामक पुस्तक में दिए हैं जो 'देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6' से 21/- का M.O. भेजकर मंगा सकते हैं।

पति-पत्नी का चुनाव (सलेक्शन आफ हस्बैंड एण्ड वाइफ) नामक पुस्तक सैंकड़ों चित्रों से सुसज्जित। मूल्य 30/- रुपये M.O. भेजकर मंगायें।

मंगाने का पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# 12/- का M.O. भेजकर भाग्यवान बन जाइए !

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली द्वारा प्रकाशित

## नये वर्ष की इस जन्त्री से विश्व का कोई भी परिवार वंचित नहीं रहना चाहिए

## नए सन् की श्री बापू मशहूर राष्ट्रीय जन्त्री ही क्यों खरीदें ?

शुभ मुहूर्त व शुभ चौघड़ियों में बनी यह जन्त्री जिस परिवार में भी गई वह धन्य-धान्य एवं आनन्द-मंगल से भरपूर हो गया तथा सभी सांसारिक सुखों को भोगता हुआ उन्नति के पथ पर अग्रसर हुआ। जिस व्यक्ति के हाथों में यह जन्त्री होगी, उसकी सभी चिन्ताएँ दूर होंगी, मनोकामना पूर्ण होकर जीवन सुखमय बनेगा। लाखों परिवार व व्यक्ति इस जन्त्री को खरीदकर अपने मन की मुराद पूरी कर चुके हैं। इस जन्त्री के पास रहने पर—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ★ नौकरी | ★ जायदाद | ★ आर्थिक समस्या का समाधान | ★ विदेशी व्यवसाय |
| ★ व्यापार में तरक्की | ★ सवारी सुख | ★ तेजी-मन्दी | ★ सास-ससुर का सुख |
| ★ आपसी विवाद का हल | ★ कर्ज लेना-देना | ★ चोरी गई वस्तु का पता | ★ वशीकरण |
| ★ रोग से छुटकारा | ★ मान-सम्मान | ★ विदेश यात्रा में सफलता | ★ कलह निवारण |
| ★ शत्रुओं पर विजय | ★ शनि की ढैया | ★ लाटरी पुरस्कार | ★ कारागृह से छुटकार |
| ★ परीक्षा में सफलता | ★ साढ़े साती | ★ गड़े धन की प्राप्ति | ★ राजदंड से मुक्ति |
| ★ प्रेम-मुहब्बत | ★ राहु केतु की दशा | ★ यात्रा में सफलता | ★ अकालमृत्यु |
| ★ मुकद्दमे में जीत | ★ सुख-शान्ति | ★ औद्योगिक उन्नति | ★ पार्टनरशिप |
| ★ शादी-विवाह | ★ सन्तान सुख | ★ सर्वसिद्धि लक्ष्मी | ★ प्रमोशन आदि |

सभी का समाधान भगवत्कृपा से शीघ्र हो जाता है। हजारों प्रशंसा-पत्र आते रहते हैं, हम कहाँ तक स्टाक करें।

नोट—अपने इष्टदेव का ध्यान करके श्रद्धापूर्वक इस जन्त्री को प्रयोग में लायें। यदि सम्भव हो तो स्वच्छ वस्त्र में लपेट कर हर समय अपने साथ रखें और फिर देखें इसका चमत्कार।

● इस **बापू मशहूर राष्ट्रीय जन्त्री** को भारतीय धार्मिक पर्व—विजयादशमी (दशहरा), धनतेरस, दीपावली, देव-उठनी एकादशी, कार्तिकी पूर्णमा आदि; राष्ट्रीय-पर्व—15 अगस्त, 2 अक्टूबर तथा 26 जनवरी एवं अन्य विविध मांगलिक अवसरों—नामकरण, जन्म दिन आदि पर दान करने से विशेष पुण्य-फल प्राप्त होता है।

जन्त्री अपने नगर के पुस्तक विक्रेता, न्यूज पेपर एजेन्ट से प्राप्त करें वहाँ न मिलने पर डायरेक्ट हमें लिखें।

★ 5 प्रतियाँ दान करनेवाले को गंगा-स्नान का फल ★ 11 प्रतियाँ दान करनेवाले को गोदान का फल

★ 21 से 101 प्रतियां दान करनेवाले को अक्षय पुण्य-फल प्राप्त होकर समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।

★ इसके अतिरिक्त धनी, दानी, सेठ-साहूकार, मिल-मालिक, पूँजीपति जिनके हृदय में जरा भी धर्म के प्रति आस्था है वे 101, 151, 251, 501 अथवा 1001 प्रतियाँ सर्वसाधारण जनता में निःशुल्क वितरण करके अनेक संकटों से छुटकारा पाकर ऋद्धि-सिद्धि एवं मनवाँछित फल प्राप्त कर सकते हैं।

★ लाखों व्यक्ति उपर्युक्त दानों से अक्षय पुण्य की प्राप्ति व अपनी मनोभिलाषायें पूर्ण कर चुके हैं। अतएव आप भी इस जन्त्री की प्रतियाँ दान कर, यश व पुण्य के भागी बनें। ☐ बड़ा साइज, ☐ पृष्ठ 300 ☐ मू० 10/- दस रु० डाक खर्च 6/- पृथक्।

● ऐसे व्यक्ति या परिवार जो गत 15-20 वर्ष से इस श्री बापू मशहूर राष्ट्रीय जन्त्री को मंगाकर श्रद्धा व विश्वास के साथ प्रयोग में लाते हैं, उनको अब तक इच्छित लाभ प्राप्त न हुआ हो तो कृपा करके वे अपने जीवन का पूरा विवरण निम्नलिखित पते पर भेजें, जिस पर हमारा ज्योतिष-मण्डल विचार करके उचित मार्ग-दर्शन करेगा।

आज ही 12/- का M.O. भेजकर घर बैठे जन्त्री मंगायें

**श्री बापू मशहूर राष्ट्रीय जन्त्री, कार्यालय, चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-6**

**देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006**


CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

## यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र के चमत्कार 15 का अद्भुत यन्त्र

● पन्द्रह का योग चारों वर्णों के लिए पृथक्-पृथक् रूप में लिखा जाता है, परन्तु मंत्र सब वर्णों के लिए एक ही होता है। नीचे चारों वर्णों के यन्त्र व मन्त्र दिये गये हैं।

| | | |
|---|---|---|
| ६ | ७ | २ |
| १ | ५ | ९ |
| ८ | ३ | ४ |

मिथुन, तुला, कुम्भ के लिए वैश्य वर्ण वादी यन्त्र 15

| | | |
|---|---|---|
| २ | ७ | ६ |
| ९ | ५ | १ |
| ४ | ३ | ८ |

कर्क, मीन, वृश्चिक राशि के लिए ब्राह्मण वर्ण का वादी यंत्र 15

| | | |
|---|---|---|
| ८ | १ | ६ |
| ३ | ५ | ७ |
| ४ | ९ | २ |

मकर, वृष, कन्या राशि के लिए शूद्र वर्ण खाकी यन्त्र 15

| | | |
|---|---|---|
| ४ | ९ | २ |
| ३ | ५ | ७ |
| ८ | १ | ६ |

मेष, सिंह, धनु राशि के लिए क्षत्रिय वर्ण बातशी यन्त्र 15

| | | |
|---|---|---|
| १ | २ | ३ |
| ४ | ५ | ६ |
| ७ | ८ | ९ |

किसी भी राशि व किसी भी वर्ण के लिए यन्त्र

● मन्त्र—ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चैः।

● अगर ब्राह्मण की राशि मेष है और यन्त्र क्षत्री वर्ण का है तो अपना वर्ण छोड़कर केवल राशि पर लेवें। अगर जन्म राशि पता हो तो अच्छा है, नहीं तो चालू नाम की ही राशि लेवें तो भी ठीक रहेगा।

● स्याही—केसर, सिंदूर, लौंग, इलायची, पान का पत्ता, लाल चन्दन, मुश्क कपूर—यह चीजें पीसकर गंगा जल में इसकी स्याही बनावें। गुरु-पुष्य योग में या शुक्ल पक्ष की अष्टमी या नवमी को प्रातः ब्रह्म-मुहूर्त में पूर्व दिशा को मुंह करके शुरू करें।

● कम्बल या कुशा का आसन, लाल धोती, लाल रूमाल सिर पर लेवें। धूप, ज्योति, अगरबत्ती, लाल फूल आदि जला लें। जहां बैठना है अलग कमरा गाय के गोबर से लेपन कर लेवें। सफेद कागज या भोज-पत्र पर लिखें, साथ में मंत्र पढ़ते जावें। 108 बार नित्य लिखना और मंत्र पढ़ना चाहिए। जो पहले दिन पहला मंत्र लिखा है उसे अपने पास रख लें। वह सामने रखकर मंत्र पढ़ें तथा यंत्र लिखें। जो यंत्र आपने लिखे हैं उनको आटे में मिलाकर लपेटकर डालकर गोली बना लें। फिर शाम को वह गोलियां मछलियों को या नहर में मंत्र पढ़ते हुए रोज डाल आवें। यह कार्य सवा महीना तक प्रतिदिन करें।

नोट : इस यंत्र के अंक देवनागरी लिपि में ही लिखें।

सवा महीने के बाद वह यंत्र जो पहला था, उसमें तुलसी का पत्ता डाल कर चांदी के तावीज में, बाजू या गले में धारण करें। मन का सोचा हुआ कार्य 15 दिन के अन्दर-अन्दर बनेगा, यह अनुभव-सिद्ध है।

● आज के युग में रोजगार, नौकरी, पास-फेल, इंटरव्यू या किसी भी किस्म का कार्य जो रोजगार से सम्बन्धित हो, नं० 5 वाला यंत्र-मंत्र के साथ सिद्ध कर लें, कामयाबी होगी।

● तन्त्र—इसके साथ लाल रंग का राजभोग (प्रशाद) बांटें तथा मीठी रोटी एक गाय को, दूसरी कुत्ते को, तीसरी कौवे को, अपनी रोटी खाने से पहले रोज देवें। इस पाठ के दौरान किसी के घर का खाना न खाएं। शराब, मांस का सेवन वर्जित है। प्याज व लहसुन भी नहीं खाना चाहिए।

● 15 के यन्त्र के फल

1. शादी-विवाह के लिए 8 से शुरू करें। 2. औलाद व कारोबार एवं नौकरी में तरक्की के लिए एक से शुरू करें। 3. वशीकरण अथवा मिलन के लिए 6 से शुरू करें। 4. गंदे कार्य के लिए 4 से शुरू करें। 5. गए हुए की वापसी हेतु 5 से शुरू करें। 6. लड़ाई-युद्ध के लिए अंक 6 से शुरू करें। 7. सरस्वती व लक्ष्मी सिद्धि के लिए अंक 7 से शुरू करें। 8. औजार, मशीनरी इत्यादि के लिए अंक 3 से शुरू करें। 9. मकान, किला, बाग, कुआं अथवा तबादला इत्यादि के लिए 2 से शुरू करें।

● कलम—मुहब्बत, शुभ कार्य के लिए अनार की कलम। लाभादि के लिए आम की कलम। देवी-देवता की प्रसन्नता के लिए चमेली की लेखनी। बीमारी दूर करने के लिए नीम की कलम। बुरे कार्य हेतु लोहे की लेखनी। लड़ाई के लिए काली स्याही के काने की कलम और आंवले की लेखनी भूत-प्रेत को भगाने के लिए प्रयोग में लानी चाहिए।

विशेष सूचना—यन्त्र एवं मन्त्र के अंकों व अक्षरों की भाषा हिंदी व लिपि देवनागरी ही होनी चाहिए, तभी लाभ होगा। यन्त्र-तन्त्र-मन्त्रों की विस्तृत जानकारी के लिए हमारे यहां से असली प्राचीन यन्त्र-तन्त्र-मन्त्र शिरोमणि नामक ग्रन्थ मंगाकर पढ़ें। मूल्य 321/- रु०, तथा डाक खर्च 15/- रु० अलग। परन्तु नीचे दिया गया कूपन भरकर भेजने पर 35/- की रियायत अर्थात् 301/- (तीन सौ एक) रुपये की वी० पी० पी० की जायेगी। **यह सुविधा स्टॉक रहने तक मिलेगी।**

यहां से काटें

**35/- रु० का रियायती कूपन**

सेवा में मैसर्स देहारी पुस्तक भण्डार, दिल्ली-6

महोदय, 'असली प्राचीन, यन्त्र-तन्त्र-मन्त्र शिरोमणि' नामक ग्रन्थ की एक प्रति पैंतीस रु० की रियायत करके **301/-** रु० की वी० पी० पी० द्वारा नीचे लिखे पते पर भेज दें।

नाम व पूरा पता.....

.....

ता०..... हस्ताक्षर.....

यहां से काटें

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# ॐ एवं 'स्वस्तिक' का रहस्य

स्वस्तिक भारतीयों में, चाहे वे वैदिक मतावलम्बी हों, सनातनी हों या जैन मतावलम्बी ; ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सभी मांगलिक कृत्यों (विवाह आदि षोडश संस्कार, चूल्हा-चक्की, मकान, दुकान, बही-खाता, तराजू-बाँट आदि के मुहूर्त) में तीन परिपाटियाँ प्रमुख रूप से देखने को मिलती हैं। कुछ लोग 'ॐ' (ओ३म्) लिखकर कार्यारम्भ करते हैं और कुछ स्वस्तिक (卐) अंकित कर कार्य का 'श्रीगणेश' करते हैं। इनके अतिरिक्त कुछ लोग ऐसे भी हैं जो दोनों का प्रयोग करते हैं। वे 'ॐ' भी लिखते हैं और 'स्वस्तिक' भी अंकित करते हैं। ग्रामीण अनपढ़ स्त्रियाँ भी बड़े ही भावपूर्ण ढंग से इनको अपनाती हैं।

जैनियों के आगमों में 'ॐ' और 'स्वस्तिक' को प्रमुख स्थान दिया गया है। वेदों में भी ॐकार को 'प्रणव' माना गया है अतएव प्रत्येक वेदमन्त्र का उच्चारण ॐकार से प्रारम्भ होता है। 'स्वस्ति' शब्द भी वेदों में अनेक बार आता है जैसे—'स्वस्ति न इन्द्रः' इत्यादि।

स्वस्तिक का जहाँ भारत में इतना अधिक प्रचार है, वहाँ विदेशों में मुख्यतः जर्मन देश भी इससे वंचित नहीं है। वहाँ 'स्वस्तिक' चिह्न को राजकीय सम्मान प्राप्त है। गहराई से खोज की जाय तो अंग्रेजों के 'क्रास' चिह्न में भी इसकी झलक मिल सकती है। संभव है ईसा मसीह को फाँसी देने के बाद चिह्न का नामान्तर या भावान्तर कर दिया गया हो।

'ॐ' के सम्बन्ध में विविध मतावलम्बी विविध विचार प्रस्तुत करते हैं यथा 'ॐ' परमात्मावाचक है, 'मंगलस्वरूप है' इत्यादि। जैनियों की दृष्टि से 'ॐ' पंच परमेष्ठी-वाचक एक लघु संकेत है। इसे पंच परमेष्ठी का प्रतिनिधित्व प्राप्त है। इस प्रकार जिन शासन में णमोकार मन्त्र की अपार महिमा है।

यदि ॐकार को सर्वगुण सम्पन्न रखते हुए एकाक्षर में उच्चारण करना हो तो 'ॐ' मात्र कह देने से निर्वाह हो जाता है, क्योंकि 'ॐ' को बीजाक्षर माना गया है। जिस प्रकार छोटे से बीज में वृक्षरूप होने की सामर्थ्य है, उसी प्रकार 'ॐ' में ॐकार मन्त्र की पूर्ण सामर्थ्य है। पंच परमेष्ठियों के आद्यक्षरों से निष्पन्न 'ॐ' की महिमा इस प्रकार है—

ॐकार बिन्दु-संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः॥

बिन्दु सहित ॐकार का योगीजन नित्य ध्यान करते हैं। यह ॐकार इच्छित पदार्थ-दाता और मोक्षदाता है उस ॐकार को नमस्कार हो।

उपनिषद्कार के शब्दों में—ॐकारे परमात्मप्रतीके दृढ़ामैकाग्र्यलक्षणां मति सन्तनुयात्। (छांदोग्योपनिषद् शांकर भाष्य १, १, १)

इसे 'प्रणव' नाम से भी सम्बोधित किया जाता है, क्योंकि यह कभी भी जीर्ण नहीं होता। इसमें प्रतिक्षण नवीनता का संचार होता है और यह प्राणों को पवित्र और सन्तुष्ट करता है। 'प्राणान् सर्वान् परमात्मनिप्रणामयतीत्येतस्मात् प्रणवः।'

उक्त विवरण के प्रकाश में, मंगल कार्यों में 'ॐ' का प्रयोग किया जाता है, जो उचित है। परन्तु 'स्वस्तिक' के सम्बन्ध में अभी तक पूर्ण निर्णय नहीं हो पाया है। कोई इसे चतुर्गति भ्रमण और मुक्ति का प्रतीक मानता चला आ रहा है तो कोई ब्राह्मी लिपि के 'ऋ' वर्ण के समाकार मानकर ऋषभदेव का प्रतीक सिद्ध करने के प्रयत्न में है।

## स्वस्ति, स्वस्तिक या सांथिया

'स्वस्तिक' संस्कृत भाषा का अव्ययपद है। पाणिनीय व्याकरण के अनुसार, इसे वैयाकरण कौमुदी में ५४वें क्रम पर अव्यय पदों में गिनाया गया है। यह 'स्वस्तिक' पद 'सु' उपसर्ग तथा 'अस्ति' अव्यय (क्रम ६१) के संयोग से बना है, यथा—सु+अस्ति=स्वस्ति। इसमें 'इकोयणचि' सूत्र से उकार के स्थान में वकार हुआ है।

'स्वस्ति' में भी 'अस्ति' को अव्यय माना गया है और 'स्वस्ति' अव्यय पद का अर्थ कल्याण, मंगल, शुभ आदि के रूप में किया गया है। जब 'स्वस्ति' अव्यय से स्वार्थ में 'क' प्रत्यय हो जाता है, तब यही 'स्वस्ति' 'स्वस्तिक' नाम पा जाता है, परन्तु अर्थ में कोई भेद नहीं होता।

सारांश यह है कि 'ॐ' और 'स्वस्तिक' दोनों ही मंगल, क्षेम, कल्याण रूप परमात्मा वाचक हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है

(गायत्री शक्ति) 10/- (दस रु

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# संतुलित भोजन, कैलोरी और स्वास्थ्य

**अधिकांश किशोर व किशोरियों को चटपटे, तेल-मसालेदार, तले हुए, स्टार्चयुक्त एवं नमकीन तीखे खाद्य पदार्थ काफी पसंद आते हैं। लेकिन जायकेदार लगने वाले ये खाद्य-पदार्थ कभी-कभी उनके रूप, सौन्दर्य और शरीर के लिए अत्यन्त हानिप्रद हो सकते हैं!**

कैलोरी किसे कहते हैं? भोजन से जो शक्ति उत्पन्न होती है, उसकी माप को कैलोरी कहते हैं; इसलिए जिस भी भोजन में कैलोरी अधिक होती है, वह अधिक शक्तिवर्धक माना जाता है और जिस भोजन में कम कैलोरीज होती हैं, वे कम। हमारा शरीर अपनी शारीरिक क्षमता बनाये रखने के लिए इस शक्ति का प्रयोग करता है। यदि हम भोजन द्वारा अधिक कैलोरीज का इस्तेमाल कर अधिक शक्ति का संचय करते हैं और हमारा शरीर इस उत्पादित शक्ति का पूरा-पूरा प्रयोग नहीं कर पाता तब यह अधिक मात्रा में प्रयोग की गयी कैलोरी हमारे शरीर में इकट्ठा होती रहती है, जिससे हमारा वजन बढ़ता जाता है। इसमें तो कोई शक नहीं कि अधिक खाने से वजन बढ़ता है; लेकिन आप शायद यह नहीं जानती होंगी कि थोड़ी-सी कैलोरी की अधिकता से कितना वजन बढ़ सकता है।

एक पौंड अधिक वजन का मतलब हुआ—3,500 कैलोरी। इसका अर्थ यह हुआ, यदि आपका वजन 11 पौंड अधिक है तो आपने 3,500 × 11 = 38,500 कैलोरी अपने शरीर की आवश्यकता से अधिक उपयोग की है। उदाहरणस्वरूप यदि आपका वजन 121 पौंड (जो होना चाहिए) की जगह 132 पौंड है तो इसका मतलब यह हुआ कि आप प्रतिदिन 150 कैलोरी आवश्यकता से अधिक उपयोग कर रही हैं—कॉफी, केक का एक टुकड़ा, मूंगफली के 30 दाने, एक समोसा और इसी तरह की और कई वस्तुओं के प्रयोग से 150 कैलोरी प्रतिदिन आपकी शारीरिक आवश्यकता से अधिक उपयोग हों, तो अनजाने ही 39 सप्ताह में आपका वजन ग्यारह पौंड बढ़ जायेगा। अपने सही वजन की जानकारी के लिए वजन चार्ट 'अ' देखें। इससे आपको पता चलेगा कि आपका वजन जरूरत से कितना अधिक है। इसे आप 3,500 से गुणा करें तो आप जान जायेंगी कि आपको कितनी कैलरी कम करनी है। उदाहरण के लिए आपका वजन 128 पौंड होना चाहिए; लेकिन 143 पौंड है तो इसका यह मतलब हुआ कि 143 − 128 = 15 पौंड वजन जरूरत से अधिक है और 3,500 × 15 = 52,500 कैलोरी आपको अपने भोजन में कम करनी है। कैलोरी के दैनंदिन उपयोग रख-रखाव चार्ट (चार्ट 'ब') देखने से आपको पता चलेगा कि 143 पौंड वजन के लिए आप प्रतिदिन 2,300 कैलोरी का उपयोग कर रही हैं; इसलिए यदि आप 1,000 कैलोरीज का प्रयोग करें तो प्रतिदिन आप 2,300 − 1,000 = 1,300 कैलोरी कम लेंगी। इसका मतलब यह हुआ कि इस तरह आपने 30 दिनों में 1,300 × 30 = 39,000 कैलोरी कम लीं। इस तरह 1,000 कैलोरी वाले पथ्य लेने से 14-15 दिन में आपका वजन सामान्य हो जायेगा।

30 दिनों तक कैलोरी के नियमित उपयोग का रोजनामचा रखने के बाद आपको अपने लिए उचित आहार की सही मात्रा का पता चल जायेगा। और कितने समय तक ऐसे आहार का प्रयोग करना चाहिए, यह भी आप निर्धारित कर सकेंगी। लेख के अंत में प्रकाशित, उचित आहार एवं उचित वजन बनाये रखने की सबसे उत्तम पद्धति के लिए, कैलोरी काउंटर से कैलोरी गिनें।

खाना खाने के पश्चात् कैलोरी गिनें। जो भी चीजें खायें, सभी का हिसाब लिखें। खाते ही हिसाब लिखें, नहीं तो भूलने का अंदेशा रहता है। यदि आप को बाहरी मोटी चीजें खाने की आदत हो तो उन्हें भी उसी वक्त अपने चार्ट में दर्ज कर लिया करें और अपने आपको धोखा न दें, नहीं तो चाहने पर भी आप अपने शरीर को आकर्षक एवं सुडौल नहीं बना पायेंगी।

### अपेंडिक्स 'अ'

### महिलाएँ

| कद | वजन | कद | वजन |
|---|---|---|---|
| 4 फीट 10 इंच | 96-107 (पौंड) | 5 फीट 4 इंच | 113-126 (पौंड) |
| 4 फीट 11 इंच | 98-110 (पौंड) | 5 फीट 5 इंच | 116-130 (पौंड) |
| 5 फीट | 101-113 (पौंड) | 5 फीट 6 इंच | 120-135 (पौंड) |
| 5 फीट 1 इंच | 104-116 (पौंड) | 5 फीट 7 इंच | 124-139 (पौंड) |
| 5 फीट 2 इंच | 107-119 (पौंड) | 5 फीट 8 इंच | 128-143 (पौंड) |
| 5 फीट 3 इंच | 110-122 (पौंड) | 18-25 वर्ष की लड़कियों के लिए-1 पौंड प्रतिवर्ष कम | |



CC-0. Swami Atmanand Giri (Jabalpur). Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

### पुरुष

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 5 फीट | 1 इंच | 115-126 (पौंड) | 5 फीट | 9 इंच | 142-156 (पौंड) |
| 5 फीट | 2 इंच | 118-129 (पौंड) | 5 फीट | 10 इंच | 146-160 (पौंड) |
| 5 फीट | 3 इंच | 121-133 (पौंड) | 6 फीट | 11 इंच | 150-165 (पौंड) |
| 5 फीट | 4 इंच | 124-136 (पौंड) | 6 फीट | | 154-170 (पौंड) |
| 5 फीट | 5 इंच | 127-139 (पौंड) | 6 फीट | 1 इंच | 158-175 (पौंड) |
| 5 फीट | 6 इंच | 130-143 (पौंड) | 6 फीट | 2 इंच | 162-180 (पौंड) |
| 5 फीट | 7 इंच | 134-147 (पौंड) | 6 फीट | 3 इंच | 167-185 (पौंड) |
| 5 फीट | 8 इंच | 138-152 (पौंड) | 6 फीट | 4 इंच | 172-190 (पौंड) |

## दैनिक कैलोरी चार्ट

### अपैंडिक्स 'ब'

### उचित वजन बनाये रखने के लिए कैलोरी की मात्रा

### महिलाएँ कैलोरी का दैनिक उपभोग

| उचित वजन | 18-35 वर्ष | 35-55 वर्ष | 55-75 वर्ष | उचित वजन | 18-25 वर्ष | 35-55 वर्ष | 55-75 वर्ष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 99 | 1700 | 1500 | 1300 | 132 | 2150 | 1950 | 1650 |
| 110 | 1850 | 1650 | 1400 | 143 | 2300 | 2050 | 1800 |
| 21 | 2000 | 1750 | 1550 | 154 | 2400 | 2150 | 1850 |
| 128 | 2100 | 1900 | 1600 | 165 | 2500 | 2300 | 1950 |

### पुरुष कैलोरी का दैनिक उपभोग

| उचित वजन | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | 143 | 2700 | 2400 | 2050 |
| | | | | 154 | 2900 | 2600 | 2200 |
| 110 | 2200 | 1950 | 1650 | 165 | 3100 | 2800 | 2400 |
| 121 | 2400 | 2150 | 1850 | 176 | 3250 | 2950 | 2500 |
| 132 | 2550 | 2300 | 1950 | 187 | 3300 | 3100 | 2600 |

### कैलोरी की मात्रा

### कच्ची सब्जियाँ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भरमल | 1 कप | 20 | प्याज | 1 कप | 60 |
| मेथी की सब्जी | 1 कप | 25 | चुकंदर | 1 कप | 55 |
| शक्करकंदी | 1 कप | 120 | भिंडी | 1 कप | 30 |
| फ्रेंच बींज | 1 कप | 25 | बैंगन | 1 कप | 20 |
| शिमला मिर्च | 1 कप | 30 | फूल गोभी | 1 कप | 30 |
| मटर | 1 कप | 100 | आलू | 1 कप | 105 |
| खीरा | 1 कप | 15 | बंदगोभी | 1 कप | 20 |
| टमाटर | 1 कप | 20 | फलियाँ | 1 कप | 30 |
| सलाद के पत्ते | 1 कप | 12 | सीताफल,भोपला | 1 कप | 10 |
| पालक | 1 कप | 25 | कद्दू | 1 कप | 25 |
| मूली | 1 कप | 15 | टिंडा | 1 कप | 30 |
| गाजर | 1 कप | 60 | करेला | 1 कप | 25 |

### दूध के साथ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दूध | 1 कप | 140 | लस्सी | 1 कप | 90 |
| दूध (स्किम्ड) | 1 कप | 90 | दही | 1 कप | 110 |
| आइसक्रीम | 1 कप | 193 | पनीर | 1 कप | 330 |

### फल

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सेव | ½ कप गूदा | 100 | केला | ¾ कप | 100 |
| खुरबानी | ½ कप | 100 | चीकू | ¾ कप | 100 |
| चकोतरा | 2 कप | 100 | ग्लास | ¼ कप | 100 |
| अमरूद | ½ कप | 100 | लीची | ½ कप | 100 |
| अंगूर | ⅓ कप | 100 | आड़ू | ½ कप | 100 |
| अनानास | 2 कप | 100 | अलूचा | ½ कप | 100 |
| पपीता | 3 कप | 100 | संतरा | ½ कप | 100 |
| आम | 1 कप | 100 | मोसमी | 1½ कप | 100 |
| ख़रबूजा | 3 कप | 100 | स्ट्रावरी | 1½ कप | 100 |
| रसभरी | ¼ कप | 100 | गन्ने का रस | 1 कप | 100 |
| तरबूज | 3 कप | 100 | नारियल का पानी | 1 कप | 100 |

### गोश्त-मांस (उबला हुआ)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मछली | 1 कप | 110 | मटन चाप | 1 कप | 100 |
| बकरे का गोश्त | 1 कप | 250 | (सूअर का गोश्त) | 1 पतला | 100 |
| मुर्गी | 1 कप | 220 | हैम | स्लाइस | |

### अनाज

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सफेद रोटी-मैदे की ½" जाड़ा | | 60 | भुना पापड़ | 8" व्यास वाला | 30 |
| रोटी | स्लाइस | | दाल | 1 बड़ा चम्मच | 50 |
| कार्न फ्लैक | 1½ कप | 100 | चना | 1 बड़ा चम्मच | 50 |

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri

# भविष्यवाणी १९८२ ई०

(संवत् २०३९ वि० शकाब्द १९०४ का वर्ष सारांश-ग्रहों की ग्रह-परिषद् का संसार पर प्रभाव)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, New Delhi. Digitized by eGangotri

## भारत

१५ नवम्बर १९८२ ई० को तुला राशि में पांच ग्रहों का योग होने से यह वर्ष भारत के लिए विशेष उथल-पुथल का रहेगा। वर्षा उत्तम होगी, सुभिक्ष के लक्षण रहेंगे, परन्तु राजनैतिक वातावरण में विशेष उग्रता आएगी। शासक-दल में पारस्परिक मनोमालिन्य के कारण फूट उत्पन्न होगी तथा विरोधी-दल आपसी-फूट के दुष्परिणामों पर गंभीर चिन्तन के बाद एक दूसरे से मिलकर कार्य करने की प्रणाली अपनाने की ओर अग्रसर होंगे। अनेक राज्यों के मन्त्रिमण्डलों में फेर-बदल होंगे तथा केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में भी परिवर्तन होने के लक्षण हैं। देश की प्रधानमंत्री के लिए यह वर्ष चिन्ताकारक रहेगा। तीन बड़े नेताओं का अवसान संभावित है। रेल तथा वायुयान दुर्घटनायें गत वर्ष की भाँति होना संभव है। चोर, डकैत तथा असामाजिक तत्वों के उपद्रवों से जन-जीवन त्रस्त रहेगा। शासन ऐसे तत्वों पर अंकुश लगाने में पूर्ण सफल नहीं हो पायेगा। अनेक विदेशी राष्ट्र भारत के विरुद्ध षड्यन्त्र-रत होंगे। देश को संकट तथा विपत्ति की कठिन घड़ियों में होकर गुजरना पड़ेगा। धन-धान्य तथा अन्य वस्तुओं के भावों में निरन्तर वृद्धि होती जाएगी। आवश्यक वस्तुओं का अभाव बना रहेगा। कहीं-कहीं अनावृष्टि, अतिवृष्टि, सूखा-बाढ़, दुर्भिक्ष, महामारी, समुद्री तूफान, प्रकृति, प्रकोप, हड़ताल, साम्प्रदायिक-दुर्भावना, हिंसा आदि के कारण जन-जीवन, त्रस्त होगा। जन-साधारण के अतिरिक्त व्यापारी वर्ग कृषक वर्ग भी परेशान होगा। सरकारी कर्मचारी भी अशांति का वातावरण उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध होंगे। कुल मिलाकर देश के लिए यह वर्ष बहुत संघर्षपूर्ण रहेगा। पड़ोसी राष्ट्रों द्वारा उत्पन्न किया गया खतरा सिर पर मंडराता रहेगा। छुट-पुट संघर्ष भी हो सकते हैं। मुद्रा-स्फीति पर नियन्त्रण पाना कठिन होने से देश की आर्थिक स्थिति डांवाडोल रहेगी।

## पाकिस्तान

इस वर्ष में भारत तथा पाकिस्तान के बीच पारस्परिक सम्बन्धों में बिगाड़ उत्पन्न होगा। पाकिस्तान में शासक-दल के विरुद्ध प्रजा में घोर असन्तोष की भावना जागेगी, जिसे दबाने के लिए पाकिस्तानी शासक भारत के साथ संघर्ष का मार्ग अपनायेंगे। इस वर्ष उच्चपदस्थ पाकिस्तानी शासकों के सत्ताच्युत होने की संभावना है। इस देश में अमेरिका तथा अरब देशों के गिरगिट अपनी गोटें फिट करके अन्तर्राष्ट्रीय चालबाजियाँ दिखायेंगे, जिनके कारण कुल मिलाकर पाकिस्तान का ही अहित होगा। महामारी, दुर्घटनायें, मंहगाई, उपद्रव आदि के कारण जन-जीवन त्रस्त रहेगा। राजनीति के क्षेत्र में अनेक उथल-पुथल होंगे। प्रेसीडेन्ट जिया की सत्ता के लिए खतरा विद्यमान है।

## बांगला देश

यह देश आन्तरिक कलह तथा उपद्रवों का शिकार बना रहेगा। शासकीय क्षेत्र में बड़े उथल-पुथल होंगे। वर्तमान शासकों में से अनेक सत्ताच्युत हो जायेंगे। गृह-युद्ध होना भी संभव है। तूफान, भूकम्प, दुर्घटनायें तथा दैवी आपदायें भी यहां के जन-जीवन को त्रस्त बनायेंगी। यूरोप, अमरीका तथा चीन आदि राष्ट्रों के षड्यन्त्र इस देश में नये-नये गुल खिलायेंगे। भारत के साथ इस देश के सम्बन्ध तनाव तथा संघर्षपूर्ण रहेंगे।

## अमेरिका

अमेरिका के लिए यह वर्ष चुनौतीपूर्ण होगा। मंहगाई तथा बेरोजगारी में वृद्धि होगी। सोवियत संघ तथा अरब देशों से कूटनीति संबंधों में तनाव बढ़ेगा। प्रेसीडेन्ट रीगन अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में [illegible] अपनायेंगे। भारत के साथ दिखावे के सामान्य-सम्बन्ध बने रहेंगे, परन्तु गुप्त रूप से यह देश भारत-विरोधी राष्ट्रों की सहायता करेगा तथा उन्हें भारत पर आक्रमण के लिए भी उकसायेगा। स्वदेश की आन्तरिक-समस्यायें मुंह बाये खड़ी रहेंगी।

## सोवियत संघ

इस देश की आन्तरिक-स्थिति में उथल-पुथल बनी रहेगी। कुछ बड़े नेता स्थान-भ्रष्ट होंगे। किसी बड़े नेता का अवसान संभावित है। भारत के साथ संबंध सामान्य रहेंगे, परन्तु अधिकांश भारतीय जनता इस देश से सशंकित बनी रहेगी। शासक-दल तथा प्रजा के बीच द्वेष की भावना में वृद्धि होगी। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में यह देश अनेक छोटे-छोटे देशों पर अपना वर्चस्व स्थापित करने का प्रयत्न करेगा, जिसके फलस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में इसकी प्रतिष्ठा गिरेगी, अमेरिका को चुनौती देते हुए भी यह उससे स्वयं युद्ध करने में कतरायेगा तथा अन्य देशों को अमेरिका के विरुद्ध उकसाने का प्रयत्न करेगा। लेकिन अन्ततः विफल-मनोरथ होगा। मंहगाई, बेकारी, प्राकृतिक प्रकोप तथा दुर्घटनाओं में वृद्धि होगी। लोह-शिकंजा निरन्तर ढीला होता चला जाएगा, जिसके फलस्वरूप इसे अपनी नीतियों में संशोधन करने पड़ेंगे।

## चीन

यह देश दिखावे के लिए भारत से अच्छे संबंध बनाने का ढोंग रचेगा, परन्तु गुप्त रूप से भारत के शत्रुओं की सहायता करता रहेगा। फलतः मैत्री-संबंध तो दूर भारत के साथ इसके सामान्य संबंध बने रहना भी कठिन हो जाएगा। देश में गरीबी, भुखमरी तथा बेरोजगारी में वृद्धि होगी। शासक-वर्ग के प्रति प्रजा में विरोध की भावनायें उग्र होंगी। फलतः शासक-वर्ग में भारी-उलट-फेर संभावित है। किसी बड़े नेता की मृत्यु होगी। दुर्भिक्ष, दुर्घटनायें तथा प्रकृति-प्रकोप के कारण देश की अधिकांश जनता त्रस्त बनी रहेगी। सोवियत संघ से संबंध अधिक तनावपूर्ण होंगे। अमेरिका से निकटता बढ़ते हुए भी अनेक मामलों पर उससे उग्र मतभेद बने रहेंगे।

## अरब-देश

अरब देशों में पारस्परिक मनोमालिन्य तथा शत्रुता में वृद्धि होगी। ईरान के मुल्लाओं का प्रभुत्व समाप्त होने के लक्षण हैं। खोमेनी के बाद देश की शासन पद्धति एक नई करवट लेगी। कुछ अरब देश आपसी युद्ध में उलझेंगे। इजरायल के साथ संबंध और तनावपूर्ण होंगे, परन्तु उस पर विजय पाना संभव नहीं होगा।

## निष्कर्ष

ग्रहगति के अनुसार सन् १९८२ ई० का वर्ष सम्पूर्ण संसार के लिए विशेष भयानक है। विश्व-युद्ध की सम्भावनायें सन्निकट हैं। युद्ध छिड़ भी सकता है। महामारी, दुर्घटनायें, प्रकृति-प्रकोप, मंहगाई, हिंसा तथा विभिन्न प्रकार के उपद्रवों के कारण सम्पूर्ण विश्व का जन-जीवन त्रस्त बना रहेगा। अनेक अकल्पित घटनायें घटेंगी तथा अनेक देशों के शासनाध्यक्ष सत्ताच्युत होंगे। अनेक यूरोपीय ज्योतिषियों ने इस वर्ष में संसार की दो तिहाई आबादी नष्ट हो जाने की तथा भयंकर विनाशकारी विश्वयुद्ध छिड़ने की भविष्यवाणियां पहले ही कर दी हैं। परन्तु हमारी दृष्टि से महाविनाश तो नहीं, परन्तु विनाश अवश्य होगा तथा यह पूरा वर्ष संसार के सभी राष्ट्रों के लिए अकल्पनीय घटनाओं वाला तथा चिन्तन करने वाला सिद्ध होगा। रोग, महामारी, प्रकृति-प्रकोप, हिंसा, हड़ताल, मंहगाई, बेरोजगारी, भुखमरी, युद्ध, षड्यन्त्र तथा कूटनीतियों के कारण सारा संसार विक्षुब्ध बना रहेगा।

इस कठिन समय में भगवद्भजन तथा दान-पुण्य ही सहायक तथा सन्तोषदायक सिद्ध होंगे।

—पंचांगकर्ता

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) . Veda Nidhi Varanasi. Digitized by eGangotri